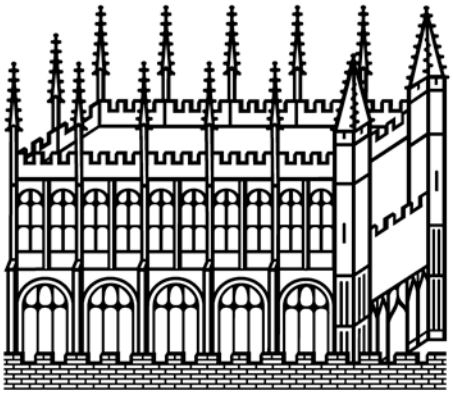


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13.B.20 Hindi Kunj 1

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Harināmṛta ratnāvalī.

Hariam Ratnavali



श्रीहरिनामरत्नावली

हरिनाम तत्वावली

परम सज्जन प्रेमी कुञ्जलाल रचित

जिसमें

भक्तों के भजनानन्द और प्रेम रूपी दीपक के
प्रकाशक के लिये सच्चिदानन्द भगवान् परब्रह्म
परमेश्वर केशव मूर्त्ति के चरित्रान्तर्गत नामस्तुति
चार भागों में वर्णित है

पहिलीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखानेमें छपी
सन् सन् १८८१ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् अप्रैल सन् १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्योपार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर कीमत का निर्णय करलें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा (इतिहास)	रामायण कवितावली	काव्य
महा भारत	रामायण गीतावली	जगद्विनोद
रामायण राम विलास	रामायण गीतावली स-	भक्तमाल
रामायण तुलसीकृत	विनय पत्रिका मो-	सूर सागर
रामायण सटीक मय	विनय पत्रिका वा- शि-	कृष्ण सागर
मानसदीपिका कोष	नाटक	विश्राम सार
आदित्यादि जिल्द बंधी	प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	प्रेमसागर
तथा मोटे अक्षरों की	रामाभिषेक	ब्रजबिलास सटीक
मय तसवीर व क्षेपक	आनन्द रघुनन्दन	कृष्ण प्रिया
रामायण तुलसीकृत	वेदान्त	विजय मुक्तावली
सातों काण्ड अलहदा	योग वाशिष्ठ	अनेकार्थ
अलहदा भी हैं।	आनन्दा- सतवर्षिणी	छन्दोर्णवपिङ्गल
रामायण शब्दार्थ को-	नानार्थ नौ सङ्ग्रहा-	कविकुलकल्पतरु
रामायण का इतिहास	वली	रसराज
रामायण मान्स दीपिका	ब्रह्मसार	सतसई मूलतथा स-

श्रीगणेशाय नमः

अथ
श्रीहरिनामरत्नावली

प्रथमभागप्रारंभः

मंगलाचरण

दोहा

गण नायक करि वर वदन ऋद्धि सिद्धि दातार ॥
विघ्न हरण विद्या जलधि निर्मल चित्त उदार ॥
उमा शंभु शारद गुरु सुमिरों महिधरि शीश ॥
रमा रमण पद बन्दहूं जो वन्दत अज ईश ॥ *
सन्त चरण रज शीशधरि विनय करहुं कर जोरि ॥ विष्णु भक्ति वर पावहूं पुरवहु आश मोरि ॥ निज मुख पावन करण हित श्री विष्णु के नाम ॥ कुंजलाल वर्णन करे सब विधि दायक काम ॥ भुक्ति मुक्ति दायक सदा केशव के शुभ नाम ॥ धरो नाम या ग्रन्थ को रत्नावलि सुखधाम ॥ चतुरभाग रत्नावली तामें यह है

आद ॥ श्रवण सुनत बाँचत तुरित विनशत विषय विषाद ॥ इन्द्र अंक अरु चन्द्रमा संवत् विक्रम जान ॥ पौष अशित अस्मर रवौ रतनावलि भई मान ॥ सिन्धु सुता पति श्री रमण श्री निधि अजित अजाय ॥ कुंज लाल जन दीन की करि ये सदा सहाय ॥ प्रार्थना ॥ त्राहि त्राहि लक्ष्मी नारायण त्रय गुण कारण पाहि प्रभो ॥ त्राहि त्राहि लक्ष्मी पति केशव पतित उबारण पाहि प्रभो ॥ त्राहि त्राहि श्री रमा मनोहर दुःख निवारण पाहि प्रभो ॥ त्राहि त्राहि पद्मा पुरुषोत्तम अधम उधारण पाहि प्रभो ॥ त्राहि त्राहि श्री विष्णु दया निधि जग निस्तारण पाहि प्रभो ॥ त्राहि त्राहि ब्रह्मादिक वन्दित सुर संहारण पाहि प्रभो ॥ त्राहि त्राहि मधुसूदन चक्री अघ वन जारन पाहि प्रभो ॥ त्राहि त्राहि भव अम्बुधि वोहित कारज कारण पाहि प्रभो ॥ त्राहि त्राहि कुंजलाल टेर सुनि पाहि मां प्रभु पाहि प्रभो ॥

रत्नावली छन्द उपगीतिका

विश्वंभर अव्यक्त अचिन्तक दीना नाथ दया लं ॥ करहु दया शरणागत वत्सल श्रीधर विश्व भुवालं ॥ सहस्त्राह सहसानन श्रीपति सहस

याद शुभ नामं ॥ करहु दया शरणागत वत्सल श्रीवल्लभ सुखधामं ॥ पद्मनाभ पद्मा पुरुषोत्तम परमेश्वर निहकामं ॥ करहु दया शरणागत वत्सल पुराणेश परिणामं ॥ गारुडध्वज गोविन्द गादाधर गोसाईं गोत्रातं ॥ करहु दया शरणागत वत्सल श्रीप्रभु अनघ अजातं मधुसूदन मेधावी माधव महा मूर्त्ति महि साध्यं ॥ करहु दया शरणागत वत्सल श्रीवर वरुणागाध्यं ॥ निर्गुण सगुण विषम सम विग्रह केशव विश्व अधारं ॥ करहु दया शरणागत वत्सल श्रीनिधि कृपा अगारं ॥ जगन्नाथ जगदीश चिदानंद चक्री पुरुषो पेतुं ॥ करहु दया शरणागत वत्सल श्रीकर दया निकेतुं ॥ चक्र पाणि चतुरानन कर्त्ता चतुर्व्यूह जगद्गुरुं ॥ करहु दया शरणागत वत्सल श्रीवल्लभशिवभूपं ॥ अलख अनन्त अभय अविनाशी श्रीमुख चन्द्र चकोरं ॥ करहु दया शरणागत वत्सल श्रीनायक चितचोरं ॥ कमल नयन कमला उर चन्दन करुणा निधिकरतारं करहु दया शरणागत वत्सल श्रीस्वामी अविकारं ॥ रमाकान्त लक्ष्मी नारायण इन्द्रेश्वर भ

गवानं ॥ करहु दया शरणागत वत्सल श्री ई
श्वर सुख खानं ॥ अज अद्वैत अमानी मान
द अभयहारी भयदायं ॥ करहु दया शरणागत
वत्सल श्री प्रीतम हरिरायं ॥ कुंजलाल प्रभु
अधम उधारण जलसाई अहि शयनं ॥
करहु दया शरणागत वत्सल श्री निधि राजी
व नयनं ॥ २ ॥ जय हरि विष्णु जगत्पति के-
शव करुणामय जग त्राता ॥ परमेश्वर पुरु
षोत्तम पद्मी श्री बल्लभ सुख दाता ॥ भक्ति
सरोरुह भानु दया निधि सर्वेश्वर निःकामी
॥ अघ खग बाज अशोक शोक हर दयासिंधु
सुख धामी ॥ विषय काम अहि खगपति
श्रीपति श्री स्वामी जगपाली ॥ क्रोध अनल
जल विग्रह श्रीधर विश्वंभर वनमाली ॥ संश-
यशलभ दीप मधुसूदन हृषीकेश असुर
री ॥ तृष्णा कंज तुषार गदाधर अखिलाधि
प अविकारी ॥ लोभ तिमिर रवि त्रय जग
बन्दन रमा रमण श्रुति सेतू ॥ मोह भुजग
खगराय दयालय गोविंद त्रिभुवनेतू ॥ अ-
हंकार गज हरि श्री प्रीतम चक्री विश्व भुआ-
ला ॥ भव निधि पोत चिदानंद पावन हरि हु-

हरनाथ कृपाला ॥ जनका मद सुर सुरभि कृपा
कर श्रीमुख चन्द्र चकोरं ॥ कुंजलाल सुख दा-
ता सुर तरु शमन दोष रुज घोरं ॥ २ ॥ जय ल-
क्ष्मी पति जन सुख दायक पीताम्बर कमले-
शं ॥ करुणा वपुष सुरासुर नायक विश्वंभ
र जगतेशं ॥ मधु सूदन श्री नाथ चतुर्भुज
श्रारतिहार दयालं ॥ कैटभारि पुरुषोत्तम
पद्मी दीनानाथ कृपालं ॥ श्रशरण शरण
श्रमरपति वल्लभ कंजेश्वर सुखधामं ॥ कलि
कलुष ज्वर हर जगवंदन सर्वोपरि घनश्यामं
॥ कमल नाभि कमलाक्ष मुरारी कमला सन
उरमालं ॥ विश्वंभरन सचराचर बन्दित सुर
रंजन जनपालं ॥ बनमाली वैकुण्ठ गदाधर
श्रनुपम श्रनघ श्रजातं ॥ कलिमल हरण
रमेश रमा वर श्रगह श्रगेह श्रगातं ॥ श्र-
लख श्रमोघ श्रकल श्रघहारी श्रामित श्र
श्रचिन्तक रूपं ॥ विश्व विभूषण त्रय जगा
त्राता कमला प्रभु सुर भूपं ॥ विष्णु जिष्णु नार
यण केशव श्री वल्लभ जगपालं ॥ पद्म नाभि
पद्मा उर चन्दन चक्रपाणि खलकालं ॥ रमा
कान्त श्रज श्रखिल भुवन पति श्री ईश्वर

शुभ खानं ॥ अगम अगोचर रमा विलासी
लेखा पति भगवानं ॥ हृषीकेश असुरारी
कामद जनरंजन सुरायं ॥ कुंजलाल हिय
संशय मेटहु लक्ष्मीश्वर श्री दायं ॥३॥ दया
सिंधु प्रणतारतिहारी श्रीवल्लभ सुखदाई ॥
विश्वंभर सुर मुनि हितकारी असुर शत्रुहरि
राई ॥ विश्वरूप विश्वेश कृपालय रंजन
सन्तदयाला विश्वरमित विश्वारति हर्त्ताजग
पालक खलकाला ॥ विश्वाधार विश्वसुख
दाता विश्वाभरण मुकुन्दा ॥ सन्त सुखद सु-
र मुनिभय हारी गंजन भवरुज द्वन्दा ॥ चतु
र बाहु खल गण संहरता लक्ष्मी पति जगदी-
शा ॥ पतित पाल वैकुण्ठ गदाधर रमा स्वामि
योगीशा ॥ कलि विष हर सुर शत्रुनिकंदन
सर्वोपरि भगवाना ॥ शोभा शील निकेत
मेश्वर भववारिधि जलयाना ॥ जग
व्यापक यज्ञेश मुरारी जगन्नाथ जग शेषा ॥
जगता धार जगत हित करता जल साईजल
वेषा ॥ लक्ष्मीरमण रमा उर भूषण अज अ-
द्वैत अमानी ॥ इन्द्रा प्रभु हरि हर सुखदायक
कामद शारंग पानी ॥ वारम्बार राखि महि

मस्तक विनय करहुं कर जोरे ॥ कुंज लाल प्रभु लक्ष्मी मोहन हरहु सकल दुख मोरे ॥४॥ जयति रमेश कृपा निधि विष्णु सुर नायक हितकारी ॥ पुण्यो पेत सुरारी अच्युत अनुपम विश्व विहारी ॥ जयति रमापति जग सुखदायक विश्वंभर जन त्राता ॥ पीतांबर वैकुण्ठ गदाधर गरुड़ध्वज शुभगाता ॥ जयति चतुर्भुज पतित उवारण दुख भंजन सुखधामा ॥ वदन मनोहर जन पितु माता नीलेन्दी वर श्यामा ॥ जयति जगत्पति लक्ष्मी वल्लभ विबुधेश्वर हरिपालू ॥ मधु कैटभ जित करुणा मन्दर कालि मल हरकलि कालू ॥ जयति सच्चिदानन्द दयानिधि पुरुषोत्तम दनुजारी ॥ मन्दर धर लेखा रिपु गंजन भव अजेश अविकारी ॥ जयति मुकुन्द अजर अल शार्ङ्गी दीना नाथ दयाला ॥ विश्व विश्व विधाता धाता मरकत वपुष विशाला ॥ जयति अतीत अजीत अनामय अलख अनन्त अपारा ॥ अपर अमोघ अचिन्त अनादी अनुपम जगत अधारा ॥ जयति निरंजन निर्गुण ईश्वर सुरत्राता शिवभूपा

॥ कुंजलाल दुख हरो दया निधि शिव स्वामी
शुभरूपा ॥ ५ ॥ अप्रमेय यज्ञेश चिदानन्द वि
शुरमाच्चित चोरं ॥ भूत भव्य भवतेश विश्व
मय अनुपम नवल किशोरं ॥ श्रीवर श्री कर
अतुल अनामय श्रीधर पूरण कामं ॥ पद्म
नाभि पीतांबर कांधे परमेश्वर वपु श्यामं
॥ पुराडीक दृग लोक विभूषण महातेजसुर
भूपं ॥ पतित उवारण दनुज प्रहारी लोकेश्व
र शिव रूपं ॥ विश्व विमोहन परमित माधव
महा मूर्त्ति श्रीनाहं ॥ पुरुषोत्तम जगदीश च
तुर्भुज अकल अनीह अगाहं ॥ चक्रपाणि
पद्मा नारायण अलख अमोघ अनादं ॥
सुरपति ईश सुरासुर सेवित विश्वंभर जित
वादं ॥ विष्वक् शयन गदाधर अच्युत सुर
रंजन करतारं ॥ संशय समन रमेश असुरारिए
श्रीपति रहित विकारं ॥ शरण सुखद विबुधे
श सहायक करुणालय भगवानं ॥ सिन्धु
जेश शरणागत वल्लभ कमलेश्वर ईशानं ॥
विबुधपाल विबुधारि विभंजन विबुधेश्वर
भय नाशिं कुंजलाल प्रभु संकट मोचन ल
क्ष्मीपति सुख राशिं ॥ ६ ॥ मधु सूदन

वैकुण्ठ गदाधर विश्वंभर शिव रूपं ॥ अमित अनन्त अचिन्तक अनुपम सर्वोपरि अजभूपं ॥ दनुज शत्रु दीनारति भंजन अविघात अनघ अकामं ॥ जगं वल्लभ जगदीश चिदानँद श्रीपति रमा भिरामं ॥ जगत जनक भव वारिध बोहित कलिमल हर भगवानं ॥ अधम उधारण अनघ अजाता करुणामय गुणवानं ॥ परमात्म पूतात्म पावन पद्मासन सुख गायं ॥ कुंजलाल दुस्सह दुख गंजन श्रीधर लक्ष्मी नाथं ॥७॥ जलशायी शरणागत वत्सल रमा रमण सुख राशी ॥ अशरण शरण सुरासुर सेवित श्रीवर अज अविनाशी ॥ विश्वंभर पुरुषोत्तम विष्णु शिव अज हृदय विलासी ॥ रमा स्वामि त्रय लोक विभूषण हरि वैकुण्ठ निवासी ॥ विश्व विमोहन अच्युत अनुपम श्रीधर विश्व प्रकाशी ॥ करुणा वपुष मुरारी केशव माधव चित्त हुलासी ॥ गरुड़ ध्वज हृषिकेश्वर कामद निजानन्द गोवासी ॥ गुण मन्दिर गुण रहित अगोचर सुर वैरी गण त्रासी ॥ केटभारि मधुसूदन चक्री

मोचन दुख चौरासी ॥ कुंजलाल प्रभु लक्ष्मी व
ल्लभ जपत जाहि कैलाशी ॥ ८॥ जय श्रीवल्ल
भ रमा मनोहर श्रीधर विश्व विहारी ॥ पद्मी
पद्मालया भिरामी केशव अधम उधारी ॥
अशरण शरण अधम गण तारण सुर त्राता
असुरारी ॥ मंगल सदन असंगल नाशी श्री
स्वामी दनुजारी ॥ विश्वंभर मधु सूदन माधव
नारायण अविकारी ॥ अलख अगोचर अवि
गति अच्युत अनाद्यन्त वनवारी ॥ पुरुषोत्त
मपीतांबर परमित सुर मुनि दुःख निवारी ॥
सिंधुसुता पति शिव अज ईश्वर श्रीवर निगम
प्रचारी ॥ गिरा गम्य गीतीत गदाधर गोविंद
विश्व अधारी ॥ सत चित रूप चतुर्भुज चक्री
श्री निधि पतित उवारी ॥ जगत जनक जगदीश्व
र जिष्णू जय मूरति जयकारी ॥ कलिविष हर
घनश्याम कृपानिधि जलसाई भयहारी ॥ त
त्वतत्व तत्वेश तरुण दृग तम अज्ञान तमारी ॥
रमा रमण कुंजलाल विपति हर करुणा सिंधु
मुरारी ॥ ९॥ करुणा सदने पंकज वदने हरि
वल्लभ सुख सागरे ॥ सुर मुनि सुखदं खलगण
भयदं विश्वंभर वसुधाधरे ॥ कुंचित चिकुरे

अनुपम रुचिरे कमल नयन कमला वरे ॥ विद्रुम अधरं सुन्दर सुघरं विमल अमल गुणागारे ॥ सरसिज नयने अहिपति शयने सुर वैरी गण मर्दने ॥ कलिमल शमनं पद्मारमणं भक्तजने सुख वर्द्धने ॥ सब जगभरणे अधम उधरणे चक्रायुध सुख मन्दिरे ॥ अघ दल दलनं केटभ घलनं श्रीमोहन वपु सुंदरे ॥ जगहित करणे भव भय हरणे कलि कलुष जंजाल खण्डने ॥ सुर संह रणं श्यामल वरणं सुरपति पति जग मण्डने ॥ परम पुनीते शिव अज मीते हृषीकेश शुभलोचने ॥ अखिल भुवालं दीन दयालं जन पोषण अघ मोचने ॥ दिति सुत हनने पद्मा रमणे रमा सुखद जगवन्दने ॥ अशरण शरणं जगा विस्तरणं सिंधु सुता उर चन्दने ॥ रमा पियारे हरी सुरारे जगनेश्वर खल त्रासने ॥ सुर मुनि पालं विमुक्त पालं कुंज जनं सुख नाशने ॥ १० ॥ शिव अज वन्दित जन उर चन्दन लक्ष्मी पति शिव रूपं ॥ करुणामय अज माधव अच्युत अराम अखिल जगभूपं ॥ त्रय जगजनक चराचर सेवित मरकत वपुष विशालं ॥ अलख

॥ कलमधुसूदन केशव ॥ अनुपम वदन र-
साल ॥ कमल नयन ॥ अघहरण मुरारी रमा
रमण कमनीयं ॥ कलिमलहर विश्वंभर
पावनत्रिदशारी दमनीयं ॥ ॥ शरण शरण
॥ अमरपति वल्लभ श्रीवर चित्त उदारं ॥ हरि
हर ईश्वर कमला मोहन विष्णू जगत ॥ धा-
रं ॥ महा तेज ॥ अविनाशी कामद निगमाग-
मजन त्रातं ॥ भवरुजहर इन्द्रारि निहन्ता ॥
सुर नर मुनि पितुमातं ॥ ॥ अगुण ॥ मानी मा-
नी मानद श्रीमुख चन्द्र चकोरं ॥ ॥ अथाह ॥
नीह परम्पर ईश्वर श्रीधर निगम निचोरं ॥
पन्नगारि प्रभु रमा विहारी करुणालय सुर-
नाहं ॥ गुणागार गुण रहित कृपा निधि च-
क्रायुध निर्गाहं ॥ त्रिदश शत्रु रिपु सारंगपा-
णी पदमास न हृदयेशं ॥ कुंजलाल दुखना-
शन श्री कर सर्वोपरि सर्वेशं ॥ ११ ॥ कमला
प्रभु कमला सन सुखदा कमलेश्वर सुख
॥ अयनं ॥ कलि कलुष ज्वर हरण शंखधर
॥ अनघ ॥ अमल ॥ अहि शयनं ॥ कृष्ण मुकुन्द
मुरारी केशव विश्वंभर हरिपालं ॥ ॥ अमित
॥ अनन्त ॥ अमोघ चिदानन्द इन्द्रेश्वर खल ॥

शालं ॥ विश्वरेत वनमाली विजयी पूता तम
जगसारं ॥ मधु सूदन सुरशत्रु प्रहारी विष्णु
जगत करतारं ॥ गरुड़ध्वज निहकाम निरंज-
न करुणारूप समानं ॥ कुंजलाल प्रभु लक्ष्मी
स्वामी सन्तत दया निधानं ॥ १२ ॥ जन मन
रंजन पद्मा स्वामी मंगल माणि जगरेषं ॥ संत
सुखद दीनारति भंजन करुणालय शुभवेषं ॥
शिव अज सेव्य दया निधि कामद चन्द्रानन
भवनाथं ॥ चक्रपाणि दुख दमन अमल अ-
ज सुरमनि प्रभु सुखगाथं ॥ सगुण अगुण
वैकुण्ठ गदाधर शरण सुखद शिवधामं ॥ अ-
सित निशितप्रिय सुखमा सागर श्रीवर पूर-
णकामं ॥ सिंधु सुतेश सुरासुर वन्दित केशव
करुणा अयनं ॥ पुरुष पुराण मुरारी श्रीधर
नारायण अहिशयनं ॥ अखिलेश्वर सुर श-
त्रु निकन्दन पीताम्बर हरिरायं ॥ असुर दमन
कलि कलुष विभंजन कुंज जनं सुखदायं
॥ १३ ॥ मौलि मुकुट शुभ भाल मनोहर मृग
मद तिलक विशालं ॥ श्रवणन कुण्डल म-
णियुत राजहिं कुंचित चिकुर तमालं ॥ गरु-
ड़ चुंच इव घ्राण मनोरम लोक कपोल ललामं

सरसिज नयन रसाल अनूपम अलकावलि छविधामं ॥ वदन सुधानिधि शशि छवि निन्दक दशनावलि रदखानं ॥ विद्रुम अधर अमीरस अंबुद गण्ड स्थल सुख दानं ॥ कंबु कण्ठ वृष उन्नत कंधर भुज कर कंज सनालं ॥ अंगदादि बहुभूषण भूषित सुन्दर परस विशालं ॥ चतुर्बाहु चक्रादिक शोभित नख द्युति शुभग प्रचारं ॥ हिज पद रमा सहित उर अंकित कोमल हृदय उदारं ॥ जलज वनज आभूषण राजत युत वयजन्ती हारं ॥ सुधाउदधि जिम उदर सुहावन शोभापुंज अपारं अति कमनीय गँभीर रुचिर शुभ नाभि पवित्र सुखालं ॥ तड़ित विनिन्दक लसत पीत पट कटि किंकिणि शुभजालं ॥ चर्णाम्बुज शंकर अज वन्दित नीलेन्दी वर श्यामं ॥ कुंजलाल प्रभु रमा विभूषण हरि लक्ष्मी अभिरामं ॥ ४ ॥ कलि कुलुष ज्वर शमन शंखधर रमारमण शुभ वेषं ॥ विश्वंभर भय हरण जगतपति केशव हरि जग शेषं ॥ स्वयंब्रह्म शंकर अज वन्दित श्री मुख चन्द्र चकोरं ॥ कलिमल दमन दुसह दुख भंजन

सिंन्धु सुता चित चोरं ॥ खगपतेश इन्द्रा पुरुषोत्तम चक्रायुध सुख धामं ॥ मंगल करण अमंगल नाशी नारायण शुभनामं ॥ सुर हित करणं अमर पति अधिपति वनमाली वागीशं ॥ कैटभारि मधुसूदन माधव रमा स्वामि जगदीशं ॥ भव रुज खण्डन अरुज अचिन्तक सुख अंबुद श्री नाहं ॥ वि सुजि सु वैकुण्ठ हृकोदर शमन त्रिविधि भव दाहं ॥ कमल नयन शशि वदन शुभग वपु कमला सन उरमालं ॥ भुवनेश्वर दैत्यारि निरंजन चतुरानन शिवपालं ॥ मुनि जन हृदय कमल दिन मण्डन अहिनायक शयनीयं ॥ मन सिज रिपुपति गुण गण मन्दर कामद दुख दमनीयं ॥ अशरण शरण अनाश्रय अनुपम श्रीनायक हरि नाथं ॥ अकल अनघ अघ दहन दयानिधि कुंजलाल शुभगाथं ॥१५॥ मुनि जन मानस हंस दयानिधि केशव कलिमल हारिं ॥ जलज नील इव शुभग कलेवर श्री नायक जगतारिं ॥ अखिल लोकपति अगम अगोचर शिव मूरति शुभ धामं ॥ अज अद्वैत अगाह अविकारी रमा

सुखद घन श्यामं ॥ ॐविगति ॐअच्युत ॐग
मनिरंजन निश्चर द्वन्द ॐरातं ॥ परमपवित्र
ॐनूप मनोरम सुर मुनि हेत ॐजातं ॥ शंक
र ईश्वर विष्णु गदाधर पीताम्बर ॐविकार
॥ सरसिज नयन रमाउर चन्दन पुरुषोत्तम
ॐसुरारिं ॥ हृषीकेश मेधावी माधव महा
काल जग मूलं ॥ कैटभारि मधु सूदन चक्री
दिति नन्दन उर शूलं ॥ निरालंब नारायण
धाता शरणा शरणा कृपालं ॥ ॐनल ॐनिल
ॐहि नायक साईं श्रीपति दीन दयालं ॥
ॐप्रमेय ॐव्यक्त ॐचिन्तक ॐनाध्यन्त
ॐघनाशिं ॥ ॐभय परामव कारण काम
द कमलापति सुख राशिं ॥ ॐएकजेश प्रभु
ॐधर्म उधारण महा विष्णु शुभ नाथं ॥
कुंजलाल प्रभु पतित उवारण लक्ष्मी पति
श्री नाथं ॥ १६ ॥ जय लक्ष्मी नारायण केश
व श्रीपति दया निधानं ॥ हृषीकेश वैकु
ण्ठ गदाधर गुणातीत गुण वानं ॥ चक्र पा
णि चित रूप चिदानन्द चतुरानन चित चो
रं ॥ पुरुष पुराण परेश परम्पर परमित नवल
किशोरं ॥ विश्वम्भर घन श्याम चतुर्भुज

अंबुधि हाहिता नाहं ॥ भगवत वासुदेव परमेश्वर अपर अपार अगाहं ॥ पद्म नाभि जल शायी अच्युत कलिमल हर कमलेशं ॥ जगत जनक श्रुति नेता श्रीधर त्रिभुवन पति जगतेशं ॥ विश्व रूप योगेश्वर योग निधि श्रीसुख चन्द्र चकोरं ॥ अज अव्यक्त सुरासुर वन्दित हरण विविधि रुज घोरं ॥ अण्डजेश प्रभु रमा विहारी सुर जित रमा भिरामं ॥ शरण सुखद चतुरानन नायक अनुपम अनघ अकामं ॥ रमा मनोहर भव भय भंजन गरुडध्वज सुख मूलं ॥ अलख अनन्त मुकुन्द रमा वर शमन महाभव शूलं ॥ कमल नयन शिव रूप अमितबल श्री कमला उरमालं ॥ कुंजलाल भय हरण दयावपु पुरुषोत्तम जग पालं ॥ १७ ॥ विष्व कश्येन अदृश्य निरंजन त्रिभुवन पति हरि विष्णुं ॥ व्यक्ता व्यक्त अचिन्तक श्रीधर सिंधु सुता वर जिष्णुं ॥ विश्वंभर लक्ष्मी नारायण मरकत वपुष मुकुन्दं ॥ रमा पीव वैकुण्ठ अजर अज मुनि जन मानस हंसं ॥ भव रुज हर जगदीश रमावर पद्मा उर अवतन्सं ॥ यज्ञ पुरुष परमेश्वर कामद मुरजित कमला

कन्तं ॥ दनुज शम्भु हरि अविगत ईश्वर शुभ
मूरति भय हन्तं ॥ सिंधुजेश पद्मेश अजेश्व
र मोहन कोटि अनंगं ॥ चक्रपाणि सचराचर
वल्लभ अकल अनीह अभंगं ॥ गरुडध्वज
गोतीत चिदानंद केशव रूप विचित्रं ॥ सुर
पति पाल सुरासुर अधिपति अनघ अमोघ
पवित्रं ॥ अनाद्यन्त त्रयलोक विभूषण शम
न सकल भवफन्दं ॥ वषट्कार मेधावी मधु
रिपु लोकेश्वर निर्द्वन्दं ॥ जन अघ हर सुर रत्न
निकन्दन श्री पति राजिव नयनं ॥ कुंजलाल
प्रभु पतित उधारण श्री हित विष्वक् शयनं ॥
॥ २८॥ सन्त सुखद वैकुण्ठ मनोरम श्रीवल्लभ
विश्वेशं ॥ पुरुषोत्तम परमेश्वर कामद श्री
नायक सर्वेशं ॥ सिन्धुसुतापति करुणा म-
न्दिर श्रीवर अपर अपारं ॥ अलख अनीह
अगह अज अच्युत श्री पति विश्व अधारं ॥
मन्दर धर अघहरण कृपानिधि जनरंजन सुर
पालं ॥ अधम उधारण त्रय जग वन्दित सुर
गण हितु बल कालं ॥ हिति नन्दन क्षय कर
ण कृपा वपु नारायण अजभूपं ॥ मधु सूदन
मेधावी जगहित विश्वाधीश अनूपं ॥

जगंत जनक यम त्रास प्रहारी विश्वंभर जगतेशं ॥ अमित अनन्त अकाम अचिन्तक अमराधिप अखिलेशं ॥ निगम तत्व योगीश्वर निरामय शिव वपु पूर्ण कामं ॥ गुणातीत हरि पतित उवारण जलधि सुता पति रामं ॥ असुर दमन विश्वारति भंजन भव नायक जग शेषं ॥ महादेव देवादि निरंजन सुख अंबुद जयेषं ॥ व्यक्ता व्यक्त वपुष जगवन्दन श्यामल रूप विशालं ॥ त्रिभुवन पति कुंजलाल विपतिहर राजिव नयन रसालं ॥१६॥ गारुड़ध्वज वैकुंठ निवासी रमा सुखद सुख मूलं ॥ कलि कलुष ज्वर हर श्री वल्लभ निगम नीति अनुकूलं ॥ गुणातीत भगवान निरंजन जन त्राता सुरराय ॥ मधुसूदन श्री रमण कृपानिधि श्रीवर दीन सहायं ॥ चिदानन्द पुरुषोत्तम अच्युत भुवनेश्वर करतारं ॥ रमा मनोहर त्रय जग वन्दित माधव जगभरतारं ॥ कमल नाभि कमलेश कटोदर राजिव नयन अनूपं ॥ सिन्धु जेश खलशत्रुगदाधर श्रीमोहन जग यूपं ॥ जगन्नाथ पद्मा नारायण श्यामल वपु कमनीयं ॥ गारुड़गामि पद्मेश परम्पर हरिकमलारमणीयं

वसन पीतधर रमा मनोरम परमेश्वर जगदेतु॥
करुणापुंज रमेश्वर कामद श्री नायक श्रुति सेतुं॥
भवरुज शमन विषम सम विग्रह त्रिभुवन पति सुखखानिं॥ मंगल मूरति हरण श्रमंगल श्रजित श्रमित दुख हानिं॥ भक्त सुखद भव वारिधि वोहित श्ररुज श्रनघ निहकामं॥ कुंजलाल प्रभु श्रारत नाशन लक्ष्मी पति शुभ नामं॥ २०॥ परमेश्वर पुरुषोत्तम कामद जगन्नाथ श्रगादीशं॥ रमाकान्त सुर शत्रु निकन्दन पद्मा प्रभु लक्ष्मीशं॥ परमातम त्रिदशेश त्रिविक्रम दूषण रहित दयालं॥ श्रतुल श्रनन्त श्रमोघ श्राचिन्तक राजिव नयन विशालं॥ विश्वक्सेन चिदानंद पावन कैटभ जित दनुजारिं॥ यज्ञ पुरुष जगशेष चतुरभुज सुर पालेश मुरारिं॥ श्रलख निरीह निरंजन मनुपम लोकेश्वर हरि रायं॥ श्रधम उधारण चक्री धन्वी केशव जन सुखदायं॥ हृषीकेश पीताम्बर माधव मधु सूदन महिनाथं॥ महादेव महिवेदन हरता श्रगम श्रगाधि श्रगाहं॥ व्यक्ता व्यक्त चराचर व्यापक श्रनघ श्रकथ जगतातं॥ भय कृत भयहृत सारंग पानी॥

श्रीधर दनुज श्ररातं ।। छर श्रक्षर वपु श्रविगा-
तपरमित श्रशरण शरण श्रनादं ।। शिव भूर-
ति वैकुण्ठ परम्पर प्रशमन विषय विषादं ।। ज-
गात जनक जलशायी विष्णु मेधावी सुख धामं
।। कुंजलाल प्रभु लक्ष्मी मोहन विश्वंभर शुभ
नामं ।। २१ ।। श्रप्रमेय नारायण श्रविगत
लक्ष्मीपति जगशेषं ।। करुणा मय सुख पुंज
गदाधर केशव सुन्दर वेषं ।। परम पवित्र पुनीत
जगत्पति श्रीवर करुणा रूपं ।। श्रपर परेश मु-
कुन्द दयालय श्रीधर त्रिभुवन भूपं ।। श्रगम
श्रगाह चतुर्भुज श्रनुपम विश्वंभर जगरेतु ।।
रमा सुखद श्रद्वैत परम्पर सुरपति पति श्रुति से-
तुं ।। श्रलख श्रनन्त श्रतीत श्राचिन्तक विभु
जगतकरतारं ।। चतुर्व्यूह चतुरानन ईश्वर
जगाव्यापक श्रविकारं ।। शिव श्रज सेव्यसु-
रासुर वन्दित चिदानन्द सुखधामं ।। हृषीकेश
जलशायी गोविन्द श्री निधि पूरण कामं ।।
कलि विषहर शिव रूप दयानिधि श्रम्बुधि त-
नयानाथं ।। श्रम्बुधि पति प्रभु श्रग जगवल्ल-
भ शिव वपु शोभा गायं ।। मधुसूदन महिदृश
मुरारी माधव कैटभ कालं ।। मदन मनोहर

मघवा स्वामी मदनारीश सुभालं ॥ गुणातीत भगवान विश्वमय भव वारिधि जल यानं ॥ कुं जलाल प्रभु लक्ष्मी वल्लभ कमलेश्वर सुभखानं ॥ २२ ॥ जय जय रमा रमण सुख अंबुधि सुरत्राता भगवानं ॥ भवनिधि पोत मुकुन्द मुरारी विश्वम्भर गुणावानं ॥ गुणातीत शिवरूप कृपाकर अनुपम अनघ अमानं ॥ अज अद्वैत विषम सम विग्रह श्रीपति दयानिधानं ॥ जगत जनक जगदीश चतुर्भुज मानी मान दमानं ॥ जगन्नाथ यज्ञेश्वर केशव भव अंबुधि जल यानं ॥ निराकार निर्लेव निरामय निहकल सकल समानं ॥ अधम उधारण सुरपति वल्लभ श्री वर चतुर सुजानं ॥ च्चिदानन्द कामारि सुवन्दित भक्त कमल वनभानं ॥ सुर रंजन जन हितू दयानिधि वपु कमनीय महानं ॥ पुराणेश पर ज्ञान परंपर विष्णु जिष्णु पर स्थानं ॥ कुंजलाल प्रभु कमलानायक गिरा गम्य परध्यानं ॥ २३ ॥ जय जय अकथ अकल अविनाशी श्रीवर वदनरसालं ॥ विश्वंभर सुरवसदन कृपा निधि श्रीधर जगतभुवालं ॥ रंजन सन्त अनघ

॥विकारी श्री नायक शुभकामं ॥ सुरपति प्रभु यज्ञेश मुरारी श्रीवल्लभ जयधामं ॥ करुणाम्बुधि अधम उधारी श्रीपति शुभग शरीरं ॥ अखिलेश्वर सुरमुनि भयहारी हरि कमलेश सधीरं ॥ मदन मनोहर शिव उरवासी कमलासन रमणीयं ॥ विभु महाबल जन सुख दाई श्रीकर खल दमनीयं ॥ सिंधु सुतेश्वर खगपति गामी परमेश्वर श्रुति सारं ॥ चक्रायुध पीतांबर कामद श्रीनायक वपुचारं ॥ सरसिज लोचन जगत विलासी श्री उर मानसहंसं ॥ चरित सिंधु बहुरूप प्रकाशी कमलासन अवतंसं ॥ निगमतल वैकुण्ठ निरामय श्रीभर्त्ता जन पालं ॥ श्रीदाता सचराचर नायक त्रिदशारी गण कालं ॥ गिरागम्य गीतीत विहारी अरुज अतीत अजातं ॥ अखिल लोकपति पतित उवारण कुंजलाल पितुमातं ॥ २४ जय श्रीवर लक्ष्मीपति केशव रमा कान्त सुखमूलं ॥ कलिमल हर विश्वेश्वरमापति सन्तत जन अनुकूलं ॥ कृपासिंधु वैकुण्ठ गदाधर विष्णू कमलानाहं ॥ अखिल भुवनपति चक्री अच्युत शमन दीन उरहाहं शिवमूरति भगवान ।

विश्वपति ललितानन हरिपालं ॥ हृषीकेश शरणागत वत्सल अनुपम अनघ रसालं ॥ करुणाभवन अनन्त अजर अज शिव उर कमल दिनेशं ॥ दिति नन्दन रिपु कलि विष हारी रमा स्वामि अखिलेशं ॥ चिन्त हरण चिन्तामणि कामद श्रीधर परमानन्दं ॥ अल रव अपार अचिन्तक माधव पद्मी करुणा कंन्दं ॥ विमल अमोघ उमेश्वर वल्लभ पीताम्बर मुख केतुं ॥ सिंधुजेश सचराचर वन्दित श्री पति त्रिभुवनरेतुं ॥ दया निकेत सुरासुर स्वामी त्रय विक्रम करतारं ॥ हृषीकेश हरि ईश्वर जिष्णुं सिंधुसुता भर्तारं ॥ भवरुज हर असुरारि मुरारी मधु सूदन जगतातं ॥ कुंज लाल प्रभु त्रिभुवन धाना लक्ष्मीश्वर पितुमातं ॥२५॥ जय जगवन्दन गुणगण मन्दिर श्री हरि करुणाकन्दं अगुण अनीह अमोघ अजेश्वर अज शिव हृदयानन्दं ॥ अरुज अकाम अकल अविनाशी कलिमल हर श्री विष्णुं ॥ अपर अपार रमापति केशव कमलापति श्री जिष्णुं ॥ अजर अमर अखिलेश्वर अच्युत करुणालय भगवन्तं ॥ अविगति ईश्वर

स्ववश विहारी जलशायी गुणवन्तं ॥ शिव वपु शिव प्रभु अगम अगोचर पुरुषोत्तम गुणसिंधुं ॥ अशरण शरण विबुध प्रभु रक्षक अनुपम रूप निवन्धुं ॥ दिति नन्दन रिपुदारिद्रभंजन पद्माउर सरहंसं ॥ सुख अम्बुद विश्वंभर कामद पोषण त्रय गुण वंसं ॥ जग वल्लभ हरि राय शंखधर स्वर व्यंजन श्रुति छन्दं ॥ अधम उधारण चक्री अविजित भुवनेश्वर निर्द्वन्दं ॥ हरि हर स्वामि चतुर्भुज विजयी गारुड़ध्वज श्री कन्तं ॥ कुंजलाल प्रभु कमला मोहन जपत जाहि शिवसन्तं ॥ २६ ॥ जय लक्ष्मीनारायण केशव जग हित रूप अनन्तं ॥ अधम उधारण त्रिभुवन नायक पतित उवार करंतं ॥ विश्वंभर जगदीश चतुर्भुज सुर मुनि शत्रु हनन्तं ॥ भव भय हरण अजेश रमावर शंकर हृदय वसन्तं ॥ अजर अमर अमराधिप धाता अमित अपार अचिन्तं ॥ गारुड़ध्वज सुख सदन कृपानिधि शिव अज वेद भनन्तं ॥ अगाह अगोचर अज अविनाशी अगणित वपुष धरन्तं ॥ कुंजलाल प्रभु दीन सहायक निश्चर निकर वधन्तं ॥ २७ ॥ जय

श्री करुणा सिंधु चतुर्भुज जन हित करण मु-
रारी ॥ चतुर्व्यूह चतुरानन ईश्वर गंजन व्यूह
मुरारी ॥ खगपतीश दनुजारि दयानिधि जन
रंजन जगदीश ॥ गरुड़ध्वज पीताम्बर अच्यु
त दनुज दलन लक्ष्मीश ॥ पुरुषोत्तम लक्ष्मी
नारायण दीनानाथ दयालू ॥ अकल अनी
ह अनामय अविगत सरसिजनयन विशा-
लू ॥ फणपतिशायी रमा मनोरम मधुसूदन
शिव रूपा ॥ मदन मनोहर माधव कामद
चक्री त्रय जगभूपा ॥ तुलसी प्रिय त्रिदशारि
गंजन लोकेश्वर निहकामी ॥ कैटभारि कलि
कलुष विभंजन कमलासन अभिरामी ॥ ध-
रणीधर धाता जगवल्लभ विश्वंभर शुभ ना-
मा ॥ गिरा गम्य हृषिकेश्वर पावन जगवन्द-
नसुखधामा ॥ अखिलेश्वर रणधीर गदा
धर त्रय जग आनंददाता ॥ जगन्ना भूषण
यमपुर भय हर हरि प्रभु करुणा शाला ॥ श्री
वर श्रीकर अरुज अकामी सुर नर मुनि हि-
तकारी ॥ दयासिंधु दीनारति भंजन कुंजला-
लभयहारी ॥ २८ ॥ जय श्रीनायक जगसु-
खदायक श्री वल्लभ भयहारी ॥ स्रष्टि ।

उपायक दीन सहायक केशव जन सुख कारी ॥ पुरुषोपेतू दयानिकेतू विश्वंभर वनवारी ॥ भव निधि सेतू त्रिभुवन हेतू त्रिदशेश्वर दुख टारी ॥ जन अघ हारी कष्ट निवारी हृषीकेश देव्यारी ॥ रमा विहारी हरि असुरारी परमेश्वर अविकारी ॥ अजित अमाना दया निधाना कमलापति दनुजारी ॥ चतुर सुजाना भव जल याना कमलासन चितहारी ॥ जगपितु माता त्रिभुवन त्राता प्रशमन भव रुजभारी ॥ वपुष सुहावन श्रीमन भावन विश्वभूपति उवारी ॥ श्रुति नयनेता करुणा केता श्रीधर विश्व अधारी ॥ युग जगा शेषा मंगल वेषा विश्वं विश्व विहारी ॥ परम पवित्रा रमा कलत्रा सुर मुनि विपति निवारी ॥ शिव अज वन्दित त्रिभुवन मण्डित श्रीकर अधम उधारी ॥ घर घर वासी आनन्द राशी सुर मुनि शत्रु संहारी ॥ अज अविनाशी विश्व प्रकाशी कुंजलालेश मुरारी ॥ २६ ॥ जय नारायण जन हितकारी त्रिभुवन पति सुख दाई ॥ अज अद्वैत चिदानंद चक्री जन त्राता जलशयी ॥ सिंधुजेश गोविन्द गदाधर करुणा

लय हरिराई ॥ वनमाली वैकुण्ठ रमावर श्री
धर दीन सहाई ॥ जन रंजन सुरराय चतुर्भुज
केशव जगत उपाई ॥ अखिल भुवन पति र-
मा मनोहर मंजन जन कठिनाई ॥ विश्वंभर श-
रणागतवत्सल हरण दीन अघसाई ॥ कुंजला-
ल प्रभु श्री मन मोहन प्रशमन अघ प्रभुताई ॥
॥३०॥ जयति चतुर्भुज चिन्ता मोचन चिदानंद
सुरहेतू ॥ पर ब्रह्म परमेश्वर पावन पुरुषोत्त-
म श्रुति सेतू ॥ भुवनेश्वर भगवान भक्त हित
भवरुज हर भगवन्ता ॥ विष्णु विराट रमेश्वर
माधव महावीर बलवन्ता ॥ जगत मूल योगी
श जगत हित जगतातम जगशेषू ॥ अना
द्यन्त अद्वैत अमर अज अपर अपार अले-
षू ॥ रमारमण रणधीर रमापति रति पति रूप
विशाला लक्ष्मीपति लक्ष्मी नारायण लोका
लोक भुवाला ॥ गरुड़ध्वज त्रय लोक प्रकाशी
गोरक्षक गोवासी ॥ निगम निरंजन नीतिधर्म
विद् निहकामी निधिराशी ॥ तत्त्व रूप तमचर
कुलनाशी तत्त्वज्ञंवित्तशेषा ॥ त्रिभुवन पति
त्रयताप विभंजन त्रिगुणातम अखिलेशा ॥
दशासदन दिति नन्दन वैरी दानव रिपु अविकारी

मधु सूदन मेधावी कामद मघवा स्वामि मुरारी ॥ सुर पालेश्वा सुरासुर नायक राजिव नयन अकामी ॥ कुंजलाल प्रभु करुणा मूरति श्री वर विश्वभिरामी ॥ ३१ ॥ जय पुरुषोत्तमरमा विहारी लक्ष्मीपति शिव रूपा ॥ भक्तहितू शरणागत वत्सल विश्वम्भर शिव भूपा ॥ पद्मा स्वामि रमेश श्री वर हृषीकेश बनमाली ॥ किल्विष हारि दयाल परम्पर सेवित ब्रह्म कपाली ॥ जन रंजन लक्ष्मी नारायण अविगति विश्वभिरामी ॥ दया निकेत चतुर्भुज चक्री अनुपम अकल अकामी ॥ अन्तर्यामी अलख निरंजन विश्वंभर कर्त्तारं ॥ विष्णु मुकुन्द गोविन्द राधाधर अच्युत जग भर्तारं ॥ मधु सूदन भगवान मुरारी श्री मोहन घन श्यामं ॥ कुंजलाल प्रभु जन भय हारी भुवनेश्वर शुभ नामं ॥ ३२ ॥ मरकत वपु शुभ भाल मनोरम केसर तिलक छजंतं ॥ मौलि मुकट रवि निन्दक श्रवण न कुण्डल ललित लसन्तं ॥ विद्रुम अधर कपोल परम छवि मनसिज निरखि लजन्तं ॥ कुन्द मुकुल दशनावलि पावन सुसकनि फूल झरन्तं ॥ कंबु कण्ठ बन माल कौस्तुभ ।

शोभा अमित अनन्तं ॥ उदर अनूपजलधि शुभ सुन्दर छवि वर वारि भरन्तं ॥ त्रिवलि रेख लावण्य सुखालय शुभगा तरंग उठन्तं ॥ रुचिर चारु कर अनुपम सुन्दर त्रय जग पोष करन्तं ॥ कटि पीताम्बर तड़ित विनिन्दक सुर मुनि चित्त हरन्तं ॥ पद जल जात शंभु अज सेवित कुंज प्रभू श्री कन्तं ॥ ३३ ॥ विश्वंभर तुव नाम कृपा निधि विश्व बीच हौं रहहूँ ॥ विनय करौं कर जोरि दीन ह्वै नाथ यहै वर चहहूँ ॥ सब विधि पालन मेरो करिये कृपा सिन्धु जग हेतू ॥ नातरु काढ़ि विश्व सो दीजे रमा रमण श्रुति सेतू ॥ नाकरि सको जुदो मैं एकहु रमाईश ॥ सुख धामा ॥ कुंजलाल बिनती सुनि त्यागहु विश्वंभर निज नामा ॥ ३४ ॥ जय जय मन सिज रूप कृपा निधि केशव स्वबश बिहारी ॥ पुरुषोत्तम जगदीश्वर श्री पति अविजित हरी मुरारी ॥ सुन्दर श्याम चतुर्भुज कामद सुर मुनि हितु असुरारी ॥ परमेश्वर पर आत्म परम्पर रमा रमण अविकारी ॥ अज अद्वैत अनन्त असुर रिपु सेवित अज त्रिपुरारी ॥ अगुण अमोघ अनघ श्री नायक त्रय

गुण जग विस्तारी ॥ हृषीकेश वैकुण्ठविश्व म॰
य शुभग पीत पट धारी ॥ चक्रपाणि परमेश्वरपर
मित निगम धर्म उपकारी ॥ अधम उधारण श्री
धर माधव अविगत पतित उवारी ॥ कुंजलाल
प्रभु लक्ष्मी वल्लभ संतन जन हितकारी ॥ ३५ ॥
जय जय श्रीधर जन अघ भंजन श्रीवर खगपति
गामी ॥ विष्णु जिष्णु भगवान जगतपति जन रंज॰
न सुख धामी ॥ व्यक्ता व्यक्त स्वरूप गदाधर अवि
गत अंतर्यामी ॥ भुवन चतुर्दश नायक अच्यु
त अनुपम अनघ अकामी ॥ अकल अनीह।
अजर जग वंदन मुरजित रमा भिरामी ॥ अलख
अनन्त अगाह अविनाशी अज वन्दित निहका॰
मी ॥ अगुण सगुण वपु पतित उवारण पुरुषो॰
त्तम शुभ नामी ॥ कुंजलाल प्रभु रमा प्राणप॰
ति हरि प्रभु जग विश्रामी ॥ ३६ ॥ चिदान॰
न्द जगदीश रमापति श्री कमला उर माली ॥
गरुड़ध्वज श्रीराय कृपानिधि चक्रायुधज॰
गपाली ॥ हरि वैकुण्ठ मुकुन्द गदाधर सुन्द॰
र वपुष तमाली ॥ सुर मुनि रंजन जन सुख
दायक भंजन असुर कुचाली ॥ परमेश्वर
शिव रूप परम्पर प्रशमन भव रुज जाली ॥

कुंज लाल प्रभु शिव अज वन्दित नारायण बनमाली ॥ ३७ ॥ जय जग वन्दन जय जग नायक पुरुषोत्तम सुखदाणी ॥ विष्णु मुकुन्द रमा उर चन्दन पीताम्बर अविनाणी ॥ भुवनेश्वर वैकुण्ठ रमावर अविजित रमा निवासी ॥ चक्रपाणि चतुरानन कर्त्ता श्रीधर चित्त हुलासी ॥ भव रुज भेषज अलख निरंजन शंकर हृदय अवासी ॥ वपु कमनीय चतुर्भुज कामद सन्तत स्ववशा विलासी ॥ पुरुषोत्तम नारायण माधव अनुपम रूप प्रकाणी ॥ कुंज लाल भय हरण दीन हित अज वन्दित कैलाणी ॥ ३८ ॥ भवनेश्वर सुखदानि रमावर श्री वर अधम उधारी ॥ गिरागम्य कलि कलुष निकन्दन त्रिपुरारीशा मुरारी ॥ मधु सूदन श्री विष्णु चतुर्भुज सुरपति प्रभु भय हारी ॥ कालि मल हर वैकुण्ठ गदाधर श्री नायक दनुजारी ॥ अपारण पारण गतागत भय हर चक्री ॥ जन दुखहारी ॥ भगवन्त पार ब्रह्म परमेश्वर अमित रूप असुरारी ॥ कैटभजित विश्वंभर कामद जन रंजन शुभचारी ॥ सिन्धु

सुतापति जन सुखदायक ॥श्रित निश्रित॰
शुभधारी ॥ सरसिज लोचन रमा मनोहर शि॰
व मूरति सुख कारी ॥ कलि विषहारि मुकुन्द ज॰
गतपति कुंजलाल भयटारी ॥ ३९ ॥ जय गा॰
रुड़ध्वज श्रीपति केशव दीनानाथ दयालं ॥ ख॰
गपति पति ॥शघहरण रमावर माधव वदन र॰
सालं ॥ विश्व विमोहन रमा मनोहर मायाधि॰
पखलशालं ॥ ॥अच्युत ॥अज ॥अविनाशी का॰
मद मेधावी सुरकालं ॥ पद्मीपद्मालयाविहा॰
री श्रीधर रूप तमालं ॥ नलज नयन वि॰
श्वेशचतुर्भु जभुवन चतुर्द॰ पालं ॥ ॥अनुपमदया
सिंधु जगवन्दन श्रीधर शंभु भुवालं ॥ शिव
चतुरानन उर सरपावन श्रीयुत राज मरालं ॥
करुणापुंज जगत पति जिष्नू विष्णु मुकुन्द
कृपालं ॥ कलि विष हर हृषिकेश मुरारी ॥
सुन्दर नयन विशालं ॥ विरुज विशोक शोक
हर श्री निधि नाशन मृत्यु नकालं ॥ कमला
नायक कारण कारण शोभापुंज सुखालं ॥
श्रीसुख चन्द्र चकोर रमावर नीरधिजा उर मा॰
लं ॥ गुणमन्दिर निहकाम निरामय श्रीधर
॥शरण पालं ॥ वनमाली देवादि हलायुध

वैनतेय भवव्यालं ॥ रमा रमण लक्ष्मी ना-
रायन प्रणमित जन कुंजलालं ॥ ४०॥ जय
जय विष्णु कृपाल रमावर केशव सारंग पा-
णी ॥ चक्र पाणि वैकुण्ठ गदाधर मनुपम मा-
नदमानी ॥ भयकृत भयहृत श्री धर पावन
विश्वंभर शुभखानी ॥ पुरुषोत्तम परमोत्तम
कामद अनुपम अजित अमानी ॥ व्यक्ता
व्यक्त अलख अविनाशी शमनजीव कल
कानी ॥ कुंजलाल प्रभु रमा मनोहर सर्वोप-
रि सुखदानी ॥ ४१॥ कलि मल हर जन कष्ट
निवारण करुणामय कमलेशं ॥ खगपति
पति दनुजारि मुरारी विश्वंभर सर्वेशं ॥
विष्वक्सेन निरामय केशव गुणातीत गु-
ण राशिं ॥ श्रीवित्त चोर चतुर्भुज चक्री चतु-
रानन चित वासिं ॥ भूत्तभव्य भवतेश क्षमा
धर गुण मन्दिर शिवरूपं ॥ जगवल्लभ जग
दीश जगत्पति जगतातम जगभूपं ॥ मधु
सूदन हरि राय गदाधर मनसिजारि पति रामं
॥ निराकार वैकुण्ठ विहारी निरालंब निहक-
मं ॥ अशरण शरण विबुधपति स्वामी श्री
धर चित्त उदारं ॥ दयासिंधु भवसागर बोहित

श्री नायक श्रुति सारं ॥ कैटभारि जलशायी परमित शमन महारुज दाहं ॥ अखिलेश्वर शिव धाम शोक हर हरि ईश्वर श्री नाहं ॥ सनकादिक उर सारित मराल नारायण जन पालं ॥ चक्रपाणि हृषिकेश विश्व हित प्रणामित जन कुंजलालं ॥ ४२ ॥ सुरकुल मंडनजन उर चन्दन राजिव नयन मुरारी ॥ त्रिभुवन बन्दन दनुज निकन्दन विश्वंभर विश्व विहारी ॥ कलिमल गंजन मधु मुर भंजन भव नायक असुरारी ॥ अलख निरंजन जन मन रंजन श्री वल्लभ दनुजारी ॥ भव रुज घायक जग उपजायक श्रीधर पतित उबारी ॥ जन सुख दायक कुंज सहायक हरि प्रभु अधम उधारी ॥४३॥ सरसिज लोचन करुणा मन्दिर नारायण शिवरूपं ॥ सुरमुनि पाल मुकुन्द चतुर्भुज हरि ईश्वर विधिभूपं ॥ विश्वंभर वनमाली केशव माधव त्रिभुवन पालं ॥ अविगत अच्युत विष्णु गदाधर श्री वर विश्वभुवालं ॥ अनुपम कामद अकल अनघ अज सुखनिधि रूप मनोजं ॥ कुंजलाल भजुमन क्रम वाणी श्री हरि चरण सरोजं ॥४४॥ जय॰

जगतारण पतित उवारण श्रीवर करुणा के
तुं ॥ कारण कारण अधम उधारण श्रीवल्ल
भ जगहेतुं ॥ रमा विहारी अनघ मुरारी सुख
अंबुधि श्रुति सेतुं ॥ जगताधारी जनभय हा
रीकेशव पुण्योपेतुं ॥ अज अविनाशी आनं
दराशी विश्वंभर जगरेतुं ॥ स्ववश विलासी
सबघट वासी श्रीधर दया निकेतुं ॥ त्रय जगा
स्वामी अलख अकामी सुरमुनि शत्रु हनेतुं
॥ रमाभिरामी खगापति गामी कुंजप्रभू श्रुति
नेतुं ॥ ४५॥ सुख निधि पुण्योपेतु दयानिधि
केशव कलि मल हारी ॥ कलि कलुष ज्वर
हर मधु सूदन श्रीनायक सुखकारी ॥ यज्ञ
पुरुष जगदीश चतुर्भुज जगन्नाता असुरारी ॥
मंगलसदन रमेश अचिन्तक विश्वेश्वर दनु
जारी ॥ निशिचर गंजन पतित उवारण अज
अद्वैत मुरारी ॥ कामी कामद करुणा मान्दिर
कंवी विश्व अधारी ॥ त्रिलोकात्म त्रयलोक
विभूषण त्रिदशेश्वर वनवारी ॥ कुंजलाल
दुख हर श्रीवल्लभ कमला प्रभु अघहारी ॥
४६॥ सुखदायक श्रीनायक विष्णू हरिवल्ल
भ वनवारी ॥ सुरपाली वनमाली कामद

जन रंजन अघ हारी ॥ परमेश्वर अखिलेश्वर श्री वर केशव अज अविकारी ॥ भय हारी दनुजारी माधव कैटभ शत्रु मुरारी ॥ खलगंजन अघ भंजन पद्मी श्री पति जग हितकारी ॥ भय खण्डन जग मण्डन अनुपम कुंज प्रभू दनुजारी ॥ ४७॥ भव रुज हर भगवानर मावर बासव पति सुखदानी ॥ कलिमल शमन दयाल चतुर्भुज श्री धर सारंग पानी ॥ सुख अंबुद परमेश्वर विष्णू अजित अनघ अघ हानी ॥ जगन्नाथ जगदीश वादा धर अनुपम अलख अमानी ॥ अधमउधारण त्रिभुवन वन्दित चतुरानन शुभ खानी ॥ कुंजलाल प्रभु कमला मोहन सेवित शंभु भवानी ॥ ४८॥ जयति चतुर्भुज हरि गरुड़ध्वज परमेश्वर सुख कन्दं ॥ पद्मा मोहन सुन्दर सोहन मेटन भवरुज द्वन्दं ॥ हरि हर ईश्वर दीन जनेश्वर मधुसूदन भयहारी ॥ करुणा केतु सुर मुनि हेतु विष्णु रमा सुख कारी ॥ भव रुज नाशी आनंद राशी भुवनेश्वर निहकामी ॥ अलख अचिन्तक अनघ अवन्धक कमला रमन अभिरामी ॥

श्री घनश्यामा पूरन कामा माधव त्रय जगता ता ॥ दया निधानू भवजल यानू असुर शत्रु शुभ गाता ॥ मंगल मूलं जन अनकूलं पीतांबर सुखगाथं ॥ कुंज सहायं अजित अमायं श्री वर लक्ष्मी नाथं ॥ ४९ ॥ जय जगवन्दन हरी रमावर श्रीधर करुणा गाता ॥ भव निधि पोत दयाल मुरारी परमेश्वर सुर त्राता ॥ शिव उर कमल तमारि गदाधर भयहारी भयदाता ॥ भगवत कारण कारण ईश्वर श्रीवर त्रिभुवन धाता ॥ पतित उवारण सुरमुनि रंजन विश्व विश्व विधाता ॥ विष्णु मुकुन्द अभय अविनाशी कुंजलाल पितु माता ॥ ५० ॥ जय श्री नाथ रमेश दयानिधि अखिलेश्वर घनश्यामा ॥ दया निकेत मुरारी कामद पद्मालया भिरामा ॥ विश्वंभर जगदीश कृपालय वनमाली जय धामा ॥ सुरपति शत्रु विमरदन भयहर अज अद्वैत अकामा ॥ गिरागम्य गोतीत गदाधर श्री वर सुघर ललामा ॥ हृषीकेश मधुसूदन माधव कुंजेश्वर शुभ नामा ॥ ५१ ॥ जय विश्वेश्वर मन्दर धारण जन त्राता सुर पालू ॥

कमला मोहन अधम उधारण केशव दीन दयालू ॥ अलख निरंजन चक्री कामद विश्वंभर विश्व भुवालू ॥ जगत रेत भवसागर वो हित त्रिलोकात्म त्रयकालू ॥ विबुधपाल भय हरण हरेश्वर अनुपम रूप तमालू ॥ रमा प्राण पति लक्ष्मीवल्लभ सरसिज नयन विशालू ॥ सगुण अगुणवपु करुणा मंदिर शिवमूरति जनपालू ॥ हृषीकेश वनमाली अच्युत लक्ष्मी प्रभु कलि कालू ॥ श्री मुख चन्द्र चकोर दीन हित दिति नन्दन उर सालू ॥ कुंजलाल प्रभु दीन सनेही सिंधु सुताहिय मालू ॥ ५२ ॥ जय शिव रूप गदाधर विस्तु कृष्ण गोविन्द मुरारी ॥ मधु सूदन वैकुण्ठ रमेश्वर केशव जगत अधारी ॥ शरणा २ शरण गतागत भयहर अखिलेश्वर वनवा री ॥ भयहृत भयकृत मानी मानद श्रीधर जग हित कारी ॥ अगम अगोचर त्रिभु वन नायक विश्वंभर असुरारी ॥ महामूर्ति महिवेदन हरता गुणातीत अघहारी ॥ निर गुण सगुण विषम सम विग्रह श्री वरपति उवारी ॥ चक्री धन्वी दीनसनेही अज करता

॰अविकारी ॥ भक्त जलज वन दिन मणि प-
द्मी ॰अघ ॰अहिगण उरगारी ॥ क्रोध ॰अनल
जल विग्रह श्री निधि तृष्णा तिमिर तमारी ॥
शिव उर कुमुद निशेश्वर माधव मधुकैटभ
क्षयकारी ॥ कुंजलाल प्रभु जन सुख दाता व-
न्दित ॰अज त्रिपुरारी ॥ ५३ ॥

छन्दगीतिका

मनसिजरिपु वन्दित श्रीवल्लभ सुख निधि के-
शव करुणा कन्द ॥ सिन्धु सुता पति त्रय जग
वन्दन विष्णु रमा पति नित्यानन्द ॥ मधु सूदन
नारायण माधव जन उर चंदन शिव ॰अजभूप
॥ परमेश्वर ॰अविकार जगत पति पुरुषोत्तम
हरि वपुष ॰अनूप ॥ रमा रसिक सुख सदन कृ-
पा निधि विश्वेश्वर हरि स्वामि ॰अनन्त ॥ कुंज
लाल प्रभु रमा मनोहर पद्मी कंवी कमलाक-
न्त ॥ ५४ ॥ जय जय जय लक्ष्मी नारायण ।
श्रीपति चक्री रूप तमाल ॥ जगन्नाथ जग-
दीश मुरारी हरी चतुर्भुज नयन विशाल ॥
गुणातीत निहकाम निरामय कमलासन
पति गात रसाल ॥ इंद्रा प्रभु सुर शत्रु नि क-
न्दन लोकेश्वर त्रिदशेश भुवाल ॥ चतुरातम

चतुरानन वन्दित हरि हर स्वामी त्रिभुवन पा
ल ॥ कलिमल हर कमला नारायण सगुण ।
अगुण पालन कुंजलाल ॥ ५५ ॥ सरसिज
लोचन जनभय हारी विष्णु गदाधर दीन जने
श ॥ अधम उधारण रमा मनोहर त्रयजग
वन्दित उमापतेश ॥ चक्रपाणि विश्वंभर
कामद शिवमूरति हर ईश रमेश ॥ गीरवाण
प्रभु गुणागण मन्दिर विरागम्य गोतीत परे
श ॥ कलिमलहल्लक्ष्मी नारायण अज अद्वैत
अजित अखिलेश ॥ कुंजलाल प्रभु विश्व
विमोहन भक्तु जन सुखदा शमन कलेश ॥
॥ ५६ ॥ जयति रमावर शिव वपु कामद हरण
अमंगल भव रुजभीर ॥ मधु सूदन हृषिकेश
गदाधर श्रीधर माधव अतुलित धीर ॥ विश्व
भर वनमाली चक्री विष्णु जगतपति हरि सर
वादि ॥ विश्वेश्वर वैकुण्ठ श्रीवर केशव गो
विंद शमन विषाद ॥ पद्मनाभ परमेश्वर पा
वन पतित उवारण करुणाकन्द ॥ रमामनो
हर रूपचराचर कृष्ण मुकुन्द अमोघ अद्वन्द
॥ विश्वेरत नारायण नय विद पावक क्षिति
जलपवन अकाश ॥ महादेव महि नाह

मुरारी कुंजेश्वर श्री रमा निवास ॥ ५७॥ नीलेन्दी वर श्याम चतुर्भुज केशव माधव चित्त उदार ॥ संशय हरण दीन सुखदायक विश्वंभर हरि विश्व अधार ॥ गारुड़ध्वज श्री विष्णु गदाधर अच्युत अविगत विश्व भुवार ॥ अलख निरंजन दूषण हरता सब घट व्यापक अजित मुरार ॥ कलि विष शमन दयानिधि श्रीधर अगाम अगोचर अपर अपार ॥ निगम तत्व नारायण श्रीपति हरण अमंगल रहित विकार ॥ अनघ अनन्त चिदानंद चक्री सुर त्राता जग सिर्जनहार ॥ कुंजलाल प्रभु लक्ष्मी ईश्वर अमित अगाह वन्दित त्रिपुरार ॥ ५८ ॥ विश्वंभर मेधावी श्री हरि विष्णु जगतपति विश्वभिराम ॥ विष्वकसेन अजर अविनाशी खगपति गामी रूपललाम ॥ कृष्ण मुकुन्द रमापति माधव निरालंब निहकल निहकाम ॥ सुन्दर वदन चतुर्भुज श्रीवरुप नुपम ईश्वर अजित अकाम जगत जनक पीतांबर श्रीधर शिव अजवल्लभ करुणा धाम ॥ कुंजलाल प्रभु पतित उबारण केशव चक्री अज श्री राम ॥ ५९ ॥ जन हितकारी सुरपति ईश्वर केशव माधव शिव अजभूप ॥

अनघ अचिन्त अदृश्य अनामय राजिव लोच
न करुणा रूप ॥ श्रीधर विष्णु चतुर्भुज अच्युत
अखिल भुवनपति धर्म स्वरूप ॥ विश्व जनक
योगेश्वर विद्यानंद प्रशमन त्रय विध भयभव कू
प ॥ अलख निरंजन शिव अज वन्दित धर्मी
धाता प्रगट अलूप ॥ कुंजलाल प्रभु रमा मनो
हर अकल अनीह अमोघ अनूप ॥ ६०॥ वि
श्वंभर लक्ष्मीनारायण केशव माधव त्रय जग
त ॥ शिव अजसेव्य गदाधर कामद चक्री
अच्युत करुणाकेत ॥ विष्णु मुकुन्द अमल
अविनाशी श्रीधर श्रीवर हरिश्रुतिसेत ॥
मधुसूदन परमेश्वर धाता पतित उबारण पु
ण्योपेत ॥ गरुडध्वज निहकाम मुरारी दीन
जनेश्वर दयानिकेत ॥ कुंजलाल सुख दाय
रमावर सविता लोचन त्रिभुवन हेत ॥ ६१॥
पतित उबारण जन सुखदायक श्रीवर अ
च्युत कमला कन्त ॥ शिव अज स्वामि गदा
धर विष्णु पीताम्बर पालन सुरमन्त ॥ विश्वंभ
र सुखधाम श्रीधर केशव माधव हरि भगवंत
॥ गरुड़ध्वज घन श्याम चतुर्भुज अनघ अ
मोघ अजीत अचिन्त ॥ परमेश्वर पुरुषोत्तम

मुरारी कुंजेश्वर श्री रमा निवास ॥ ५७ ॥ नीलेन्दी वर श्याम चतुर्भुज केशव माधव चित्त उदार ॥ संशयहरण दीन सुखदायक विश्वंभर हरि विश्व अधार ॥ गारुड़ध्वज श्री विष्णु गदाधर अच्युत अविगत विश्वभुवार ॥ अलख निरंजन दूषण हरता सबघर व्यापक अजित मुरार ॥ कलि विष शमन दयानिधि श्रीधर अगाम अगोचर अपर अपार ॥ निगम तत्व नारायण श्रीपति हरण अमंगल रहित विकार ॥ अनघ अनन्त चिदानंद चक्री सुर त्राता जगसिर्जनहार ॥ कुंजलाल प्रभु लक्ष्मी ईश्वर अमित अगाह वन्दित त्रिपुरार ॥ ५८ ॥ विश्वंभर मेधावी श्री हरि विष्णु जगतपति विश्वभिराम ॥ विष्वक्सेन अजर अविनाशी खगपति गामी रूपललाम ॥ कृष्ण मुकुन्द रमापति माधव निरालंब निहकल निहकाम ॥ सुन्दर वदन चतुर्भुज श्रीवरुप नुपम ईश्वर अजित अकाम जगत जनक पीतांबर श्रीधर शिव अजवल्लभ करुणा धाम ॥ कुंजलाल प्रभु पतित उबारण केशव चक्री अज श्री राम ॥ ५९ ॥ जन हितकारी सुरपति ईश्वर केशव माधव शिव अजभूप ॥

अनघ अचिन्त अदृश्य अनामय राजिव लोच
न करुणा रूप ।। श्रीधर विष्णु चतुर्भुज अच्युत
अखिल भुवनपति धर्मस्वरूप ।। विश्व जनक
योगेश विद्यानंद प्रशमन त्रय विध भयभव कू
प ।। अलख निरंजन शिव अज वन्दित धर्मी
धाता प्रगट अलूप ।। कुंजलाल प्रभु रमा मनो
हर अकल अनीह अमोघ अनूप ।। ६०।। वि
श्वंभर लक्ष्मीनारायण केशव माधव त्रय जग
त ।। शिव अजसेव्य गदाधर कामद चक्री
अच्युत करुणाकेत ।। विष्णु मुकुन्द अमल
अविनाशी श्रीधर श्रीवर हरिश्रुतिसेत ।।
मधुसूदन परमेश्वर धाता पतित उबारण पु
ण्योपेत ।। गरुडध्वज निहकाम मुरारी दीन
जनेश्वर दयानिकेत ।। कुंजलाल सुख दाय
रमावर सविता लोचन त्रिभुवन हेत ।। ६१।।
पतित उबारण जन सुखदायक श्रीवर अ
च्युत कमला कन्त ।। शिव अज स्वामि गदा
धर विष्णु पीताम्बर पालन सुरसन्त ।। विश्वंभ
र सुखधाम श्रीधर केशव माधव हरि भगवंत
।। गरुड़ध्वज घन श्याम चतुर्भुज अनघ अ
मोघ अजीत अचिन्त ।। परमेश्वर पुरुषोत्तम

कामद चतुरानन शिव हृदय बसन्त ॥ कुंज-
लाल प्रभु लक्ष्मी मोहन भुवनेश्वर श्रीराय अ-
नन्त ॥ ६२ ॥ भजु विष्णु मन जगत हित कारी श्री
वर केशव त्रय जगतात ॥ शंकरण प्रद्युम्न अ
नघ अज अनिरुध श्रीधर सुन्दर गात ॥ कैट
भारि मधु सूदन चक्री सुरमुनि ईश्वर दनुज अ
रात ॥ अलख अनूपम अविगात अच्युत अ
कथ अकामी अरुज अजात ॥ वासुदेव वै-
कुण्ठ मुरारी अधम उधारण त्रिभुवन त्रात ॥
कुंजलाल प्रभु शोक नशावन जन सुख दाय-
क जग पितु मात ॥ ६३ ॥ विष्वक्सेन रमावर
केशव त्रिभुवन नायक करुणाकेत ॥ अवि
गत कृष्ण रमावर केशव त्रिभुवन नायक क-
रुणाकेत ॥ अविगत कृष्ण रमापति विष्णु
चन्द्र वदन भव सागर सेत ॥ सुरपति ईश मु-
रारि गदाधर चतुरानन प्रभु त्रय जगरेत ॥ भुव
नेश्वर लावण्य कलेवर हरि हर प्रभु हरि पुरुषो
पेत ॥ सुर मुनि रंजन अज अविनाशी सेव्य
चराचर त्रिभुवन हेत ॥ मधु सूदन जगदीश
जगत पति कुंजलाल भजु करि उर चेत ॥
॥ ६४ ॥ जय परमेश्वर केशव माधव करुण

अंबुद दीनदयाल ॥ अज अरिवलेश मुकुन्द मुरारी विश्वंभर त्रयलोक भुवाल ॥ हरि असुरारि अनूपम अच्युत अहिप साइपदेश कृपाल ॥ चतुर्वेद विद अलख निरंजन दीनारत हर रूप तमाल ॥ विश्व विमोहन सुरपति ईश्वर गरुड़ध्वज पद्मा उरमाल ॥ किल्विष हर श्री रमण दीन हित कुंज प्रभू सुखनिधि जगपाल ॥ ६५ ॥ चक्रपाणि जगदीश जगतपति रमा रमण हरि श्री भगवान ॥ कृष्ण विष्णु नारायण श्रीधर लेखेश्वर पति अज शुभखानि ॥ अलख अचिन्त्य अगाह अविनाशी अनघ अमोघ अरुज श्रीमान ॥ भय हर्ता भय दाय गदाधर मानी मानद सुर कुल भान ॥ विमल मुकुन्द सुरासुर वन्दित अधम उधारन दयानिधान ॥ कुंजलाल भव शमन कृपा युत अमराधिप पति अमित अमान ॥ ६६ ॥ अंबुध दुहिता नाह गदाधर श्रीवर हरि वैकुण्ठ सुरार ॥ करुणा पुंज विश्वपति माधव अगम अगोचर अलख अपार ॥ अज सुख धाम चतुर्भुज केशव परब्रह्म त्रय लोक अधार ॥ रंजन सन्त रमेश्वर चक्री

जन दुख हर्त्ता दया अगार ॥ अशरण शरण अकल परमेश्वर त्रिभुवन पति शिव वपु कार ॥ चिदानन्द जन चिन्ता प्रशमन। कैटभ जित पद्मा उरहार पीतांवर हरि राय बकोदर सगुण अगुण वपु त्रय जग सार ॥ ॥ कुंज लाल प्रभु लक्ष्मी नायक अखिलेश्वर जन सिर जन हार ॥ ६७॥ कैटभजित विश्वंभर कामद हरि प्रभु हरि पति त्रिभुवन राय॥ हरी दिशोकी शोक विनाशन केशव भंजन असुरनि काय ॥ हृषिकेश्वर मधु सूदन गोविंद कमलासन प्रभु अजित अजाय ॥किल्विष हर सुख पुंज रमावर मुरजित माधव जन सुख दाय॥ विष्णु मुकुन्द चतुर्भुज श्री धर मानी मानद दीन सहाय ॥ कुंज लाल निशवासर भजु तू श्री रमण पद काम विहाय ॥ ६८॥ अज अद्वैत रमा उर चन्दन हरि ईश्वर शिव रूप मुकुन्द ॥ अगम मनोपम शंकर वन्दित सुवस विहारी परमानन्द ॥किल्विष हर जगदीश दया निधि विष्णु चतुर्भुज करुणा कन्द ॥ नव जीमूत वपुष। जग त्राता रमा मनोरम नित्यानन्द ॥ सत्य

सिन्धु सविताक्ष सर्व मय यज्ञ पुरुष यज्ञेश।
गोविन्द ।। कुंज प्रभु जगन्नातिम माधव
गो वपु गो प्रभु गोकुल चन्द ॥ ६८ ॥ सुर मुनि।
पाल रमेश गदाधर श्री पति केशव दीन दयाल
॥ मंगल मणि सुर सन्न विपति हर पुरुषोत्तम ह-
रि रूप विशाल ॥ संकट शमन विबुधरिपु गं-
जन मधु मर्दन सुरराय सुवाल ॥ अशरण
शरण अमर गण रक्षक अखिलेश्वर श्री रम-
ण कृपाल ॥ विष्णु कृष्ण पद्मेश मुरारी अच-
रय अनूपम वदन रसाल ॥ कुंज लाल प्रभु रमा
मनोहर हरि हर ईश्वर रूप तमाल ॥ ७० ॥
कलि मल हर हरि रमा मनोहर श्री वर श्रीक-
र सिन्धु सुतेश ॥ गरुड़ध्वज वैकुण्ठ गदाधर
अनुपम अमल अकल अखिलेश ॥ भव।
भय शमन मुरारी माधव अहिप शयन शिव
रूप अजेश ॥ रमा पति पति श्रुति सेतु दयानि-
धि जग हित श्री वर हरण कलेश ॥ विष्णु मु-
कुन्द विमल जग वन्दन केशव चक्री उमापते-
श ॥ परमातिम भूतातिम परसित विश्वम्भर
अज कुंज जनेश ॥ ७१ ॥ हरहु रमापति श्री
वर विष्णु करुणा मय शिव अज कर्त्तार ॥

करि निज शरणा हरहु मम संकट श्रीपति केशव चित्त उदार ॥ यद्यपि हौं अति अधम पात की कुटिल कुबुद्धि अरु कुविचार ॥ भक्तिभजन महँ चित्त न लागै सत्य कहौं निज वदन पुकार ॥ अगणित अयुत अशंख द्रोह मैं करे अहर्निश वारं वार ॥ तुम सब क्षमहु दयाल मुरारी कुंज प्रभू निज ओर निहार ॥ ७२ ॥ मम बिन्ती सुनिये श्री नायक करुणा पुंज रमेशा मुरार ॥ अधम उधारणा दीन सनेही दया रूप हरि जगत अधार ॥ अशरन शरणा पतित गति दाता श्रीधर माधव जग कर्तार ॥ दीना नाथ अनुग्रह मूरति अखिलेश्वर अज अपर अपार ॥ गरुड़ध्वज सुख सदन कृपालय कलिमल हर्त्ता दया अगार ॥ दै निज शरणा हरहु मम संकट कुंजलाल प्रभु लेहु उबार ॥७३॥

छन्द तोटक ॥

जय सिन्धु सुता पति श्री रमनं गरुडेशा रमेशा रुजा दमनं।दनुजारि कृपाल दया सदनं अखिलेशा अजेशा अमी वदनं ॥ कमलेशा भवेशा अभय करनं मधु सूदन चक्र गदाधरनं

॥ जगदीश श्रीश असुर दलनं अघ भंजन। दुष्ट गनं घलनं ॥ श्री विस्नु मुकुन्द जगा भरनं सुरव पुंज हरी शरणा शरनं ॥ भगवन्त अनन्त दया अयनं हृषिकेश्वर जिस्नु अहिप शयनं ॥ कुंजलाल भुवाल अजा अमलं विबुधेश विशाल वली विमलं ॥ ७४॥ घन स्याम अकाम अमंगालहा॥ सुररंजन भंजनदोष महा ॥ जग पालक नाशक वन्द रवलं ॥ सुर नायक घायक दुष्ट वलं॥ जग भूषण दूषण नाश करं॥ अज भूप अनूप दयाल परं ॥ जग वन्दन गंजन घोर रुजा ॥ भगवन्त अनन्त अनीह अजा ॥ निष्काम सकाम सुरेश पती ॥ जग तारण कारण चारु मती ॥ अखिलेश्वर रमेश रमा सुरवदा ॥ सर्व्वेश अजीत अतीत सदा ॥ सचरा चर वन्दित अज कर्त्ता ॥ हृषिकेश मुकुन्द जगत भर्त्ता ॥ दनु जारि श्रीश अमानि हरी ॥ सर्व्वादि अनादि सुरारि अरी॥ सुरव खानं सुजान कृपा सदनं ॥ कुंजलाल भुवाल हिमी वदनं ॥ ७५॥ जन रंजन के-शव कंज मुखं ॥ भय भंजन नायक दीन सुखं ॥ करुणा निधि दीन दयाल हरी॥ अय

लोक विभूषण दुरित अरी ॥ पद्मेश मुकुन्द कृपा सदनं ॥ असुरारि मुरारि अमी वदनं ॥ मधु सूदन माधव लोक विभो ॥ शरना गति वत्सल इन्द्र प्रभो ॥ सुर सन्न हितू कर चक्र धरे ॥ कुंजलाल प्रभू जय विष्णु हरे ॥ ७६ ॥ असुरारि सुरारि विनाश करं ॥ सुर रंजन गंजन पाप थरं ॥ सुख रूप अनूप रमा रमनं ॥ हृषि केश अजेश दया भवनं ॥ जन त्रात अजात मुरारि हरिं ॥ अघ घायक नायक कामअरिं ॥ सर्व्वेश पवित्र विचित्र वपुं ॥ जगवन्दन खण्डन लेख रिपुं ॥ भगवन्त अनन्त गदा धरनं ॥ जग सार अपार जगा भरनं ॥ भगवान अमान दया सदनं ॥ जग पाल दयाल दनुज कदनं ॥ भव खण्डन मण्डन देव कुलं ॥ अखिलेश शिवेश अकल अतुलं ॥ विश्वंभर श्रीधर लोक पतिं ॥ कुंजलाल मुवार सुधर्म रतिं ॥ ७७ ॥ विश्वंभर केशव श्री रमनं ॥ हृषिकेश गोविन्द असुर हमनं ॥ पद्मासन ईश दया वपुषं ॥ भव सागर पोत महा पुरुषं ॥ श्री नायक विष्णु जगा भरनं ॥ मधु सूदन कामद भव

हरनं ॥ भव बंधनिकन्दन दीन हितं ॥ कुसु-
मायुध रूप दयाल चितं ॥ कमलासन स्वा-
मि खगेश पतिं ॥ कुंजलाल प्रभू सुर सन्नर-
तिं ॥ ७८ ॥

छन्दत्रभंग

जय विश्वंभर करुणा मन्दिर अनुपम सुन्द
र पाहि प्रभो ॥ जय सुर मण्डन त्रय जग वन्द-
न श्री उर चन्दन पाहि प्रभो ॥ जय श्री नाय-
क सृष्टि उपायक दीन सहायक पाहि प्रभो ॥
जय शिव रूपं त्रय जग यूपं अग जग भूपं पा
हि प्रभो ॥ जय जन रंजन अलख निरंजन
कैटभ गंजन पाहि प्रभो ॥ जय श्री रमनं दि-
ति सुत दमनं जन अघ शमनं पाहि प्रभो ॥
जय अखिलेशं सिंन्धु सुतेशं शमन कलेशं
पाहि प्रभो ॥ जय घन स्यामं श्री अभिरामं
करुणा धामं पाहि प्रभो ॥ जय शिव कर्त्ता
जन दुख हरता अधम उधरता पाहि प्रभो ॥
जय शिव रुद्रं कुंज सहाद्रं निर्द्वन्द्वार्द्रपाहि प्र-
भो ॥ ७९ ॥ जय अखिलेशं गवरि पतीशं
शंभु अजेशं विश्वेशं ॥ शमन कलेशं ।
विलु वलेशं सिंन्धु सुतेशं शमनेशं ॥ अज

शिव भूपं त्रिभुवन यूपं अमित अनूपं जय मूलं ॥ अगाह अतूलं खल गन मूलं जन अनुकूलं हृत शूलं ॥ अपारणा पारणं कारणं करणं भन्दि-ईधरनं शिव धामं ॥ अकल अकामं हरि घनं॥ रथमं रमाभि रामं श्रीरामं ॥ विश्वक् शयनं राजिव नयनं करुणा अयनं जन त्रातं ॥ अनघ अजातं असुर अरातं करुणा गातं जगतातं ॥ कृष्ण गो-विन्दं हृदया नन्दं अरुज अद्वन्द्वं भगवानं ॥ ॥ दया निधानं भव जल यानं अजित अमानं गुणवानं ॥ करुणा केतुं त्रिभुवन रेतुं भव नि-धि सेतुं हृषि केशं ॥ कुंज लालेशं सेव्य महेशं अपर परेशं अरिवलेशं ॥ ८० ॥ जय श्री रमनं भवरुज समनं दुःख प्रशमनं श्री करनं ॥ धर-णी धरणं विश्वा भरणं शरना शरनं शुभ चरनं॥ विश्व भुवालं दीन दयालं त्रि भुवन पालं भय हरनं ॥ करुणा करणं श्यामल वरनं पतित उ-धरनं जन तरनं ॥ रमाभिरामं पूरन कामं करु-णा धामं जग भरनं ॥ अलख निरंजन जन दुख भंजन सुर मुनि रंजन जन तरनं ॥ सकल अकि चन श्रुति सुर व्यंजन सुर रिपु गंजन हृत जरनं॥ विश्व विहरनं शुभ आचरनं कुंज उधरनं श्री॰

धरनं॥ ८१॥ जय श्री कन्तं अलख अनन्तं हरि
भगवन्तं सुख सदनं॥ चित्त उदारं दया अगारं
हरि कर्त्तारं शशि वदनं॥ जय अज अकलंकी
नुपं अतुलं अवि गति विमलं वपु मदनं॥ सब घ
ट वासिं आनद राशिं जगत अकाशिं कल कदनं
॥ जय सुख अयनं राजिव नयनं लाजन मयनं।
खल कलनं॥ जय जग यूपं स्यामल रूपं त्रिभुव
भूपं खल दलनं॥ जय हृषि केशं सिन्धु सुतेशं
विवुधपतीशं अघ घलनं॥ कुंज भुवालं त्रिभुवन
पालं दीन दयालं जन पलनं॥ ८२॥ जयति मुरारी
मंगल कारी सुवस विहारी भगवन्ता॥ कैट भहारी
मुर संहारी जन हित कारी श्रीकन्ता॥ विश्व प्रका-
शी आनदराशी रमा निवासी जग करता॥ अधम
उधरता त्रिभुवन भर्त्ता कूट विहरता भयहर्त्ता
॥ त्रिभुवन पाली हरि वन माली वपु पत मानी
शिव भर्त्ता॥ सुर मुनि त्राता अपर अजाता आ-
नद दाता शुभ चरिता॥ अधम उधारण कार
ण कारण असुर संहारन शिव राया॥ विश्व
भिरामा पूरण कामा शोभा धामा जित माया॥
अभय शमानी मानद मानी गुण गण स्वामी
श्री रामा॥ जगत अधारं भव भय हारं

विहारी शिव धामा ॥ विस्नु मकुन्दा आनद कन्दा अजित अद्वन्दा हृषि केशा ॥ विश्वा भूषणा असि न अदूषणा वचन पियूषन अरिवलेशा ॥ भव निधि सेतू त्रि भुवन हेतू सुर मुनि हेतू श्री नाथा ॥ कुरु हिस नाथा कुंज अनाथा घृतकर भाथा श्रुति गाथा ॥ ८३ ॥ जय लक्ष्मीशं हरि जगदीशं सुर पति ईशं बनमाली ॥ जगत भुवालं दीन दयालं नयन विशालं जग पाली ॥ जय शिव रूपं अग जग भूपं अकथ अनूपं निष्कामी ॥ अमल अकामी रमाभि रामी जग विश्रामी शिव स्वामी ॥ जय घन स्यामा गुन गन धामा रूप ललामा असुरारी ॥ भव रुज मोचन राजिव लोचन जन मन रोचन दनुजारी ॥ जय जन त्राता अनघ अजाता जगपितु माता अविकारी ॥ विष्वक्सार्दू हरिहर रार्दू आनद दार्दू शुभ चारी ॥ जय जग वन्दन श्री उर चन्दन असुर निकन्दन श्रुति गाथा ॥ कुंज लालेशं शिवा पतीशं समन कलेशं श्रीनाथा ॥ ८४ ॥ जय जग त्रातं अजित अजातं सुन्दर गातं श्री विस्नु ॥ रमा कलत्रं चरित विचित्रं परम पवित्रं हरि जिस्नु ॥ जय शुभ अयनं राजिव नयनं विष्वक्सयनं भगवानं ॥ लक्ष्मी नाथं

नाथ अनाथं सुखमा गाथं बलवानं ॥ जय शिव धामं अकल अकामं सुन्दर स्यामं सुख मूलं ॥ जग हित करनं दनुज संहरनं भव रुज हरनं सुर शूलं ॥ जय कर्त्तारं दया अगारं अपर अपारं भव दूरं ॥ करुणा सिन्धुं रूप निवन्धुं अजित अवन्धुं जग दीपं ॥ जय जग वन्दन असुर निकन्दन श्री उर चन्दन अज भूपं ॥ अगम अतूलं जन अनुकूलं त्रि भुवन मूलं जग यूपं ॥ जय अघ दलनं कलि मल कलनं कैटभ घलनं जग रेतुं ॥ जुग जग शरणं पालन लेरनं सुन्दर वेषं सुख केतुं ॥ जय अज भूपं परम अनूपं करुना रूपं शुभ नामं ॥ कुंज भुजालं त्रि भुवन पालं वदन विशालं श्री रामं ॥ ८५

नग स्वरूपी छन्द

नमामि श्री रमा वरं दयाल दीन दुख हरं अजेश शंभु नायकं मुरारि दुख घायकं ॥ अनन्त मन्त्र पालनं अघोर पाप घालनं अशोक शोक मोचनं कृपाल कंज लोचनं ॥ मुकुन्द सर्व विग्रहं अनीह दुख निग्रहं अशेष शेष सायनं रमेश वेद गायनं ॥ भवादि देव भय हरं सदैव कुंज सुख करं नमामि विष्णु श्री धरं कृपाल भक्ति

सुख करं ॥ मुरारि हरि रमा पतिं भवेश चारु शुभ मतिं ॥ रमेश शापदा हरं ॥ मुकुन्द राम श्री धरं ॥ अजादि विश्व वल्लभं ॥ अनन्त बाहु पद शुभं ॥ अकाम काम दायकं ॥ सुरेश शंख नायकं ॥ जनेश विश्व पालनं ॥ मदादि दोष घालनं ॥ दयाल कुंज पोषनं ॥ अपार पाप शोषनं ॥ ८७ ॥ खगेश गामि श्री वरं ॥ मुरारि दीन हित करं ॥ मुकुन्द सुख दायकं ॥ अमोघ पाप घायकं ॥ विचित्र चित्र निर्मलं ॥ अकाम रूप निःकलं ॥ अनन्त विश्नु शुभमतिं ॥ विशाल बाहु श्री पतिं ॥ रमेश सुख सागरं ॥ कृपाल शील आकरं ॥ गोविन्दनी रसायनं ॥ परेश वेद गायनं ॥ सरेश शत्रु घालनं ॥ भवेश कुंज पालनं ॥ ८८ ॥ सुरेश पाल श्री वरं ॥ विशाल रूप सुन्दरं ॥ रमेश चक्र धारिनं ॥ अनूप विश्व कारिनं ॥ मुकुन्द जगत ईश्वरं ॥ दयाल शील मन्दरं ॥ मुरारि श्री धरं हरी ॥ सुरेश दैत्य खल अरी ॥ अदोष दोष नाशनं ॥ मुरारि व्यूह वाशनं ॥ अचिन्त सुख मन्दरं ॥ अपार दीन भय हरं ॥ अनन्त विश्व पालनं ॥ शिवेश दुख घालनं ॥ मुरारि वृन्द घायकं ॥ श्रीश

कुंज नायकं ॥ ८९ ॥

छन्द भुजंग प्रयात ॥

नमो विष्णु जगदीश केशव मुरारी ॥ दया सिन्धु लक्ष्मीश हरि जग अधारी ॥ चतुर्भुज कमल नाभि संसार सेतू ॥ गदाधर हृषी केश त्रय लोक रेतू ॥ असुर शत्रु श्री कृष्ण पटपीत धारी ॥ कृपा मूर्त्ति घन स्याम जन सुख कारी ॥ निरालय निरामय अजाती अकामी ॥ गुणातीत गुण सिंन्धु पद्माभिरामी ॥ अमित रूप सुख कन्द शिव वपु विशालू ॥ विबुध पाल कुंज लाल स्वामी स्यालू ॥ ९० ॥ मुरारी कृपासिन्धु त्रय लोक तातं ॥ अमर राय श्री दाय जन सुख दातं ॥ शुभग रूप पद्मेश विज्ञान हेतुं ॥ गुणातीत श्री विष्णु त्रय लोक रेतुं ॥ अखिल लोकनाथं अनीहं दयालं ॥ चिदानन्द चक्रीअनन्तं कृपालं ॥ अमानं अतीतं परेशं अपारं ॥ जनाधार गोतीत करुणा अगारं ॥ चिदानन्द श्री राय विष्कल अजाता ॥ हृषी केश वैकुण्ठ जी मूल गाता ॥ त्रिजग भव्य शिव रूप संसार सारं ॥ धरम यूप कुंजेश केशव उदारं ॥ ९१ ॥ नमामी श्री वल्लभं विश्वरूपं ॥ अजेशं रमेशं अनन्तं अरूपं ॥ जगत

शेष संसार सारं दयालं ॥ अचिन्त्यं अमोघं रमा पति विशालं ॥ रमा नाथ लक्ष्मीश केशव मुरारी ॥ अतर्क्य अदृश्यं गदा चक्रधारी ॥ जगा धार जगदीश त्रय लोक सेतु ॥ अनादं सुरादं विबुध पालहेतु ॥ दया सिन्धु कमलाक्ष गवरी पतीशं ॥ अतीतं अजीतं गुणालय भवेशं ॥ अहिप साइ कुंजेश भव सिन्धु पोतं ॥ निरीहं निराकार लावण्य पोतं ॥ ९२ ॥ नमामी गरुडगामि माधव मुकुन्दं ॥ शिवं शंभु ईशं अजेशं गोविन्दं ॥ गदाधर हृषी केश केशव मुरारी ॥ चिदानन्द चक्री अखिल जग अधारी ॥ जगत शेष जगदीश जय धाम विस्नू ॥ अना यत्न अव्यक्त पद्मेश जिस्नू ॥ गुणातीत गोतीत माधव अनूपं ॥ दया मूर्त्ति भगवान त्रय लोक भूपं ॥ दयासिन्धु सुर पाल पालं पवित्रं ॥ रमा नाथ कुंजेश पद्मा कलित्रं ॥ ९३ ॥ नमामी जगन्नाथ जगदेक मूलं ॥ जगत शेष लोकेश हित दीनशूलं ॥ चतुर्भुज चिदानन्द सुर शत्रु कालं ॥ गिरागम्य गोविन्द त्रय लोक पालं ॥ अमानी अकामी अजं हृषि केशं ॥ दयालं कृपालं रमा वर भवेशं ॥ अखण्डं अदण्डं अखिल लोक

भूपं ॥ महा मूर्त्ति सर्व्वेश विद्वान रूपं ॥ पद्मना-
भि पद्माक्ष केशव उदारं ॥ कृपा सिन्धु कुंजेश
संसार सारं ॥ ९४ ॥

छन्द अमृत धुनि

जय कृपा निधि पतित पावन दीन हित सुख सा-
गरं ॥ विबुध नायक हरि गुणा कर सज्जन बा-
धा हरं ॥ जय रमापति अधम तारन भक्त गान
सुख दायकं ॥ गरुड गामी श्री चतुर्भुज शंख
धर श्री नायकं ॥ जय श्री पति विश्व मोहन विश्व
पति जग पालनं ॥ कैट भारी विष्णु कामद मधु
दलन सुर घालनं ॥ जय मुरारी विश्व वल्लभ शि-
व वपुष जग वन्दितं ॥ जगत नायक विश्व कर्त्ता
श्री रमण जग मण्डितं ॥ जय अजित अज शोक
हर्त्ता श्री धरं जगदीश्वरं ॥ कुंज उर सन्ताप मोचन
माधवं भुक्तेश्वरं ॥ ९५ ॥ जयति जय जगदीश
गोविन्द श्री निधिं लक्ष्मी वरं ॥ विष्णु कामद प-
तित पावन अघ निकन्दन भय हरं ॥ जय रमा
वर हृषि केश्वर दीन सुख कर श्रीधरं ॥ शंभु उर
वासी दया निधि केशवं अपरं परं ॥ जय रमेश्वर
चक्रपाणी विश्व मोहन सुरतरं ॥ अलख अनु-
पं अनघ अविगति वन्दितं सचरा चरं ॥ जय

गदाधर असुर भंजन गंजनं भवरुज थरं॥ वि-
श्वमोहन भक्त वत्सल हरी हरे सुर श्रीकरं॥ जय
दनुज रिपु शंभु कर्त्ता भेषजं त्रिभुवन गुरं॥ कुंज
मन उर सोच मोचन दीन हित धरणीधरं॥ ६६॥
जय मुरारी पतित पावन विश्वपति भव भय हरं॥
अधम तारन हरि गदाधर गंजनं भव रुज थरं॥
विश्व मोहन विष्णु कामद सुरपतीश्वर श्रीधरं॥
जगत धाता मधु विनाशन श्री चतुर्भुज गोपरं॥
अज अनघ अद्वैत श्रुति गति सेवितं सचराचरं॥
पतित पावन विश्व कर्त्ता कुंज प्रभु लक्ष्मी वरं॥
६७॥ विश्व ईश्वर हरि मुरारी विश्व हित श्री ना-
यकं॥ अकल निर्मल विश्व वन्दित शंभुपति
सुख दायकं॥ विश्व कर्त्ता चक्रपाणी माधवं
सुर धायकं॥ दनुज मर्दन विश्व त्राता जन सुख
दुख दायकं॥ काम वपु कामारि ईश्वर लोक
जय उपजायकं॥ कुंज जन भजु श्री विहारी मन
वचन अरु कायकं॥ ६८॥ जय गदाधर विष्णु
श्रीधर दीन जन सुख वर धनं॥ विश्व कर्त्ता हरि
चतुर्भुज सुर पतारी मर्दनं॥ अज अमानी अ-
भाव अनुपम निष्कलं जग वन्दनं॥ मदनमोहन
परमेश्वर भक्त जन उर चन्दनं॥ विश्व धाता जग

धारी भय करं भय भंजनं॥ विश्व कर्म्मापतित पावन वासवं दुख गंजनं॥ चक्रपाणी विबुध वल्ल भ शिव वपुष जग मराडनं॥ अधम तारन विश्व भय हर कुंज भय रुज खराडनं॥ ९९॥ जयति जय लक्ष्मी मनोहर श्री रमण सुख सागरं॥ भक्त हित त्रयताप मोचन गुण रहित गुण आकरं॥ सनकादि शिव ब्रह्मादि वन्दित दीन हित वसुधा धरं॥ शंख धर गजराज भय हर वेद विद लीला क्षरंशंभुपति त्रय लोक भूषण अनघ अनुपम श्रीवरं॥ मधु दलन चक्री गुणालय विश्व भर परमं परं॥ विष्णु हरि वैकुण्ठ गोविन्द सुर निकन्दन भय हरं॥ सिन्धुजेश्वर लोक नायक श्री विहारी श्री करं॥ विबुध पति भय हर दया निधि सेवितं सचराचरं॥ कुंज लाल प्रभु लक्ष्मी मनोहर भंजनं भय रुज थरं॥ १००॥ जयति जय विश्वेश श्री वर विश्वपति जग नायकं॥ जय चतुर्भुज विश्व भूषण विष्णु मंगल दायकं॥ जयति जय लक्ष्मीश माधव शंभु प्रभु जग कारनं॥ जय रमा वर शेष सार्ङ्ग चक्र धर जन तारनं॥ जयति जय वैकुण्ठ अच्युतजन सुखद खल त्राशनं॥ जय दया निधि कृष्ण अनिरुध श्री रमण अघ नाशनं

जयति जय त्रयताप मोचनसुख निधिजग पालनं ॥ जय मुरारी शंभु ईश्वर सुर पतारी घालनं ॥ जयति जय मधु शत्रु माधव भक्त हित वपु धारिणं ॥ जय अनघ कुंजलाल स्वामी हरन भव भयदारुणं ॥१०१॥ जयति अनुपम हरि चतुर्भुज शंभु पति जग वन्दनं ॥ विश्व वपु शिव वपुष सुन्दर सिन्धुजा उर चन्दनं ॥ भय हरन भय दाय माधव लोक प्रभु अघ कन्दनं ॥ मधु दलन श्री नाथ कामद विश्व मण्डल मण्डनं ॥ शंभु अज बन्दित रमावर हरन भव भय फन्दनं ॥ विष्णु बावन सुर पतीश्वर शमन माया बन्धनं ॥ असुर मर्दन । विश्व कर्त्ता दमन खल दिति नन्दनं ॥ कुंज उर संताप घायक श्री रमण रुज खराडनं ॥१०२॥ जयति जय शिव अज विमोहन सज्जन बाधा हरं ॥ सुरपतीश्वर जगत वल्लभ श्री रमण कमला वरं ॥ विष्णु कामद सिन्धुजावर चक्र पाणी श्री करं ॥ अलख अविगति अनघ अनुपम शंभु पति जगदीश्वरं ॥ अकल अच्युत विश्व नायक दीन हितु धरणी धरं ॥ हृषीकेश्वर हरी मुरारी कुंज मन प्रमुदित करं ॥१०३॥ जयति जय भगवान भगवत सिन्धु तनया नायकं ॥ हरि अजे-

श्वर शंभु कर्त्ता विश्व हित सुख दायकं ॥ वि-
श्व वल्लभ श्री चतुर्भुज लोक त्रय उपजायकं
॥ मधु दलन माधव मुरारी दान वारि सहाय
कं ॥ श्री रमण करतार कामद दीन हितु खल
धायकं ॥ कुंज प्रभु जगदीश श्री पति जासु
यस श्रुति गायकं ॥ १०४ ॥ जय विबुध पति
शंभु नायक अज मुरारी श्री हरी ॥ जन सुख-
दत्रय ताप मोचन शंख धारी श्रीहरी ॥ दनु-
ज गंजन जगत वल्लभ नित विहारी श्री ह-
री ॥ अगुण गुण मय श्री चतुर्भुज जग अ-
धारी श्री हरी ॥ सिन्धु तनया उर विभूषण
अधमतारी श्री हरी ॥ रहित दूषण अमित
अवि गति भय निवारी श्री हरी ॥ अव नि-
धर वैकुण्ठ विष्णू सुर संहारी श्री हरी ॥ कुं-
ज उर सन्ताप मोचन सुकव कारी श्री हरी ॥
१०५ ॥ जयति जय अद्वैत अवि गति विष्णु
अनुपं सुन्दरं ॥ विश्व मोहन श्री चतुर्भुज ।
जिष्णु करुणा मन्दरं ॥ जय गदाधर विश्व
कर्त्ता दीन जन संकट हरं ॥ चक्रपाणी अ-
ज अनघ हरि श्री प्रभू विश्व भरं ॥ कैट भा-
री मुर निकन्दन गो सुखद मन्दर धरं ॥

कुंज प्रभु लक्ष्मी मनोहर श्री करं लक्ष्मीवरं ॥ १०६ ॥

चतुर पदावली

जय नारायण अजित अमाया हरी मुरारी अजगराया ॥ जन अघ भंजन करुणा धीरा दया वपुष केशव जग दीशा ॥ सुख मन्दिर हरि मित्र अकामा शरन सुखद पदमी श्री धामा ॥ अशरन शरन अभय निः कामी ॥ कृपा सिन्धु पन्नग अरिगामी ॥ हरन अमंगल भव रुज मोचन ॥ निशचर बैरी राजिव लोचन ॥ चतुरानन प्रभु करुणा गाता ॥ कलि मल हर अज अनघ अजाता ॥ हृषी केश जन आनद दाता ॥ कुंज लाल प्रभु त्रिभुवन ताता ॥ १०७ ॥ जय नारायण करुणा सागर ॥ हरी मुरारी श्री धर नागर ॥ अच्युत केशव आनंद भवनं ॥ हरन दुसह दुख गवना गवनं ॥ रमा रमण माधव असुरारी ॥ विश्व भर निः कलश विकारी ॥ मदन अरि वन्दित श्रुति सेतू ॥ मधु सूदन विबुधेश्वर हेतू ॥ गुणा तीत गुणा सिन्धु मकुन्दू ॥ कमला मोहन त्रिभुवन चन्दू ॥ विष्णु चतुर्भुज राजिव लोचन ॥ जगन्नाथ जन आरत मोचन

॥ हृषीकेश सुद मंगल दाता ॥ जगत जनक स-
चरा चर ताता ॥ चक्रपाणि श्री रमण कृपाला
॥ कुंज लाल प्रभु दीन दयाला ॥ १०८ ॥ जयदि
शंभर भव जल भानू ॥ भय हृत भय कृत मान-
द मानू ॥ मधु सूदन वैकुण्ठ कृपालू ॥ हरि हर
मित्र अनन्त दयालू ॥ पतित उवारन सुर मुनिरं-
जन ॥ विष्णु मकुन्द असुर दल गंजन ॥ कमल
नाभि कमलासन नाथू ॥ विश्व जनक अज करु-
णा गाथू ॥ भगवत वासुदेव जग कर्त्ता ॥ अधम
उधारन धरणी धर्त्ता ॥ अलख अनन्त अमोघ
अकामी ॥ अपर अपार अशोक अनामी ॥ चतु-
र्व्यूह श्री धर अरिविलेशा ॥ दया धाम शिव रूप
रमेशा ॥ सिन्धु सुता पति श्री भगवाना ॥ कुंज
सहायक दया निधाना ॥ १०९ ॥ जय लक्ष्मी पति
विश्व भुवाला ॥ रमा रमण जगदीश कृपाला ॥
विष्णु कृष्ण केशव सुख कारी ॥ दया भवन हरि
ईश मुरारी ॥ मधु सूदन हृषिकेश सुरेशा ॥ दी-
न बन्धु शिव रूप अजेशा ॥ करुणा अंबुद श्री
सुख दायक ॥ जन मन रंजन दीन सहायक ॥
चक्र पाणि सुर शत्रु प्रहारी ॥ कैटभ गंजन वि-
श्व अधारी ॥ जगदीश्वर श्री पति भगवाना ॥

जन त्राता भव निधि जल याना ॥ अखिल भुव-
न पति अनघ अकामी ॥ विश्व विहारी खगपति
गामी ॥ कामी कामद अनघ अजाया ॥ कुंज ला-
ल प्रभु अजित अमाया ॥ ११७ ॥ जय पुरुषोत्तम
श्री उर चन्दन ॥ चक्री केशव जय जग वन्दन ॥
अशरन शरन अमोघ अकिंचन ॥ पन्नगारि प्र-
भु सुर मुनि रंजन ॥ सिन्धु सुतेश्वर असुर निक-
न्दन ॥ मधुसूदन हरि त्रि भुवन मण्डन ॥ विश्व
भर भव पाश विभंजन ॥ गत आगत दुख दारुण
खण्डन ॥ कोटि भारि कमला दृग अंजन ॥ कुंज
प्रभूजन आरति गंजन ॥ ११८ ॥ जय वन माली
श्री वर विष्णु ॥ हरी गदाधर पावन जिष्णु ॥ चक्री
केशव श्री अभिरामी ॥ राजिव लोचन शिव उर
धामी ॥ पतित उबारन दीन सनेही ॥ अपर अ-
पार अमोघ अगेही ॥ करुणा अंबुद भव जल
त्राता ॥ विश्वभर शिव वपु भगवाना ॥ पतित
उबारन करुणा गाता ॥ कुंजलाल प्रभु जन सु-
ख दाता ॥ ११९ ॥ जय विश्वंभर जन उर चन्दन
॥ चिदानन्द हरि त्रय जग वन्दन ॥ भुवनेश्वर
जन आनंद दाता ॥ अखिल अनन्त जगत पितु
माता ॥ अजित गदाधर जग कर्त्ता ॥ हरी चतुर्भुज

विश्व भुवारू ॥ विस्नु विश्वपति सुरपति राई ॥ सुर त्राता केशव जलसाई ॥ कुंज लाल प्रभु दीन दयाला ॥ भवनिधि पोत मुकुन्द कृपाला ॥२१३

छन्द षट पदी

रमा रमणावनमाली केशव अजित उदार ॥ दया रूप जग पाली अज अद्वैत अपार ॥ लक्ष्मीपति सुर हेतू विस्नू अग जग भूप ॥ पदमी चय जगेतू अकल अमल शिव रूप ॥ मधु सूदन श्री नाहसु र पालेशा अकाम ॥ अमित अनीह अगाहं श्री धर वपुष ललाम ॥ करुणालय सुरवदाता का मद दीन सहाय ॥ भुवनेश्वर जग त्राता कुंजेश्वर हरि राय ॥ २१४ ॥ जय श्री वल्लभ चक्री अज । कर्त्ता हृषिकेश ॥ अनुपम अनघ सुतंत्री अखिलेश्वर विबुधेशा ॥ विस्नु मकुन्द मुरारी जन त्राता श्रुति यूप ॥ कुल जगत भय हारी मन्न सुरवद अज भूप ॥ श्रुति विद श्री वर विजई पावन हरि भगवान ॥ पुरुषोत्तम अज विनई अजित अमित सुख खान ॥ यज्ञेश्वर शिव मूरति मधु सूदन श्री कन्न ॥ निगम नत्व जन त्राता जग वन्दन भगवन्न ॥ सुर पतीश असुरारी लक्ष्मी प्रभु जन पाल ॥ हरहु विपति दुख भारी विन वत है कुंज लाल ॥

११५॥ भजु मन रमा विहारी केशव करुणा कन्द ॥ सेवित अज त्रिपुरारी माधव सुर कुल चन्द ॥ मधु सूदन सुर त्राता श्रीधर हरि गोविन्द ॥ अलख अनघ जल सार्दू अविगति अजित अछन्द ॥ श्री चित हरन मुरारी विश्वंभर सुख धाम ॥ अनुपम अज अविकारी श्री वर पूरण काम ॥ भुवनेश्वर जग मोहन सुर मुनि समन कलेश ॥ अशरन शरन अमानी पार ब्रह्म कमलेश ॥ सिन्धु सुता पति विष्णु अखिलेश्वर भगवन्त ॥ कुंज प्रभू जग बन्दन गुणातीत गुण वन्त ॥ ११६॥

छन्द मोती दाम

जय जय केशव सुघर ललाम ॥ शोभा मन्दर जग अभिराम ॥ अनुपम अविगति अज अखिलेश ॥ धरमी धाता सिंधु सुतेश ॥ सुरपति वल्लभ हरी मुकुन्द ॥ रमा मनोहर अरुज अछन्द ॥ विश्व विमोहन करुणा रूप ॥ अहिप शयन श्री राय अनूप ॥ त्रिभुवन वल्लभ अनघ अचिन्त ॥ कुंज लालश प्रभु कमला कन्त ॥ ११७॥ जय परमेश्वर हरिज गदेत ॥ केशव कामद करुणा केत ॥ रमा मनोहर रूप ललाम ॥ नीलिन्दी वर गोविंद नाम ॥ अधम उधारन सुर कुल चन्द ॥ पद्मा मोहन हरी

मुकुन्द ॥ चक्री कामद त्रिभुवन भूप ॥ विश्व विमोहन करुणा रूप ॥ विभु अनन्त अजीत अकाम ॥ विजयी धाता शोभा धाम ॥ रमा सुरव-द जगदीश कृपाल ॥ मुर रिपु माधव जगत भु-वाल ॥ जलसाई अघ कंज तुषार ॥ कुंज लाल प्रभु विश्व अधार ॥ ११८ ॥ जयति रमा पति वि-श्वक शयन ॥ अज अविनाशी राजिव नयन ॥ हरी चतुर्भुज कमला कन्त ॥ विश्वेश्वर माधव भगवन्त ॥ कमला नायक परमानन्द ॥ दीना रति हर आनंद कन्द ॥ पदमी कंवी चक्र गदेश ॥ वन माली बैकुण्ठ रमेश ॥ तरुण नयन नि-शि नायक गात ॥ सुरपति ईश्वर असुर अरात ॥ वासुदेव वासव सुखदाय ॥ अगम अगोचर दीन सहाय ॥ विश्वं भर मधु शत्रु परेश ॥ अ-लख निरंजन सिंधु सुतेश ॥ शिव अज मानस हंस मराल ॥ कुंज प्रभू शिव रूप दयाल ॥ ११९ ॥

॥ पद ॥

जयति चतुर्भुज श्री पति प्यारे ॥ सुख दायक अघ नाशन हारे ॥ सुन्दर श्याम चिकुर घुँघुरा-रे ॥ मुकुट मौलि छवि पुंज सवारे ॥ श्रुति कुण्ड-ल झलकैं जनु तारे ॥ केसर तिलक सुभाल ।

सँवारे॥ जयति०॥१॥ ललित कपोल महा छविदा-
दे॥ वरणिन जाय अधर अरुणादे॥ तिल प्रसू-
न छवि घ्रान सुहादे॥ नयन कमल दुति भ्रू अ-
नियारे॥ जयति०॥ २॥ चन्द्रानन सुख कमल
सुहावन॥ मृदुल हास त्रय ताप नशावन॥
परम विचित्र वपुष शुभ पावन॥ अकल अ-
लौकिक सोभा वारे॥ जयति०॥ ३॥ कंबु कण्ठ
सुन्दर सुख सागर॥ वृषभ कन्ध अति शोभा
आगर॥ भुज विशाल सुरधमा निधि आकर
॥ शुभग करन चक्रादिक धारे॥ जयति०॥ ४॥
उर पुनीत सोहत वन माला॥ विप्र चरण श्री
चिन्ह विशाला॥ कण्ठ मणिन युत हार रसा-
ला॥ वाम अंग कमला सुकुमारे॥ जयति०॥
५॥ उदर मृदुल जन उदधि अभंगा॥ त्रिवलि
रेख जनु उठत तरंगा॥ सुख अंबुद पावन स-
व अंगा॥ कमला स्मरवत जीव तन वारे॥ ज-
यति०॥ ६॥ नाभि मनोहर मंगल कारी॥ जल-
ज पाद जन संकट हारी॥ पीत वसन चपला
असकारी॥ कुंज प्रभू त्रय जग रव वारे॥ जय-
ति०॥ ७॥ १२७॥

भजु मन हरि पद तजि कुटिलाई
सुर मुनि रंजन जन सुख दायक घायक अघ हरि राई ॥ अधम उधारन पद्मा वल्लभ अज करताशि-व दाई ॥ शिव चतुरानन जेहि नित भजहीं ध्यान समाधि लगाई ॥ सनकादिक सुर वृंद अहर निशि करत जासु सेवकाई ॥ कुंज लाल प्रभु पद निज उर धर तजि सब विधि बौराई ॥ १२१॥

भजु मन हरि पद त्यागि सकोचन
इन्दु वदन सत काम लजावन ॥ मृदुल हांस भय मोचन ॥ जलज नयन शिर मुकट सुहावन ॥ तिलक भाल मन रोचन ॥ घन द्युति रूप पीत पट धारे सुधा रूप अवलोकन ॥ अधम उधारन करुणा मन्दर जपत जाहि क्षय लोचन ॥ कुंज लाल प्रभु आस हृदय धर वृथा मरहिं जिन सोचन ॥ १२२॥

हरहु विपति मम अलख निरंजन
विष्णु रमा वर करुणा सागर गुण आगर कमला हरा अंजन ॥ अज गरुड़ ध्वज श्याम चतुर्भुज अकल अरुज गोतीत अकिंचन ॥ सिन्धु सुतेश्वर घायक मधु मुर हृषिकेश्वर सुर मुनि मन रंजन ॥ करुणा मंदर इला पुरंदर विश्व भर

जन आरत गंजन ॥ कारण कारण असुर संहारन जग तारन जन दारिद भंजन ॥ कुंज सहायक कमला नायक सुरव दायक प्रभु श्रुति स्वर व्यंजन ॥ १२३ ॥

कृपा दृष्टि अब लोकहु स्वामी
हृषिकेश्वर जगदीश रमावर विश्वंभर हरि अंतरयामी ॥ पतित उवारन दीन सनेही शिव मूरति त्रिभुवन विश्रामी ॥ करुणा मन्दर जन दुरव हारी अघ हारी लोकेश अकामी ॥ अधम उधारन शिव अज सेवित जग वन्दित श्रीधर सुरव धामी ॥ विश्व रूप चक्री शिव कर्त्ता श्री भर्त्ता वनिता सुत गामी ॥ सब घट व्यापक सेव्य सुरासुर कुंजेश्वर शिव अज अभिरामी ॥ १२४ ॥

हरहु मोर दुरव हरि जग वन्दन
अधम उधारी जन हितकारी भय हारी त्रय ताप निकन्दन ॥ सुरवमा सागर गुण गण आगर कमला वर शिव अज उर चन्दन ॥ करुणा मन्दर अनुपम सुन्दर विश्वंभर वन्दित शिव नन्दन ॥ भव रुज दावन केशव पावन मन भावन सुरपति रिपु मर्दन ॥ हरि हर ईश्वर

अज परमेश्वर अखिलेश्वर भव बन्धन खण्डन ॥ सेव्य सुरासुर अमित परापर कुंज प्रभू त्रय लोकी मण्डन ॥ २२५ ॥ जय जय जय सुर मुनेश कमलापति खग पतेश शेष सार्दू जग निवास शंख चक्र धारी ॥ अनुपम वपु स्याम रंग कमला लिये वाम अंग कारुणीक विश्वनाथ पद्मा चितहारी ॥ सुरपति पति विपति हरन जगत भूप मेघ वरन शंभु स्वामि दीन बन्धु जन पवित्र कारी ॥ उर विसाल चारु हार मंजु बाहु कर सुचार सुकव धाम दुष्ट शत्रु सिंधुजा बिहारी ॥ अज अनूप शक्र भूप वेद तत्व धर्म यूप कैटभारि श्री निवास विश्व पति मुरारी ॥ कुंज लाल प्रभु मुकुन्द सज्जन हिय कुमुद चन्द विश्व हेत अज अबन्ध केशव दनुजारी ॥ २२६ ॥

हरिये हरि मोरी अधमार्दू ॥

निज चरणन की भक्ति दया करि देहु रमा पति सार्दू ॥ जेहि प्रताप मोहादिक बाधा तुरत नाश होय जार्दू ॥ हौं प्रभु महा पाप की मूरति करत सदा कुटिलार्दू ॥ जेहि विधि बंधी जीव भव फन्दन करत सोई चित लार्दू ॥ वनिता दिक हित हेत करत बहु हिये सुख उपजार्दू ॥ प्रभु सेवा

कबहूं ना कीन्हीं ना सज्जन सेवकाई ॥ नहिं जानत निजु हानि मोह वश करत सदा बौराई ॥ अब प्रभु लीनी शरन तुमारी श्री वल्लभ शिव राई ॥ कुंजलाल प्रभु करुणा सागर दीना नाथ सहाई ॥ १२७॥

विपति बिभंजन जन अघहारी
सुनिये विनय मोरि सुर रंजन नाथ रमेश मुरारी ॥ करुणालय सेवक सुख दायक शिववपु विश्व विहारी ॥ तुम को नाथ पतित गति दायक बरणत हैं श्रुति चारी ॥ हौं सूरख बहु पाप परायण दुराचार खल भारी ॥ तुव पद भक्ति हृदय नहिं आनी बिषय मुकवन्चित धारी ॥ जहं लौं कहिये पाप जगत के किये सबै बहु बारी ॥ कुंजलाल प्रभु भयो भयातुर आयो शरन तुमारी ॥ रविये शरन आपनो करिके सब अपराध बिसारी ॥ १२८॥

हौ तुव शरन दीन हितकारी
अपारन शरन दयाल दया वपु करुणा पुंज मुरारी ॥ यद्यपि हौं प्रभु परम पातकी दुराचार अविचारी ॥ अधम अपावन कामी लोभी अघ मूरति अघकारी ॥ तद्यपि शरन तुमारी

लीन्हौं सुनिकै अधम उधारी ॥ विनवत हौं कर जोरि दया निधि आरति बचन उचारी ॥ करहु कृपा करि मोहिं निजु सेवक मम अपराध बिसारी ॥ करि निज शरन हरहु मम संकट दीन जन न भयहारी ॥ अविरल भक्ति देहु चरणन की दुख भंजन सुख कारी ॥ हरहु अमंगल मंगल मूरति कुंज प्रभू असुरारी ॥ १२९ ॥

भजुमन श्री पति अधम उधारन

अशरन शरन दीन हित कारी विश्व भर भय दारन ॥ जगत पाल शरनागत वत्सल करुणा लय सुख कारण ॥ सुर पतेश अघ पुंजन शावन त्रिभुवन दुख निवारन ॥ कलि मल हरन अनुग्रह मूरति सकल विश्व निस्तारण ॥ अवि गति अच्युत केशव माधव सुरपति विपति बिदारन ॥ कमलासनि पति करुणा सागर श्री वर मंदर धारन ॥ मुर बैरी मधु कैटभ नाशन दनुज वृन्द संहारन ॥ सुर रंजन पद्मालय नायक कामद पतित उबारन ॥ कुंजलाल प्रभु विस्नु जगति पति दुसह दुःख निवारन ॥ १३० ॥ भजुमन रमा नाथ सुख सागर

दया सिन्धु दीना रति हारी हरी केश गुणागार

॥ शंभु अजेश सुरासुर वन्दित श्री वर रूप उजागर ॥ करुणा सदन विषम सम विग्रह श्री वल्लभ करुणा कर ॥ शंकर उरवासी जग वन्दन केशव हरि श्री नागर ॥ सदा विशोकी शोक निवारण हरि हर स्वामि दयाकर ॥ विष्णु जिष्णु जन भारत हारी जन हिय कमल दिवाकर ॥ पुरुषोत्तम लक्ष्मी नारायन शिव उर कुमुद निशाकर ॥ कुंज लाल प्रभु रमा प्रान पति दीना नाथ कृपाकर ॥ २३१ ॥

भजु मन श्री वर मन वच कायन

रमा रमन प्रणतारति भंजन भुवनेश्वर जग नायक ॥ विष्णु चतुर्भुज हरी गदाधर सत्व सुख द रवल घायक ॥ अरिदल लोकपति विश्व विभूषण दुख मोचन सुखदायक ॥ शिव अज वन्दित रमा विहारी दनुज विनाश उपायक ॥ कलि मल कलन श्रीधर अच्युत शेष जासु गुण गायक ॥ विश्व शयन रमा वर माधव विविधि सृष्टि उप जायक ॥ अविगति श्री निधि विश्व विहारी श्री वरजन सुख दायक ॥ कुंज प्रभु कमला नारायन सुमिरत जाहि विनायक ॥ २३२ ॥

भजु मन श्री वर करुणा कन्दं
भव भय हरन अमंगल नाशी शिव प्रभु विमल मुकुंदं ॥ रमा रमिक त्रय ताप नसावन हरन सकल भव फंदं ॥ संत सुखद भव सागर बोहित करुणा मय सुख इन्दं ॥ अज अद्वैत अकाय अविनाशी मेट न भव रुज हुन्दं ॥ कुंज लाल प्रभु लक्ष्मी नायक शिव उर नभ शुभ चंदं ॥ १३३ ॥

कत सोचत मन भव रुज त्रासं
तज संशय सन्देह सकल विधि भजु श्री रमा निवासं ॥ अशरन शरन दुसह दुख हर्त्ता भव भंजन सुख रासं ॥ करुणा पुंज दीन सुख दायक हरि वैकुण्ठ विलासं ॥ संत सुखद चतुरानन ईश्वर अच्युत अज अविनासं ॥ रमा पीव लक्ष्मी नारायण गंजन भव रुज पाशं ॥ संशय हर जन मन रुचि रारवन कुंभप्रभू मृदु हासं ॥ १३४ ॥

भजु मन रमा रमन शुभ कामी
शंभु ईश वैकुण्ठ रमापति सुर मुनीश जग स्वामी ॥ गरुड ईश अव्यक्त अचिन्तक निराकार निह कामी ॥ गुणातीत गोतीत मुरारी भव भंजन सुखधामी ॥ पतित उवारन जन भय हर्ता उमा कान्त अभिरामी ॥ अलख अगोचर सुवस

विहारी सकल विश्व विश्रामी॥ वसुधापति प्रणतारति भंजन कमल नयन जय धामी॥ अशरन शरन दनुज संहारी अनुपम अनघ अकामी॥ कुंज लाल प्रभु शंख गदाधर सुख निधि अन्तरयामी॥ १३५॥

भजु मन हरि वैकुण्ठ निवासी
जगत जनक सज्जन सुख दाता सर्वोपरि सुख राशी॥ करुणा निधि भगवन्त गदाधर हरि वल्लभ अविनाशी॥ विश्व वक्ष यन रमा वर केशव सुर मुनि चित्त हुलासी॥ कमला पति असुर शत्रु निकन्दन श्री धर जगत प्रकाशी॥ रमा रमण सचराचर नायक मन सिज रिपु उर वासी॥ परमेश्वर पद्मा उर चन्दन हरि वैकुण्ठ विलासी॥ खग पति गामी करुणा मन्दिर श्री प्रभु निशाचर त्रासी॥ निराकार निः काम निरंजन वन माली खल नासी॥ कुंज लाल प्रभु लक्ष्मी नायक अज वन्दित कैलासी॥ १३६॥

भजु मन श्री वर जन उर चन्दन
अधम उधारण त्रय जग त्राता कमला पति जग वन्दन॥ हृषिकेश्वर वन माली अच्युत

श्रीवर असुर निकन्दन॥ सर्वेश्वर सर्वादि जगत पति सेवत अज शिव नन्दन॥ अखिलेश्वर वैकुण्ठ गदाधर निगुण सगुण जग मण्डन॥ कुंज लाल प्रभु दीन सहायक रमा रमण अघ खण्डन॥ १३७॥

भजु मन श्रीवरदीन दयालं
हरि नारायण केशव अच्युत सरसिज नयन विशालं॥ पतित उवारन कमला नायक सुर रंजन जग पालं॥ करुणा अंबुद सुरपति स्वामी हरन विविधि भव जालं॥ खग पति गामी अजित मुरारी अमराधिप रिपु कालं॥ रमा रमण त्रय लोक विभूषण लोका लोक भुवालं॥ कुंज लाल प्रभु लक्ष्मी वल्लभ माधव अमित अकालं॥ १३८॥

जय गरुड ध्वज राजिव नयनं॥
विश्वंभर श्रीराय चतुर्भुज केशव विष्वक् शयनं॥ पद्म नाभि पुरुषोत्तम अच्युत विश्वंभर वपु मयनं॥ व्यक्ता व्यक्त सरूप गदाधर नारायण शुभ वयनं॥ हरी चतुर्भुज गज उद्धारी कमला सन चित चयनं॥ कुंज लाल प्रभु विष्णु गदाधर भंजन अघ रुजसैनं

जय जय जय ज्ञान सिन्धु करुणा मय दीन
बन्धु खगपतीश लोक नाथ शंख चक्रधा
री॥ जगत हेतु दीन पाल नाशन भव भीति
जाल विश्व ईश हरि मुकुन्द केशव बन वारी
॥ भक्त वृन्द सुख दाय सुर पतीश शंभु राय
वेद तत्व श्री मुरारि सज्जन हित कारी॥ जगत
हेत अज अमान वासु देव विश्व भान पद्म ना
भि पार ब्रह्म दीन दुख निवारी॥ दीन बन्धु श्री
निवास कमला पति सुख राशि श्री निधान कै
ट भारि सुर नर भय हारी॥ जगत ईश शिव स
रूप वद सेश धर्म यूप कुंज लाल प्रभु कृपाल
सिन्धुजा विहारी॥ १४०॥

जयति गदाधर शारङ्ग-पानी

दीन बन्धु भव सागर बोहित श्री धर माधव।
अनघ अमानी॥ अलख अगोचर जय जग
वन्दन श्री पति गोविंद जन सुख दानी॥ अध
म उधारन अज शिव कर्त्ता श्री वर अनि रुध
परम विनानी॥ करुणा अंबुद राजिव लोचन
श्री निधि केशव हत कल कानी॥ मधु सूदन
मेधावी मुर रिपु श्री कर निर्गुण सब गुण खा
नी॥ अशरन शरन गता गत भय हर श्री।

वल्लभ सुर मुनि दुख हानी॥ रमा रमण जगदीश जगत पति श्री नायक अच्युत श्रुति वानी॥ बन माली वैकुण्ठ विहारी श्री स्वामी हरि मानद मानी॥ चिदानन्द चक्री पुरुषोत्तम श्री प्रीतम अवनी धर ज्ञानी॥ कुंज लाल प्रभु त्रय जग त्राता श्री हित वन्दित शंभु भवानी॥१४१॥

जय जल सार्द्र त्रय जग हेतू
पद्म नाभि चतुरानन कर्त्ता मधु सूदन जग हेतू॥ त्रय गुण रूप त्रिलोक उपायक श्री वर पुन्यो पेतू॥ अनाद्यन्त गोतीत विश्व मय जग कर्त्ता सुख केतू॥ कारण कारण करुणा मन्दिर विश्वंभर श्रुति नेतू॥ कुंज लाल प्रभु कैटभ गंजन सुख सागर भव सेतू॥१४२॥

सुनहु दया लय दीन सहार्द्र॥
चौरासी लख स्वांग करे मैं विपुल बार मन लार्द्र॥ तुम्हारी रीझन मैं नहिं जानी केशव त्रिभुवन राई॥ जो रीझे तौ नाथ दया निधि लेहु मोहिं अपनार्द्र॥ नातर कहहु स्वांग जन करहीं सुनि बिनती हरषार्द्र॥ बहु विधि जानि थकित करुणा कर अधम छन्द सुख दार्द्र॥ भुवन द्वार पर अपने राखहु कुंज दुःख तब जार्द्र॥१४३॥

हरहू विपति मम राम रमापति ॥
मृग तृला लरिव भ्रमत चहूं दिशि भयो थकित।
अमित व्याकुल अति ॥ लह्यो न कहुं विश्रास
दया निधि बढो दुःख भ्रमित भद्र मोमति ॥
आयो शरण दयाल तुम्हारी श्रीधर आरति ह
र विश्व भर अवि गति ॥ सहस कान सों सुनहु
विनय मम श्री निधि दीना नाथ दया रति ॥ म
म अपराध क्षमा कर श्री वर दया सिन्धु दुःख
दमन सर्व गति ॥ त्रिविध भर्म हर हेरन हेरो कुं
ज प्रभू शिव रूप विमल मति ॥ २४४ ॥

विलगा होत दुरव हरिसुरव आवत
जनित मोह मद कोध काम ज्वर नशत तुरित म
न वहु सुख पावत ॥ हरि के नाम शोक भय हा
री वेद पुराण अरु शेष बतावत ॥ गणा पति सा
दर शंभु स्वयंभू शुभ कीरति ताही की गावत ॥
करि जप योगा यज्ञ व्रत साधन जो दारुण अघ
ओघ नसावत ॥ सो जापक शुभ नाम हरी को वि
नु प्रयास हीं खाय बहावत ॥ नाम अनन्त अ
मित गुण मंदिर भीति प्रतीत प्रेम युत ध्यावत ॥
कुंज लाल आनन्द विवर्द्धन हरत दुरव हिय
सुरव उपजावत ॥ २४५ ॥

जित नित धावत है चित मेरो॥
सुरवद सीरव निजु हृदय न धारत करत फिरत भट भेरो॥ ममता क्रोध लोभ मद उर धर भयो काम को चेरो॥ त्रिविधि भर्म सुरव फिरत लोभा नो होत दीन सब केरो॥ विपुल बिथा दुरव पायो यद्यपि तद्यपि फिरत न फेरो॥ कहूँ लोक हौं बिपति मैं आपनि विविधि दुरव को पेरो॥ आयो शरन तुम्हारी श्रीवर छोड़ि सबै झक झेरो॥ कुंज लाल प्रभु दोष क्षमाकर हरहु जाल दुरव केरो॥ २४६॥

याँचत जित नित भयो भिखारी
काम क्रोध मद लोभ मोह वश हानि लाभ की सुरति विसारी॥ पिशुनोदर हित बिनवत सब ही फिरत रंक जिमि दीन दुरवारी॥ मिलो नहीं विश्राम सुचित सुरव उत न लाज भद्र हृदय मझारी॥ दुन्द्रिन हित दारुण दुरव पावत तव तिन के सुरव होत सुरवारी॥ अशरण शरण तुम्हें श्रुति वर्णत मैं अशरण मोहि लेहु उबारी॥ अपनी शरण राखि दुरव मेटहु श्री नारायण अधम उधारी॥ सकल भाँति दुरव गृसित भयातुर आकारण हौं करत पुकारी॥ कुंज-

लाल प्रभु लक्ष्मी वल्लभ आरति हर हरु आरति भारी ॥ २४७॥

छन्द बोधक

जय परमेश्वर करुणा मन्दिर ॥ विश्नु जगत पति अनुपम सुन्दर ॥ अनघ अनामय चक्री श्री धर ॥ हरी चतुर्भुज कृश्न रमावर ॥ सेव्य चराचर जय जग वन्दित ॥ अशरण शरण अमर कुल मण्डित ॥ अच्युत अवि गति अकथ अरवण्डित ॥ सब घट व्यापक श्रुति विद् पण्डित ॥ अलरव अनन्त अमोघ निरंजन ॥ निरगुण निरामय निगम अकिंचन ॥ माधव गोविंद जन मन रंजन ॥ सर्वोपरि जन वैरी भंजन ॥ मुरजित माधव जन दुख टारन ॥ हृषिकेश्वर अज कारण कारन ॥ भगवत ईश्वर अधम उधारन ॥ कुंज लाल प्रभु शोक निवारन ॥ ॥२४८॥ जय जय श्री पति करुणा सागर ॥ रमा मनोहर गुण गण आगर ॥ भक्त कमल उर विमल दिवाकर ॥ विश्नु विश्व मय हरी गदाधर ॥ रमा मनोहर जन उर चन्दन ॥ विश्व विहारी असुर निकन्दन ॥ कैटभ जित माधव जग वन्दन ॥ किल्विष हर नाशन भव फन्दन ॥ जगत जनक

सुर वैरी घायक॥ मधु सूदन धृत शारङ्ग॰ शायक॥
कमल नयन कमला मुख दायक॥ पुरुष पुराण
चराचर नायक॥ गुणा तीत शिव रूप गुणा ल॰
य॥ अज अद्वैत अजित करुणा मय॥ कारणा
करणा सुरासुर पालय॥ कुंज लाल प्रभु अकथ
निरालय॥ २४८॥ शिव अज वन्दित कमला क॰
न्त॥ विश्व विमोहन रंजन सन्त॥ मुरजित हरि प्र॰
भु हरि भगवन्त॥ श्रीधर अच्युत अज गुण व॰
न्त॥ कमला वल्लभ त्रय जग रेत॥ चक्री काम॰
द भव निधि सेत॥ अधम उधारण करुणा केत
॥ सरसिज लोचन पुरणो पेत॥ करुणा मन्दिर
त्रय जग सार॥ अलख निरंजन सिरजन हार
॥ कल्मिष हर केशव कर्त्तार॥ हरण अमंगल
श्री भर्त्तार॥ सिन्धु सुतापति त्रिभुवन चन्द॥ कै॰
टभारि गोविंद सुख कन्द॥ विश्व जनक लोके॰
श अहद्वन्द॥ कुंज प्रभू श्री विष्णु मुकुन्द॥ २५०॥

छन्दतोमर

जयति जय भगवन्त॥ श्रीराय हरि गुणवन्त॥
निष्काम रूप अचिन्त॥ हृषिकेश श्याम अनन्त
॥ वैकुण्ठ राजिव नयन॥ जग शोष करुणा अ॰
यन॥ शिव रूप विश्वक्सेन॥ सुख धाम असुत

चयन॥ घनश्याम सिन्धु सुतेश॥ मधु शत्रु राम रमेश॥। अव्यक्त हरन कलेश॥ सुख पुंज शंभु अजेश॥ विबुधेश पूरण काम॥ सुरपाल प्रभु शुभ नाम॥ जग मूल रूप ललाम॥ कुंज स्नाल प्रभु श्रीराम॥ १५१॥ जय स्वामि हरि लक्ष्मीश॥ शिव दाय अज अवनीश॥ जग शेष श्याम। फनीश॥ बहु रूप बहु भुज शीस॥ जन त्रात आनंद कन्द॥ कमलेश त्रिभुवन चन्द॥ भव अब्धि पोत मुकुन्द॥ शुभ काम अकल अद्वन्द॥ मधु शत्रु त्रिभुवन भूप॥ घनश्याम सुखमा यूप॥ सर्वत्र सब गुण रूप॥ जन दुख हारि अनूप॥ वैकुण्ठ श्री उर माल॥ जग दीश त्रय जग पाल॥ तम मोहर विकल काल॥ सुख दाय जन कुंज स्नाल॥ १५२॥ जय विष्णु करुणा गात॥ श्री नाथ जग पितु मात॥ शुभ नयन सुख जल जात॥ चित रूप त्रिभुवन त्रात॥ परमेश हरि भगवान॥ शिव रूप वर बल वान॥ शुभ काम भव जल यान॥ जन भक्त वारिज भान॥ जग दीश जगत अधार॥ अघ बोध कमल तुषार॥ सुर हेत जगत भुवार॥ श्री कन्त दया अगमर॥ श्री नाथ त्रिभुवन

रेत ॥ विश्वेश सुर मुनि हेत ॥ सर्वेश करुणा केत ॥ कुंजेश श्रुति धर्म सेत ॥ २५३ ॥

दोहा

रमा रमण परसाद तैं प्रथम भाग सुख धाम ॥ कुंजलाल वर्णन कियो दायक जन मन काम ॥ यद्यपि अन गलभनित है युक्त उक्त तें हीन ॥ तदपि रमा पति नाम शुभ जानि पढ़ें परवीन ॥ सकल छन्दया के भये हिम जा फणि रजनीश ॥ सन्त सभा आदर तिन्हें देहि शंभु अज ईश ॥ इति श्री हरि नाम रत्ना वली

प्रथम भाग सम्पूर्ण शुभम्

श्री आरती

आरति श्री नारायण जी की ॥ कित्विष हर सुख निधि श्री पी की ॥ आदि पुरुष अद्वैत अनामय ॥ अगाह अमोघ अगोह निरालय ॥ जगत शेष जग हेतु दया मय ॥ हृषि केश्वर अज दायक श्री की ॥ गुणातीत गो ज्ञान प्रकाशक ॥ अखिल लोक प्रभु भव भय नाशक ॥ सुर मुनि रंजन खल गण त्राशक ॥ विश्नु श्री

धर विश्व धनीकी ॥ मधु सूदन माधव जगवन्द
न॥ विश्वरेत भय ताप निकन्दन॥ मंगल मणि
पद्मा उर चन्दन ॥ प्रशमन त्रि विधि जरन जन
जीकी॥ गरुड़ध्वज वैकुण्ठ गदाधर॥ चिदा
नन्द पद्मेश रमा वर ॥ अपर अपार अनन्त अ-
व निधर॥ चक्रपाणि वपु स्याम धनीकी॥ जग
त जनक जगदीश्वर पावन॥ अलख निरंजन
श्री मन भावन॥ हरन असंगल वेष सुहावन
कंज प्रभू हरि रूप अमीकी॥ ॥ ॥

दूति

श्रीगणेशायनमः

अथ हरिनाम रत्नावली

लिख्यते

द्वितीय भाग

मंगलाचरण

दोहा

गणपति भारथि चरन युग वन्दौं महि धरि शीश ॥ पुनि वन्दौं वहु प्रीति सौं उमा रमण गौरीश ॥
गुरुचरणाम्बुज धारि हृदि हरि पद कंज मनाय।
भारवौं कछु सिय राम यश नाम युक्त सुख राय ॥
निगम तत्व सद्ग्रंथ को सार भाग हरि नाम ॥
जपत जाहि अगणित अधम जाय वसे हरिधाम ॥
एकै नाम अनन्त है अगणित फल दाता ॥ नश
त पाप वहु जन्म को करत नाम उच्चार ॥ कहत
सुनत सिय राम यश मिटत सकल भव पाँस
यही आस कुंज लाल करि कहे नाम सुख रास
जय रघुनायक नर हरी पुरषोत्तम श्री राम ॥ सीता

पति सीता रमण पुरवहु मम मन काम ॥ शक अं
क युत रजनि कर संवत सर शुभ जान ॥ चैत अ-
सित हरि दिवस शुभ प्रगटी प्रति शुभ खान ॥ र
त्ना वलि हरि नाम को यो है दूसर भाग ॥ जिहि ॥
वांचत सिय राम पद उपजत उर अनुराग ॥ कुंज-
लाल सब सोच तजि धरु अपने मन धीर ॥ दु-
ख विमोचन दीन हितु हैं कृपाल रघुवीर ॥ त्रा-
हि त्राहि सिय वल्लभ राघव अवध विहारी पाहि
प्रभो ॥ त्राहि त्राहि कौशिक मख रक्षक धर्मी ता
री पाहि प्रभो ॥ त्राहि त्राहि रघुनायक रघुवर हरि
धनु धारी पाहि प्रभो ॥ त्राहि त्राहि गौतम तिय
तारन अज अविकारी पाहि प्रभो ॥ त्राहि त्राहि शि
व चाप विभंजन सिय सुख कारी पाहि प्रभो ॥
त्राहि त्राहि सुर पति सुत त्रासक जन रुज हारी
पाहि प्रभो ॥ त्राहि त्राहि सुर मुनि भय हरता अघ
न उधारी पाहि प्रभो ॥ त्राहि त्राहि सेवरी हित क-
रता राम खरारी पाहि प्रभो ॥ त्राहि त्राहि सुग्रीव
सहायक वालि संहारी पाहि प्रभो ॥ त्राहि त्राहि
दश मौलि विनाशन विश्व अधारी पाहि प्रभो ।
त्राहि त्राहि शंकर अज वंदित जग विस्तारी पा
हि प्रभो ॥ त्राहि त्राहि कुंज लाल दुख हर वि -

पति विदारी पाहि प्रभो ॥८॥

छन्द उपगीतिका

जनक सुता पति राघव रघुपति रघुकुल मणि धनु धारी ॥ रघुकुल नन्दन सिय उर चन्दन सिव वल्लभ सुख कारी ॥ रवि कुल भूषण जित खर दूषण सुर पति पति जग पाली ॥ अज गव भंजन सुर मुनि रंजन रघुनायक वनमाली ॥ अवध ॥ विहारी विध्नु खरारी सुना सीर भय हर्ता ॥ रघु कुल मण्डन असुर निकन्दन सीता पति जग भर्ता ॥ शेवरी वरदा कपि पति सुखदा जित कवन्ध रन धीरा ॥ अघ खर नाशन निशिचर शासन शमन भीम भव भीरा ॥ वैदेही वर राम गुणा कर सुर स्वामी शिव राया ॥ सब सुख धामा पूरण कामा अनुपम अनघ अमाया ॥ जगत निवासी बालि विनाशी विश्वंभर जन त्राता ॥ धनु सर धारी विश्व अधारी अज शंभू सुख दाता ॥ महि सुर पाला दीन दयाला करुणा लय शिव रूपा ॥ गुण गण आगर करुणा सागर भुवनेश्वर अज भूपा ॥ पतित उवारण ॥ गीध उधारण कुंभ जादि हित कारी ॥ दया ॥ निधाना अजित अमाना कुंजलाल दुख हारी

कौशिलेश रघुनाथ दया निधि अच्युत अविग-
ति रमा ॥ सिया रमण कर्तार सिया वर सुख
निधि पूरण कामा ॥ रघुकुल तिलक सिया पति
केशव सिय नायक रघुवीरा ॥ करुणा अंबुद रा-
जिव लोचन सीता पति रण धीरा ॥ जगन्नाथ
जग ईश जगत प्रभु जगत पाल भय हारी ॥
कलिमल हारी दनुज विमोहन अमर ईश सुख
कारी ॥ जनक सुतेश चरा चर नायक दशरथ
सुवन दयालू ॥ दश सुरवारि पुरुषोत्तम काम
द मदनारीश कृपालू ॥ असुरा रीश सहाय
क रघुवर दिति नन्दन भय दाता ॥ धनुर बाण
धर दशरथ नन्दन जगदीश्वर जग त्राता ॥ दनु-
ज विमोहन दूषण घायक त्रसिरारी घन श्या
मा ॥ हनुवंतेश भव वारिध बोहित जित कवं-
ध शुभ कामा ॥ दाश रथी सचरा चर सेवित अ-
वधेश्वर निह कामी ॥ करुणा सिंधु दयालय श्री
वर अच्युत शिव अभि रामी ॥ विश्व विभूषण अ
लरव अगोचर शर्वेश्वर जग मूलं ॥ कुंज लाल
प्रभु अधम उधारण सदा दीन अनुकूलं ॥ अजि
त अमित गुण सागर राघव रघुवर अमल सुवे
षं ॥ अलरव अनघ धनु धारी अच्युत अपर अ-

पार अनेरवं ॥ रमा रमण सिय स्वामी केशव सि
य पति अगह अमानं ॥ अकल अमोघ अवध
पति कामद अतुलित हरी सुजानं ॥ जगत ज-
नक खर दूषण हन्ता विश्वंभर शिव रूपं ॥ वि
श्वेश दश मौल निकंदन सुख मन्दिर श्रुतिपू-
पं ॥ भव रुज हरण गता गत मोचन सुर रंजन
जन पालं ॥ अशरण शरण अभय भय दाय-
क सीता पति खल सालं ॥ अघ थर हर भव
वारिध वोहित करुणा पुंज उदारं ॥ किलि वि
ष शमन निशाचर मर्दन अविचल विश्व अ
धारं ॥ अकथ अरूज भगवान जगत पति मि
थिला पती सुतेशं ॥ सुरपति हितु रघुनाथ सि
या पिय सन्तत शमन कलेशं ॥ ऋष मखर-
क्षक सुर मुनि त्राता निशिचर रिपु रण धीरं ॥ द
शरथ सुवन अमर हितकारी अनुपम शुभग
शरीरं ॥ रघुकुल वन्श विभूषण पावन अव
ध पाल कपि मित्रं ॥ कुंजलाल प्रभु त्रिभुवन
ईश्वर रघुपति सिया कलित्रं ॥ दशरथ सुवन
अवध पति रघुवर जगदीश्वर वर वीरं ॥ ज्ञान
पुंज सुख अंबुद सिय वर रघुकुलेश रण धीरं
भव रुज भंजन विमल मनोहर रघु नायक जन

पालं ॥ कलि मल हरण अमर भय हारी भुव
नेश्वर रवल कालं ॥ असुर निकंदन गुण गण
आकर करुणा लय कमनीयं ॥ विश्वंभर पुरु
षोत्तम केशव राम सिया रम नीयं ॥ अच्युत अ
राम अगोचर अनुपम अकल अनीह अपारं ·
अजित अलौकिक अनघ अकामी कामदज
गत अधारं ॥ सुर मुनि रंजन निगुण निरामय
सिया रमण सुख धामं ॥ विश्व रम्भित त्रय ता·
प प्रहारी अवि गति पूरण कामं ॥ कमल नय
न कमलेश धनुर्धर जग मोहन गुण रशिं ।
विजयी विनयी अयगव भंजन विबुधेश्वर दु
ख नाशिं ॥ निराकार निहकाम निरंजन ना
रायण श्रुति सारं ॥ कुंजलाल प्रभु सिया मनो
रम हरण महा महि रम्यं ॥ ७ ॥ रघुकुलमण्ड
न जनक सुता पति सिय वल्लभ शिव रूपं
रवि कुल भूषण अवध विहारी हरि ईश्वर
जग भूपं ॥ शिव धनु भंजन रघुकुल दीपक
रघुपति जगत निवासिं ॥ कमल नयन महि
भार उतारन सिय वर अवध विलासी ॥ विप
ति विभंजन त्रय जग नायक रघुनन्दन रघुवं
रघुकुल तिलक अवध पति नन्दन सुर नर मु

नि सुखदाई ॥ कौसिक प्रिय सुख पुंज रमाव
र सिय सुख चंद्र चकोरं ॥ ललितानन शिव रू
प विश्व हित सनकादिक चित चोरं ॥ विश्वरे-
त विश्वंभर कामद रघुकुलेश हरि पालं ॥ हर-
ण अमंगल मंगल कारी महि नंदन उर मालं
कपि पति मित्र विभीषण श्री दाहनवत प्रभु
रघुवीरं ॥ जग वल्लभ सुख संवुध माधव अ-
सुर शत्रु रण धीरं ॥ कलि मल हरण खरारी।
अच्युत निगम तत्व वेदंगं ॥ जन हिय सुखद
शंभु उर वासी सुख निकेत श्रीरंगं ॥ अखिल
विश्व पति मानी मानद जन रंजन सुर हेतुं ॥
कुंज लाल भय हरण अवध पति रघुकुलेश
श्रुति सेतुं ॥५॥ अवध पाल सुर हेतु खरारी ॥
सिय मोहन रघुराई ॥ ललित मनोहर नील क
लेवर सर्वेश्वर सुख दाई ॥ रमा प्रान पति
विश्व विमोहन सिय नायक शुभ वेषं ॥ करु
णा वपुष कलेश विमोचन सीता पति जग
शेषं ॥ अखिल भुवन पति विश्वाभूषण र
मा रसिकजग तातं ॥ असुर निकंदन अवधवि
हारी ॥ गुनायक सुर त्रातं ॥ गुण मन्दिर शुभगव
नि रमा वर केशव रूप विशालं ॥ वैदेही वर

रघुवर राघव अनुपम वदन रसालं ॥ कंज वदन मधु सूदन विजयी दनुजारी शुभ कामं ॥ विश्वमू र्ति विबुधे सुर नायक अना धन्न जय धामं ॥ भ क्त सुखद दीनारत हारी दीन बन्धु जग हेतुं ॥ प तित उधारण पद्मा मोहन रावण रिपु सुख केतुं भुवनेश्वर सुर मुनि हित कारी कोमल चित्त उदारं मुनि मख रक्षक ऋषि तिय तारन अवि गति । अनघ अपारं ॥ विश्व भुवाल सुरा सुर कर्ता मारु तीस भगवानं ॥ कुंजलाल प्रभु सीता प्रीतम दया मूर्ति गुण मानं ॥६॥ जनक सुता पति सीता वल्लभ सीता पिय सिय रामं ॥ सिया रमण अवधेश सि- या वर सिय स्वामी सिय रामा ॥ सिया विभूषण ॥ सिय उर चंदन सिय नायक सुख धामा ॥ मिथले श्वर तनया सुख दायक पति सिय रामा ॥ सिय । प्रीतम सीतेश शील निधि सीता प्रभु शुभ नामा सिय उर हार सिया पुरुषोत्तम सुर भाइन सिय रा मा ॥ रघुकुलेश रघुराई राघव सीता हित निह ॥ कामा ॥ रघुपति रघुवर रघुकुल केतू रघुनन्दन सि य रामा ॥ रघु नायक रघुवीर रमावर केशव पूरन रघुकुल कमल पतंग दया निधि जन रंजन सिय रामा ॥ अय गव भंजन अवध विहारी जित वाली

वलधामा ॥ सुग्रीवेश सुरेश सहायक सुर पाली
सिय रामा ॥ करुणा अवुंद करुणा सागर करुणाल-
य घनश्यामा ॥ करुणा पुंज कलेश नसावन भव-
नायक सिय रामा ॥ कवन्धारि कमलेश कामदा अ-
वि गति अकल अकामा ॥ केतु सुता रिपु ऋषि
तिय तारण हरि वल्लभ सिय रामा ॥ जन नायक भ-
य हारी भयदा भव रुज हर जय धामा ॥ कुंजलाल
प्रभु वसुधा नायक विश्वंभर सिय रामा ॥ ७ ॥ दश-
रथ सुवन कौशिला नन्दन रघुनायक रघुराई ॥
कौशिक सुखद ताड़का भंजन जन रंजन सुखदा-
ई ॥ ऋषि मख रक्षक धनुशरधारी सुर मुनि नरभ-
य हारी ॥ गौतम तिय उद्धारी कामद मिथिलेश्वर
सुखकारी ॥ अयगव भंजी त्रयजग मोहन भृगु नं-
दन मद हरी ॥ पिता वचन पाली जगदीश्वर वन
तापस वपु धरी ॥ सिया अनुज युत विपिनि वि-
हारी गुह पालक रुच पाली ॥ भरद्वाज सनमानीके-
शव शिव अज सेव्यतमाली ॥ वाल्मीक सुख दायक
रघव चित्रकूट वन वासी ॥ भरत सुखद सुर पतिसु-
त त्रासक सीता हित अविनासी ॥ अत्रि आदि सु-
ख दायक रामा जित विराध रण धीरा ॥ सर भंगादि
ऋषी गण हित कर रघुवर विरुज शरीरा ॥ चटज

शिष्य आनन्द विवर्धन ऋषि अगस्त्य सुरव दा-
ता ॥ पंच वटी प्रभु लीला कारी भुवनेश्वर जग त्रा-
ता ॥ सूर्पनखा अरि जित खर दूषण माया मृग सं-
हर्ता ॥ सिया शोध हित कानन चारी गीध रायग-
ति कर्ता ॥ दण्डक वन अघ हरण रमावर ऋषिम
एुन शुभ गाता ॥ कवन्धारि शेवरी सुख कर्ता मु-
नि नारद सुरव दाता ॥ हनुमत्तेश सुग्रीव सनेही जि-
त वाली वर वीरा ॥ वायुतनय हित कारक राघव शा-
मन दीन रुज भीरा ॥ सर्व्वे सुर भय हारि रघु कुलई-
से श्वर रघुनाथा ॥ लंका नासी रावन हन्ता जन का-
तिम सुख गाथा ॥ अनुज सिया युत अवध विला
सी सुर मुनेश जय धामा ॥ कुंज लाल प्रभु त्रिभुवनसे-
वित सिय वर शिव अभि रामा ॥ ८ ॥ जलद वरन तन
ललित कलेवर कमल नयन चित हारी ॥ इन्दु वद-
न छवि सागर अनुपम मौलि मुकुट शुभ कारी ॥
चंचल कुण्डल श्रवनन मणि युत शुचि कपोल अ
रुणारे ॥ मृग मद तिलक ललाट सुहावन चिकु
र रुचिर घुघरारे ॥ मृदु मुसकान मनोहर चितवनि
अधर अमीरसभारे ॥ धनुर्बान कर कंज विराजत
पीत वसन शुभ धारे ॥ कटि निषंग उर मणि गण
माला नप आभूषण छाजे ॥ मणि मुक्ता युत भूष

ण भूषित निरषि दिवाकर लाजै॥ रतन सिंहासन शुभ आसीना अनुज सिया युत रामा॥ कुंजलाल प्रभु रघुपति ध्यावत पूरत सब विधि कामा॥६॥ जय जन रंजन दया पुरन्दर रघव सुंदर वेषं॥ मुकट मौलि शर चाप रुचिर कर सिय स्वामीजय शेषं॥ ज लज नील तन शोभा सागर केशर तिलक सुभा। लं॥ विद्रुम अधर नासिका सुंदर अपर अपार वि। शालं॥ कंज वदन श्रवनन बिच कुण्डल कुंचित। चिकुर सुचारं॥ कंबु कंठ वृष भुज्नत कन्धर उर व य जंती हारं॥ अंगदादि युत बाहु मनोहर उदर म्हा कमनीयं॥ चर्णांबुज वृत्रादिक वन्दित शंकर उर रमणीयं॥ बसन पीत धर त्रय जग नायक सिया अनुज युत रामं॥ कुंजलाल प्रभु अनुपम अविग ति जय जय पूरणकामं॥१०॥ भजु मन रघुवर रा जिव लोचन करुणा पुंज दयालं॥ दशरथ नन्द न शिव अज वल्लभ केशव राम कृपालं॥ रघुन न्दन रघुवीर दया निधि राघव सीता नाथं॥ रघु कुल भूषण पतित उवारण रघुपति करुणा गा थं॥ रविकुल दीपक सीता स्वामी जनक सु ता पति वीरं॥ अय गव भंजन त्रिभुवन ईश्वर शारङ्ग पाणि सधीरं॥ अवध पाल अवधेश अव

ध पति अमरेश्वर श्रुति सेतु॥ धनुर्बाण धर अव
ध विहारी दशरथ सुत जग हेतु॥ जग वन्दन स
चराचर श्रीतम सीता राम उरारं॥ भव रुज शम
न अवध पुर वासी अज कर्ता जग सारं॥ सिय।
उर भूषण अज अविनाशी विश्वंभर विह काम।
रघुनायक रघुनाथ समापति सुर मुनि नर अभि
रामं॥ कौशिल पति कौशिल्या नन्दन कलि।
मल हर कल कालं॥ जन उर चंदन दीन सेनही।
सर सिज नयन विशालं॥ सुर मुनि सुरवर दुसह
दुरवभंजन शंकर हृदय निवासी॥ कुंज लाल प्रभु
जन हित कारी कामद विश्व प्रकाशी॥१२॥ जय
रघुनन्दन चंदन जन उर राघव रघुवर रामं॥ भ
व रुज गंजन रंजन सुर मुनि जगहित पूरण का
मं॥ अशरन शरन दीन हित सिय वर निशचर
जित रण धीरं॥ अंबुज चरण भरन जग सुरव निधि
करुणालय वर वीरं॥ रघुपति विपति विभंजन सि
य हित सुरव सागर जन पालं॥ हरन अमंगल मं
गल कर्ता नीरज नयन विशालं॥ अनुपम अम
ल अकल अज अवि गति जग स्वामी कर्तारं
कलि मल हरण शमन भव संशय केशव दया व
गारं॥ निश्वर दमन दलन जुर विक्रम वैदेही सुख

मूलं विय जग वन्दन मण्डन सुर कुल जिगमत-
त्व यदुकूलं ॥ दशरथ सुवन विभवपति अच्युत-
हनुवत प्रभु रुदेशं ॥ गुण निधि निगुण सगुण-
वपु कामद वारिज चरण सुदेशं ॥ वरजित भजि-
त अनघ जग वल्लभ सिय मुख चंद्र चकोरं ॥ म-
र्कटेश पति अलख निरंजन श्रुति विज्ञान नि-
त चोरं ॥ ललित विचित्र चरित्र परंपर सिय व-
र दीना नाथं ॥ कुंजलाल प्रभु श्याम भ्रमित हरि-
रघुवर नाथ अनाथं ॥ १ ॥ रवि मण्डल मण्डन सु-
ख संवुध सीता पति जग त्रातं ॥ दशरथ नन्दन
गुण गण मंन्दिर शोभा निधि जग तातं ॥ किल्वि-
ष हर खल शत्रु जगत पति सीताराम उदारं ॥
रण मुख रिपु सुर सत्र दुरत हर कामद विश्व भ-
र्तारं ॥ कमल नयन रवर रूपण गंजन रघुवर क-
रुणा रूपं ॥ सुर पतीश सुर शत्रु निकन्दन अविकृ-
ती श्रुति यूपं ॥ मर्कटेश प्रभु अलख निरंजन रघुनाथ-
क असुरारिं ॥ अयगव भंजन श्रमित अच्युत
केशव अवध विहारिं ॥ हरण अमंगल मंगल विग्रह
त्रिपुरारीश जगेशं ॥ भृगु नन्दन मद हर शिवव-
ल्लभ सेवित वृक्ष महेशं ॥ तरुण वेश म-
णि मनि मय रथक जगत गुरु श्री रामं ॥

विष्नु मुकुन्द गोविंद धनुर्धर करुना लय सु
ख धामं ॥ सुर मुनि सुरवर अरुज अज अव जि
त विश्वाभरन कृपालं ॥ अनघ अचिन्त अलौ
किक सिय वर राघव दीन दयालं ॥ हननन प्र
भु सुर मुनि उर चन्दन दीना नाथ रमेशं ॥ विबु
ध सुरवर जन आरत हर्ता कुंजेश्वर हृषि केशं
॥१३॥ सुर मुनि सुरवर अवध पति सिय पति
रघुनायक शिव रूपं ॥ दाश रथी सुर शत्रु निकं
न्दन सीता पति अज भूपं ॥ कलि कलुषज्वरह
र रघुनन्नसुर हित सीता नाहं ॥ विश्वंभर हर
मित्र जगत हित अगम अपार अगाहं ॥ जगत
जनक अघ पुंज विभंजन कोमल चित्त उदा
रं ॥ अखिल भुवन पति अविगति माधव अ
नुपम रहित विकारं ॥ विश्व रमित रवर शत्रुज
गत पति त्रिसिरारी रण धीरं ॥ भृगु नन्दन मद
हरण असुर जित अवधेश्वर रघुवीरान्वय गुनर
हित अकल गुण मन्दिर राजिव नयन विशालं
सुरव निध रघुवर सुर मुनि रंजन विश्वाधीश कृ
पालं ॥ शरन सुरवर हरि मित्र धनुर्धर केशव ॥
मिथ वर रामं ॥ भव रुज शमन विबुध पति अ
धि पति श्री वर करुणा धामं ॥ जन उर चंद्र

न शिव अज वल्लभ सीतापति सुख मूलं॥ दश
मुख शत्रु सुर सुर वन्दित श्री धर रवल गण
मूलं॥ विश्व मूल मदनारी ईश्वर मधु सूदन
अघनाशिं॥ रघुकुल तिलक चिरानंद अच्युत
कुंजलाल सुख राशिं॥ १४॥ जगवंदन जग ता
त जगत पति जनक सुता पति रामं॥ जगजी
वन जग दीश जगत गुरु जगदीश्वर शुभ नामं
विश्वेश्वर विश्वारति भंजन विश्वा धीश विश्व
लं॥ विश्व विमोहन विश्व विहारी विश्वा धार
स्यालं॥ अमर पाल पति अमर सहायक अम
रेश्वर भय हारी॥ अजर अमर अमराधिप नाय
क अनुपम अज असुरारी॥ दशरथ सुवन दश
नन हन्तादिति नन्दन भय दाता॥ दान वारि प्र
भु दिग पति करता दया मूर्ति शुभ गाता॥ रघु
नन्दन रघुनायक राघव रघुकुल तिलक रसालं
कुंजलाल प्रभु रघुपति रघुवर रघुनन्दन रघुलालं
॥१५॥ रमा रमण रघुवंश विभूषण राघव दीन द
यालं॥ रघुनन्दन रघुनाथ सिया पति त्रिपुरारीश
कृपालं॥ सुख निधि केशव करुणा मन्दिर सीता
वर सुख राशिं॥ रघुकुल दीपक राम रमावर अरि
केश्वर अविनाशिं॥ कलि मल हर सुख पुंज धनु

धीर पीतांवर अवधेशं ॥ सियऊ चंदन अवध वि
हारी विश्वंभर अमरेशं ॥ विष्वकत्वयन सुरा सुर
वंदित हरी हर स्वामि दिनेशं ॥ दनुज विमोहन ली-
ला अंबुद दीना नाथ दिनेशं ॥ अनाधन्त अति
गति अविनाशी केशव करुणा कन्दं ॥ कुंजलाल
प्रभु सीता वल्लभ हरण भीम रुज फन्दं ॥१६॥ वैदे-
ही वर राजिव लोचन अमित अपार विचित्रं ॥ अक
य अमान अमर रघुनायक शिव वपु अगम चरित्रं
जनक सुतापति स्वयं विहारी शिव अज मानस
हन्सं ॥ हरि अव्यक्त अलख रघुराई दमन शोक
रुज वंशं ॥ गुणमन्दिर गुण रहित अमर हित रघु-
ति शुभग शरीरं ॥ मंगल मणि त्रिभुवन पति काम-
द कामारीश सधीरं ॥ वनमाली सचरा चर सेवित
धनुधारी अज भूपं ॥ अमरेश्वर रघुनन्दन सिय पति
राघव करुणा रूपं ॥ पतित उवारण असुर महारी
रघुकुल कमल दिनेशं ॥ शरणा गत वत्सल पुरु-
षोत्तम श्री वर शमन कलेशं ॥ शिव वपु राम चं-
द्र गुण आकर भय हारी भय दायं ॥ कुंजलाल
प्रभु मानी मानद भुवनेश्वर हरि रायं ॥१७॥
जय रघुनायक शिव अज ईश्वर दीना नाथ द
यालं ॥ दया भवन अघ पुंज नशावन जनक सु

तेश कृपालं ॥ पुरुषपरेश रमेश कृपा निधि राघव करुणा अयनं ॥ सीता मोहन अवध विलासी केशव राजिव नयनं ॥ कवन्धारि सुग्रीव सहायक रघुवर सुकव निधानं ॥ असुर निकन्दन माधव अच्युत अनुपम अजित अमानं ॥ विश्वंभर सिय रमण कृपालय शेवरी सुरवर अकामं ॥ खर दूषण जित दूषण हारी भगवत सियामि रामं ॥ अवनि सुतेश दया निधि श्री वर रघुपति चित उदारं ॥ कुंजलाल प्रभु अधम उधारण जय जय दया अगारं ॥१७॥ जयश्री राम कृपाल दया वपु रघुवर हरि भगवानं ॥ रघुनंदन हृषि केश अजित अज रघुनायक बलवानं ॥ जगन्नाथ पुरुषोत्तम कामद अवधेश्वर पर ज्ञानं ॥ सुरपालेश पराभव कारण अनघ अचिन्त्य अमानं ॥ पुरुष पुराण जानकी वल्लभ सुरपति हित शिव रूपं भव रुज भेषज करुणा अंबुद जन हित विभुवनभूपं ॥ जगदीश्वर श्री रमण दयानिधि पीतांवर रघुनाथं ॥ सत्य स्वरूप चिदानंद सुर तरु केशव शोभा गाथं ॥ अरिवल भुवन पति दनुज विमर्दन सिय वर हरण विषादं ॥ शिव मूरति सचरा चर नायक शिव अज आदि अनादं ॥ मिथिलेश भुवाल शरण हित कौशिल्या सुत वीरं ॥ भृगु नन्दन भ्रम

हर सिय स्वामी दनुजारी रण धीरं॥ निरामय नीति निधि रघुपति राघव नारायण सुरव मूलं॥ गुण-तीत गुण राशि विश्वमय शमन भीम रुज मूलं॥ अजरव अनन्त अचिन्त्य मनोपम अवधीश्वर निहकामं॥ कुंजलाल प्रभु रमा विहारी अच्युत जग अभिरामं॥९६॥ जयजय सीता अवधपति रघुवर त्रयजग भूपं॥ सिया मनोहर राजिव लोचन रघुनन्दन शिव रूपं॥ पुरुषोत्तम पीतांवर कामद दशरथ सुत सिय नाहं॥ पतित उधारण शारङ्ग पाणी अगम अनन्त अगाहं॥ दिति नन्दन रिपु रवि कुल मण्डन सिय मुरव चंद्र चकोरं॥ रघुराई कौशिक मरव त्राता हरण-दीन दुरव घोरं॥ धनुधारी गिरजेश्वर वन्दित अखिलेश्वर जगशेषं॥ निरालंव निष्काम निरंजन विश्वंभर शुभ वेषं॥ जन रंजन सुर राय धरणि धर जन कातिम रमणीयं॥ अधम उधारण भव निधि बोहित रावण कुल दमनीयं॥ केतु सुता रिग्रहिल्या तारी सर्वोपरि सुरव राशिं॥ कुंजलाल प्रभु करुणा मन्दिर जनक सुता हिय बासिं॥२०॥ दया निकेत कृपा निधि केशव सीता पति अवधेशं॥ जगत जनक जनकातिम स्वामी रघु नन्दन अखिलेशं॥ भुवनेश्वर भरताग्रज का

मद विश्वाधार रमेशं॥ लक्ष्मणेश रिपु सूदन वल्लभ
राघव जनक सुतेशं॥ अप्रमेय त्रयलोक विभी-
षण शोभा पुंज भवेशं। दशरथ सुवन दशानन घा-
पक रविकुल तिलक अजेशं॥ विश्वरूप वासव पति
विजयी वैदेही हृदयेशं। विश्वेरत वैकुंठ वरणी जन
हिय कमल दिनेशं। भगवत पारब्रह्म रघुवर्य सि-
य मोहन शमनेशं॥ नभगेश्वर प्रभु अवध विहा
री अजकर्त्ता हृषिकेशं॥ मर्कटेश प्रभु अधम उधार-
ण किल्विष हर कालेशं॥ अयगव मंजन आरतिहा
ती हर प्रभु सुर पालेशं॥ भव वारिध जल जान द-
यालय अपर अपार परेशं॥ कुंजलाल प्रभु जगपि-
तुमाता सिय प्रभु शमन कलेशं॥२९॥ जय सिय राम
कृपाल दयानिधि विश्वंभर सिय कन्तं॥ किल्वि-
ष हर रघुवर रघुनन्दन सेवित अज शिव सन्तं॥ म-
नसिज रूप अवधपति कामर गुण तीत गुण व-
न्तं॥ गोविज्ञ पालक त्रिभुवन त्राता सीतापति भग
वन्तं॥ जनदुरवहारी सुरपति दूश्वर अगणित वेष
धरन्तं॥ अनुपम अपर सनीह अकामी अनघ
अमोघ अनन्तं॥ अप्रमेय पुरुषोत्तम रघुपति
अच्युत अलख अचिन्तं॥ अज अविनाशी मा-
नद मानीजन हित चरित करन्तं॥ गोविज्ञ-

श्र अगणतारति हारी वेद पुराण मनन्तं॥ कुंजलाल प्रभु सिया मनोहर शिव अज हृदय वसन्तं॥ २२॥ कृपासिंधु रघुनायक केशव अकल अभय अनश्यामं॥ दयाभवन अघशमन धनुर्धर जय२ सीतारामं॥ सियारमण सुरवधाम असुर रिपु सुख निधिरमाभिरामं॥ रमा स्वामि रघुवीर जगत प्रति जय जय सीता रामं॥ विश्वाधार विश्वहित कर्ता सियवर करुणा धामं॥ पद्मा मोहन हरि असुरारी जय जय सीतारामं॥ अखिलेश्वर महि भार उतारी अविगति पूरण कामं॥ क्षमा निकेत अखिल अघ गंजन जय जय सीतारामं॥ सुनासीर प्रभु त्रिभुवननायक रघुवर रूपललामं॥ गुणाधीश कुंजलाल सहायक जय जय सीतारामं॥ २३॥ जय रघुवीर जानकी नायक रघुवर धनुशर धारी॥ दयासिंधु रघुनाथ कृपालय सियवल्लभ दनुजारी॥ दशरथ सुवन रमेश कृपानिधि भवरुज हर असुरारी॥ कित्विष हरकाकुत्स्थ श्यामय सुर त्राता दैत्यारी॥ कौशिक मिष दुस्वाकुश्री धर रघुनन्दन भयहारी॥ सुर मुनि सुरवद ताड़का नाशन राघव राम खरारी॥ खर दूषण त्रिसिरा संहर्ता जित रावण बल भारी॥ शंभु चाप भंजन रघुराई रघुपति अधमउधारी॥ सियला :

धीश कुमारी वल्लभ संतत स्वबस विहारी॥ कुं-
जलाल प्रभु करुणा मंन्दिर सुर नर मुनि हि-
तकारी॥२७॥ जय रघुनन्दन शिव अज ईश्वर
रघुवर धर्मी तारी॥ शंभु अजादि अजित अवि-
नाशी विश्वेश्वर अघहारी॥ मधुसूदन दश मौलि-
विनाशी सुरव सागर अविकारी॥ सुग्रीवेश वि-
भीषण श्रीदा लेरवेश्वर सुरवकारी॥ त्रभुवन प-
ति दीनारति मोचन निगम नीत उपचारी॥ भय रा-
ता भय हरण रमावर राम चंद्र धनुधारी॥ शिव अ-
ज वन्दित अगम निगम पति सीतेश्वर असुरारी
पमेश्वर सुर मित्र कामदा गिरागम्य तनुजारी॥
जन रंजन अमरधिप भय हर नभगेश्वर भूम
टारी॥ भगवत भवरुज शमन विश्वपति भुवने-
श्वर बनवारी॥ गजभय हर्ती कूट भिरामी त्रय-
गुण जग विस्तारी॥ कुंजलाल प्रभु विश्व रमित
हरि अगणित पतित उधारी॥ कलि कलुषज्वर
हर रघुनन्दन सीतापति जग सारं गजगन्नाथ जग-
दीश विश्वपति शिव वपु अज कलीरं॥ विश्वभर
महि भती कामद कलिमल हर वपु चारं॥ दुक्ख
हरण सुख करण अवधपति शमनेश्वर अविका-
रं॥ सुर रिपु गंजन अजर अजित अज केशवज-

जगदा धारं॥करुणा रूप अमित अविनाशी अ
नुपम अगम अपारं॥ मंगल मणि सुख सदन चि
दानँद राघव चित उदारं भृगुनन्दन मद हर जग व-
ल्लभ प्रशमन वसुधा भारं॥अगुण अजीत सुरासुर
बन्दित जनक सुता उरहारं॥जयजयजय श्रीराम
रमावर कुरु कुंजलाल उबारं॥२६॥जय जय सिय
पति जगहितकारी त्रभुवन प्रभु जग त्रातं॥ दशर-
थ नन्दन अवध विहारी परमेश्वर जगतातं॥शंक
र प्रभु शत्रुकारि बिभंजन हरि हर मित्र अजातं॥ध
नुधारी धनुधारी कामद सुरपति शत्रु अरातं॥अ-
लख अगोचर अविगति राघव अच्युत अनघ अ-
तातं॥वैदेही वर राम खरारी अज अद्वैत अगातं।
रघुनन्दन रघुवीर दयानिधि सीता प्रभु शुभ गा-
तं॥ रघुनायक रघुराई अच्युत कुंजलाल पितु।
मातं॥२७॥जय अवधेश अवधपति नन्दन दी-
नानाथ दयालं॥ विश्वाधार त्रलोकी स्वामी म-
दनारीश कृपालं॥अखंडेश पति अज अविना-
शी सियवर नयन रसालं॥ सुकृतसदन विश्वंभ
र अनुपम मरकत रूप विशालं॥भवरुज संशय
हरण सियापति अखिलेश्वर जगपालं॥जग-
न्नाथ मधुसूदन माधव सीतेश्वर खल कालं॥र-

मा रमण भव वारिध बोहित दिति नन्दन उर साल
शंभु अजेश्वर विजयी वितयी अमरा धीश भुवाल
रघुकुल तिलक चिदानद चक्री जनक सुताउ
र माल ॥ जानुकीश जग जीवन केशव कुंज म
भू रघुलालं ॥ २७ ॥ जनक सुता प्रभु त्रय जग व-
न्दित अवधेश्वर शिव रूपं ॥ मंगल करण कृपा
लय कामद जग त्राता हरि भूपं ॥ ललितानन
जगदीश्वर सियवर शेवरी सुखद अनूपं ॥ अमि
त अद्वय अचिन्तक श्री धर भुवनेश्वर जगयूपं
सूप नखी रिपु जित स्वरूपण अगम अपार अ
रूपं ॥ कुंजलाल प्रभु सीता मोहन शमन दुख
भव कूपं ॥ २८ ॥ विश्वंभर सुख धाम अवध प
ति अखडज पति प्रभु रामं ॥ मगल सदन भक्त
हितकारी सियवर पूरण कामं ॥ रघुवर राघव रा
जिव लोचन मधुसूदन शुभ नामं ॥ विश्व रमि-
त रघुनाथ धनुर्धर अज कर्ता शिव धामं ॥ वष
टकार दृस्वाकु सियापति रघुनायक जित कामं
व्यक्ता व्यक्त स्वरूप दयानिधि केशव अनुपम
नामं ॥ निगमा गम अनुकूल विश्वपति सुर मु-
नीशनिःकामं ॥ अप्रमेय काकुत्स्थ दया वपु ज-
नक सुता अभिरामं ॥ जगन्मूल जग शेष जगे

श्वर मरकत रूप ललामं॥ कुंजलाल मजु सिया मनोरम निशि दिन आठौ यामं॥३॥ सर्वोपरि सुखधाम निरामय रघुनायक रघुवीरं॥ जगतजनक जन आरतहारी शोभा पुंज सधीरं॥ सुखकंद त्रपुरारी ईश्वर भंजन जन भव भीरं॥ सर्वकारी जनकातिम नायक शमन दीन दुख पीरं वनमालीहरि शत्रु प्रहारी पुहमी अनिल समीरं कुंजलाल प्रभु सीता वल्लभ हरीराय नभ नीरं॥४ रघुवीर कृपाल दयाल सियावर राघव त्रय जग केतुं॥ शिव रूप अनादि सुखादि परात्पर रघुपति पुराणेयो पेतुं॥ सुखधाम सुजान रामाल धनुर्धर नारायण जग हेतुं॥ जगदीश रमेश अजेश हरी न हित रघुवर भव निधि सेतुं॥ भगवान अनंतो त अजीत जगत पति हरि ईश्वर श्रुति नेतुं॥ हरि पाल अकाम सकाम अजर अज कुंजेश्वर सुख केतुं॥५॥ जय जय राम दीन हितकारी रघुवर जनक सुतेशं॥ अप्रमेय ब्रह्मादिक वन्दित रघुकुल कमल दिनेशं॥ अनाथन्त लोकेश लोक पति लोका लोक निवासं॥ भव्य भूतभवेश अगम अज त्रयजग रूप प्रकासं॥ लंकेश्वर रिपु ललित कलेवर रघुनन्दन हरि सयं॥६

बुज लोचन जन भय हर्ता सुर नर आनंद दाता।
आदिदेश प्रभु रमा मनोहर नीरज नयन विशा
लं ॥ सुग्रीवेश विभीषण श्रीदा करुणा पुंज
कृपालं ॥ त्रिदशेश्वरपति भवरुज भेषज सिवाई-
श भगवानं ॥ विश्वेश मधुसूदन कामद दान-
व रिपु सुरव दानं ॥ शंभु देश जगदीश्वर केशव शि-
व अज हृदय विहारिं ॥ रघुकुल तिलक अगा-
ध असुर रिपु सुरपति शत्रु प्रहारिं ॥ हरि प्रभु।
मित्र हरी हितु अच्युत रघुकुल मणि शुभ नामं।
कुंजलाल प्रभु दीन सनेही सिय प्रभु जयजय
एमं ॥३३॥ सिया रमण रघुनाथ रमावर अखि-
लेश्वर सुरव राशिं ॥ विष्णु जिष्णु जगदीश सिया
पति रघुवर जन चित वासिं ॥ सिया सुवर सुख
पुंज मनोरम दीनानाथ कृपालू ॥ त्रिभुवन पति।
सचराचर सेवित केशव दीन दयालू ॥ विश्वा-
धार विबुध पति नायक रघुपति आनंद दाता।
शिव अज हृदय विलासी माधव बनमाली सुर
त्राता ॥ अविगति अगम अकथ अविनासी ।
सिय प्रभु अजित अमानी ॥ भवरुज शमन स-
कल अविकारी राघव गुणरङ्ग पानी ॥ रघुनन्द-
न परमेश्वर पावन अच्युत अज असुरारी ॥ ह-

रि पति ईश हरी हर कर्ता सिया राम दनुजारी
वर दूषण जित गीध उधारी रघुवर चित्त उ
दारं ॥ जनकात्म प्रभु दश वदनारी जग हि
तु दया अगारं ॥ सिया रमण यज्ञेश्वर यज्ञी
शिव वपु अवध भुवालू ॥ नभग नाथ पति वि
श्व विमोहन कलिमल हर कलि कालू ॥ अज
सनकादि सुरासुर वन्दित गोद्विज शत्रु प्रहा
री ॥ कुंजलाल प्रभु दशरथ नन्दन सुर नर मु
नि हितकारी ॥ ३५ ॥ रघुवर सरसिज नयन सि
यापति सुख निधि विष्वक्सेनं ॥ रमा
विहारी राघव रघुपति शशि मुख निन्द
कमयनं ॥ कलिमल हरण हरी अविनाशी
विश्वंभर सुख सदनं ॥ अज अव्यक्त अचिन्त
अगोचर राघव सुंदर वदनं ॥ दशरथो शुभ का
म दयालय कुंभ करण संहरणं ॥ भुवनेश्वर
भव सागर बोहित अगणित पतित उबरनं ॥
अमल अमोघ चराचर सेवित श्री धर कारण
करनं ॥ अखिलेश्वर भू भार उतारी त्रिविधि ता
पत विस्तरनं ॥ गीध उधारण गणिका तारी मा
धव अधम उधरनं ॥ कुंजलाल प्रभु दीन सने
ही केशव अशरण शरणं ॥ ३५ ॥ शंकर अज

उर कमल दिवाकर रघुवर सीताराम ॥ निग-
म नीति निधि शरणा शरणं सिय प्रभु करुणा
धाम ॥ भव वारिध जल यान कृपाकर अज
कर्ता शुभ काम ॥ नभगेश्वर पति सुवस विहा-
री को शल्या अभिराम ॥ हरि ईश्वर सुख स-
दन जगत पति भव भय हरण अकाम ॥ धनु-
र्बाण धर मंगल मूरति राघव ललित ललाम
॥ अधम उधारण त्रय जगमण्डन हृषी केश
शुभ नाम ॥ दशरथ सुत त्रय ताप विभंजन र-
घुनायक घन श्याम ॥ व्यक्ता व्यक्त स्वरूप ध-
रणी धर बनमाली जय धाम ॥ कारण करण
कुंज सुख दायक श्री धर पूरण काम ॥ ३६ ॥ त्रा
हि त्राहि रघुनाथ कृपा निधि रघुवर अव
ध विहारी ॥ दशरथ नन्दन सीता वल्लभ ज
न अघ शमन खरारी ॥ धनुधारी सिय रमण
जगत पति सीतापति असुरारी ॥ कमल नयन
कलि कलुष निकन्दन सीतेश्वर अघहारी ॥
अरिवल भुवनपति अनुपम कामद अघ धर-
दमन मुरारी ॥ दशरथ तनय सुरासुर सेवित म-
य हर विश्व अधारी ॥ किल्विष शमन अनघ
जग वन्दन त्रय गुण जग बिस्तारी ॥ बिश्वंभ

रसुख पुंज दुःख हार हरि प्रभु गज उद्धारी ॥ गु
ण मन्दिर गुण रहित अजर अज परमेश्वर द-
नुजारी ॥ कुंज सहायक अविगति अच्युत।
श्री कर जन हितकारी ॥३॥ शिव अज व-
न्दित त्रिभुवन अधिपति पुरुषोत्तम सुखकारी।
हरण असंगल रघुपति रघुवर करुणानिधि व-
पुधारी ॥ रघुनन्दन सुर शत्रु निकन्दन दीना ना-
थ खरारी ॥ अयगव भंजन सुरमुनि त्राता सुर
पालेश मुरारी ॥ जग हित करण अवध पति
राघव भृगुनन्दन मद टारी ॥ मधु सूदन विश्वंभ-
र माधव सिय बल्लभ दनुजारी ॥ दशरथ सुवन
अनघ अविनाशी सुरपति प्रभु अविकारी ॥ वि-
ष्णु मुकुन्द अलख सुर रक्षक करुणालय अ-
सुरारी ॥ विश्व रमित गोविन्द धनुर्धर सिय वर
विश्व अधारी ॥ कुंजलाल प्रभु केशव श्रीधर
हरि प्रभु अवध विहारी ॥४॥ त्रिपुरारीश ज्ञान गु-
ण मंदिर रघुनंदन रघुराई ॥ सन्त सुखद दीनार-
त भंजन सुर नर मुनि सुखदाई ॥ संशय शमन अ
नघ अविकारी संकट हरजन त्राता ॥ जगदीश्वर
गदीश सियापति केशव जग पितुमाता ॥ पुरुषोत्त-
म परमेश्वर रघुवर आनन्द कन्द भवेश ॥ परमात

म हरि मित्र परंपर रघुनायक सर वेश।।जन रंजन
इक्ष्वाकु चिदानंद सीतापति सुरव धामा।।दश वद-
नारि त्रिदश सुरव दायक सियपति गुण कामा।।
पुरष पुराण दयालय कामद सीतानाथ खगारी-
करुणा निधि दुरव दमन कृपा कर वैदेहीश मुरा-
रि।। अलरव अकामी आरत नाशन सुंदर अरुज
शरीरा।। कुंजलाल प्रभु हरि धनुधारी गुण आग-
र रण धीरा।। ४६।। जय जय जय रघुनन्दन राघा-
व करुणा कर जगपाली।। सगुण अगुण वपु भ
प हर माधव जित दूषण वनमाली।। महि सुर हि-
त रघुवंश विभूषण शिव अज हृदय निवासी।।
मनसिज वपुष सिया उर चंदन सुरपति शत्रु वि-
नाशी।। रविकुल तिलक चराचर वन्दित सुर-
र मुनि भय भंजी।। कमल नयन पुरुषोत्तम र
घुवर विश्वंभर जग कंजी।। गुणमन्दिर सुर पा-
ल दुष्य हर निशिचर वृन्द अराती।। जलज पा-
णि कलि कलुष निकन्दन दश सुरव वंश नि-
पाती।। जगत पूप विश्वेश्वर अनुपम अनघ अ
कल सुरवदानी।। निर्गुण निरंजन अजित अचि-
न्तक अखिल विश्व दुरव हानी।। ऋषि त्रिय हि-
त कर सारङ्ग-पाणी सर्वोपर सर वारी।। कुंजलाल प्र-

मु अच्युत अवि गति दशरथ लाल अनारी॥४०
जय रमम त्रिविध जग नायक सिय मुख चन्द्र च-
कोरं॥ रघुवर राजिव नयन धनुर्धर सुंदर नवल कि-
शोरं॥ शिव अज मानस हंस जगत प्रभु गुण अव-
गुण वपु धारं॥ खर दूषण रिपु सियउर चन्दन-
जन रंजन करतारं॥ अगम अनन्त अनीह परं प-
र अशरण शरण दयालं॥ दशरथ नन्दन अज प-
रमेश्वर जन रुज हरण कृपालं॥ सुकवि भवन भव
अंबुध वोहित रघुपति वपु कमनीयं॥
भव भय हर रघुनाथ सियापति जन अघ दरवह
रनीयं॥ अधम उधारण दश मुख क्षय कर हरि
अच्युत रघुवीरं॥ कुंज सुखद भव वन्ध निवा
रक शमन विपुल भव भीरं॥४१॥ अवध बिहारी
जन हितकारी भुवनेश्वर सुख रासी॥ भवरुज
हारी विपति निवारी गिरिजेश्वर उर वासी॥ सुर
मुनि त्राता करुणा गाता रघुकुल कमल पतंगू
त्रयजग ताता अलख अजाता अनुपम अकथ
अभंगू॥ गुण गण खानी अजित अमानी सि
य वल्लभ हरि राया॥ जग सुखदानी सारंग पा
नी रघुवर अनघ अमाया॥ नयन विशाला
दीन दयाला सिय नायक श्री रामा॥ अवधभु

वाला अमित कृपाला सिया ईश शुभ नामा॥
जन अघ हर्ता मंगल कर्ता राघव दया निके-
त। शिव अज भर्ता अधम उधर्ता माधवव-
प जगेत॥ सब घट बासी विश्व प्रकाशी ह-
रि वल्लभ सर वेशा। निशिचर नाशी अवध
बिलाशी सुरपति पति जग तेशा॥ रघुकुल ना-
यक जन सुख दायक करुणा सिन्धु कृपाला।
कुंज सहायक श्रेष्ठ उपायक केशव दीन दयाला
४२॥ जय जग वन्दन सिय रघुनन्दन सीता नाथ
कृपालू। जन उर चन्दन दनुज निकन्दन शोभा।
धाम दयालू॥ दश मुख गंजन सुर मुनि रंजन र-
घुकुल मणि रघुराई॥ अघ थर भंजन सिय द-
ग अंजन भय हरता सुखदाई॥ रवि कुल भानू
कृपा निधानू जनक सुता उर माली॥ अलख अ-
कामी विश्वाभिरामी कुंजेश्वर जग पाली॥ ४३॥
सुख सदन रघुनायक कामद सियवर राघवरा-
मं। रघुनन्दन रघुवीर सियापति सीतापति घनश्या-
मं॥ विश्वंभर भय हरण कृपा निधि रघुवर पूर-
ण कामं॥ खरदूषण जित विश्व विमोहन जि-
त बाली बल धामं॥ सुग्रीवेशा बिभीषण स्वा।
मी मनसिज रूप ललामं॥ नभगेश्वरपति पति-

न उबारण शवरी सुरवद अकामं॥ अच्युत ।
अनघ अजित अविनाशी हृषि केशव शुभ।
नामं॥ कुंजलाल प्रभु त्रिभुवन बन्दित केश
व सियाभि रामं॥ ४४॥ रघुवर राजिव नैन रु
पालय राघव त्रय जग भूपं॥ सिय बर हरि र
घुनाथ अनामय केशव करुणा रूपं॥ रघुराई
त्रिदशाधिप वल्लभ रघुपति दीना नाथं। दास
रथी सचराचरवन्दित सिया राम शुभ गाथं॥ध
नुधारी पीतंवर जगहितु रघुनायक भव नाहं।
मंगल करण अमगल हारी सीतेश्वर निर्गाहं॥
कल विषहारी शिव अज कर्ता अजित अमो।
घ अपारं। कुंजलाल प्रभु हरि हर ईश्वर श्री प
ति दया अगारं॥ ४५॥ जय धनुधारी करुणामं
न्दिर सियपति हरि भग वानं॥ जन मन रंजन
सुर सुख दायक गुण तीत गुण वानं॥ रघुनंद
न रघुनायक केशव कलिमल अहि खग राजं।
विश्वंभर मधुसूदन माधव संशय खग बर वाजं
अकल निरंजन मानी मानद भव सरिते सु
पोतं। व्यक्ता व्यक्त दयाल दीन हितु शमन
भीर भय गोतं॥ जगत जनक यज्ञेश्वर यज्ञी
शिव उर सरित मरालं। निराकार निहकाम नि-

रामय करुणा सिंधु कृपालं॥ पुरुषोत्तम पर-
मेश्वर कामद जन अघ विपिन कृशानं। कुंजल-
ल प्रभु दशरथ नंदन बक्त सरोरुह भानं॥
जय हरि दीन हेत सुख अंबुद करुणा मय जग
सारं। रघुवर रामचंद्र सुर रंजन हरि ईश्वर अवि-
कारं॥ सियपति रमा ईश रघुनायक लक्ष्मणेश
जग भूपं॥ भरताग्रज रिपु सूदन वल्लभ करुणा-
लय शिव रूपं॥ कौशिल्या आनन्द विवरधन॥
अवधेश्वर सुखदाता। सिया स्वामि दशरथ सुत
केशव कौशिक मुनि मख त्राता॥ कवन्धारिश-
कारि विनाशी शिव वपु पूरण कामा॥ धनुधा-
री पीतंबर चक्री निहकामी घनश्यामा॥ भव-
ज भेषजजनक सुतेश्वर करुणा पुंज सुवेषं। कुं-
जलाल प्रभु सब घट वासी किलविष हर जगशे-
षं॥४७॥ करुणा सिंधु दयाल दीन हितु रघुवर
राघव वीरं। सिया कन्त अवधेश रमावर केशव
अनुपम धीरं॥ विश्व हेत सुख पुंज कृपालय र-
घुकुल मणि शिव रूपं। दनुज बधिक रघु इन्दु
अनामय अविगत शिव अज भूपं॥ भव अंबुद
जल जान खरारी सियवर अजित उदारं। पतित
उधारण खल संहारी अच्युत शमन विकारं॥

दशरथ तनय सुरासुर सेवित मधुसूदन हरि पा-
लं॥ कुंजलाल प्रभु विश्व विमोहन जनकात्मि
उर मालं॥ ४धा जय धनुधारी दशरथ नन्दन र-
घुवर अवध विहारी॥ जनक सुतापति हरि जग
वन्दन रघुकुल कमल तमारी॥ मंगल भवन-
जगत हितकारी सुर मुनि आनंद दाता॥ रघुप-
ति असुर निकन्दन पावन भुवनेश्वर जग त्राता॥
अयगव भंजन पूरण कामा दशरथ सुत अवधे-
शा॥ कौशिक प्रिय पुरुषोत्तम अच्युत सुर मुनेश
अखिलेशा॥ अखिल लोक पति अग जग ईश्व-
र जन रंजन जग हेतू॥ अमर हेति अमराधिप अ-
धिपति शिव मूरति सुख केतू॥ विश्वंभर करतार
कामदा रघुनन्दन सुख धामा॥ कुंजलाल प्रभु सि-
या मनोहर हरि स्वामी सिय रमा॥ ४धा भजु म-
न राम सिया वर राघव रघुनन्दन रघुराई॥ दशरथ
तनय जगत हितकारी दीन अनाथ सदाई॥ भुव-
नेश्वर सिय वल्लभ कामद विश्वंभर जग त्राता॥
अवध अमोघ अयोध्या नायक सुर हित करुणा-
गाता॥ विष्णु मुकुंद अजित नारायण रघुपति अ-
चल अपारा॥ सियवर विश्वरूप जगनायक अविग
ति विश्व अधारा॥ कवन्धारि मधुसूदन चक्री

केशव सियाभि रामा ॥ रिपु सूदन सुर शत्रु निकन्द-
न माधव अमित अकामा ॥ जगत जनक सन्तत-
भयहारी सीतापति असुरारी ॥ विश्वाधीश अचिन्त
मनोहर कुंजलाल दुख हारी ॥ ५० ॥ जय रघुनायक
जन सुख दायक रघुपति अवध बिहारी ॥ जग हित-
कारी राम खरारी दुख हर विश्व अधारी ॥ कर ध-
नुषायक दीन सहायक भव भोचन सुर त्राता ॥ प
तित उधारी हरी असुरारी मुख लोचन जग त्राना ॥
सृष्टि उपायक भव दुख घायक करुणा पुंज अजेशा ॥
निगम प्रचारी अधम उधारी हरि हर मित्र रमेशा ॥
अज अविनाशी घट घट बासी सीतापति रघुराई ॥
संकट हर्ता जय जग भर्ता कुंजलाल सुख दाई ॥
५१ ॥ जय सीता पति माधव रघुपति सरसि जगन्-
नल्लालं ॥ हरण अमंगल श्री रघुनायक धनु-
धारी सिय रामं ॥ दशरथ नन्दन करुणा सागर सु-
खनिधि अज अकामं ॥ जन दुख हरण चराचर
सेवित दनुजारी सियरामं ॥ हृषी केश वैकुंठ वि-
लासी अघ हर्ता सुख धामं ॥ मरकट पति पति
हनुमत स्वामी त्रिशिरारी सिय रामं ॥ अज अव्यक्त
अजात अचिन्तक भुवनेश्वर जित कामं ॥ त्रिच-
धनु भंजन विजयी राघव अविकारी सिय रामं ॥

निरगुण निरामय नीरज लोचन शबरी प्रभु निह-
कामं ॥ पतित उधारण सिया मनोरम असुरारी सिय
रामं ॥ सुर पालेश जगति पति अच्युत मधुसूदन श्री
भ नामं ॥ कुंजलाल प्रभु विश्व विमोहन वनमाली
सिय रामं ॥ ५४ ॥ विश्वंभर हरि विश्वा भूषण दीना
नाथ दयालं ॥ अवध नाथ रघुनाथ धनुर्धर सिय
वर अवध भुवालं ॥ चतुरानन प्रभु विश्व प्रकाशी
रमा रमण सिय रामं ॥ दशरथ तनय शंभु सुख-
दायक कौशल्या सुख धामं ॥ अधम उधारण क
रुणा मूरति विबुधारी गण त्रासिं ॥ मर्यादा पुरुषोत्त
म राघव रघुबर घट घट बासिं ॥ चिरानंद परमेश्व
रअवि गति सिया रमण शिव रूपं ॥ महावीर रघु-
वीर महीधर सुर त्राता जग यूपं ॥ मधुसूदन दुस्वा
कु कृपा निधि जलशाई भगवानं ॥ हरि वल्लभ ज-
गहेत जगत पति गुण तीत गुण वानं ॥ विष्णु मुकु
न्द अजात अचिन्तक सीतेश्वर जग हेतुं ॥ जगन्ना
थ जगदीश कृपालय सुर नर मुनि सुख हेतुं ॥ अनु
पम अगह अजेश रनुज रिपु सुरपतीश सुख गातं ॥
कुंजलाल प्रभु लषण सिया युत रघुपति त्रिभुवनत्रा
तं ॥ ५५ ॥ शंभु ईश चतुरानन वन्दित सिय नायक-
रघुबीरं ॥ बिद्रुम अधर कपोल सरस रंग अनुपम

अमल गंभीरं ॥ तिल प्रसून समघ्रान सुभग वर
श्रवण कमल दल नयनं ॥ धनु इव भ्रूछ विधाम
मनोरम भाल महा शुभ दयनं ॥ कुन्द मुकुल द-
न्ता वलि शोभा मृदुल हास चित चोरं ॥ विकस-
त सर सिज मुख कमनीया शमन विविधि रुज-
घोरं ॥ श्रवण सुकुण्डल मणि युत अनुपम कुंचि-
त चिकुर तमालं ॥ रवि दुति कीट मुकट शिर शो-
भित तिलक विशालं सुमालं ॥ वृषभ कंध सुन्द-
र दर ग्रीवा उर वैजन्ती मालं ॥ रुचिर चारु कर-
युगल मनोहर नीरज विमल सनालं ॥ उदर सुधा-
सा सुख जल पूरित त्रिवली रव तरंगं ॥ कमल ना-
भि सुख मूल सुहावन अगम अगाध अमंगं ॥ च-
णांम्बुज शिव हृदय विलासी जन दुख हर जग-
मूलं ॥ ललित वेष सुख दायक सुन्दर परि धन-
पीत दुकूलं ॥ जलज वनज युत भूषण भूषित नी-
लेन्दीवर श्यामं ॥ कुंजलाल प्रभु लषण सिया-
युत जय जय सीता रामं ॥ ५५ ॥ जय धनुधारी अ-
वध विहारी सीतापति रघुराई ॥ राम खरारी दनु-
ज प्रहारी हरि वल्लभ सुखदाई ॥ दया निकेतू त्रि
भुवन हेतू दुख भंजन सियरामा ॥ करुणा केतू श्रुति
नय सेतू सन्त सुखद गुण धामा ॥ शिव अज भा-

ता असुर संहरता शोभा निधि सुर पाली ॥जन-
भय हर्ता पालन कर्ता सीतेश्वर वनमाली॥ अमर-
अजेशा शमन कलेशा अमराधिप अरिकालू ॥जन
क सुतेशा गौरि पतीशा जन रंजन हरि पालू ॥ अरु-
ज मकुन्दा करुणा कन्दा शिव वल्लभ शिव रूपा-
रविकुल चन्दा परमानन्दा सियवर परम अनूपा॥
घट घट वासी लोक प्रकाशी सुख मन्दिर गुण-
धामा ॥ चित्त हुलासी जगत निवासी शिव वल्ल-
भ शुभ कामा॥सुन्दर श्यामा रूप ललामा अवधे-
श्वर जगदीशा॥ सियाभि रामा पूरण कामा सिय-
स्वामी सरवीशा ॥ अलख अमाना दया निधाना र
घुनन्दन असुरारी ॥हरि भगवाना भव जल याना
कुंजलाल हितकारी ॥५५॥ सुरपति प्रभु भगवान-
कृपा निधि राघव अवध विहारी ॥ मुनि जन सुख
द दयाल दीन हित सियवर पतित उवारी ॥ मधुसू-
दन रघुवंश विभूषण शरण सुखद भयहारी॥करुणा
धि इक्ष्वाकु धनुर्धर दुख भंजन सुखकारी॥गुण
मन्दिर जगदीश रमावर सीताराम खरारी ॥ विश्व
भर रघुनाथ जगत पति भुवनेश्वर असुरारी ॥ सि
या ईश सुर शत्रु निकन्दन करुणा कर दनुजारी॥
किल्वि ष हर अवधेश विश्वपति सुर त्राताविशि

रारी ॥ गुण तीत गुण रहित अमर प्रभु कामद वि-
श्व अधारी ॥ कुंजलाल प्रभु सीता मोहन सुरपाल-
क सुरारी ॥५६॥ अलख अनन्त ॥ अवध पति न-
न्दन राजिव नयन विशालं अनुपम अविगति
सिय उर चंन्दन राघव अवध भुवालं ॥ अज अ-
द्वैत अनघ अघ भंजन राम अखिल जगभू-
पं ॥ रघुवर रघुपति खल गण गंजन करुणा म-
य शिव रूपं ॥ कलिमल हर सुख पुंज अमर प-
ति रघुनायक जग हेतु ॥ अजर अकल रघुनाथ-
दीन हित सिया सुखद श्रुतिसे ॥ कपि पति
मित्र रमेश रमावर सिय वल्लभ सुख सारं ॥ भग-
वत यज्ञपुरुष पुरुषोत्तम शरणागत हित कारं ॥
दशरथ नन्दन श्रीधर केशव शिव कर्त्ता जग मू-
लं ॥ अगुण सगुण वपु गुण गण आकर सकल
कला अनुकूलं ॥ नरक निकन्दन त्रिभुवननायक
सुर पालक जन त्रातं ॥ किल्विष शमन दीनहि-
तकारी असुरारी सुख गातं ॥ ॥ विश्वंभर सुख
कन्द धनुर्धर रमा रमण सुख धामं ॥ विबुध-
शत्रु जित जन मन रंजन सिया सुखद शुभ का-
मं ॥ अशरण शरण अमर सुख अंबुद व्यक्ता व्य-
क्त स्वरूपं ॥ हरि रिपु दलन कुंज सुख दाता जगता

धीश अनूपम ॥५२॥

छन्द गीतिका

दशरथ तनय जगत सुख दायक सियवर केशव सुं
दर गात ॥ रघुकुल भूषण अवध विहारी वसुधा पति
हरि दनुज अरात ॥ त्रिभुवन पति त्रय ताप नसावन रा
घव रघुवर दशरथ तात ॥ सिया विमोहन करुणा -
सागर दया पुरंदर त्रै जग तात ॥ यज्ञ पुरुष पुरुषोत्त-
म कामद परमेश्वर त्रिभुवन पितु मात ॥ कुंजलालप्र
भु विपत्ति विभंजन असुर दमन अखिलेश अजात
॥५४॥ यज्ञ पुरुष रघुनन्दन कामद रघुपति राघव-
अजित कबन्ध ॥ कलि कलुषा ज्वर हर रघुनाय-
क इंद्र जीत रिपु दलन कबन्ध ॥ विश्वंभर खर दूष-
ण हन्ता रघुवर्ई हरि करुणा कन्द ॥ हरण अंभग
ल सिय उर भूषण सुख निधि केशव रघुकुल च
न्द ॥ निराकार निह काम निरंजन त्रय जग पा-
लक जित दश कन्ध ॥ शंभु अजेश्वर व्याध प्रा-
ण हर वैदही वर करुणा सिंन्धु ॥ जनक सुता पि-
य अवध बिहारी परमेश्वर परमेश मकुन्द ॥ व्य-
क्ता व्यक्त सरूप दया निधि दाशरथी हरि स्वामि गो-
विन्द ॥ रघुकुल मणि त्रय लोक विभूषण अवध विहारी
नित्या नन्द ॥ कुंजलाल अभु अधम उधारण सिय अ-

भु हरण सकल भव फन्द ॥५६॥ अशरण श॰
रण सुरा सुर सेवित सीतापति राघव रघुवीर
भव रुज शमन भवेश सिया वर हृषी केश हरि
श्याम शरीर ॥ जन अघ हरण चिदानंद पावन-
जनक सुता मुरव चंद्र चकोर ॥ धनुधारी सुर ना-
यक ईश्वर अवध विहारी नवल किशोर ॥ शंकर
चाप विभंजन श्री वर रघुराई रघुवंश दिनेश ॥
अवध पाल सुत राम रमाबर सीता वल्लभ शं-
भु अजेश ॥ रवि कुल तिलक अमल अविना-
शी निर्जर पति प्रभु अनुपम रूप ॥ निजा नन्द
निहकाम सिया प्रभु अंतर्यामी त्रय जग यूप ॥
भुवनेश्वर रघुनाथ खरारी अज परमेश्वर गुण ग-
ण धाम ॥ कुंजलाल प्रभु पतित उबारण त्रय
जग नायक पूरण काम ॥६०॥ हरी खरारी जन हित
कारी सुरपति नायक त्रय जग तात ॥ अवध विहारी
धर्मी ऽ तारी रघुपति रघुवर सुन्दर गात ॥ जग पितु
माता अनघ अजाता राजिव लोचन दशरथ पूत
त्रिभुवन त्राता सुर सुख दाता श्री रघुनायक वपुजी
भूत ॥ दया पुरन्दर करुणा मन्दिर खल गंजन रघु-
वंश कुमार ॥ धरम धुरंधर अनुपम सुन्दर अलख नि-
रंजन अगम अपार ॥ त्रय जग वन्दन सिय रघु

नन्दन सुर नायक प्रभु सीता कन्त ॥ असुर निकन्दन सुरकुल मण्डन सनकादिक प्रभु करुणा वन्त ॥ दनुज विनाशी घट घट बासी हरण अमगल मंगल रूप ॥ लंका नासी लोक प्रकाशी करुणा मूरति शिव अज भूप ॥ त्रयजग पाली सिय उर माली हरि हर ध्यानी दीनदयाल ॥ रवल कुल कान्ती रूप तमाली जनक सुतेश्वर भजु कुंजलाल ॥६१॥ दशरथ नंदन सिय उर चंदन अकल अमल अज श्यामल रूप ॥ त्रिभुवन वन्दन रघुकुल मण्डन सीता वल्लभ कौशिल भूप ॥ रघुकुल नायक दीन सहायक अयगव भजन सिय सुख दाय। निशिचर घायक सृष्टि उपायक हरि हर ईश्वर सुरपतिराय ॥ अलख निरंजन सुर मुनि रंजन रघुबर करुणा सिन्धु खरार =जन अघ भंजन सिय रमा अंजन भुवनेश्वर त्रय लोक अधार ॥ अधम उधारण जग निस्तारण रघुनायक गुण सिन्धु उदार ॥ विपति विदारण पतित उधारण सुर मुनि पालन जग कर्तार ॥ कपि पति मित्रा सिया कलित्रा सीता मोहन विष्व क सयन ॥ अगम चरित्रा परम पवित्रा कुंज-

लाल भजु मन क्रमवचन ॥६॥ रघुकुलेश रघुना-
थ सिया प्रभु सुरव अवुध हरि करुणा धीश-
रघुनायक रघुराय रमावर जगदीश्वा वन्दित अ-
ज दीश ॥ भयहारी भय दायक राघव गुणा नी-
त गुण वन्न कृपाल ॥ शरण सुरवर सर सीरुह
लोचन सिया विहारी अवध भुवाल ॥ हनुम
त प्रभु सुग्रीव दुक्ख हर लेषेश्वर पति दीन दया-
ल ॥ शिव अज वन्दित त्रय गुण मूरति क-
रुणा सागर रूप तमाल ॥ अगम अगोचर स-
ग पति स्वामी हरि हर वल्लभ दया निधान-
अवि तिय तारण करुणा मन्दिर सीता स्वा-
मी अलख अमान ॥ अवध विहारी अनुप-
म अवि गति रघुकुल मणि गंजन त्रय ताप
कुंजलाल प्रभु अघ थर भंजन अच्युत अ-
क्य अमोघ प्रताप ॥ ६ ॥ जय जय राम कृपा-
ल अवध पति सिय वल्लभ रघुवीर रमेश ॥
जन उर चन्दन रघुपति राघव रघुनायक गुण
सिन्धु अजेश ॥ भव रुज हर त्रय ताप नसा
वन करुणा मय हरि दीन दयाल ॥ सुर मुनि
सुवर दुसह दुख भंजन रघुनन्दन जग दीस
कृपाल ॥ अकल अजर अविनाशी काम

द अगुण अनूपम त्रय जग भूप ॥ अज अद्वैत अखिल अघ गंजन अवि गति केशव करुणा रूप ॥ रघुवर ईश्वर विश्व विभूषण जनक सुता पति अरुज अकाम ॥ हरि हर वल्लभ दनुज महारी कुंजेश्वर सिय स्वामि ललाम ॥ ६७ ॥ जय हर स्वामि सिया वर राघव धनुधारी सिय बल्लभ राम ॥ दशरथ सुवन रमावर केशव वैदेही वर पूरण काम ॥ करुणा पुंज अनन्त अनामय हरि पति शिव रमेश मुकुन्द ॥ जगत जनक जग वंदन कामद शमन अमंगल परमानन्द ॥ अज अद्वैत मैथिली नायक विश्वा धीश अजीत अवन्ध ॥ कुंजलाल प्रभु अवध विलाशी अवनि सुता पति जित दश कन्ध ॥ ॥ ६८ ॥ भव रुज शमन शिवेश दया निधि रघुनायक रघुनाथ रमेश ॥ सिय बल्लभ सुख धाम कृपाल य कलि मल हर सुखदाय अजेश ॥ रघुवर ईशो केश मधुसूदन नभ जाधिप प्रभु जनक सुतेश ॥ कमला पति पीतांवर चक्री निशिचर वैरी अमर पतीश ॥ करुणा पुंज विबुध भयहारी श्री वर माधव दीन जनेश ॥ कुंजलाल प्रभु राम रमा वर सिय प्रीतम निहकाम वलेश ॥ ६९ ॥ वैदेही वर करुणा मन्दिर रघुपति राघव रघुकुल चन्द ॥ दश

रथ नन्दन अवध विहारी सुंदर लोचन सुखकन्द ॥ मिथिला पति सुतेश जगत पति विश्वंभर अजहरी मकुन्द ॥ दासरथी सुर शत्रु निकन्दन अकल अमोघ अनीह अद्वन्द ॥ किल विष हर शिव रूप परंपर अनुपम अति गति परमानन्द ॥ कुंजलाल प्रभु शिव अज वन्दित भय कृतभय हर हृदयानन्द ॥ ६७ ॥ दया निकेत जगत सुख दायक रघुवर रघुपति राघव राम ॥ जग वन्दन रघुवीर रमावर अरिदलेश्वर हरि शोभा धामसिया रमण रघुनन्दन केशव दनुजशत्रु निहकलनिहकाम। विश्वंभर जगदीश परंपर गंजिकलोचन रूपललाम ॥ शोक विनाशन महा विशोकी प्रभु वर पति शिव अज अभिराम ॥ विश्व विमोहन स्ववश बिहारी हरिहर ईश्वर सुंदर श्याम। जनक सुतेश्वर कामी कामद अनघ अचिन्तक अजरूज अकाम ॥ मंगल करण अमंगल हारी कुंजलाल प्रभु पूरण काम ॥ ६८ ॥ जय रघुनन्दन राघव रघुवर जनक सुतापति अवध भुवाल ॥ दशरथ सुवन अजर अविनाशी रघुकुल मंडन दीन दयाल ॥ मधुसूदन वैकुंठ खरारी अघ गव भंजन शरण्य लाल ॥ खग पति गामि च

रचर वन्दित सुरपति भय हर रावण काल ॥
कलिमल हर विश्वंभर अच्युत अनघ अजीत
अमान कृपाल ॥ अगुण अरूप अमोघ अचि-
न्तक हरि हर स्वामी रूप तमाल ॥ चतुर्व्यूह च
तुरानन कर्ता चिदानंद चक्री जन पाल ॥ वि-
ष्णु मुकुन्द गोविन्द धनुर्धर धर्मी धाता दिति
सुतसाल ॥ व्यक्ता बक्र स्वरूप दयानिधि जन
क सुता उर सरित मराल ॥ अधम उधारण त्रिभु
वन सेवित रघुनन्दन प्रण मति कुंजलाल ॥
॥६६॥ जनक सुतेश सुरासुर वन्दित राघव रघु-
वर अवध भुवाल ॥ कलिमल हरण पतित गति
दायक पीतंवर वैकुंठ मुरार ॥ धनुधारी रघुनाय-
क रघुपति भव निधि पोत जगत कर्तार ॥ अ-
शरण शरण मनोभव विग्रह केशव कामदजन
भर्तार ॥ कपि पति मित्र मारुती स्वामी अवधे
श्वर सिय स्वामि उदार ॥ अलख निरंजन सुरप-
ति भय हर खर दूषण जित अपर अपार ॥ सि
या मनोहर करुणा मन्दिर अनघ अकामी दया
अगार ॥ कुंजलाल प्रभु मंगल कर्ता हरण अमंग-
ल जगत अधार ॥ १०० ॥ रघु सिंधु दिन कर कुल भूषण
दशरथ नंदन अवध भुवाल ॥ जनक सुता पति

करुणा अंबुद रघुकुल दीपक दीन दयाल ॥क॰
बन्धारि पुरुषोतम पावन अवध विहारी त्रय॰
जगदेत ॥कलिमल हर कर्तार सिया वर अय
राव भंजन करुणा केत ॥व्याध शत्रु रवर दूष॰
ण हन्ता अरुज अदूषण हरी मकुन्द ॥चतुरव्यू॰
ह चतुरानन ईश्वर भव रुज गंजन अगह अद्व॰
य रमण रघुवीर खरारी असुर निकन्दन सुष॰
मा कन्द ॥ विश्वंभर जगदीश कृपा कर घट घट
व्यापक रघुकुल चन्द ॥यज्ञ पुरुष शिव स्वामि
दीन हित अपर अपार अमोघ अखण्ड ॥ कुंज॰
जात प्रभु विश्व विमोहन अनघ अनीह अभे॰
द अदण्ड ॥७॥ ✕ ॥✕ ॥✕ ॥✕॥✕ ॥✕॥

छंद षट्पदी

सिय वल्लभ सुर हेत रघुनन्दन भगवान ॥ हरि
रघुपति जगदेत गुणा तीत गुण वान ॥ कलि वि॰
ष हर जग कर्ता सीता राम रमेश ॥ विश्वंभर व॰
नमाली अज अदैत अजेश ॥ रघुवर विश्व विभू॰
षण शवरी सुरवर अकाम ॥ हनुमंते श जितद्रू॰
पण अलख अनन्त अनाम ॥ कबन्धारि पुरुषो॰
तम अमरेश्वर रिपु काल ॥ जगन्नाथ जग पा॰
लू केशव दीन दयाल ॥ सुर रंजन सुर राई गो॰

विंद करुणा सिंधु ॥ दश वदनारि खरारी शमन
सकल भव बन्ध ॥ दनुज शत्रु सुर त्राता सियवर
जन सुख गाथं ॥ मंगल मणि सुख सागर कुं-
जेश्वर रघुनाथ ॥७३॥ जय रघुनायक राघव
सियवर दीन दयाल ॥ रघुनन्दन सिय स्वामी
रघुवर अवध भुवाल ॥ त्रिभुवन पति सुर त्रा-
ता दुख भंजन रघुनाथ ॥ किल विष हर अज-
वल्लभ जन दुख हर सुख गात ॥ दृषि केश्वर
निहकामी भव सागर जल यान ॥ भुवनेश्वरज
ग कर्त्ती रघुकुल मणि भगवान ॥ असुर वृन्द
भय दायक हरि हर मित्र अकाम ॥ मंगलम-
णि शिव मूरति कुंज सुखद सिय राम७४॥

छन्द मोतिक दाम

रघुवर राघव सीता राम ॥ नीलेन्दी वर सुन्दर
श्याम ॥ भुवनेश्वर केशव कर्तार ॥ विश्वंभरज-
ग पालन हार ॥ विश्व विभूषण मनसिज रूप
अवनि सुतेश्वर त्रिभुवन भूप ॥ रघुनन्दन ज
गदीश मुकुन्द ॥ अकथ अनामय अरुज अद्-
न्द ॥ शंकर वल्लभ करुणा केतु ॥ मंगल मूरति
त्रिभुवन हेतु ॥ शंभू मानस राज मराल ॥ पि-
ल्ल महेश्वर सुरपति पाल ॥ मोह विपिन घन

दहन कृशान ।। मानी मानद अजित अमान ।।
क्रोधी तप हारी द्विज राय ।। जनक सुता पति
कुंज सहाय ।।७४।।

छन्द दोधक

जय जग बन्दन राघव रघुवर ।। जनक सुतेश्वर
राम धनुर्धर ।। जन दुख हारि हरी करुणा मन्दि
र ।। सिय वल्लभ अज दीन विपति हर ।। रघुने-
न्दन रघुराय परपँर ।। सुर पति पति रघुनाथ कृ-
पाकर ।। गुण गण मन्दिर सेव्य चराचर ।। अ-
शरण शरण अनन्त धराधर ।। किल्ल विष हर
मिथलेश सुता वर ।। भव भंजन गंजन जनश्र-
यधर ।। अलख अनघ शिव रूप अछर छर ।
जन दुख दमन दलन खल निशिचर ।। अव-
नि सुता पति सुख निधि सुर तर ।। कुंज प्रभु ।
जन दीन दुक्ख हर ।।७५।।

छन्द तोमर

जय राम राघव वीर ।। सिय स्वामि हरि रण-
धीर ।। रघुवंश मणि रघुनाथ ।। शिव स्वामि
करुणा गाथ ।। घन श्याम सुखमा कन्द ।। अज
प्रभु उर नभ चन्द ।। सुरपाल पति श्री धाम
सुख सिंन्धु पूरण काम ।। सिय दृश त्रय जग

भूष ॥ सुख राशि करुणा रूप ॥ असुरारि सुर सुखदाय ॥ हृषि केश दीन सहाय ॥ जित व्याध रावण काल ॥ कुंजेश दीन दयाल ॥७॥

चौपाई

जय रघुपति राघव रघुराई ॥ रघुनन्दन रघुवर जग साई ॥ जनक सुता पति अवध बिहारी ॥ रमा रमण रघुनाथ खरारी ॥ विश्वंभर सचर चर त्राता ॥ जग वन्दन त्रिभुवन पितु माता ॥ हरि प्रभु दीन बन्धु अवधेशा सिया रमण सुख पुंज रमेशा ॥ दशरथ नन्दन दीन दयाला ॥ भुवनेश्वर रघुवंश भुवाला ॥ अशरण शरण अमर पति नाथा ॥ अज अद्वैत अखिल सुख गाथा ॥ सन्त सुखद सुर पति भय हारी ॥ कुंजलाल जग जन हित कारी ॥७॥

छन्द त्रिभंग

जय सिय कन्तं अलख अनन्तं हरि भगवन्तं। जग पालं ॥ रंजन संन्तं निशिचर हन्तं रूप अचिन्त बनमाली ॥ करुणा कन्दं हृदया नन्दं विधु मुकुन्दं जन त्राता ॥ परमानन्दं रघुकुल चन्दं अरुज अद्वन्दं सुख दाता ॥ सियाभि रामं पूरण कामं रूप ललामं धनुधारी ॥ सुन्दर श्यामं

गुण गण धामं अकथ अकामं अघ हारं॥
विश्वा भरणं स्वधम उधरणं जनहित करणं
अवधेशा॥ भव रुज हरणं असुर संहरणं अ-
शरण शरणं सर्वेशा॥ श्रुति धर्म सेतु करु
णा केतु त्रय जग रेतु जय धामा॥ त्रिभुवन हे-
तु पुण्यो पेतु दया निकेतु सिय रामा॥ अव-
घ भुवालं दीन दयालं रावण कालं रघुवीरा
सुर मुनि पालं वपुष रसालं दशरथ लालं॥
णा धीरा॥ सुंदर गातं कलुष अघातं दनुज
निपातं हरि राई॥ अलख अजातं जग पितु
मातं दशरथ तातं सुखदाई॥ जनक सुतेशं सु-
धर सुदेशं शमन कलेशं जित माया॥ कुंज-
जनेशं अमर पतीशं राम रमेशं शिव राया॥२८॥
जय रघुनन्दन त्रय जग वन्दन सिय उर चन्द-
न घनश्यामं॥ कलुष निकन्दन भव रुज खं-
डन त्रिभुवन मण्डन सिय रामं॥ सिय दृग अं-
जन अकल निरंजन निशाचर गंजन
सुख धामं॥ भव भय भंजन सुर मुनि रं-
जन श्रुति स्वर व्येजन सिय रामं॥ पुण्यो पे-
तु त्रिभुवन हेतु दया निकेतु शुभ कामं॥ रघुकु-
ल केतु त्रय जग रेतु श्रुति नय सेतु सिय रामं।

रघुकुल भानं कृपा निधानं अजित अमानंनि
ह कामं ॥ हरी भगवानं चतुर सुजानं मानीमा-
नं सिय रामं ॥ कष्ट निवारण दनुज संहारणका-
रण कारण शुभ नामं ॥ पतित उवारण जगवि-
स्तारण अधम उधारण सिय रामं ॥ दश सुख
नाशन खल गण त्रासन वेद प्रकाशन सुर-
ग्रामं ॥ रमा निवासं गुण गण रासं निशि कर
हासं . सिय रमं ॥ शिव अज नायक जन सु-
ख दायक अघि उपायक खल भ्रामं ॥ दिति-
सुत घायक धृत धनु शायक कुंज सहायक
सिय रमं ॥ १६ ॥ सुर मुनि त्राता करुणा गाता
जग पितु माता रघुराई ॥ सिय सुख दाता अ-
नघ अजाता दनुज निपाता जल सार्ई ॥ कलि-
मल हारी जग विस्तारी राम खरारी सुर पाली
हरि असुरारी वसुधा धारी वेद प्रचारी बनमा-
ली ॥ घर घट वासी वेद प्रकाशी अज अविना-
शी निहकामी ॥ अवध बिलाशी निशिचर त्रासी
चित्त हुलासी सुख धामी ॥ त्रिभुवन भर्त्ता शि-
व अज कर्त्ता कूट बिहर्त्ता जग शेषू ॥ भव ह-
ज हर्त्ता खल क्षय कर्त्ता दनुज सहर्त्ता सुभ
वेषू ॥ अजर अचिन्ता रंजन सन्ता सीता कन्ता

हरि राया ॥कलुष निहन्ता श्री भगवन्ता अमि-
त अनन्ता जित माया ॥सियाभि रामा आनँ-
द धामा अनघ अकामा सुख कन्दू ॥सियपति
रामा केशव नामा पूरण कामा रघुनन्दू ॥ पर-
मानन्दा त्रिभुवन चन्दा अगह अदण्डा अज
भूपा ॥ करुणा कन्दा विष्णु मुकुन्दा धृत कोः
दण्डा शिव रूपा ॥ अवध भुवाला वचन वि-
शाला सिय उर माला सकेशा ॥ भजु कुंजला-
ला त्रिभुवन पाला रूप विशाला अवधेशा ॥
॥८७॥ जय जन पालं दीन दयालं दशरथ लो-
लं जग मूलं ॥जय सिय रमणं जन दुख शम-
नं बाधा दमनं खल सूलं ॥जय अवधेशं शंभु
अजेशं शमन कलेशं सुख हेतु ॥जय असु-
रारिं अवध विहारिं मंगल कारिं जग केतु ॥ भ
व दुख हरणं विश्वा भरणं धरणी धरणं रघु-
वीरं ॥जय जग त्रातं सुन्दर गातं दशरथ-
तातं रण धीरं ॥जय अघ दलनं निशिचर
घलनं कलिमल कलनं खल कालं ॥जय
रघुनाथं नाथ अनाथं कुरुहि सनाथं कुंज
लालं ॥८८॥ जय सुख अयनं सरसिज नय-
नं विश्वकलयनं सिय रमं ॥जय भुभ रूपं अ-

मल अनूपं शिव अज भूपं घन श्यामं ॥ज-
य सुख दायं लोक पायं अजित अमायं सि-
य कन्तं ॥ जय सर वन्दं कपि पति मित्रं सिया-
कलत्रं श्री मन्तं ॥ जय कर्तारं दया अगारं ज-
ग भर्तारं शुभ कामं ॥ जय जग मूलं अगम अ-
तूलं जन अनुकूलं जय धामं ॥जय रिपु सा-
लं शंभु भुवालं त्रय जग पालं असुरारिं ॥ज-
य सुर स्वामी शोभा धामी विश्व मिरामी।
जनुजारिं ॥ जय हरि सुखदं दानव दुखदं सुर मु-
नि सुभदं सिय रमनं ॥ जय अघ कालं दीन दया-
लं जन कुंजलालं दुख शमनं ॥८२॥ जयति रा-
घरी अवध विहारी जन सुख कारी सिय रामं ॥
हरि वनमाली सुर मुनि पाली रूप तमाली सि-
य रामं ॥ करषि तिय नारी दनुज संहारी सर ध-
नु धारी निहकामं ॥ शुभ गुण वन्ता रंजन सं-
न्ता असुर निहन्ता सिय रमं ॥ विश्व विहारी
भव रुज हारी जन सुखकारी शुभ नामं ॥ जगपि-
तु माता जन सुख दाता अनघ अजाता सियरा-
मं ॥ करुणा अयनं अहि पति शयनं अमृत व-
यनं जय धामं ॥ अशरण शरणं कुंज उधरणं ज-
न दुख हरणं सिय रमनं ॥८३॥ जय रघुनायक दी-

न सहायक जन अघ घायक श्रुति गायं॥ वद-
न विशालं सिय उर मालं विश्व भुवालं रघुनाथं
जय शिव रूपं करुणा भूपं त्रिभुवन भूपं रघुवीरं
जनक सुता पति राम विमल चित अनुपम अ-
भिमित रण धीरं॥जय भय हारी विश्व अधारी
कलिमल हारी रघुवरं॥भव भय मोचन राजिव
लोचन असुर विमोचन जल सारं॥जय जय भू-
षण अजित अदूषण जित खर दूषण धनुधारी
री॥ श्रुति धर्म सेतु सुर मुनि हेतु कृपा निकेतु अ-
सुरारी॥जय सुख सागर गुण गण आकर जग-
त उजागर सिय राम॥कुरुहि निहालं जन कुं-
जरालं सुर मुनि पालं सुख धामं॥८४॥ जय२
रामं सुंदर श्यामं पूरण कामं रघुवीरं॥जय जग
वीरं सुभग शरीरं मंजन भीरं रण धीरं॥जय रघुना-
थं शोभा गाथं नाथ अनाथं भय हारिं॥जय अ-
वधेशं जनक सुतेशं राम रमेशं अघ हारिं॥जय
सिय स्वामी सकल सकामी जग विश्रामी जग
पालं॥ जय सुर भूपं अगम अनूपं त्रय जग पू-
पं रघुलालं॥जय असुरारी अवध विहारी चिन्ता
हारी शिव रूपं॥जय सुख धामं सीता रामं अज
घन श्यामं भव भूपं॥ जय जग शेषं मंगल वेषं

पालन लेषं श्रुति सारं ॥जय शमनेशं दीन जने
शं कुजलालेशं करतारं ॥८५॥ जय श्री दायक
दीन सहायक रघुकुल नायक श्री रमणं ॥ करु-
णा वन्तं सीता कन्तं हरि भगवन्तं दुख दमनं ॥ज-
य सुर पालं दशरथ लालं सिया भुवालं भय ह-
रणं ॥ जय शिव कर्त्ती अवध विहर्त्ती जन दुख
हर्त्ती सुख करणं ॥ जय जन रंजन सुर रिपु गंज-
न भव भय भंजन शुभ वरणं ॥ जय जग भरणं-
अशरण शरणं विश्व विहरणं श्री धरणं ॥ जय
विश्वंभर शोभा मंन्दिर दया पुन्दर जय सदनं
जय रघुरायं सृष्टि उपायं कुंज सहायं विधुव-
दनं ॥८६॥ जय रघुनन्दन जन उर चन्दन अय-
जग वन्दन पाहि प्रभो ॥ जय अखिलेशं जन-
क सुतेशं विष्णु रमेशं पाहि प्रभो ॥ जय सिय
रामं रमाभिरामं अनघ अकामं पाहि प्रभो ॥
जय रघुलालं विश्व भुवालं हरी कृपालं पाहि
प्रभो ॥ जय जग कर्त्ता अधम उधरता धरनीध-
र्त्ता पाहि प्रभो ॥ जय असुरारिं अवध विहारिं
कुंज उदारिं पाहि प्रभो ॥८७॥

छन्द अमृत ध्वनि

श्री जनक तनया विहारी रावनारिं रघुपतिं

रामजन सन्ताप मोचन विश्वपति करुणा रतिं
जय चराचर रूप राघव रघुवरं रघुनायकं॥ रम-
णवि गति अलख अच्युत दुख दमन सुख दा-
यकं॥जय धनुर्धर अकल निर्मल शिव वपुष जो-
ग वन्दितं॥जय सुरासुर दुख रघुपति भानु मण्डु
ल मण्डितं॥ राम रजनीचर विनाशन गुण रहि-
त गुण आकरं॥ शगुण निर्गुण पतित पावन
कुंज मन वाधा हरं॥८७॥ श्री रमण हरि विश्व
भूषण जानुकी उर चन्दनं॥राघवं रघुवर दया-
लय शंभु पति जग वन्दनं॥महि सुतेश्वर वि-
श्व मोहन वेद विद धरणी धरं॥जनक कन्या कर-
ण कारण कंज मुख करुणा करं॥यज्ञ कर्तारं
निजानंद गवरि वल्लभ वन्दितं॥ रावणारिं धनु
र्भगिं सिय रमण जग मण्डितं॥मन सिजारी
शं रमावर विश्वपति सरसिज मुखं॥जग जनक
जगदीश जिष्णू सुर पतिं रायक सुखं॥ यज्ञप-
ति रवर शत्रु कामद वास वारी गंजनं॥जग आ-
दि पूरण काम सिय वर जन मुखद सुर रंजनं॥
यम त्रास हर त्रय ताप मोचन मैथिली उर भू-
षणं॥ राम रघुनन्दन चिदानंद केशवं जित
दूषणं॥ मदन मोहन कौशिलेश्वर सुकर नि-

धिपरमेश्वरं ॥ जय सिया शम्भु कुंज स्वामी माधवं
अपरंपरं ॥ ८९ ॥ जयति जय रघुवीर रघुवर
राम राजिव लोचनं भयजनक नन्दन उर विभू-
षणादीनजनभयमोचनं ॥ रघुकुलेशं शंभु ईश्व-
र सिय रमण सुरव वरधनं ॥ सुर पतीश्वर विश्व
वल्लभ खर दमन दुरव मर्दनं ॥ विश्व हित त्रय
ताप भंजन श्रीधरं विश्वभरं ॥ जन सुरवद
कामारि कर्ता श्री निधिं परमं परं ॥ असुर भं-
जन हरि पतीशं केशवं जया आकरं ॥ कुंज प्र-
भु सीता मनोहर राघवं गुण आगरं ॥ ९० ॥
जयति श्री रघुनाथ राघव रघुवरं सुरव सागा-
रं ॥ भक्त वत्सल पतित पावन निर्गुणं गुण आ-
गरं ॥ कौशिलेशं शम्भु वल्लभ धनुधरं रघु-
नायकं ॥ खर दमन दूषण प्रहारी राम बाली
घायकं ॥ विश्व भूषण अमर अधिपति वि-
श्वमय विश्वेश्वरं ॥ जन विपति हर शोच मो-
चन जानकीशं श्रीधरं ॥ दीन हित त्रय ताप
हर्ता अज अमोघं निर्मलं ॥ कुंज प्रभु रघुवीर
कामद अरुज अविजित निहकलं ॥ ९१ ॥ नो
थ सिय वर भक्त वत्सल दीन हित चित धारिये
॥ करि कृपा त्रयलोक भूषण निज विरद संभा-

रिये ॥ तुम अधम तारण दयानिधि मैं अधम पापी महा ॥ पतित पावन तुम कृपा कर हौं पतित धूमित रुजा ॥ निज ओर लखि दीनार्त हारी मम विनय सुनि लीजिये ॥ निज भक्त किं कर कुंज प्रभु कर शरण अपनी दीजिये ॥ टे॰ ॥ जयति सीता राम रघुपति शंभुपति जग पालनं ॥ जनक तनया उर विभूषण सन्त हित खलघालनं ॥ दनुज मोहन हरि खरारी चाप शर कर धारिनं ॥ सिय रमण सुख पुंज केशव दुष्ट गण संहारिनं ॥ भक्त हित भव भीर मोचन दीन जन दुख टारिनं ॥ रघुपतिं रघुवंश भूषण निष्कलं जग कारिणं ॥ जगत ईश्वर पतित पावन शत्रु जित भय हारिणं ॥ कुंज प्रभु सुख पुंज अविगति गीध गणिका तारिणं ॥ टे॰ ॥ जयति हरि रघुवंश भूषण विश्वपति रघुनायकं ॥ रघुबीर करुणापुंज माधव कर रुचिर धनुशायकं ॥ सुकव अरुंद असुर सासन भक्ति हित सुखदायकं ॥ अवध पति सिय राम अच्युत शिव वपुष अघ घायकं ॥ अजप्रभृ हृषि केश कामद जासु हनुमत पायकं ॥ कुंज प्रभु सीता मनोहर देव ऋषि श्रुति गायकं ॥

जयति जय रघुनाथ केशव राम करुणा मनि
रं॥ शंभु वन्दित हरि कृपा कर कंज लोचन सु-
न्दरं॥ विश्व कर्त्ता भाकृतं शं सिय रमण शर ध
नुधरं॥ शमन भय हर सिय मनोहर श्री रमण
विश्वंभरं॥ विष्णु कामद रावणारिं माधवं गरुड
ध्वजं ॥ पतित पावन अनघ अच्युत अकथ
अविगति अनुरुजं॥ सुकव धामं जगत वल्ल
भ अवध पति परमेश्वरं॥ कुंज प्रभु त्रय ता-
प भंजन विश्व मय परमं परं॥ ६५॥ जय वि
श्व पति सुर शत्रु गंजन जन सुखद रघुनायकं
सन्त जन चिन्ता विमोचन दीन अघ दुख घा
यकं॥ सिय रमण रघुवीर कामद शंभु अज उ-
पजायकं॥ जगत वल्लभ जग विभूषण भक्त
गण सुख दायकं॥ जनक नंदनि पति कृपा-
निधि जानकी शं रघुवरं॥ अज अनघ अखि
लेश पावन कुंज प्रभु भव रुज हरं॥ ६६॥ज
यति सीता राम रघुपति राघवं पीतंवरं॥ विश्व
नायक वृषी केशं रघुवरं विश्वभरं॥ चक्र पा
णी सुर पतीश्वर श्री धरं करुणा करं॥ शंभु व
न्द्य पतित पावन कारुणीकं भय हरं॥ सयथ-
ली उर सुकव कर्त्ता जानकी शं सुन्दरं॥ विश्व

जनकं खग पतीशं केशवं सुख मन्दिरं॥ सिय सु-
खद त्रय ताप हर्ता दृश्वरं सीता वरं॥ कुंज प्रभु
दुख शोच हारी शमन भव रुज अघ धरं॥ ६७॥
जयति जय सीता मनोहर श्री पतिं विश्वंभरं॥ रा-
म रघुवर अजित अच्युत सिय रमण जगदीश्वरं
जय धनुर्धर सुर सहायक विश्व कर्ता निहकलं
हरि खगारी सुकख मन्दिर अमित अनुपम निर्म-
लं॥ जय अवध पति विश्व मोहन अधम ता-
रण सुर वरं॥ रघवं त्रय ताप भंजन श्री धरं प-
रं परं॥ अलख अविगति जगत सेवं ब्रह्म
प्र पालक भय हरं॥ कुंज जन मन चिन्त-
हारी जानुकी प्रं श्रीकरं॥ ६८॥

छन्द त्रोटक

रघुवीर विनाशन कलि कलुषं॥ रघुनाथ
शिवेश दया वपुषं॥ शिव रूप विशाल अजर
अमलं॥ घनश्याम रसाल अकल विमलं॥
हृषिकेश अनन्त असुर दमनं॥ सिय नाथ अ-
जादि हृदय रमनं॥ रघुवंश विभूषण जन शरणं
चतुरानन ईश जगा भरणं॥ जगदीश अकाम
धनुर्धरणं॥ कुंजलाल प्रभू निर्भय करणं॥ ६९॥
जय जय हरि पति मित्र हरी॥ सुर शत्रु रिपू

दश भाल अरी ॥ रघुनाथ कृपाल असंगल हा
रघुवीर अतीत अजीत अजा ॥ सिय राम हरी
श सुरेश पती ॥ अज भूप वलीश सुधर्म रती
रघुनायक भंजन दुष्ट अनी ॥ रघुवंश विभूषण
विश्व धनी ॥ असुरारि खरारि जनं सुखदा ॥
अघ नाशन गंजन घोर रुजा ॥ सिय श्वामिभ
वेश परेश हरे ॥ कुंजलाल प्रभू सिय नाथ हरे
॥१००॥ रघुवीर कृपाल दया सदनं ॥ सुख सि
न्धु रमेश अमी वदनं । जनकातिम नाथ
दयाल हरी ॥ रघुवंश दिवा कर दुष्ट अरी ॥
सुर शत्रु निकन्दन श्री सुखदा ॥ जन आ
रत हर अज वन्द्य अजा ॥ दश मौल विना
शी खर रमनं ॥ शिव रूप भवेश सिया रमणं
जन शोक नशावन सुकख करं ॥ सियलेश सु
तेश्वर दुक्ख हरं ॥ सिर क्रीट मुकट छवि पुंज
जै ॥ मणि संयुत कुण्डल कान छजै ॥ कर
कमलन शायक चाँप धरे ॥ कटि पीत वस
न वनमाल गरे ॥ कुंजलाल हिये प्रभु वास करो
करि छोह कृपा दुख नासु हरो ॥१०१॥ रघुनाय
क शायक दीन दुखं ॥ सुख कन्द मुकुन्द निसे
श मुखं ॥ सिय श्वामि अकाम विशाल वपु ॥

असुरारि खरारि मुरारि रिपुं ॥भगवन्त अनन्त श्री वयनं ॥घनश्याम ललाम सुभग नयनं सुभ बाहु सुबाहु विनाश करं॥ खर घायक-शायक चाँप धरं ॥कुंजलाल भुवाल सिया रमस ॥ जन पाल दयाल रुजा शमनं ॥१७॥ रघुनाथ रमेश दया सदनं ॥ हृषि केश अनन्त वपुष मदनं ॥हरि श्वामि मुकुन्द परेश परं॥ शरणा गत वत्सल दुकव हरं॥ हौं दुष्ट अपावन पाप रता ॥तुव भक्ति विसुरव अति नीच गता ॥मम पातक हेरि जमदूत डरि हैं॥ नरक-हू महि देखतहीं दुरि हैं॥ निज दीरव समुझि तव शरण गही॥ विनती मम नाथ कृपाल यही ॥मम दोष नही चित्त मैं धरिये॥ अपराध अपार छिमा करिये ॥वड पातकि जानन त्याग करो ॥यह वात प्रभू निज चित्त धरो ॥है मह तन तारत धर्म रता ॥निज कर्म जनित वह-पाव गता ॥कुंजलाल रवलै देव तारि जवै ॥वड महत वड़ाइ होय तवै ॥१७॥

छन्द भुयंग प्रयात

नमो राम रघुनाथ त्रय लोक त्राता ॥चिरानंद परेश जी मूत गाता ॥सिया ईश जग से पजन

सुकव दाता ॥ असुर काल सिय स्वामि वृह्मादि
धाता ॥ दया मूर्ति विज्ञान रूपं विधाता ॥ अनाथ
न्त अध्यात्म अनुपम अजाता ॥ निराकार निह
काम सौ मित्र भ्राता ॥ पतित पाल कुंजेश जग
पित्रिमाता ॥ २०४ ॥ नमो राम अवधेश संसार सा
स्वयं वृह्म पर मोक्ष करुणा वतारं ॥ शुभग रूप इ
स्वाकु नन्दन खरारी ॥ सिया नाथ रघुवीर जन
सुकव कारी ॥ जगन्नाथ लोकेश राघव अजेशं
अहिप सयन का कुस्थ काली पतीशं ॥ गुण
तीत शिव रूप त्रय लोक पालं ॥ दया सिंधु जगदी
श सुर शत्रु कालं ॥ कृपा मूर्ति सुरव कन्द करुणा
निकेतं ॥ रमा स्वामि रघुनाथ दानव हनेतं ॥ जग
धार भव ईश श्रुति धर्म सेतं ॥ दनुज शत्रु कु
जलाल पति विश्व रेतं ॥ २०५ ॥ वृजामीश रघुवं
पालालं कृपालं ॥ चिरानंद सुर शन्त पालं द
यालं ॥ जगन्नाथ विज्ञान रूपं अरूपं ॥ अनाद
न्त सुर पाल रूपं अनूपं ॥ सिया नाथ शिव रूप
मं अकामं ॥ पतित पाल सर्वत्र धामं अधामं ॥ गु
ण धीश गुण धाम कालं अकालं ॥ जगत शे
शंभु भवालं विशालं ॥ निराकार त्रय लोक ता
अता ॥ स्वयं वृह्म कुंजलाल त्रात प्रजालं ॥ २०६

छंद नगस्वरूपी

नमामि राम रघुवरं ॥ विशाल बाहु सुन्दरं ॥ खगारि देव नायकं ॥ सुरारि वृंद घायकं ॥ अशोक शोक नाशनं ॥ सुरेश शत्रु त्रासनं ॥ अजेश शंभु वल्लभं ॥ मुकुन्द चाप धर शुभं ॥ दिनेशवंश दूश्वरं ॥ अनन्त दीन भय हरं ॥ कृपालकुंज पालनं ॥ सुरेश शत्रु घालनं ॥ १०७ ॥

जय रघुनन्दन जग निस्तारण

शरण सुरवर भय हरण जगत पति सुर नर मुनि भय टारण ॥ अलख निरंजन अनुपम अविगति अजर अमर जग कारण ॥ असुर वंद क्षय करण धनुर्धर सुर पति दुक्ख निवारन ॥ शिव अज वन्दित जन उर चन्दन रघुवर पतित उधारन ॥ कुरु निज शरण कुंज भय भंजन सियवर अधम उधारण ॥ १०८ ॥

कस मन राम चरण विसरई

विषय आस लग जँह तँह नाचत करत बहुत कुरिलाई ॥ शिश्नो दर बस भ्रमत अहर निश सुख मानत बहुताई ॥ हरि चरित्र हरि पद नहि सुमिरत दुर्लभ नर तन पाई ॥ तज तन भ्रम निज हानि न देखत मृग तृष्णा अधिकाई ॥ कंचन त्यागि काँच हित धावत कैसी मति तोहि-

आई॥ कुंजलाल सिष सुनम न वावर भजु हरि पद चितलाई॥ १०६॥ ×॥×॥×॥×॥×॥×॥×॥×

राम भजन बिन मन पछितैहो॥

जब लगि चरण सरोज राम के निज उर नाहि बसैहौं॥ तब लगि अति दुस्तर भव सागर कबहुंक पारन जैहौं॥ खर शूकर सम उदर सुकृत महं अपनो जन्म गंवैहौं॥ कहु प्रकार भयदा दुख दारुण शमन पुरी विच पैहौं॥ अबहुं चेत करु हो हरि सेवक नाहि तौ अधम कहैहौ॥ कुंजलाल प्रभु पदहि पधारत सब विधि प्रमुदित ह्वै हौं॥ ११०॥

जय जय शिव हिय कुमद निशाकर

दशरथ नंदन त्रिभुवन वंदित रघुवर रघुकुल कमल दिवाकर॥ शरण शरण असुर गण गंजन जनक सुता पति रूप उजागर॥ रघुकुल मणि हरि मित्र दनुज रिपु रघुनायक रघुनाथ गुण कर॥ कलिमल हर सुख पुंज शरण हितु करुणा मय रघुराज कृपा कर॥ अज अद्वैत अखिल अघ गंजन अजित अमान अभय सिय नागर॥ अनुपम अनघ अमर पति अच्युत कुंजलाल प्रभु राम सिया वर॥ १११॥ ×॥

जय रघुनायक जगत अधार

अलख निरंजन अविगति अच्युत राघव रघु

पति राम उदार॥कलिमल हर सुर शत्रु निकन्द-
न सिया रमण अवधेश कुमार॥रघुकुल मणि
त्रिभुवन पति केशव भगवत माधव दया अगा-
र॥असुर वृन्द क्षय करण शरण हितु करुणा
सागर विश्व भुवार॥सुर रिपु शत्रु असुर रिपुभ-
य हर अनाद्यन्त जग तारि अपार॥अशरण
शरण सुर सुर सेवित जगत जनक अघ कम-
ल तुषार॥शिव अज वन्दित जनउर चन्दन-
काम क्रोध मद तिमिर तमारि॥अवनि सुतेश्व-
र रघुवर कामदकुंजलालेशमुकुंदमुरारि॥११२॥

जयजय रघुकुल कमल दिवाकर
सुरपति पति अवधेश दीन हितु कलि मल हर सु-
ख पुंज गुणाकर॥धनुर्वाण धर दशरथ नंदन नी-
लेन्दीवर रूप उजागर॥सुर मुनि सुखद दयाल रव-
णारी॥अघ भंजन सुख सदन कृपाकर॥मंगल मं-
णि सचर चर अधि पति शिव वपु अजर अमर सि-
य नागर॥पतित उवारण जन हितकारी॥राम अव-
ध पति करुणा सागर॥कुंजलाल प्रभु विपति
विभंजन त्रय जग वन्दित नाथ सियावर॥११३॥

भजु मन राम जगत हितकारी॥
करुणा सिन्धु दयाल दीन हितु सियवर

सियवर अवध विहारी ॥ कलिमल हर का कुन्थ सियापति सिय रघुनाथ वरारी ॥ रघुनन्द नरघुवीर अवध प्रभु केशव पतित उवारी ॥ हरि हर स्वामि सुरासुर वन्दित सिय नायक असुरारी ॥ जनक सुतापति त्रिभुवनईश्वर सुरव सागर भय हारी ॥ कुंजलाल स्वामी धनुधारी भजत जाहि त्रिपुरारी ॥ ११४ ॥ भजु मन राम चरण सुख दानी भजत जाहि ब्रह्मादिक नारद सनकादिक मुनि ज्ञानी ॥ गण नायक अरु सेष सारदा ध्यावत शंभु भवानी ॥ करत प्रीत युत सेवा निशदिन कमला सनि हितु मानी ॥ तिन चरणन को ध्यान हृदय धरि सवविधि निजहित जानी ॥ विनाभजे सचराचर स्वामी नहि जैहो कलकानी ॥ कुंजलाल प्रभु सिया रमण पद धरु निजउर मन वानी ॥ ११५ ॥

॥ जय रघुनन्दन राघव रघुवर ॥

रघुकुल तिलक अवध पुर नायक सिया रमण सुर सन्त विपति हर ॥ गिरा गम्य भव सागर बोहित दया सिन्धु रघुनाथ धनुर्धर ॥ भुवनेश्वर कलि कलुष विभंजन सुर मुनि सुखद हरण भव रुज पर ॥ अघ पर दलन अवध पति नन्दन दश मुख रिपु त्रिभुवन हित

सुर तर ॥ जगत जनक जनकात्मज वल्लभ सि-
य उर भूषण अकथ परंपर ॥ कुंजलाल प्रभु क-
रुणा मंन्दिर सुर मुनि रंजन गंजन निशचर ॥९६॥

॥ भजु मन राम चंद्र सुख राशी ॥
दया सिंधु जग तारण भंजन रघुनायक अवि-
नाशी ॥ रंजन सन्त सिया वर रघुवर सन्तत
उर घट वाशी ॥ रघुकुल तिलक अधम गण
तारन रघुपति अवध विलासी ॥ कलिमल हा-
री सुर मुनि त्राता सियपति हृदय अवासी ॥ मं
गल करण अमंगल हारी जन भव शोच विना-
शी ॥ जगत जनक कुंजलाल सहायक त्रयज-
ग अस्थि प्रकाशी ॥ ९७ ॥

॥ भजु मन सिय वर अवध विलाशी ॥
संशय दमन दुसह दुख हर्ता सिय वल्लभ सुख
राशी ॥ जगत जनक शंकर अज कर्ता त्रिभुवन
पति भय नाशी ॥ गुण मंन्दिर गुण रहित खरारी
भव रुज हर हृदि वासी ॥ संकट हरण शरण सु-
ख दायक सुर मुनि हृदय अवासी ॥ मंगल मणि
सुर सन्त सहायक कुंज प्रभू अविनाशी ॥ ९८ ॥
रघुकुलेश राम चंद्र सीता पति सुकव कन्द
जानुकीश शिव भुवाल रघुपति धनुधारी

सुर मुनीश जनक भूप कारुणीक विश्व रूप वि-
श्व पाल विश्व ईश रघुवर सुख कारी ॥ अज
अमोघ हरि दयाल करुणा मय भक्त पाल दीन
बंधु जन सहाय सिय पति असुरारी ॥ विश्व रूप
ज्ञान खान निशाचरारि सुख निधान ईश्वरेश
दुःख दमन राघव दनुजारी ॥ अवध नाथ व्याध
शत्रु जित कबन्ध पाप पत्रु वासुदेव ज्ञान राय
सुर पति हित कारी ॥ खग पतीश विश्व भरण
करुणा मय ताप हरण शिव स्वरूप धीर वीरश
विगति अघहरी ॥ गौतम त्रिय शाप दमन
सुर नर मुनि दुःख शमन निर्जरेश लोक
नाथ शंभु उर विहारी ॥ कुंजलाल प्रभु कृ-
पाल सुर फणीश हरि दयाल सिंधु जेश विश्व
हेतु दीन भय निवारी ॥१९॥

जयति जय कृपा निधान सीता पति सुख
खान शंभु ईश शिव स्वरूप राम हरि मुरारी
तत्व रूप भक्त भूप ज्ञान धाम वपु अनूप
जग भुवाल विश्वरेत शंभु उर बिहारी ॥ श-
क मित्र श्याम वरण जित सुबाहु कुंभ करण
रावणारि व्याध प्रभु बाल प्राण हारी ॥ ज-
न सहाय दीन बन्धु सीता वर ज्ञान सिन्धु

ताडुकारि शिव अजेश गौतम त्रिय तारी ॥ वाम
वारि दुकूल दानि मर्कटेश प्रभु अमानि अज-
अचिन्त्य जानुकीश चाप बाण धारी ॥ सुख
निकेत जनक पाल त्रैदशेश शत्रु काल कुंजलाल
सुकृत दाय विश्वमय खरारी ॥ १२० ॥ ५ ॥ ५

मनकर प्रीत राम सौं साँची ॥

कतवावरहै त्रिविध भर्म सुख दुख लहत वहु
जहँतहँ नाँची ॥ शिवको दर हितु चित में धारयो
हार्यो जगमें सबसौं जाँची ॥ दुख नहोरी काहू
नेतेरो जरो हृदय क्रोधा नल आँची । अपनोहा-
नि लाभ ना देखत परवत नाही कंचन काँची
अबहू चेत त्याग छल छिद्रम तजहि कुसंगएक
अरु पाँची ॥ जनक सुता पति चरण हृदय धरि
करुपवित्र सुखगुण गण वाँची ॥ सुख नदेत को-
ऊ विनरघुपति कहत कुंज मनेरखा खाँची ॥ १२१ ॥

सियवर चरण कमल लव लागत

त्रिविध मर्म त्रय ताप नसाही रहत विमल चित
सोवत जागत ॥ मद ममता लोभादि जनित दु-
ख विसित भये जित तित को भागत ॥ जगत सुकृत
की कहा बात है मिलत हर्ष जिहि छुटत गला गात
असप्रतीत उर धर मनवावर काहे भ्रमत इतै उत

वागत।।कुंजलाल नित राम चरण भजु पैहै सुख
या रस मैं पागत ।।१२२ ।।×।।×।।×।।×।।×।।
करुणा निधि दीन बंधु रघुपति सिय स्वामी
शिव स्वरूप विश्वेत श्री निवास सुख निकेत
मचंद्र धर्म यूप जक्र हित अकामी ।। विश्वनाथ
श्री मुकंद दास वारि हरि अहन्द परब्रह्म शक्र भूप
वयननेय गामी ।। दूषणारि जित कवन्ध व्याध
ब्रह्म ज्ञान सिंधु तत्व मूल हृषी केश अवनि जामि
रामी ।। कारुणीक जग अधार अज अनीह पर
पार सुर सहाय ताडुकारि सर्व मय अधामी ।। लो
कनाथ विश्व कन्त पद्म नाभि वपु अचिन्त कुंज
लाल प्रभु कृपाल दुख दमन अनामी ।। १२२ ।।
जय अनन्त हरि मुकुन्द राघव रघुराई
दशरथ सुत राम चंद्र सीता पति सुकव कं
न्द सुर पतीश ताडुकारि कौशिक सुख
दाई ।। जक्र कन्त चित उदार श्रुति सेन सुख
अगार बासुदेव जित सुबाहु छीर सिन्धु सांई
मरकत वपु रवल अगत सीता पति विश्वत्रा
त शिव सरीर शंभु स्वामि दीन जन सहाई ।। स
र्व रूप गुण निधान कौशलेश ज्ञान खान
सुर मुनेश तत्व मूल लोक त्रय उपाई ।। दुष

कंज वदन तुषार मेटन महि भीम भार रावणारि
जित दैत्य शत्रु सुर सनाई॥ कंबु कण्ठ श्रीगो-
विन्द करुण मय अज अद्वन्द शील पुंज धर्म रूप
दुक्ख सो गहाई॥ कुंजलाल प्रभु दयाल भंजहु
कलिकाल जाल मेटहु अपराध मोर राखहु अप-
नाई॥१२६॥ जय रघुनन्दन हरि रघुराई
अवध विहारी हरण अमंगल मंगल मूरति हरि
अहि साई॥ रघुवर सियवर विश्व विधाता धा-
ता त्रय जगजन सुखदाई॥ अशरण शरण सु-
रासुर सेवित रघुपति राघव कूट स्थाई॥ ज-
गत जनक जनकातिम भर्ता हर्ता भव रुज
अघ अध माई॥ अच्युत अविगति सरसिज
लोचन मोचन कलि विष ज्वर प्रभुताई॥ अ-
विजित अनघ अमोघ अचिन्तक अन्तक दनु-
ज त्रलोक उपाई॥ सुर रिपु शत्रु सुरासुर मनिराज
त वन्दित शिवअज दीन सहाई॥ करुण पुंज
अतलव अविनाशी त्रासी रजनीचर समुदाई
कुंजलाल प्रभु राम सिया पति जपत जाहि
शिव ध्यान लगाई॥१२५॥ ॥ ॥ ॥
कुंजलाल रघुपति कृपा दीतिय भाग सुख कंद॥
तनावलि हरि नाम को प्रगटो देत आनन्द॥ कह.

कछुक निज हेत हित सिय वर नाम अनन्त ॥
नाम प्रताप विचारि कै पढ़ै सुनै बुध वन्त ॥ हरि
के नाम पवित्र युत भाषन यदिप भदेश ॥ स-
न्त है भव रुज शमन सुन्दर सरस सुदेश ॥ वा-
ण शमन अरु चंद्रमा होहि जिते धरि अंक ॥ ति-
ने छन्द या ग्रन्थ के मेटन कलह कलंक ॥ इ-
ति श्री हरि नाम रत्ना वली द्वितिय भाग स-
पूर्ण शुभं मिती वैशाख सुदी १५ संवत १९२७

श्री आरती

आरति राम चंद्र सिय वर की ॥ विश्व विमोह-
न वसुधा धर की ॥ भक्त हृदय सर कंज दिवा क-
र ॥ शिव अजमानस कुमुद निशा कर ॥ सब
घट व्यापक सेव्य चराचर ॥ जगत जनक गंजनअ
घ थर की ॥ १ ॥ श्री आरति

चतुर्व्यूह चतुरानन नायक ॥ मृग पति रूप वि-
षय मृग घायक ॥ मोह तिमिर रवि दीन सहाय-
क ॥ दशरथ तनय स्वामि हरि हर की ॥ २ ॥

श्री आरति

विश्व रूप जन आरति भंजन ॥ अकल अका-
म अचिन्त अकिंचन ॥ सकल विमल भुवन पति-
सलरद निरंजन ॥ पतित उधारण विभुवन भर की

श्री आरति

धर्म उधारण त्रय जग वन्दन ॥के हरि वपु राज
कोध निकन्दन ॥ सुर मुनि त्राता जन उर चन्दन
दास रथी सुर नर सुर तन की ॥४॥

श्री आरति

गिरा गम्य शिव रूप सुहावन ॥पुरुष परेश चि-
दानद पावन ॥अज अद्वैत अनघ मन भावन
कुंज प्रभू रघव रघुवर की ॥५॥

अथ रामाष्टक

श्यामं रमेशं गिर्जा पतेशं रघुपति अजेशं म-
शमन कलेशं वन्दित महेशं नीरध सुतेशं श्री
राम चंद्रं सततं नमामि ॥१करुणा वतारं अप-
रं अपारं त्रय जग अधारं हति भूमि भारं अ-
च्युत उदारं संसार सारं श्री राम चंद्रं सततं न
मामि ॥२॥ सुख मानि केतुं श्रुति नीत नेतुं सु-
रसन्त हेतुं त्रय लोक रेतुं भव सिन्धु सेतुं रघुव
ग केतुं श्री राम चंद्रं सततं नमामि ॥३॥ अग-
नं पवित्रं सीता कलत्रं सुग्रीव मित्रं अद्भुतच-
रित्रं जग मातु पित्रं निष्कल चरित्रं श्री रा-
म चंद्रं सततं नमामि ॥४॥लीला शरीरं रघु-
नाथ वीरं अतुलं सधीरं अनलं समीरं गनभ

अवनि नीरं हृत दीन भीरं श्री राम चंद्रं सततं नमामि॥५॥ अघ वन कृशानं जन कंज भानं मानद अमानं भव सिन्धु जानं श्रुति नीति-ज्ञानं पुरुषं पुरानं श्री राम चंद्रं सततं नमामि॥६॥ सीताभि रामं निह कल निकामं अकलं अधामं सर्वत्र धामं लोचन ललामं अगुणं अनामं श्री राम चंद्रं सततं नमामि॥७॥ सुर पाल पालं रघुवर दलालं दशरथ्य लालं सुर भानु कालं त्रिभुवन भुवालं कर्त्ता कृपालं श्री राम-चंद्रं सतत नमामि॥ इति श्री रामाष्टक संपूर्णं

अथ लिख्यते राम नाम मुक्तावली

सोरठा

जयति अजेय कुमार॥ अवनि सुता पति जग भरण॥ रघुवर जन अधार॥ जन जनक अशरण शरण॥ वरणी जन कुंजलाल॥ राम नाम मुक्तावली॥ भंजन भव रुज जाल॥ संततहरि जन प्रिय करहु॥ माघा सित शुभ कालवै अमित शंभु रजनि॥ रस युग अंकहि माल मगटी प्रति मुक्ता वली॥

दोहा

कौशलेश कोटेश प्रभु केशव करुणा कंद

कवंधारि कालीश प्रभु कामद कौशल चंद्र
केत जारि कौशल पती कौशिक प्रिय कर्ता
कुंभज सुरवंदा कंवुधर कौशल नाथ कु-
मार ॥३॥ का क्षस्थी कैटभ दमन कपि प-
ति मित्र कृपाल ॥ किष्किंधेश्वर दुरव हर-
ण कलिमल हर कलिकाल ॥३॥ कुंभ क-
र्ण जित कौमुदी कनक भवन अभिराम ॥
कनक कशिप जिन कुश जनक कैकै सुत सु-
ख धाम ४ ॥ खर दूषण जित खल दमन ख-
ग पति नाथ खरार ॥ खग पति गामी खं-
सुरवंद खंजाधीश भुवार ॥५॥ गोपर नारी गु-
प्त हरि गीधेश्वर गोविंद ॥ गरुड़ध्वज गो तीत
गोगोचाता गुण कन्द ॥६॥ गुण तीत गुह हित
करण गोसाईं गरुडेश्वा ॥ गदा पाणि गो जित
गुरु गिरा गम्य गतिकेश ॥७॥ गुप्त हरेश्वर गो-
सुरवंद गीर्वाण सुखकारि ॥ गोपति पति गिरिजेश
प्रभु गौतम तिय उद्धारि ॥८॥ घट घट व्यापी
घटज प्रभु घनाधीश सुरवराय ॥ घट श्रुति-
जित घन श्याम घन घायक खल समुदाय
॥९॥ चित्रकूट प्रभु चतुर्भुज चारु चरा चरक
प चक्र तीर्थ प्रभु चक्र धर चक्रेश्वर भूप १०

चंद्र हरेश्वर चरित निधि चतुरानन चित हा-
रि ॥ चतुर्व्यूह चित्त हरण चारु शिलेशाउ-
दार ॥११॥ छत्री रिपु सभिमान हर छत्री छ-
माभिराम ॥ छीरश्वर प्रभु छवि सदन छीर-
सरोवर धाम ॥१२॥ जनकसुतापति जगजन
क जन्मस्थानजनेश ॥ जन्म भूमि परसी
सुखद जनक जपाक महेश ॥१३॥ जानकी-
श जमवंत प्रभु ताडुकि प्राण हरंत ॥ तत्व-
रूप त्रपुरारि प्रभु त्रासक काक जपंत ॥१४॥
तुलशी प्रिय तिल जलि प्रभू तमसा तीरनि-
वासि ॥ ताप नन्दन उर रमित सप्त ताल तरु
नासि ॥१५॥ दाशरथी दश मुख दमन दीना
नाथ दयाल ॥ देव कालि पूजक दिगप देवा
देव भुवाल्म॥१६॥ दशरथ नंन्दन दीन हितदा-
नव दुःख कलेश ॥ दीन बंधु दिव जेश प-
ति दशरथ सूनु दिनेश ॥१७॥ धर्म धनेजाम-
भु धनद धर्मी धर्म भुवार ॥ धर्म हरेश्वर धनु
र्धर धाता धरणि अधार ॥१८॥ नागेश्वर प्र-
भु नर हरी नारायण निः काम ॥ निगम नव
निर्मलि प्रभू निमिषि नीर निधि धाम ॥१९
पंपा सर पावन करण पुरुषोत्तम पे रूप ॥ पु-

एय हरेश्वर परमपर पयनिधि तनया भूपश
पय स्वनि प्रभु परमातिमा परमेश्वर पय धाम॥
पवन तनय प्रभु पतित पति पुण्योपेतु प्रका-
म॥२०॥ वाशिष्ठेश वशिष्ठ प्रिय बालमीक
हितकारि॥ विश्वामित्र मचिंन्त कारुण्या कु-
ड बिहारि॥२१॥ विष्णु हरेश वलेश विधि बा-
सवस्तुधा धीश॥ वैदेही पति विश्व भय वस्त्र
बिल्व हरीश॥ २२॥ व्याध शत्रु बाली दमन वन
दंडक अघ नासि॥ वायसुवन प्रभु वाण धर वन
पर मोद विलासि॥२३॥ बनमाली बिन तेय
पति बारुण सर अभिराम॥ बामदेव प्रिय विश्व
भर बारिज नयन ललाम॥२५॥ भक्तायज्ञ भू-
भार हर भगवत भानुकुलेश भक्त कुंड पति भ
यहरण भव निधि पोत भवेश॥२६॥ भुवनेश्वर
प्रभु भुवन पति भय हृत भय कृतरूप॥ भक्त बत्स-
ल भव भीर हर भूमी तनया भूप॥२७॥ माधवम-
त्त गयंद प्रभु मानद मान मुरारि मंत्रेश्वर प्रभुम-
हिसुरवर महा मूर्ति महिधार॥२८॥ महा बीर्य
मंदर धरण मारी चारि मुनेश॥ मनी अचल प्र-
भुमयन वपु मिथिला धीश सुनेश॥२९॥ मध-
वा स्वामि मुकुंद मज मधुसूदन महिपाल॥ मंग-

ल मणि मर्यादमणि मय ननया पनि काल॥३
यम सुरेश यज्ञेश यग यग वेदीश यमेश॥ यज्ञ
पुरुष यम त्रास हर यश दाता यजुरेश॥ ३१॥ रतन
सिंहासन आस्थित रविकुल मणि रघुवीर॥ रंग
भवन कीड़ा करण रिक्ष रसिक रण धीर॥३२॥
रमेश्वर प्रभु रिपुदमन रघुराई रघुनाथ॥ रमा
पतीश्वर रुज हरण हरण दीन दुख गाथ॥३३॥
रिपु सूदन रघुवंश मणि राघव राम रमेश॥ रघु-
नन्दन रविकुंड हित रघुकुल नभ राकेश॥ ३४
रजनीचरिपु रजनिकर रावण जित रघुलाल॥
रिषि दुख नाशक रिषि सुखद रघुवर रावण का-
ल॥३५॥ लंकापति रिपु लोक पति लोपा मुद्र
पतीश॥ लवण सुर रिपु लव जनक लक्ष्मण
हितु लेखेश॥३६॥ लक्ष्मीपति लघिमादि दा
लोमस प्रिय लेखादि॥ ललितानन लाव-
ण्य निधि सेवित शिव सनकादि॥३७॥ सीता
पति सीता रमण सरयूतीर विहारी॥ स्वर्ण स-
रेश्वर सुर सुखद सरमेश्वर दुख हारी॥३८॥
सरयू प्रभु सरमा सुखद सुवरण वेरी नाथ॥
सुग्रीवेश सुरारि रिपु सोरी सुखमा गाथ॥३९॥
सूर्पनखा श्रुति नाक हर सविता वंश दिनेश॥

सेतुबंध प्रभु शरण हितु सुर सरि प्रभू सुरेश ४०
षट रितेश षट राग निधि षट दश कला निधान
षट रस विद षडगी षडग षट सुख वपु षट गान४१
शवरी कामद शिव सुखद शक्र सुवन त्रस कारि॥
शोक विमोचन शत्रुहन शमन त्रास भय हारि४२
हिरणाकशिपु अरि हरी हित हाटक धाम विहारी॥
हृषि केश्वर ह्रन्यास जित हनूमान सुख कारी ४३
अवध विहारी अवध पति अच्युत अवध धुवार
अज नंन्दन सुत अवनि धर अव निज स्वामि उ-
दार॥४४॥अनुसैया प्रिय सत्रि हितु असुरारी-
श अनन्त अजित अयोध्या जन सुखद अ-
वनी भार हरंत॥४५॥ इंद्र जीत जित वृद्ध प्रभु
दृस्वा केश्वर ईश॥ उत्तम पुरुष उपेंद्र वा उ-
पमा रहित जगीश॥४६॥जय जय सीता रा-
म की जयति भरत सुख धाम॥ जय ल-
क्ष्मण जय शत्रुहन कुंजेश्वर शुभनाम४७

सोरठा

पढ़ै सुनै जो कोय राम नाम मुक्तावली॥
नसै दुःख सुख होय रघुवर नाम प्रभावने॥

इति

अथ हरिनाम रत्नावली

विरच्यते

तृतीय भाग

मंगलाचरण

बंदि पद गणराय निज गुरु पैल जेष्ठ मनावहूँ।
श्री रमा वर कृष्ण युग पद कंज रज शिर लावहूँ॥१
भक्तगण पदपीस धरि कै करि विनय यह माँग-
हूँ। संत सेवक है अहनिशि हरि चरण अनुराग
हूँ॥२॥ और यह विनती कृपानिधि चित्त दै सुनि
लीजिये। हरिनाम रत्नावलि सोहावन संत जन
प्रिय कीजिये॥३॥ जयति हरिराधा मनोहर दीन
हितु करुणा करं। करि कृपा कुंजलाल ऊपर हर-
हु बाधा अघ थरं॥४॥

प्रार्थना

त्राहि त्राहि श्री कृष्ण जगत पति सुर मुनि रंजन
पाहि प्रभो। त्राहि त्राहि मुरलीधर कामद जन
अघ गंजन पाहि प्रभो। त्राहि त्राहि मंद लाल मु-
रारी यशुदा नंदन पाहि प्रभो। त्राहि त्राहि केशव

परमेश्वर भव रुज खंडन पाहि प्रभो। त्राहि त्राहि
बलसद महोदर त्रै जग मंडन पाहि प्रभो त्राहि त्रा-
हि गिरिधर बनमाली नर्कनिकंदन पाहि प्रभो।
त्राहि त्राहि सुरपति मद हर्ती जन दृग अंजन पा-
हि प्रभो। त्राहि त्राहि कुंजलाल विपति हर अच-
ल निरंजन पाहि प्रभो॥

दोहा

त्रतिय भाग रत्नावली घायक भव रुज जाल। ह-
रि चरणाम्बुज हृदय धरि वर्णी जन कुंज लाल।
असित पक्ष तिथि दूसरी बुध कर्कट गतभान।
नाग सुधानिधि अंक शशि संवत विक्रम मान॥

अथ स्तोत्रावली

छन्द

अमृतध्वनि

जयति केशव कृष्ण गोविंद नंद सुत राधा वरं।
जयति अच्युत गोपिनायक दीन जन बाधा
हरं। जयति यदुकुल वंश भूषण विश्व मोह-
न गिरिधरं। जयति यदुवर नंद नंदन गोपि
वल्लभ श्री करं। जयति राधा कान्त मनुज मनो-
पिका मन रंजनं। जयति माधव मदन मोहन
दीन हितु दुख गंजनं। जयति मुरलीधर सुर-

री गोपि केश्वर ईश्वरं। जयति हरि बल बीर सौ-
रीं अज अनघ मय परंपरं। जयति यशुदा नंद य-
दुपति राधिका उर चंदनं। जयति शिव बल्लभ
दया निधि कंस जित जग बंदनं। जयति सुरप-
ति गर्ब हारी दीन जन सुख बर्धनं। जयति का-
लीमद विमोचन भक्त रिपु गण मर्दनं। जयति
राधा नाथ श्रीधर गोप नंदिनि नायकं। जयति ज-
य कुंज लाल भयहर दुख दमन सुखदायकं।१।
जय कृष्ण विष्णु नंद नंदन गोपि पति वसुधाध-
रं। जय रमाबर विप्लव मोहन सुकव निधि रा-
धाबरं। जय जगत्पति अनघ अच्युत विप्लव
नायक गोपतिं। जय दयाल यशोभुवं दित वि-
प्लवमय करुणारतिं। जय मुरारी अघ निकं
दनकं सजित श्रीवलेश्वरं। जय दनुज रिपु
पूत नारी संत हितु परमेश्वरं। जय हरी त्रै ताप
मोचन अज अखिल मयं परं। जय मुरा सुर-
सेव्य कामद गोसुखद विप्लवंभरं। जय रमा
बर अक्षम तारण राधिकेश्वर सुरतरं। जय
यशोमति सुकव दायक कुंज जन भवरुज
हरं॥२॥ जयति यदुबर विमल सुंदर अजर
श्रीधर श्रीपतिं। नंद नंदन जगत बंदन अघ

निकंदन सुभमतिं। मधु दलन माधव मुरारी
मारवपु मुरलीधरं। भय विनाशन भक्त वत्सल
भवपतिं भवरुजहरं। गुण विमूषण गोपि रंज-
न गर्वमोचन गोपरं। विष्णु वामन दनुज घा-
यक विप्रव भय आनंद करं। तरण तारण त्रि-
विध ज्वर हरतम चरणी तन धनं। वासुदेवं वि-
बुध वल्लभ गोपिपति करुणायनं। सुर सहाय-
क विप्रव कर्ता संत सुरधेरी विष्णु देव कुल मराड-
द फलत्यहरी केपं पिव वपुं। वारि धर प्रभु हे
तु कामद विप्रव भय वारिज मुखं। यदुपतिं य-
मत्रासमोचन यमस्वसे श्वर यमसुरवं। कुंज प्र-
भु कर्तार केशव कृष्ण करुणा मंदिरं। हरद्रु वा-
धा अरु विषादा राधिका पति सुंदरं॥३॥ जय
मापति कृष्ण गोविंद गोपि पति राधावरं। विप्र
मोहन गोपि नायक गोपतनया चित हरं। जय
सुरासुर ईश माधव नंदनंदन गिरि धरं। कंस
रिपु बल भद्र भ्राता विप्रव पति मपरं परं। जय मु
रारी पतित पावन शंभु सेवित श्री करंग भक्त व-
त्सल रवि सुतेश्वर खराडनं भवरुजहरं। जय
हरी प्रभु हरि बकारी दीन कामद सुर तरं। जगज
नक जगदीश विभू कुंज प्रभु त्रै जग भरं॥४॥

जय कृपा कर अनघ ईश्वर सर्व हित सुख दा-
यकं। कृष्ण करुणा रूप गोविंद दीन प्रभु जग
नायकं। पूतना रिपु सकट घायक घोषपति
हरि गिरिधरं। दनुज हायक व्रज बिभूषण गो-
पिपति राधा बरं। अकल निर्मल अजित अच्यु-
त राधिका मन रंजनं। जन सुखद का मारि कंता
गोपिका दृग अंजनं। विप्र भूषण भक्त अघहर
श्री सुखद सुरपालनं। प्रण्ण पोषण अमर अ-
धिपति सुरहि तारी कालनं। विबुध नायक दु-
ख प्रहारी माधवं सुख आकरं। गोप तनयाउर
बिहारी कुंज जन चिंता हरं॥५॥ जपति जयरा-
धा मनोरम बिज्रबनिता ईश्वरं। कृष्ण माधव
गोकुलेश्वर शंभु प्रभु लक्ष्मीधरं। नंद नंदन
गोपि वल्लभ हरि यशोदा सुख करं। अधम
तारण विप्र भूषणाज्ञगतपति राधाबरं। जन सु
खद यशुमति बिमोहन बिरल ललना चितहरं॥
कंस रिपुका मारि कंता राधिकेश्वर सुर तरं। शं-
भु अज बंदित मुरारी मोचनं भव रुज हरं। कृं-
ज प्रभु नंद लाल अनुपम विप्रवपति मपरंपरं। ६।
जयति श्री राधा रमण हरि कृष्ण त्रिभुवन नायकं
देवकी नंदन बकारी विप्र मय सुख दायकं।

असुर गंजन जगतईश्वर लोक त्रय उपजाय कं।
अमर पति पति कंस मर्दन सुरवद माली दायकं।
जगजनक जगदीश श्रीधर सुरगणारी घायकं। प्रभु
वंदित अज मुरारी जासु श्रुति गुण गायकं। अलख
अद्भुत विश्व भूषण दानवारि सहायकं। कुंज
प्रभु कर्तार कामद दीन हित खल सहायकं॥७।
जयहरी हर स्वामि माधव गोपि पति सुख सागरं। नंद नंदन विश्व भूषण गुण रहित गुण आकरं। विश्व मय राधा मनोहर व्रज पतिं करुणा करं। सुकवनिधि राजीव लोचन भक्त जन बाधा हरं। प्रभु सेवित पतित पावन नंदसुत राधा वरं। अज अनघ व्रज चंद केशव अच्युत सुखमा धरं। कैटभारी वकवि भंजन श्री रमण चिंता हरं। भक्त वत्सल गोपि रंजन जन सुखद लीला धरं। शिव वपुष कर्तार सौरी वंदितं स चराचरं। मधुदलन घनश्याम श्रीधर कुंज प्रभु वसुधा धरं॥८॥
जयति राधा रमण गिरि धर व्रज पती जग नायकं। प्रभु अज वंदित दयानिधि गोपिका सुख दायकं। पतित पावन अघ निकंदन कृष्ण निश्चर घायकं। विबुध दुख हर कंस वैरी प्रभु अ

जउपजायकं। शाक्रमदहरजगत कर्ता देव विप्र सहायकं। कुंज प्रभु त्रैताप भंजन जन सुखद श्रुति गायकं॥ ६॥

जयति जय राधा बिहारी दीनहितु नंद नंदनं। ब्रज अचिंतक गोपिका पति राधिका उर चंदनं। अनघ अच्युत हरि कृपा कर बिर्ज मंडल मंडनं। कंसरिपु श्रुति सार गिरिधर खलदुखद अघ खंडनं। अमर पति पति पतितपावन विप्रव मय जगा वंदनं। जनसुखद सुर प्रभु मर्दन हरणाभव रुज बंधनं। जगतपति राजीव लोचन गोपि जन सुख वर्धनं। कुंज प्रभु त्रैताप हर्ताश्रुक रिपु गरणा मर्दनं॥१०॥

जयति हरि ब्रजराज ब्रजपति गोपि जन मनरंजनं। गोपि पति गोपाल अच्युत दीनजनदुख भंजनं। गोसुखद गोलोक वासी गोपिका दृग अंजनं। सुरनिकंदन हरिहरी पति बिबुध पति रिपुगंजनं। कृष्ण सौरी मदन मोहन शशिवदनदृग खंजनं। कुंज प्रभु नमगोप ईश्वर दमन लोचन कंचनं॥११॥

जयति मुरलीधर अनूपम राधिका वर ईश्वरं। पतितपावन अघनिकंदन गोपिवल्लभ गिरि

धरं। भूमिपति सुरशत्रु मर्दन दुरवद मन सुखमं
दरं। नंदसुत नंदलाल माधव अच्युतं वपु सुंदरं।
अमरपति मदहर कृपानिधि श्री धरं भुवनेश्व-
रं। कृष्ण यदुकुल कमल दिनकर वीरमणा जन
दुरव हरं। अकल निर्मल अजर अविगति गोप
तनया सुरतरं। कुंजप्रभु व्रजराज यदुवर अघह-
रण परमं परं॥१२॥

जयति हरि सुखधाम केशव गिरिधरं गरुड़ध्व-
जं। विश्वदपति जगदीश गोविंद निर्मलं अकलं
अजं। कंस रिपु राधा मनोरम ईश्वरं परमंपरं।
जन सुखद व्रजराज कामद मुक्तदा करुणा क-
रं। मधु दलन माधव दयानिधि दीन हेतु भयह-
रं। विश्व मोहन गोपि नायक मुरजितं सुर हित
करं। जगत्वल्लभ विश्व कर्ती भगवतं सुख मंदरं।
कुंजप्रभु कलि कलुष भंजन कृष्ण श्यामं सुंदरं॥

छंद त्रोटक

घनश्याम अकाम अभंग लहा सुर रंजन मंजन
दोष महा। जग पालक नाशक इन्द्र बलं। सुर
नायक घायक दुष्ट बलं। जगभूषण दूषण राज-
प्राकरं। अजभूप अनूप विशालपरं। भगवंत अ-
नंत अनीह अजा। जगमंडन खंडन घोर

रुजा। जरा कारणा तारणा लोक त्रयं। हृषि केशा अजेशा त्रलोक मयं। सर्वादि अनादि मुरारि अरी। असुरारि मुरारि अमानहरी। सुखरूपानि अकाम अमी वदनं। कुंजलाल भुवाल दया सदनं ॥१४॥ नंद नंदन केशव कृष्ण प्रभो। करुणा लय माधव हेत विभो। बलभ्रात बकारि दया सदनं। नंदलाल मुकुंद वपुष मदनं। कंसारि शिवेशा अनीह अजादवि जेशा अकाम हरं तरुजा गिरिधा रिगोपाल कृपाय तनं। त्रय लोक मयं सुरवंदाय जनं। कुंजलाल प्रभू जगदाभरणां। मम कष्ट निवारि कुरुहि पूरणां ॥१५॥

नंद नंदन गोविन्द श्यामघनं। सुरनाथ करं जन दीन जनं। विश्वंभर माधव शैलधरं। वृषभानुक केशी प्राण हरं। मधु सूदन केशव कंस जितं। सुखराशि विशाल दयालचितं। त्रयभानु सुतेशा अघादमनं। जनरंजन गोप सुता रमणां। अजपूं भुवभू सुरशत्रु अरी। कुंजेशा दया निधि कंस हरी ॥१६॥ यदुनाथ अनाथ सनाथ करं। नंदलाल गोपाल दयालपरं। यदु नंदन खंडन घोर रुजं। हृषि केशा मुकुंद अजं अरुजं। सुरपालन घाल नहंदखलं। अघभंजन गंजन दुष्ट दलं। असु

गरिवकारि सुरेशा पतिं। अजभूप अनूप सुधर्म रतिं। जगतारणा धारणा पौलकरं। सुखदानि अमानि अपारपरं। पटपीत पुनीत विशालधरं। सुरनायक नायक गोपिवरं। पाकदारि मुरारि अघा दमनं। जगपाल कृपाल रमा रमणं। शुभलोचन मोचन पापहरं। छवि आगर नागरं कल्पतरं। मन भावन पावन सुःखमयं। खलत्रासक नाशक शोकभयं। ब्रह्मेशा शिवेशा विशालवपुं। अरिलेशा रमेशा सुरारिरिपुं॥ खलसालक पालक भक्तगनं। अघशोषणा पोषणा कुंजजनं॥१७॥

वृषभानुसुतेशादयालपरं। जनरंजन गंजन पापहरं। मदलोभभुजंग खगेशा वपुं। तम मोह पतंग सुरारि रिपुं। गंज काम महा मृगराज शुभं। तपक्रोध हरं द्विजराज प्रभुं। भवसिंधु अगाध शुभग तरणं। कुंजलाल भया कुल सुख करणं॥१८॥

बल बीर सुरारि गोपाल हरी। यदु नंदन गोविंद कंसअरी। मधु सूदन माधव वेणु धरं। मनमोहन कान्हर गोपिवरं। जनरंजन गोप सुता सुरदा। सुखपुंज भवेशा हरन्त रुजा। श्रुति सेतु अ

जेश्व सुरेश्व पती।परमेश्वर कामद धर्म रती। नंद लाल सुरेश्व अभय कर्ती। कुंज लाल प्रभू गिरिवर धर्ती॥१८॥

वृष भानु कुमारि रमण शुभदं। नंद लाल गोविंद अमर सुखदं। सुख पुंज गोपाल अजर अमलं॥ हृषि केश्व रमेश्व अभय अकलं। ब्रज चंद मुरारि कृपा सदनं। नंद नंदन केशव शुभ वदनं। जन कामद दूषण क्षय करणं। ब्रज मोहन वासव भय हरणं। सकदारि अकाम अघा दलनं। सर्वादि अजीत अमर पलनं। ब्रज भूप अनंत सुधा वपुषं। सुखदाय कृपाल महा पुरुषं। गुणा राशि शिवेश्व जगा भरणं। दनुजारि रमाल रुचिर चरणं। कुंज लाल भुवाल पतित तरणं। मोहि जानि अनाथ करहु शरणं॥२०॥

जल रंजन श्याम अमी वदनं। नंद नंद कृपाल दया सदनं। भव बंधनि कंदन नंद सुतं। जन पाप हरं अति शीलि युतं। घन श्याम गोविंद अजा अमलं। सुर शत्रु रिपू अनुपं अकलं। वृष भानु सुतेश दया वपुषं। ब्रज राज मुरारि महा पुरुषं। ब्रज चंद रमेश अमी वयनं। अमुरारि बकारि दया अयनं। दधि दानि मुकुंद अघा दमनं। सुख राशि

अमान रुजाशमनं। अखिलेश भवेश बकी हनं। सकटारि ब्रजेश असुर दलनं। शिव रूप मुरारि गणां दुखदं। कुंजलाल प्रभू शुभदं सुखदं। ॥२१॥ जय आरति भंजन कृष्ण हरी। सुख चंदु-द सुरपति भानु अरी। नंद नंदन कान्हर गोपि वरं। यशुदा सुत माधव वेणु धरं। मधु सूदन गोविं-द श्री सुखदा। भवरोग शमन जन हेति सदा। नं-द लाल मुकुंद सुरेश पती। सुख सिंधु कृपाल सु धर्म रती। नंद तात अकाम अमान बली। त्रैलो-क्य रमित खल ब्यूह छली। बलभ्रात अनंत वि-शाल वपुं। ब्रुष भानु सुता पति कंस रिपुं। त्रै ताप हरं जसदा भरणां। नंद सूनु अजातशुभाचरणां श्र रणागत वत्सल पाहि प्रभो। कुंज लाल प्रभू हरि पाहि प्रभो ॥२२॥

नंद नंदन गोविन्द गोपिवरं। वृष भानु सुता प-ति वेणुधरं। सुख कंद मुकुंद विशाल वपुं। सुर सन्त हितू विदुधारि रिपुं। अखिलेश शिवेश्वर पायतनं। सुखरंजन गंजन दुष्टगणां। हृषि केश गोपाल परेश परं। त्रदशारवि भंजन पापहरं। कुं जलाल कलेश विनाश करं। यदु नाथ रमेश अ-पार परं ॥२३॥

छन्द भुजंगप्रयात

नमो कृष्ण गोविन्द कल्याण रूपं। अजं निर्गुणं शंभु कर्ता अनूपं। नमो राधिका नाथ गोपी जनेशं। निरीहं निराकार सौरी अजेशं। नमो गोपि पालं मुकुंदं दयालं। अजंनिर्विकारी स्वतंत्रं कृपालं। नमो कंस कालं जनं सुःखदाता। दया मूर्ति राधा मनोहर अजाता। नमो केशवं काम रूपं रसालं। चिदानंद सुरहे तु कैलोक पालं। नमो धर्मरूपं सुरा सुरसहायं। अखंडं अमोघं अमर पाल गायं। नमो गोपिका वल्लभं विश्व रूपं। अनंतं अना द्यंत कुंजलाल भूपं॥ २४॥

नमो मीन शोविन्द माधव मुरारी। गुणा तीत गुणापाल गोकुल विहारी। जगन्मूल सर्वादि संसार हेतुं। जगन्नाथ जगदीश करुणा निकेतुं। दयासिंधु गोपेश गोलोक बासी। चिदानंद शिव रूप आनन्द रासी। कृपासिंधु यज्ञेश असुरान्त कारी। अमरपाल सुखदाय निर्जर प्रहारी। वकारी कृपादंत त्रैलोकतातं। अधाशत्रु कुंजेश हलधारि भ्रातं। अजा मीश गोपीश गोपाल लालं। गुणा तीत गोतीत सुरशत्रु कालं। निराकार नव नीत प्रिय गोपिहेतुं। अरणा पाल सर्वेश श्रुति धर्म सेतुं। पतित पाल

सुख मूल त्रैलोक नाथं। शरणा हेतु कमलेश्व शि-
वसुख गाथं। दयासिंधु गोविन्द माधवमुकुंदं।
जगन्छेय शुभवेय श्री हल चंदं। विशालाक्ष नं
दलाल गौरी पतीशं। कमल नाम कमलाक्ष अच्यु-
त अजेशं। परः ज्ञान विज्ञान रूपं अपारं। अखि-
ल लोक पालं अनूपं उदारं। जलद रूप अवि का-
रि गोपी विलासिं। चिदानंद विश्वेश्व जन सुःख
राशिं। अक्षित रूप नंद सूनु करुणा अगारं। अ-
मरपाल सुख दाय लीला वतारं। अदिपशायन
लोकेश्व सुख राय नाहं। हरी मित्र कुंजलाल स्वा-
मी अगाहं। २६॥

नमो कान्ह सर्वेश्व सुरपाल पालं। चिदानंद यज्ञे-
श्व कलि काल कालं। जगत्पाल योगीश्व संसार
सारं। मुरारी जगच्छेय चारं अचारं। स्वयं ब्र-
ह्मजन ताप हारी विहारी। दयासिंधु सुर सुःख
कारी बकारी। गुणातीत गोविन्द धाता विधाता
बकी शत्रु शिवईश्व ज्ञाता अजाता। सुबुधीश्व अ
सुरारि कामी अकामी। निराकार साकार नामी
अनामी। जगन्नाथ त्रैलोक तातं अतातं। अ-
मरपाल अमरेश्व त्रातं अगातं। विशालं विबुध
शत्रु जीतं अजीतं। शरणा हेत सर्वत्र तीतं अती

तं। कमल नाभ कमलेप्ण सारं अभारं। जगन्मूल कुंज लाल नारं उदारं ॥२७॥

दयासिंधु गोविन्द त्रैलोक भूपं। हृषी केप्ण वैकुंद संसार धूपं। हरी मित्र बलवीर भाइव गोपा लं स्वतंत्रं अमर पाल पालं दयालं। गुणातीत गोती त सुर संत हेतं। कृपा मूर्ति शिव रूप त्रैलोक केतुं। विहारी मुरारी जगच्छेष बिस्तुं। अहि पप्ण यन ब्रजचंद निः काम जिस्नुं। चिदानंद जगदीप्ण गोलोक बासिं। अचिंतक अनाधार सुर मत्र वासिं। जगत्स्वामि राधेप्ण मोषी जनेप्णं। अजि ह्रि प्ण कलीर सौरी अजेप्णं। बसन पीत धारी श्रीधर विप्णालं। जलजनयन घनश्याम सुंदर रमालं। निरामय निराकार जन सुःख धाम। अनाद्यंत कुं जेश राधा मिरामं॥२८॥

छन्दोमय

जयकृस्न हरि घनश्याम। शिव रूप पूरण काम हरि ईश गोपी कंत। सुख धाम रं जन संत। बलवीर सुंदर गात। जगदीप्ण त्रि भुवन त्रात। वैकुंद य सुमति लात। ब्रजचंद मुरपति पाल। शिव धाम गोपी नाथ। गिरि धारि करुणा गाथ। अखिलेंद्र वैजया भूप। कुंजेप्ण आनंद रूप॥२९॥

जय मोह तिमिर पतंग। व्रजराज विमल त्रभंग।
भव बंध कंज तुषार। यदुनंद कृष्ण उदार। त्रघ
त्रोघ खग्ग गग्ग बाज। मुरपालपति यदुराज।
मदकाम त्रहि उरगारि। बलवीर विप्लव त्रधारि।
त्रज्ञान निधि जलयान। वसुदेव सुत मुख खा-
न। कलि ताप हारि निशेष। कुंजेष त्रजगवेष
॥३०॥ नगस्वरूपिणीछन्द

व्रजामि कृष्ण सुंदरं। गोपाल प्रीत मंदरं। गो-
विन्द पूंषु जायकं। मुरारि छन्द घायकं। त्रजे-
शगाधिका वरं। मुरारि हरि गदा धरं। वकारिधे-
नु चारिणं। दुकूल पीत धारिणं। मुकुंद कंज
नो चनं। त्रघोर पाप मोचनं। शिवेश भक्त पा-
लनं। सुरेश प्रभु घालनं। गोपाल गोपिका प-
ति। निचित्र रूप शुभ मतिं। त्रकाम गोपि हित
कामवेष कुंजभय हरं॥३१॥

चतुर्पदी

जयपदु नंदन हरि त्रसुरारी। शिव त्रज सेवित
सुरहितकारी। गिरिवर धारी त्रिभुवन त्राता। पति
त उधारण हलधरभ्राता। यशुमति लालन घट
घटवासी। सुर मुनिपालक खल गणत्रासी। कुं
जबिहारी विप्लवसुवालू। व्रजबनिते प्रवर कृष्ण

कृपालू। कंस निकंदन खगपति गामी। विश्व विभूषण गुणगण धामी। अनघ अकामी त्रैजग केतू। विपति निवारण करुणा केतू। मधु सूदन माधव दनुजारी। जग ज्जनक जगदीपा मुरारी। जगन्नाथ शिव धाम अमानी। कुंजलाल प्रभु शारँग पानी॥३२॥

छन्द मोती दाम

नमो नमो ब्रज चंद गोपाल। यशुदा नंदन जगत भुवाल। ब्रज बनिता पति केशी काल। शिव अज बल्लभ त्रै जगपाल। सरसिज लोचन वदन रसाल। कुंज विहारी हरि नँद लाल। बन माली राधाउर माल। ललिता मोहन रूप विशाल। विजा प्रभु सुरहितु खल साल। चंद्रावलि सुख दाय कृपाल। चित्रा स्वामी वपुय तमाल। शीलेश्वर मेटन भव जाल। संजावलि पति दीन दयाल। सुखमा नायक रूप सुभाल। अपर गोपि पति गोविंद ग्वाल। सरुचि सप्रेम सुमिरु कुंज लाल॥३३॥ जय यदु नंदन हरि गोपाल। सुख निधि माधव अखिल भुवाल। करुणा अंबुधि श्याम मुरारी। ब्रजपति केशव अजबलबीर। ब्रज बनिता पति नन्द कुमार। गिरिधर नन्दसुत अनघ अपार

कुंजविहारी शिव अजईश। अपरणा पूरणा अकल गोपीश। अच्युत अविगति अलख अज्ञान। ब्रजतनया पति सुंदर गात। सौरी कामद त्रैजगभूप। सुरजित राधा बर सुखरूप। जगज्जनक जगदीप मुकुंद। जनउर चंदन अरुज अद्वंद। भवरुज हारी यशुदा नंद। सिंधुसुते भूधर गोकुलचंद। जलज बदन अनुपम घनश्याम। पतित उबारण गोविंद नाम। विश्वंभर सुखद शोभाधाम। अधम उधारण श्रीभगवान। वंशी विनाशन राजिव नयन। दयापुरंदर विश्वरक्षावन ॥सुर मुनिपीतम जग अभिराम। कृष्णगोपि पति गुणगणधाम। मधु सूदन दधि माखन चोर। संशयशमन हरण रुज घोर। मुरली धर श्रुति नीतिप्रवीन। कृपासिंधु पालन जन दीन। हरी केशविजयीरण क्षोर। यदुवर मोहन श्री चित चोर। विश्व विलासी यशुमति लाल। कुंजलाल प्रभु त्रिभुवन पाल॥३४॥

जयजय गोविंद जय नंदलाल। गिरिधर गोपी जनउरमाल। निर्गुण सगुण वपु अग जगभूप। स्वयंब्रह्म हरिविश्वाधीश। विश्व सुखद शिव अज कर्तार॥ अच्युत अविगति अगम अ-

पार निगम तल गुणशील निधान विश्वंभर
मौरी भगवान। श्री निधि यदुवर विश्व स्वरूप। वं
शीधर छन्दा वनभूप। राधा मोहन गोपि जनेशा।
हरणा अमंगल शंभु अजेशा। यशुदा सुत राधे
गोपाल। जन मन रंजन विश्व भुवाल। दया
सिंधु केशव बल बीर। कुंज लाल प्रभु कृष्ण स-
धीर॥३५॥
नंद नंदन हरि कृष्ण उदार। ब्रज तिय सुखद सु-
रेशा भुवार। मुरजित केशव नंद कुमार। शिव
अजबंदित अजित अपार। ब्रज मोहन जग सि-
रजनहार। सुख निधि अच्युत धर्मोद्धतार। अक-
लंक अमल राधे हिय हार। पारण सुखद वै लोक
अधार। अधम उधारण रहित विकार। चक्रा यु-
धहरि सुखदातार। कुंज लाल प्रभु करुणा गार।
॥३६॥ नंद सुवन गिरिधर नंद नंद। मुरली धर
नंद लाल मुकुंद। राधा कृष्ण हरण भव फंद।
गोपी पति नंद सुत सुख कंद। यशुमति नंदन मो-
कुल चंद। कान्हर केशव परमा नंद। रास विला
सी निधा नंद। जन मन रंजन हरी गुविंद। रा-
धे मोहन अरुज अखंडा। भंजन भव रुज घोर
प्रचंड। विश्व विमोहन करुणा सिंधु। अभय

अदूषण अमित अबंध। कीरति नंदनि पति सुख इंद। कुंज लाल भय हर यदु नंद॥ ३७॥

ब्रजवनिता पति नंद कुमार। किल्बिष हर श्री कृष्ण मुरार। बिश्व विमोहन जगत अधार। करुणा मंदिर अपर अपार। जगज्जनक हरि चित्त उदार। राधा वल्लभ जगत मुवार। वनमाली अघकंज तुषार। कुंज लाल प्रभु रहित बिकार॥ ३८

जय जय जय राधे गोपाल। गोपीपति हरि यशुमति लाल मुरली धर श्रुति सेतु मुरार। यशुदा नंदन अज कर्तार। गिरिधारी पिव स्वामि मुकुंद। कलि मल हर्ता अरुज अछंद। कुंज बिहारी गोपीनाथ। कुंज अताधहि करहु सनाथ॥ ३९

छन्द दोधक

जयति जयति हरि माधव गिरिधर। वनमाली नंद लाल मुरलिधर। सुरव सदन सुर संत बिपनि हर। बिश्व जनक यदु नंद रमावर। भवरुज हरण यशोमति सुरतर। सुर गण रंजन घायक निश्चर। अघारणाशण। भवेश बिश्वभर। कुंजपभू श्री कृष्ण अवनिधर॥ ४०॥

छन्द त्रभंगा

जय कर्तारं कृष्ण उदारं कृपा अगारं हरि राई

जयशिव कर्ता त्रै जग भर्ता भवरुज हर्ता सुखदा-
ई। जय यदुनंदन सुर मुनिरंजन अलख निरंज-
न निःकामी। जय सुख दायक गोपी नायक दी-
न सहायक सुरस्वामी। जयभगवानं अजित
अमानं दयानिधानं बनमाली। जय गोपालं
विश्व भुवालं हरि नँद लालं जगपाली। जय
नँद नंदन दुष्ट निकंदन त्रै जग बंदन बल वीरा।
जय गिरिधारी कुंज विहारी विश्व अधारी रणा
धीरा। जय अविनाशी लोक प्रकाशी घट घट
बासी नँद ताता। जय मन भावन केशव पावन
रूप सोहावन जन त्राता। जय असुरारी अनघ
मुरारी पतित उबारी शिवभूपा। जय भगवंता
रूप अनंता असुर निहंता शुभ रूपा। जयघन
श्यामं करुणाधामं अकल अकामं सुखमाया। ज-
यशिवरूपं त्रै जगयूपं सुरपति भूपं जितमाया।
जय जल शाई लोक उपाई दीन सहाई खल
काला। जय राधेशं कुंज जनेशं श्यामन कलेशं
ब्रज लाला॥ ४१॥

जयति गोपालं यशुदा लालं दीन दयालं शिव
रूपं। अगम अनूपं शिव अज भूपं मंगल रूपं
श्रुति यूपं। अलख अलेखं करुणा वेशं त्रै जग

रेखं जगरेतुं। गोपि कलत्रं चरित्र बिचित्रं हरिरु-
रमित्रं श्रुति सेतुं। पुरायोपेतुं दयानिकेतुं आनंद
हेतुं सुख भवनं। यशुदा तातं सुंदर गातं अरुज
अजातं खलदवनं। भव भयशमनं राधा रमणं
दुःख प्रशमनं सर्वेशं। बिश्वाभरणं मरकतव
रणं भव रुज हरणं प्रत्रेशं। हलधर बीरं बि-
मल शरीरं भंजन भीरं जग त्रातं। यशुमति नंदं
करुणा कंदं हृदया नंदं नंदसुतं। अनघ अ-
तातं जगा पितु मातं करुणा गातं हृषिकेशं।
अगुणा अनादं त्रिभुवन आदं प्रमन बिषादं अ-
खिलेशं। जन अनुकूलं प्रोभा मूलं अगह अतु
लं शुभ नामं। अजित अमानं गुणा गणा खानं
चतुर सुजानं निःकामं। कंस बिनाशिं चित्त उ-
लासिं बिश्व बिलासिं कर तारं। कुंज सहायं
गोकुल रायं जन सुख दायं अबि कारं॥ ४२॥
जयति मुरारी मंगल कारी कलि मलहारी सुरव
दाई। सुरमुनि रंजन बिपति बिभंजन यशुदा
नंदन हरिराई। भवरुज नाशन तम चर प्रासन
बकी बिनाशन सुख धामा। गिरि वर धारी भ-
व भय हारी असुर संहारी घन श्यामा। यदुकु-
ल नायक दीन सहायक केशी घायक अबिना-

सी। यशुदाप्यारे नंद दुलारे जनरखवारे व्रजबा-
सी। अमित अनंता राधा कंता हरि भगवंता सुख
कारी। करुणा सागर राधा नागर गुणा गरा
आगर वनवारी। परम पवित्रा गोपी मित्रा वेश
विचित्रा कंसारी। कुंजभुवाला मदनगोपाला न-
यनरसाला अविकारी॥५३॥
सुहितकारी कृष्ण मुरारी गिरिवरधारी जगभ
र्ता। हरी गोपाला यशुमति लाला दीन दयाल
रुजहर्ता। घटघट वासी आनँदरासी रवल
गरा त्रासी नंद जाता। सिरजनहारा रहित विका-
रा दया अगारा जनत्राता। निगम प्रचारी धर्मी
तारी विपद अधारी श्रुति सेतू। कुंज बिहारी सुर
संहारी अघ क्षयकारी सुख केतू। मरकतगा-
ता हलधर भ्राता दनुज निपाता श्री कंता। ल-
लित ललामा पूरण कामा सुंदर श्यामाभरा
वंता। जगविस्तारण कारज कारण अधमउ-
धारण कर्तारा। विरुज शरीरा अनुपम वीरा
सगुणा सधीरा अविकारा। त्रै जग वंदन केशी
गंजन भव भय भंजन रणधीरा। अगुणा अनू-
पाशिव अजभूपा अकल अरूपा वन वीरा।
दुखहु कृपाला केशी काला रूपविशाला शुभ

नामा। कुंजजनेश्वर गौरिपतीश्वर अज अरिव
लेश्वर सुरवधामा ॥५४॥
यशुमति तातं सुंदर गातं हलधर भातं नंदजातं
। असुर अरातं कंसनिपातं सुरमुनि त्रातं जय
दातं। वदन रसालं त्रैजगपालं परम दयालं गो-
पालं। नयनविशालं विश्व भुवालं श्याम तमा
लं व्रजलालं। कुंजविहारी गिरिवरधारी धर्म च-
रीदन वारी। कंसप्रहारी दुष्ट संहारी विप-
ति निवारी असुरारी। भवभय नाशिं घट घट वा-
सिंव्रजनि निवासिं सुरवरासिं। हृदय विलासिं
वेद प्रकाशिं चित्तहलासिं खलत्रासिं। सरसि
ज वदनं करुणासदनं एधारमणं खल दमनं।
केशी हननं अघ घरहरणं कुंजउधरणं रुज
शमनं॥५५॥
करुणा अयनं हरि अहि शायनं कृष्ण सुखयनं
शुभ वयनं। राजिव नयनं लाज नमयनं जन सु-
ख दयनं दिनरैनं। शिव अज ईशं विश्वाधी-
शं अज जगदीशं लक्ष्मीशं। जगदाधीशं का
मारीशं व्रजगोपीशं योगीशं। अखिल अकामं
रमाभिरामं पूरण कामं घन श्यामं। सुघर ल-
लामं केशव नामं अघह अधामं शुभ कामं।

वपुष विशालं यशुदा लालं बिप्रव भुवालं जन
पालं । सुरपति पालं दीन दयालं कुरुप्रतिप
लं कुंज लालं ॥१६॥
यशुमति नंदन त्रैजग वंदन जन उर चंदन पाहि
प्रभो । भव भय भंजन सुर मुनि रंजन निश्चर गं-
जन पाहि प्रभो । कुंज विहारी असुर संहारी गि-
रिवरधारी पाहि प्रभो । त्रभुवन मंडन कंसनिकं-
दन भवरुज खंडन पाहि प्रभो । सुरमुनि पा-
लंयशुदा लालं जगाद्भु वालं पाहि प्रभो । गु-
णागरा आगार नटवर नागर सुखमा सागर
पाहि प्रभो । शिव अज नायक जन सुख दायक
दीन सहायक पाहि प्रभो । कृपाल कृपालं दीन
दयालं कुंज प्रति पालं पाहि प्रभो ॥१७॥
जय जनपालं शंभु भुवालं यशुदा लालं बनवा-
री । नयन विशालं मदन गोपालं दीनदयाल
गिरिधारी । त्रै जग बंदन जनउर चंदन यशुदा
नंदन जगदीशं । कंस निकंदन त्रिभुवन मंड
न भव रुज खंडन लक्ष्मीशं । अखिल निर
जन केशी भंजन खल गण गंजन ब्रज ईशं ।
जन दृग अंजन श्रुति स्वर व्यंजन सुर मुनिरं-
जन गोपीशं । शिव अज नायक सृष्टि उपायक

हेती वायक सुख राशी। निश्चय घायक जन सुख दायक कुंज सहायक अविनाशी॥४८॥

छन्दगीतिका

जय अखिलेश चिदानंद यदुवर केशव माधव कृष्ण गोपाल। किल्बिष हर अच्युत परमेश्वर करुणा पुंज मुरेश कृपाल। ब्रज नंदनि पति यशु मति नंदन गोपी पति हरि जगद्गुरु पाल। किल्बिष हर नँद लाल नंदसुत अनुपम अविगति बदन विशाल। अपरण शरण अमर पति नायक गोपि मनोहर रूप तमाल। अलख निरंजन राधा बल्लभ करुणा मंदर रुचिर रसाल। ब्रजजन सुखद अनघ अविनाशी अकल अमोघ अमर रिपु काल। यज्ञपुरय सुर अधिपति स्वामी कुंजेश्वर हरि दीन दयाल॥४९॥

कलिमल हरण गोपाल मुरारी गिरि धर यदुवर गोपी नाथ। शरण सुखद सुरशत्रु प्रहारी अनुपम अविगति करुणा गाथ। कलिकलुषःज्वरहर यदुनंदन सुरंजन हरि दीन दयाल। कंस शत्रु रवि नंदनि कामद विश्वंभर ब्रज चंद कृपाल। संतसुखद ब्रज वनिता मोहन यशुमति सुवन त्रिदश पति राय। ब्रज नंदनि प्रभु कुंज बिहारी अहि मद गंज

न जन सुखदाय। यदुकुल तिलक अमर पति ना-
यक संकट हर सुरमुनि अजभूप। नर्क निकंदन
अधम उधारी त्रिभुवन बल्लभ अतुपम रूप। कै-
टभ रिपु सचरा चर वंदित निष्कल निर्मल वि-
श्वशयन। कुंजलाल प्रभु अच्युत परमित रा-
धा मोहन राजिव नयन ॥५०॥
जय विश्वंभर त्रैजगावंदन यशुदा नंदन हरि ब-
लवीर। किल्विषहर सुरशत्रु निकंदन करुणा
लय गिरिधरणाधीरा अशरणा शरणा अमरप-
तिहितकर नंदा तिम नँद सुवन सुरार। भवरु
जहरणा अमरगणा-रंजन नंदराय सुतचित्त उ-
दार। यदुवर यदुकुल दिनकर अविगति व्रज
नंदनि उर मानस हंस। कमल नयन कलि क-
लुष विभंजन श्रीव्यारे पोषणा यदुवंशा। यशुम-
तिसुखद अमर कुल मंडन बकहंता सुरजित नँ-
दलाल। कुंजभवन प्रभु हरणा अमंगल कुंजला-
ल सुखकर सुरपाल ॥५१॥
मौलमुकट उरगुंजाभूषणा श्रवनन कुंडल ल-
लित ललाम। चंद्र बदन छवि काम विनिंदक
अकल अमल हरारमा अभिराम। कुंचित चिकुर
अधर रतनारे दरग्रीवा हय भुन्नत कंधा प्राक्रम-

नुज इंदुभूसुर दायक तिल प्रसून सम धारा
अवंभ भुज सुंदर कर कमल नाल युत रवि द्युति
निंदक दसनर साल। हृदि द्विजपद श्री अंकि-
त अनुपम कंठ कंबु छबि मणि गण माल। बस-
नपीत तनश्यामल काछे कर मुरली लकुटी सु-
रव सार। अपर अभूषण भूषित सुंदर जय जय
कुंज प्रभू कर्तार ॥५२॥

जय जगवंदन राधा वल्लभ राधा मोहन राधाकं
त। नंद महर सुत राधा प्रीतम राधा माधव हरि
भगवंत। अपारण पारण राधिका प्यारे राधा ना-
यक त्रिभुवन पाल। मंगल करण राधिका सुख-
दा राधा गोविंद रदल गण काल। अलख अगो
चर राधा ईश्वर कुंज विहारी करुणा धाम। स-
गुण निगुण वपु राधा केशव कुंज प्रभू राधा
अभिराम ॥५३॥

छन्दउप गीतिका

जय विश्वंभर गोपी वल्लभ नँद नंदन गिरिधा-
री। यशुदा सुवन चरा चर वंदित शिव मूरतिसु-
ख कारी। अपारण पारण विश्व सुखद दायक
व्रज नंदनि चित हारी। कंस शत्रु कर्तार कामदा
करुणा मय असुरारी। मधु सूदन वैकुंठ गदा

धर केशव कुंज बिहारी। मुरलीधर पीतांबर अ-
च्युत सौरी पतित उबारी। जगत जनक वृष भा-
नसुतेश्वर सुरपति स्वामि मुरारी। महापुरुषमे
धावी जिष्णू मास्वन चोर बकारी। अधम उधारण
यमभय हर्ता अरिवल अनघ अविकारी। प्रण
तपाल व्रज बनिता ईश्वर जन रंजन दनुजारी।
पुरुषोत्तम जगदीश निरंजन भंजन द्वंद मुरा-
री। कलुष निकंदन अज अविनासी अनुपम
जगत अधारी। यदुकुल तिलक अमोघ अचिं
तक चिदानंद जगतारी। कुंजलाल प्रभु पिव
अज कर्ता पूतन रिपु सकटारी॥ ५४॥
यदुकुल तिलक यशोदा नंदन गोविंद मुरली
धारी। नंद नंदन घनश्याम मुरारी मोहन कुंज
विहारी। शंवार सुरवद यशो मति लालन पूत
नारि सकटारी। तरुणावृत भंजननँद त्राता का-
मासुरत्रस कारण। सृतिका भक्षन लीला कारी दा-
मोदर असुरारी। नगद सुतन गति दायक अ-
च्युत खल प्रलंब संहारी। गोकुलेश व्रज वनि
ता मोहन वृंदा बिपिन बिहारी। वका बिनासी
अघा निकंदन द्विज भामिनि हित कारी। चीर
चोर लीला पुरुषोत्तम काली विष भय टारी।

वत्सासुर वृषभासुर रंजन राधा पति गिरि धारी।
गोप सुतापति दावा मोचन मारवन चोर बकारी।
अक्षम उधारण रास बिलासी दधि दानी नृविकारी। शंख चूड़हा केशी घायक चतुरानन भ्रम कारी। नारद बंदित गर्ग प्रसंशी सुफलक सुत चितहारी। रजक विनासी दायक बरदा कुबिजा कूबर हारी। माली सुखद शंभु धनु भंजन असुर वृंद क्षय कारी। कुबलयारि चाणूर निपाती सुष्टि कारिकं मारी। असुर प्रभु बसुदेव दुःख हर उग्रसेन नृपकारी। नंदप्रबोधी लीला अबुध निगम धर्म बिस्तारी। यदुकुलेशयादोय दुराई कुंज लाल रुजहारी ॥५५॥

बपुष विशाल दयाल नया निधि करुणा मय बल वीरं। पंकज वयन चिकुर घुँघुरारे गोपी प्रभु यदुबीरं बिंबा अधर कपोल महा छवि मुरलीधर शुभ नामं। कुंद मुकुल दशना वलि आभादर ग्रीवा सुखधामं। उर वन माल पितं बरपावन परम रुचिर छवि दाई। कर मुरली यमुनात टखेलत केशव कुंवर कन्हाई। जय मन मोहन कुंज बिहारी कृष्ण दीन जन त्राता। कुंज लाल उर शोच निवारी राधा वर बलभ्राता ॥५६॥

अधम उधारण जन हित कारी सौरी समन कले
शं। करुणा पुंज अलख अविनासी यदु कुल क-
मल दिनेशं। ब्रजबनिता चित चोर दया लय गो
पी चशु निःकामं। अजर अभय दिविजाधिप भय
हर केशव बदन ललामं। बिबुध सुखद हरि का-
मद अच्युत नारायण भगवंतं। कलिमल हर सु-
रशत्रु निकंदन अमित अजित बल वंतं। अनघ
शांशु अज बंदित माधव मारवन चोर गोबिंद। ल-
लित रूप ललिता नारायण दया रूप नँद नंदं। गो
प बधू उर कमल दिवाकर श्यामल बपु कम नीयं।
कुंजलाल दुख हर यदु नंदन श्री राधे रमनीयं।
॥५७॥ अभि नव जल धर बपुष मनोरम कंज ब-
दन कमनीयं। सर सिज लोचन मदन मनोहर
सुरमुनि हित करणीयं। गरुड़ चुंच निंदक शु-
भ नासा जलज मृदुल मुख हासं। दर ग्रीवाबय
सुन्नत कंधर आभा इन्दु प्रकासं। गंडस्थल शुति
कुंडल अलकैं केसर तिलक लिलारं। वर्ही मुकु
ट मौलि छवि दायक बक्षस्थल सुख सारं। मंजु
ल उदर सुवाहु पावन पंकज कर शुभ मूलं। बन
माला मणि हार लसत हृदि परिधन पीत दुकू-
लं। कटि शोभित पीतांबर निर्मल पद जल जात

अनूपं। मुरली मधुरे सुर नव जावत कृष्न लोक वय भूपं। सखिवन सहित वृष भानु किशोरी हरि सँग कुंज गमकारी। कुंज लाल प्रभु जय हरि राधा वृन्दा विपिन बिहारी॥ ५८॥

नंद दुलरि कुंज बिहारी केशव मदन गोपालं। यशुदा नंदन सौरी अच्युत गोविंद दीन दयालं। मदन मनोहर हरि मधु सूदन अद्भुत रूप विचित्रं। कैटभ गंजन सुर रिपु घायक कलि मल हारि चरित्रं। सुरजित अनघ जगत सुख दायक व्रज तनया चित चोरं। जलज नील वपु विष्नु मुरारी समन त्रविधि रुज घोरं। अगम अनंत अपार रमावर माधव राधा कंतं। अनुपम भयहर भय दा सुरहित संतत जन रिपु हंतं। हरिहर मित्र असुर गण घायक मानद मानि अमानं। कुंज लाल प्रभु राधा पीतम दानी दया निधानं॥ ५९॥

जय नँद नंदन शिव वपु कामद केशव पंकज नयनं। व्यक्ता व्यक्त वपुष जग वंदन नंद सुत करुणा अयनं। कृष्न मुकुन्द विप्रव हितकारी माखन चोर अजेशं। सुर रिपु घायक जन उर चंदन अनिरुध समन कलेशं। कलुष निकंदन मदव रुज हारी गोवासी जग रेतुं। कंस दलन मधु

सूदन चक्री गिरिवर धर सुख केतुं। व्रजपति व्रज तनया सुख दायक यदु कुल मणि नँद नंदं। अपार पारणा असुर मारणा स्वामी व्रज वल्लभ सुख कंदं। अलख अचिंत अनूपम अच्युत गोप सुता उर मालं। कुंज लाल प्रभु संकट मोचन जय जय जय नँद लालं॥ ६०॥

सुंदर वपुष मनोहर श्यामल कुंचित चिकुर अनूपं। अरुणा कपोलन झलकहिं कुंडल मणि युत शोभा रूपं। तिल प्रसून इव घ्राणा मनोहर राजिव नयन रसालं। कुन्द मुकुल दशनावलि पावन वदन सरोज विशालं। अधर मधुर बिंबा रसकारी धूछवि अति कमनीयं। तिलक ललाट महा छवि दायक सुर नर मुनि वंदनीयं। रतन जटित शिर मुकुट सोहावन दर ग्रीवा भुज स्कंधं। परम सु दृढ़ शुभ बाहु पावन अनुपम अमल अबंधं। उदर अमी सम सुरवर अंबुधि बवली लहरा कारं। कटक आदि आभूषण निर्मल कंजत पुंज छवि भारं। जय जय छल कमल दल लोचन त्रिभुवन पति हरि राई। कुंज लाल है शरण तुम्हारी हरहु दुःख शिव दाई॥ ६१॥

जय नँद तातं दनुज अघातं करुणा वपुष दयालं । त्रैजग भरणं जन दुख हरणं करुणा सिंधु कृपालं । यशुमति नंदन दनुज निकंदन करुणालय शिव रूपं । कुंज बिहारी गिरि वर धारी राधा पति अज भूपं । त्रैजग पालं रूप तमालं केशव करुणा कंदं । बसुधा मोहन सुंदर सोहन हरि हर प्रभु नँद नंदं । पंकज नयनं विष्णु कशयनं विश्वंभर जग तरनं । भव रुज हर्त्ता जग हितु कर्ता राधा वर सुख करनं । हरि घन श्यामं करुणा धामं ब्रज बल्लभ शिव राई । जगत भुवालं दीनदयालं कुंज प्रभू सुख दाई ॥ ६२ ॥

जन सुख दाई सुर मुनि राई हरि हर स्वामि कृपालं । खल संहारी कुंज बिहारी नँद सुत जगत भुवालं । यशुदा लालन त्रिभुवन पालन गोपी पति जित कामं । करुणा रूपं शिव अज भूपं सुर पति पति सुख धामं । यदु कुल नाथा सुखमा गाथा सौरी विष्णु अधारं । अज अविनाशी घट घट वासी केशव चित्त उदारं । यदु कुल वीरा श्याम शरीरा सुर पति पति सुर त्रातं । विपति नसावन कामद पावन कृष्ण विष्णु बलिभ्रातं यशुदा नंदन जन उर चंदन राधे उर

अभिरामं। जगविस्तारी असुर प्रहारी कुंजेश्वर शुभधामं ॥६३॥

करुणा सागर रूपउजागर केशव कलि मल हारी। विपति विभंजन सुर मुनि रंजन सुर वैरी सुख कारी। शिव अज कर्ता त्रिभुवन भर्ता राधेश्वर अविनाशी। कुंज विहारी मंगल कारी गोपि सुखद सुखराशी। अधम उधारण जग निस्तारण लोकेश्वर जग त्राता। बकी निहंता अलख अनंता सदादारी सुर त्राता। धनद सुबन अघ ओघ विभंजन हरि वल्लभ कागारी। कंस शत्रु व्योमारि दया निधि अघा बकाछय कारी। जन अघ घायक गोपी नायक कंस। काल शिव रूपा। जग अभिरामा पूरण कामा कुंज प्रभू सुर भूपा॥ ६४॥

जय नंद नंदन कृष्ण मुरारी माधव गोपी नाथं। यशुमति नंदन कुंजविहारी पतित पाल सुख गाथं। अशरण शरण अमर सुख दायक विश्वंभर सर्वेशं। असुर निकंदन जन भय हारी मुवनेश्वर कमलेशं। जगज्जनक घन श्याम मुरलिधर मधु सूदन महिनाहं। त्रिभुवन वंदित अधम उधारण अनुपम अगाम अगाहं। पतित

उबारण अच्युत अविगति सर्वेश्वर सुख मूलं। अमर शत्रु रिपु गोपी वल्लभ असुरारी खल शूलं। दुराधर्ष भवसागर बोहित गिरिधारी नँद लालं। ब्रज ललना प्रभु केशव कामद वनमाली जगपालं। अलख निरंजन गोविंद माधव श्री बर वै जगरेतुं। कुंजलाल प्रभु करुणा मंदिर यदुबर पुरयो पेतुं।।६५।।

पतित उबारण दीन सहायक यदुकुल कमल दिनेशं। नंद तनय नँद तात गोपिपति गोपी नाथ अजेशं। अधम उधारण माधव यदु पति मुदनेश्वर सुख राशिं। मंगल सदन अमंगल हर्ता केशव घट घट बासिं। लालित्य मोहन राधाईश्वर बिबुधेश्वर सुख धामं। असुर निकंदन दनुज प्रहारी सुर पतिपति शुभ कामं। करुणा अंबुद विश्व विमोहन खगपति प्रभु गोपालं। दिति सुत नाशन शोभा सागर जगदीश्वर खल कालं। मुरबैरी सर्वेश मुरारी रामानुज रणधीरं। यदुकुल भूषण यशुमति सुखदा यदुनंदन यदुबीरं। भव रुज हारी दीन जनेश्वर करुणा पुंज दयालं। कुंजलाल प्रभु संशय मोचन यशुदा सुवन सुरवालं।।६६।।

नंद सुवन नँद तात दयालय सुख निधि गोपी कंतं। कंसनिकंदन हररा अमंगल गुणा नीत गुणावंतं। किल्बिष हररा कृपाल मुरारी मधु। सूदन हरि मित्रं। असुर विमर्दन अलख अनामय नँद सुत गोपि कलत्रं। गिरिधारी दामोदर माधव नंद नंदन सुख धामं। सुर मुनि रंजन हित कारी गोपी पति निःकामं। मुरलीधर यदुनंदन विष्णू भुवने श्वर जग त्रातं। अच्युत अनघ अमल पुरुषोत्तम सौरी हलधर भ्रातं। शक्र गर्वहर कृष्ण बकारी जन रक्षक सुखरा शिं। दया मूर्त्ति दीना रति भंजन सुरनर मुनि भय नाशिं। पतित उधारण भय कृत भय हर की रति नंदिनि नाथं। अखिल भुवन पति भवरुजघायक सुर नायक सुखगाथं। दिति नंदन रिपु श्री वर श्री कर ब्रजपति जगदाधारं। निर्गुणा निरीह विषम सम विग्रह मनुपम दया अगारं। विश्वंभर यदुवीर परंपर राधा वर शुभ नामं। कुंजलाल प्रभु कुंज विहारी गोपी प्रभु शुभ कामं॥ ६७॥

जय जगदीश्वर कृष्ण जगत्पति हरि वल्लभ भगवानं। विष्णु मुकुंद सुरासुर वंदित गुणा नीत

गुणा दानं। ब्रज वनितेश्वर ब्रज जन भूषण गरुड़ ध्वज यदुनाथं। उर्गाशा अनघ अज विजयी ब्रज ललना सुख गाथं। हरि अज प्रभू अनामय अच्युतनँद नंदन गोपालं। जन उर चंदन दीन सहायक कलि मल हर नँदलालं। असुर प्रा त्रुगोलोक निवासी परमेश्वर भय हारिं। भवसागर जल यान दयालय कमलेश्वर गिरिधारिं। अमित अनंत गोपिका रंजन मन मोहन जगमूलं। विश्वंभरेत विश्ववाराति हारी सदा दीन अनुकूलं। जगज्जनक सुर नायक त्राता बन माली जगरेतुं। चतुर्वेद बिद माधव गोबिंद जल साईं श्रुति सेतुं। बल निकेत बलराम सहोदर प्रा मन त्रिबिधि रुज घोरं। कुंजलाल प्रभु राधा मोहन गोपी जन चित चोरं॥ ६८॥

रंग रँगीले छैल छबीले अलख अभय बन माली। नंद महर सुत यशुदा नंदन गोपेश्वर गोपाली। यशुमति वारे नंद दुलारे राधा पति राधेशं। जन अघ गंजन गोपी रंजन हरि के श्वर अखिलेशं। दयानिकेतुं पुरायो पेतुं मधु सूदन सुख धामं। गोपी नाथं आनँद गाथं ब्रज नंदनि अभिरामं। अगम चरित्रं गोपि कलत्रं

अविगति यशुदा लालं। पंकज नयनं विश्वकारणं विश्वाधीश कृपालं। बिमल शरीरं हरि बलवीरं यदुवर करुणा रूपं बका निहंता राधाकंता शिव मूरति अज भूपं। कुंज विहारी अधम उधारी यदुनंदन करतारं। विश्व प्रकाशी गोपि बिलासी गिरिधर जगभरतारं। शरणा शरणं विश्वा भरणं राधापति सुख खानं। शमन विषादं अगम अनादं गोपालक भगवानं। जनसुख दायक त्रिभुवन नायक घन इवतनु कमनीयं। कुंज भुवालं दीन दयालं गोपसुता रमणीयं॥ ६८॥

जग हितकारी भव रुज हारी राधा कृष्ण गोपालं। हरि असुरारी गिरि वरधारी केशव विश्व भुवालं। कुंज विहारी असुर संघारी गोपीजन उरमालं। मुरलीधारी विश्व अधारी मन मोहन नंद लालं। अघा पहारी अज व्योमारी केशी रिपु बक कालं। कलि मल हारी अजित मुरारी कंसासुर उरसालं। जग विस्तारी पतित उबारी हरिप्रभु दीन दयालं। बिपति बिडारी शोकनिवारी रहित शोक सुर पालं। सुर हित कारी जन निस्तारी श्री बर बदन विशालं। धर्मो तारी निगम

प्रचारी निशिदिन भजु कुँज लालं ॥७०॥
भजुमनु राधा कृष्ण जगत पति केशव करुणा
अयनं। विष्णु मुकुंद विषम सम विग्रह मोह-
नराजिव नयनं। मधु सूदन मुद मंगल दायक
मुरलीधर घनश्यामं। नँद नंदन हृषिकेश्वर
सौरी ब्रज नंदनि अभिरामं। कलि मल हर वि-
श्वंभर कामद गिरिधारी नँद लालं। दनुज शा-
त्रु गोपाल मुरारी गोवासी सुर पालं। यदु नंदन
यज्ञेश्वर चक्री श्री मुख चंद चकोरं। परमेश्वर
पुरुषोत्तम पद्मोभुवनेश्वर रमा छोरं। सुरपती
श्री शारंगपाणि वत्सल श्रीवल्लभ यदुवीरं। वि-
श्वरेत विश्वार तिहारी विबुधेश्वर रमाधीरं।
कुंजविहारी शिव अज सेवित गोप सुता उरहा-
रं। रविजेश्वर वैदर्भी प्रीतम रामानुज कर्तारं।
यशुमति सुवन चिदानँद गोविँद ब्रज नायक
सुखधामं। खगपति गामी केशी मर्दन जग।
मोहन शुभ नामं कुंज लाल प्रभु हरिहर स्वामी
राधा वर जग त्रातं। शिव वपु करुणा पुंज अ-
सुर रिपु यदु नायक बलि भ्रातं ॥७१॥
सुर रंजन सुख पुंज असुर रिपु शिव वल्लभ ज-
गन्नेत्रं। नँद नंदन जन सुरक्त शारंग हिपु सुर

पति पति शुभ वेयं । अघ भंजन भयदमन शंभु पति
विश्वेश्वर भय दमनीयं । खल गंजन दुख शमन
नन्द सुत ब्रज नायक कमनीयं । हरि स्वामी सु-
रत्राता अमर हितु अविगति अकथ अनूपं । ज-
गवंदन हरि मित्र परंपर अगम अगाह अरूपं ।
सुरमंडन शिव वपुष भुवन पति विश्वाधार अ-
नंतं । अज अद्वैत अमर पति अधिपति अद्भुत
चरित करंतं । अपरत्रा शरणा मुकुंद रमावर
कमल नयन शुभ बाहुं । किल्विष हर पाणि व-
दन कंज पद निगम तत्व शिव नाहुं । अज पूं-
कार चित्त हरणा विबुध प्रभु सुंदर शुभ गात माल
। जन रंजन खगपति पति मधु रिपु नीरज वद-
न विशालं । सुरक्षय करणा सुरलिधर अच्युत
मंगल निधि भवईशं । मधुपुर पति मुनि जन
सुखदायक सुरपति प्रभु जगदीशं । अज वं-
दित अघ दहन अचिंतक अलख अमर पति
पालं । कलि कलुषः ज्वर हरन विश्व भय कुरु-
हि विरुज कुंजलालं ॥७२॥

जय सुर रंजन गंजन भवरुज कान्ह सुजानक-
पालं । विश्व विभूषणा दूषणा वरजित अवि-
गति अमित गोपालं । सुरपति नायक दायक

शुभगुणा अकल अमल निःकामं। जगनिस्ता-
रण कारण वै जग अजित अजर शुभ कामं।
परम पवित्र विचित्र दयालय यज्ञपुरुष शिव
रूपं। यशुमति नंदन चंदन जनउर सगुणा अ-
गुणाविधि भूपं। जगत उपायक घायक भव भ-
य अकष अनीह अतीतं। मधु सुर नाशन शा
सन निश्चर मच्चर अक्षर रिपु जीतं। सुर मुनि
पाल विशाल कलेवर ब्रज नंदनि उर मालं।
विप्रवाभरण हरण भव रुज असुर रिपु सुर
रिपु कालं। अधम उधारण धारण मंदिर क
ल विभु जग त्रातं। शिव अज भूप अनूप म-
नोरम अखिलेश्वर नँद तातं। सुर मुनि ईश
सुरेशादिपति हर यदुवर राजिव नयनं। जन
कुंजलाल भुवाल नंद सुत खगपतीश अहि
शयनं॥७३॥
रवि मंडल मंडन सुर अयनं राधापति अ-
जभूषं। नँद नंदन ब्रजपति अहि शयनं गो-
विंद त्रिभुवन यूषं। कलि मलहर हृषिकेश्वर
अकलंकेशो रिपु नँद पूतं। मधु सूदन गौरी
जग बंदन माधव वपुजो मूतं। यशुमति सु
सुर मुनि गन हरणं सुर वैरी कंसारिं। असु

दलन जन भव रुज शमनं बकी शत्रु सकटारिं
। बिबुध शत्रु जित मौसा दमनं ब्रज मोहन रा-
धेशं । सुरपति पति शशि मुख वदनं अमरेंद्र
दयालेशं । गिरिवरधर जन हितु शिव सदनं
रामानुज नँदलालं । खगपति पशु जन प्रिय
जन पूरणं दायक सुख कुंज तालं ॥७४॥
नँद नंदन हरि कुल विशुलपति यदुकुल कम-
लपतंगं । नंद महर सुत सुरपति वल्लभ अनुप
म अचलरव अभंगं । यशुमति सुवन असुर गा-
गंजन कीरति नंदनि मित्रं । मंगल करणा
बिबुध रिपु भंजन कलि मल हर शुभ चित्रं । सु
रपति गर्व विभंजन अविगति अवि चल रमा
कलत्रं । ब्रज मंडल मंडन जग वंदन सुख नि-
धि परम पवित्रं । दनुज दमन जगभरणा शंभु
पशु गुणा मंदर गुणावंतं । रवि नंदनि प्रभु कु
ल दुःख हर त्रदशेश्वर भगवंतं ॥७५॥
नंद सुवन नँदलाल नंद हितु नंदा नँद नँद ।
जातं । नँद नंदन नँद तात नंद सुत नंदा ति-
म नँद त्रातं । जग वंदन जग वल्लभ जग हितु
जगदेश्वर जगदीशं । जग ज्ञानक जगशेष ज-
नेश्वर जग नायक योगीशं । पुरुष पुराण परेश

परंपर परमेश्वर पर नामं। परम पवित्र पुरा तन
पावन पद्मजप्रभु परधामं। कमल नाभि किल्वि-
यहर केशव कमलास निरमलीयं। कुंज प्रभू क-
लि कलह विभंजन करुणाकर कमनीयं ॥७६॥
बलिभ्राता बलधाम अमित बल बल ध्वंसि बल
वीरं। बल निकेत बलभद्र सहोदर बल रक्षक बर
धीरं। अज अद्वैत अजर अजकर्ता अविगतअ-
सुर अरातं। अच्युत अनूपम अगाह अचिंतक
अलख अकाम अजातं। हरि हर स्वामि हरी ह-
षि केश्वर हिमकर कुल जनपालं। हिरन्याक्ष-
रिपु हलधर भ्राता हयग्रीवहय कालं। मधु सू-
दनसहि भर्ता माधव मुरली धर मथुरेशं। कुंज
लाल प्रभु मदन मनोहर महित्राता नृजरेशं॥७७
शिव अजमानस हंस दयानिधि राधावर सुरव
मूलं। सुर मुनि ईश्व चराचर अधिपति मगधे-
श्वर उरशूलं। यदुकुल भूषण सुरपति नायक
गोपेश्वर गोविंदं। सरसिज लोचन वपुष मनो-
हरपीताम्बर नँद नंदं। ब्रज पति माधव यशुदा
नंदन गोपी पति दनुजारिं। विश्वंभर गोपीज-
नरंजन सकदारी असुरारिं। यदु वर केशव त्रै
जग मोहन राधे हिय सुभ मालं। कंस प्रान्तु वन

माली कामद कमलनयन जगपालं। यशुमति सुत यदुनंदन यादव विश्वंभर सुरव केतुं। नंद लाल त्रिभुवन सुरव दायक मौरी सुरमुनि हेतुं। कालि मल हरणा बका संहारी अघा शत्रु व्यौमारिं। रवरा पतीश बलराम सहोदर सुरपति नाथ मुरारिं। भवरुज हरणा विप्रव हित कारी मधु सूदन गोपालं। गिरिवरधर सर्वेश्वा गोपि वरसुररंजन खल कालं। यशुदा लालन कुंज बिहारी राधेपति सुरव धामं। जन कुंज लाल कलेश बिमोचन जगहितु पूरणा कामं॥७८॥

मनसिज रूप मुरारी कान्हर केशाव कुंज विहारी। सरसिज लोचन यशुदा नंदन मधु सूदन सुरवकारी। शमन रवमा पशु खगपति ईश्वर बकी शत्रु व्यौमारी। नंद सुवन गोपाल गोपि पति गोपी हितु सकटारी। हरि मुकुंद मन मोहन कामद गोत्राला गिरधारी। विष्णु रमेश्वा कृष्ण अविनाशी अघ भंजन असुरारी। नंद तात गोविंद ब्रजेश्वर राधेपति दनुजारी। नंद तनय पुरुषोत्तम मौरी ब्रज नंदनि चित्तहारी। जगज्जनक शिव रूप कृपालय वासव गर्व पहारी। ब्रजपति यखासी वियधर मदहर हर वल्लभ अविकारी।

महि स्वामी महि नंदन हंता गोपी जन हितकारी
कुंज लाल प्रभु रक्षा पीतम सुर त्राता दैत्यारी७८
बिपिन बिहारी नंदराय सुत यदुपति मुरली धा-
री। अधम उधारी गोपी वल्लभ सुर नायक हि-
तकारी। कलि मल नाशन माधव अच्युत ब्र-
जस्वामी असुरारी। शिव अज सेव्य सुरासुर
नायक रमाकान्त दनुजारी। जनदुख भंजन ज-
गत बिभूषण अमरेश्वर कंसारी। भुवनेश्वर
जगदीश दयानिधि मधु सूदन सकटारी। अ-
लख अनंत अनादी अनुपम जग वंदन व्योमा-
री। अज अनीह कृष्ण जगदीश्वर कुंज लाल
सुख कारी॥ ८०॥
जय जगदीश्वर वसुधा धारी केशव कृष्ण मु-
रारी। किल्बिषहर त्रैताप विभंजन विष्णु वि-
श्व अधारी। जन रंजन सुरपाल सहायक गो-
विंद अधम उधारी। हरि हर वल्लभ यशुदा नं-
दन गोपेश्वर गोचारी। अशरण शरण पतित
गति दाता गोत्राता गिरधारी। शक्र शत्रु जित
त्रिभुवन नायक जग वंदन असुरारी। बकीपू-
तहर व्रजजन मोहन अवनि सुवन संहारी।
मधु सूदन महि सुर सुख दायक माधव हरि

कंसारी। ब्रज नंदनि चित चोर दीन हितु बंशीधर ब्यौमारी। सुरकुल मंडन द्विज तिय सुखदा कुंजलाल सुखकारी॥ ८१॥

जय यदुनंदन जन उर चंदन ब्रज नंदनि उरमाली। सुरकुल मंडन त्रैजग वंदन वंदित ब्रह्म कपाली। नर्क निकंदन सुरमुनिरंजन मधुपुरपति सुरपाली। भवभय खंडन केशी भंजन नंद सुवन खलसाली। सुरिपु गंजन अनघ अकिंचिन जगत्राता गोपाली। जन दृग अंजन अलख निरंजन कुंजप्रभू रुज घाली॥ ८२॥

जय जय जय शरणागत वत्सल सुरपति पति नँद नंदं। अमल कमल दल लोचन सुख निधि ब्रज वल्लभ ब्रज चंदं। अशरण शरण हरेश रमेश्वर दलन असुरमति मंदं। अविगति अकल अनीह असुर जित हरण दीन भवफंदं। शिव अज वंदित माधव सुरजित मरकत वपुष मुकुंदं। अग जग प्रभु जगतेश अजित अज रतिपति रूप अखंडं। त्रिभुवन पति नँद सुवन विप्लव हितु भंजन यमपुर दंडं। कलविष हरण कृपानिधि कामद परम पवित्र गोविंदं। व्यक्ता व्यक्त स्वरूप शोकहर रहित शोक नि-

इंदं। जगाज्जनक कुंज लाल हृदय विच वसइ कृष्ण सुख कंदं॥ ८३॥

जय भय हरणा जगत पति गिरि धर सुंदर वपुष तमालं। खगपतीशा सुर शत्रु निकंदन यशुमति सुवन गोपालं। हरणा अमंगल त्रै जग वंदन जन हित करणा दयालं। कलिमल हरणा असुरिपु अच्युत सर सिज नयन बिशालं। शिव अज वल्लभ सुरपति भयहर नंद नंदन नंद लालं। कलि कलुषःज्वर खंडन मधु रिपु ब्रज मंडन जनपालं। विषधर मदहर मौरी गिरिधर केशव विश्व भुवालं। सगुन अगुन वपु शुभगुण मंदिर सुंदर वदन रसालं। अघ गंजन सुर शत्रु विभंजन दिति नंदन उरशालं। यदुकुल तिलक नंद सुख वर्धन यदुवर परम कृपालं। रवि मंडल मंडन हरि ईश्वर प्रसमन भव रुज जालं। विश्व कृष्ण भव अंबुध बोहित सुखद दीनकुंज लालं॥ ८४॥

जय जय जय घनश्याम दीन हितु सुखनिधि करुणा अयनं। ब्रज वल्लभ ब्रज इंदु मुरलि धर गोविंद पंकज नयनं। यशुमति सुत बलराम सहोदर श्यामल वपु जित मयनं।

असित निसित प्रिय दानव मर्दन खग पति प-
ति अहि शयनं । विश्वंभर नँद नंद परंपर गोपी
जनचित्त चयनं । कुंज लाल प्रभु राधा माधव वं-
शीधर मृदु वयनं ॥८५॥
जय यदुनंदन गोविंद माधव हरि हर मानस
हंसं । पतित उधारण गोपा वल्लभ सुख दायक
जित कंसं । नंद लाल ब्रज चंद मुरारी राधा उर
अवतंसं । विश्वंभर परमेश्वर पक्षी भय हारी
यदुवंशं । अक्षम उधारण कुंज बिहारी तत्वत-
त्व अरु अंसं । कुंजलाल भजु राधा गिरधर काय व-
चन अरु संसं ॥८६॥
जय गुण सदनं सरसिज वदनं यदुकुल कमल
पतंगं । विश्वक शयनं करुणा अयनं यदुवर
वपुष अनंगं । अच्युत अमलं अद्भुत अकलं
आनँद भवन अभंगं । मरकत वरणं अशरण
शरणं मद हर अजय सुअंगं । कलि मल कलनं
यशुदा ललनं त्रै ज्वर हर शर दंगं । हरि कुंजेश्वर
विहँग पतेश्वर यदुवल्लभ श्रीरंगं ॥८७॥
जय यदुनंदन सौरी गिरधर राधा पति बलवीरं ।
करुणा लय गुण निधि सुख मंदिर नंद सुतअ-
नुपम धीरं । शंभु हृदय नभ रुचिर निशा कर

अपर अकाम गोपाल। शरण सुखद दीना रति भंजन यदुवर विश्व भुवालं। अलख अनंत अरुज अविनाशी ब्रज वनिता रमणीयं। भगवत विश्वक शयन वृकोदर सुरपति रिपु दमनीयं। ब्रजपति माधव विश्व विमोहन ब्रज ललना हियहारं। सुरजित अराम अगाध मुरारी सुखदायक जगसारं। यशुदा तनय त्रिलोकी नायक सुखदिनकर जगरूपं। मधु सूदन मानद असुरारी शिव वल्लभ शिवरूपं। गिरिजेश्वर प्रभु गोपीरंजन केशव त्रै जग रेतुं। कुंज लाल प्रभु कुंज बिहारी कृष्ण चंद द्युति नेतुं॥८८॥

जय अघभंजन कृष्ण कृपाकर नँद नंदन नँद लालं। सुर रंजन सुख सदन दया वपु कलिमल हर जगपालं। अमित अचिंत बकी रिपु कामद अनुपम नवल किशोरं। अजशिव वंदित माधव केशव ब्रज नंदनि चित्त चोरं। दिति नंदन रिपु गोपी वल्लभ मुनिजन सुखद जनेशं। जनदुख हरण चराचर पोषण शिव वपुशासन कलेशं। विष्णु मुकुंद अजित अविनाशी सुरपति पति बलि भ्रातं। अशरण शरण दीन सुख दाता भव भेषज सुर त्रातं। अ-

च्युत अनाम अगोचर गिरधर ब्रजतिय पति। सुख मूलं। मंगल सदन अमंगल हर्ता निराम तत्व अनुकूलं। यशुदा सुवन अजेषा अजर अज जगत शेष शिव नाहं। अखिल भुवन पति यशुदा लालन दुख गंजन अघदाहं। अकल अनघ पुरुषोत्तम भव प्रभु जगहितु त्रिभुवन पालं। कुंजबिहारी गोपी मोहन कुंज प्रभू रव लसालं॥ ८९॥

जय अद्वैत अखिल भुवनेश्वर नँद सुत मंगलमूलं। अजर अजीत अकाम अजेश्वर अविगति अगाह अतूलं। गिरधर माधव विश्व विभूषण सुरपति त्रातु अनातं। पतित उदारण शिव अजबंदित अकल अनीह अजातं। विबुध पालपति भव रुज हर्ता अखिलेश्वर निःकामं। ब्रजनायक हरि राधा मोहन मधुसूदन सुखधामं। मुरलीधर शुभ बदन मनोरम केशव जगत अधारं। जगाज्जनक जगस्वामि रमाबर कान्हर समन विकारं। संकट हर सौरी नारायण बलि भ्राता सुरहेतुंकिल्बिष हर सुरपाल मुरारी कैटभरिपु श्रुति सेतु खगपतीश दीनार्ति हर्ता ब्रजवर करुणा अयनं।

कुंजलाल प्रभु लीला अंबुदयदुपति राजिव नय-
नं ॥ ८० ॥

इवहु दयानिधि हरि नँद नंदन देवकि सुवन
उदारं । नंद तनय नँदलाल निरंजन निष्क-
ल दया अगारं । कृपाल कृपाल कृपा बपु केशव
कामद करुणा रूपं । त्रैजग नाथ अकाम अ-
जातक अमरेश्वर अज भूपं । त्रिभुवन पति त्रै
ताप नशावन अदशोश्वर जन त्रातं । ब्रज बल्ल-
भ ब्रजराज ब्रजेश्वर सुर मुनि हितु नँद तातं ।
प्रणत पाल प्रणाता रति भंजन प्रणवं जगा प्रति
पालं । शत्रु रिपु दमन भारती वल्लभ भतु सुख-
दा रवल कालं । श्रुति ईश्वर श्रुति विद श्रुति
कर्ता श्रुति नेता श्रुति सेतुं । सुर पति प्रभु सुर
शत्रु निकंदन सुर त्राता सुर हेतुं । मधु रिपु मा-
धव मथुरा मोहन मधु सूदन मथुरेशं । रिषि
सूदन ऋषि दुःख प्रहारी रति पति रूप रमेशं ।
बलि भ्राता बलवीर वारणी बलि त्राता बलधा-
मं । गुण निधि गोपी नायक गोपति गोपेश्वर
अभिरामं । राधा पति राधेश नंद सुत राधा कृ-
ष्ण अमानं । कुंज लाल प्रभु कुंज बिहारी हरि
केश्वर भगवानं ॥ ८१ ॥

वयभान सुनेश मुरारी अच्युत केशव करुणा
सदनं। नँद नंदन गोपाल नंद सुत माधव सुंदर
वदनं। त्रदशेश्वर प्रभु कंस निकंदन गोविंद रा-
धा रमनं। असुरघ्नु अघहरणा वकारी सुर
मुनिबाधा समनं। अघारणा पारणा अकल
अज अच्युत वकी घ्नु बकदवनं। कुंजला-
लप्रभु कृष्ण जगत पति सौरी सब सुखभवनं।
॥६२॥
अरिवलेश पृथिवेश अजेश नंद सुत केशवक-
रुणा सदनं। नंद लाल गोपाल दयाल नंद।-
हितु सुखनिधि हिमि कर वदनं। त्रदशेश मु
रेश्वा रमेश्वा कंस जित राधा वर सुख अयनं।
सकटारि अघारि मुरारि दयानिधि अमरे।-
श्वर अहिशायनं। भगवान अमान सुजान-
सुरेश्वर श्रीधर गिरिवर धरनं। सुख धाम अ
धाम अकाम विश्ववमय मुरली धर अघहर-
नं। जगदीश्वा अहीश्वा महीश्वा परंपर सुत्राता
सुख भवनं। कुंजलाल भुवाल रमाल शंभु पति
अधिकारी खल दवनं॥ ६३॥
जय जय कृष्ण जगत सुख दायक यशुमति सु-
वन उदारं। नँद नंदन सुख कंद रमावर गोवि

द नंद कुमारं । नँद नंदन जगदीश विश्व पति
विश्वंभर सुखद मूलं । शिव अज सेव्य सुरासुर
नायक हरण त्रिविधि ज्वर शूलं । सुरमुनि सु-
खद सुरासुर वल्लभ हरि भ्राता जित मयनं । अ-
खिल भुवन पति घट घट व्यापक शिव वपु क-
रुणा अयनं । मुरलीधर गिरि धरण मुकुट धर
र कांतिमत हर नंद तातं । वंशीधर पीतांबर
अच्युत जगवंदन जन त्रातं । मधुर गात मधु
सूदन माधव सुंदर वदन कृपालं । नंद तनय
सुख पुंज मनोहर यदुवर दीन दयालं । अज
जन मानस हंस भरण धर व्रज तनया चित
चोरं । मंगल मणि अघ भंजन कामद वास-
व जित वनछोरं । त्रिभुवन पति सुख कंद म-
हा निधा अविगति व्रज तिय नाहं । कुंजलाल
प्रभु यशुदा नंदन भेदन भवरुज दाहं ॥ ६४ ॥
शरण सुखद दीनार्ति भंजन ईश्वर दीन द-
यालं । हल जगत पति कामद अच्युत प्राव-
री विश्व सुवालं । वैनतेय पति वासव रिपु
जित वंशीधर भव नाथं । सुरभी चारन गोपी
वल्लभ वेदभी सुख गाथं । मन मोहन जगते
श्वर माधव व्रज मंडल जगसारं । भवरुज

श्यामल अनघ अविनाशी गोप सुता उरहारं।
जगज्जनक ब्रज तनया मोहन राधापति नँद
तातं। मदन मनोहर मानी मानद सुर रंजन
जन त्रातं। अगुणा सगुणा वपु भयहर भयक्र
त श्रीधर नंद कुमारं। चतुर्वेद विद विप्रव वि-
हारी राधा कुल उदारं। हरि हर वल्लभ दनुज
निपाती नँद नंदन अभ कारं। शिव अज प्रण
मित करुणा मंदिर गोपीजन सुख धामं। अ-
पारा परसा विबुध सुख कर्ता सुखदा पुंज
सुरेशं। कुंजलाल प्रभु करुणा मंदुद गोपी ज
न हृदयेशं ॥४५॥
सुखराशि अजीपा अमोघ नंद सुत गोविंद
वै जग शरणं। सुखसिंधु सुशील अनूप दी-
नहितु केशव जन अघ हरणं। श्रुति सेतु अ
तीत अशोक अजर अज कंसारी अघ दलनं
। जगदेत अजीत अदोष वेणु धर माधवति
ल्लिय कलनं। कर्तार अनीह स्वछन्द विपति
हर वकी शत्रु गिरिधरणं। हरि नाथ हरेशा
मुकुंद रमाधर विप्रव भूप जग तरणं। सुख
कंद गोपाल अजिंतु गोपिवर कान्हर अपार-
ण प्रसणं। शिव रूप अचिंत अनादि संत

हितु समन कुंज उर जरनं ॥ ६६ ॥
जय अविगति अद्वैत बकारी राधे पिय बल बी-
रं। अनघ अकल अविकारि मुरलिधर राधा
पति बलबीरं। मिडरीनीपा भुवाल मुरारी गोपी
पति कमनीयं। मंगल मूरति राधा मोहन हरिरा
धारमनीयं। जन उर चंदन गोपी बल्लभ सुख
सागर शिवधामं। अनुपम युगुल किशोर द-
यानिधि राधा पति निःकामं। गिरिधारी गोबिँ
द नंदसुत राधेप्रवर जगा सारं। दधिदानी बैकुं-
ठ निरंजन राधा रमणा उदारं। मुरलीधर सुरप्र
त्रु निकंदन राधा हृदय निवासिं। सुर मुनिप्री-
तम राधे माधव बाधा पुंज विनासिं। बकीप्र-
त्रु व्योमासुर गंजन राधा बर गोचारिं। सुरभी
रक्षक राधा नागर सुर मुनि दुःख निवारिं। नं-
द नंदन वृषभान सुतेप्रवर छन्दा विपिन बिहा-
रिं। कुंजलाल प्रभु राधाप्रीतम सुर नर मुनि हि-
त कारिं ॥ ६७ ॥
जय जय राधा कृष्ण मुरारी केशव अपारणा भा-
रणां। यशुमति सुवन मुकुंद मुरलिधर गोविं-
द कलिमल हरणां। नंद लाल दीना रति भंजन
गोपी जन सुख करणां। यशुदा नंदन राधा मोह-

नसुरंजन जग भरणां। ललिता प्रभु राधेश कृपा
कर वासव शत्रु संहरणां। करुणा अंबुद अजि-
तगुणा कर सुंदर श्यामल वरणां। अगम अगो-
चर अज ईश्वर सुर जित अधम उधरणां।
जनउर कमल पतंग कृपानिधि चक्री पतित उ-
बरणां। शिव अज ईश चराचर वंदित गिरिधर
विश्व बिहरणां। कुंजलाल प्रभु करुणा मूरति
श्रावरी कारण करणां॥ ८८॥

जय जय गोपी नाथ जगत्पति गोविंद कृष्ण मु-
रारी। मुरलीधर ब्रज चन्द नंदसुत गिरिधर वि-
श्वबिहारी। शंकर वंदित हरि जग वंदन गोपी
पति असुरारी। नंद लाल ब्रज तनया वल्लभ नं-
द नंदन दैत्यारी। जगज्जनक ब्रज भूषण का-
मद ब्रज नंदनि हितकारी। यशुदा नंदन त्रिभु-
वनत्राता ब्रह्मादिक चितहारी। जिष्णु गोपा-
लगदाधर विश्वंभ्र प्रमेय सकटारी। पन्नगारि
गामी बनमाली निगमधर्म उपचारी। सुर पति
प्रभु सुरशत्रु निकंदन त्रिदश पाल मद हारी।
चक्रपाणि चतुरानन कर्ता केशी रिपु दनुजा-
री। अजर मुकुंद रमा नारायण असुर बृन्द संहा-
री। कुंज लाल प्रभु दीन सनेही नंद नंदन कंसारी।

।९९। जय ब्रज राज कृपाल दीन हित राधारमण गोपालं । सुर नायक रिपु शत्रु रमाबर नंद सुतदी नदयालं । अविगत अच्युत अगम अगोचर हरण तमो रुज जालं । गुण निधि राधा कृष्ण दयानिधि राधापति जन पालं । मुरली धर घनश्याम विश्वपति केशव यशुमति लालं । व्यक्ताव्यक्त अनंत अनामय माधव शंभु भवालं । कुंजविहारी राधा मोहन करुणासदन रसालं । स्मर अक्षरवपु भयदा भयहर मगधेश्वर उरमालं । जिष्णु जगत पति कलि मलहारी सुरत्राता खल काल । मन मोहन मेधावी विष्णु ब्रज नंदनि उरमालं । शरण सुखद जरादीश विश्व हितु मेटन मृत्यु अकालं । कुंजलाल प्रभु अधम उधारण गौरी वपुष तमालं ।।१००।।

जयति गदाधर केशव माधव लोकेश्वर हृषि केशं । स्वयं ब्रह्म ब्रह्मराय कृपानिधि नंद सुवन अखिलेशं । कलि कलुषः ज्वरहर यदु नंदन धरणी धर विबुधेशं । हरण अमंगल मंगल कर्ती पुरुषोत्तम मथुरेशं । दुःख दमन भव अंबुधि बोहित राधानुज सर्वेशं । सिंधु सुतेश्वर गोपीवल्लभ राधा वर जगतेशं । अशरण शरण सुरा-

सुर वंदित करुणा पुंज अजेशं। कुंज बिहारी त्रै-
जग कर्ता राधा कृष्ण भवेशं।। नँद नंदन वृषभा-
न सुता पति गिरवर गोप सुतेशं। चक्रायुध घन
श्याम रमावर हरि प्रभु अपर परेशं। विष्णु मुकुं-
द गोविंद मुरारी सुर मुनि हित नृजरेशं। कुंजलाल
प्रभु राधा मोहन सेवित अज वृष भेशं॥२०१॥
जय हरि कृष्ण उदार नंद सुत भुवनेश्वर जगदी-
शं। भंजन विषय विकार दयानिधि नारायण
अजईशं। हरि हर मित्र अमर पति ईश्वर गो-
विंद करुणा कंदं। गिरि जेश्वर प्रभु यशुदा नं-
दन राधा पति व्रज चंदं। जल साई कंसारि मुरा-
री के भाव विश्वक शायनं। शरणा गति वत्सल
वन माली चक्री सरसिज नयनं। मुरली धर वै-
कुंठ वासी चतुरानन करतारं। विश्व विमोह-
न कुंज बिहारी पुरुषोत्तम जग सारं। कलि मल
हर सुर शत्रु निकंदन करुणा वपु नँद पूतं। अन-
घ अमोघ अनुग्रह मूरति सुंदर वपुजी मूतं। मं-
गल भवन अमंगल हर्ता भगवत दीन दयालं।
अज अव्यक्त अनामय अविगत केशी शत्रु कृ-
पालं। अशरणा शरणा पतित गति दाता खल
कुल कमल तुषारं। कुंज लाल प्रभु राधा वल्लभ

श्री वर नंद कुमारं ॥१०२॥
जय गोविंद गोपिका वल्लभ राधा वर जगरेतुं। ब्र
ज वनिता प्रभु ब्रज जन कामद ब्रज नायक ब्रज हे-
तुं। जगन्नाथ जगदीश जगत पति जग त्राता
भगवंतं। गिरि धारी गिरिजेश्वर वंदित गुण-
तीत गुणावंतं। यज्ञपुरुष यज्ञेशा यमेश्वरा यदु
नंदन यमुनेशां। रमा रमण राधा सुख दायक
राधा वर यज्ञेशां। विश्व रूप बलधाम वकारी
वन माली बलवीरं। अहिप शाय अहि गर्व प्र-
हारी अजर अनघ अजधीरं। गिरा गम्य गोतीत
गिरा पति गीरवान पति नाथं। कुंज लाल प्रभु कृ-
पाल मंदिर कृष्ण विष्णु सुख गाथं ॥१०३॥
जय जय जय नंद लाल दया निधि केशव राधा र-
मणं। अच्युत अवि गति मन सिज मोहन गिरि-
धर राधा रमणं। अज अद्वैत राधिका गोविंद
यशुमति सुत शुभ भवनं। कृष्ण गोपाल अरुज
अविनाशी ब्रज पति राधा रमणं। नंद नंदन
वृषभान सुता पति कान्हर संप्राय शामनं। कुंज
लाल सुख दाय कृपालय सौरी राधा रमणं१०४
जय जय कृष्ण मुकुंद मुरलि धर राधा वर शत्रु-
हां। सुरपति पति सुरशत्रु निकंदन राधा पति

रुदेशं। कलिमल हरणा विबुध भय भंजन राधे
श्वर सुख धामं। मुनि जन सुखद अनघ अघ गंज
न राधा हितु निःकामं। कंसशत्रु हरि मित्र जग
त पति राधा प्रिय शुभमालं। ब्रज मंडल मंडन
जगवल्लभ राधा पिय नंदलालं। भवरुज शमन
अनूपम अविजित राधा सुखद गोपालं मंगल
करण त्रिभुवन पति गिरिधर राधा कान्त कृपालं।
शिव अजसेव्य अमंगल हर्ता राधा रमण अ-
कामं। दिति नंदन रिपु गुण गण मंदिर राधा
हितू ललामं। जग वंदन ब्रज चंद अमर प्रभु रा-
धारसिक अजातं। शरण दीन भयहरण दया
वपु राधेश्वर शुभगातं। कमल नयन शिव वद-
नधरण धर राधे हित सुखमूलं। कुंज लाल प्र-
भु कंस निकंदन राधा प्रभु खल शूलं॥१०५॥
जय मधुसूदन कान्त मुरारी राधा कंत सुबेयं।
नंद नंदन दयमान सुतेश्वर गिरिधर अनघ
अलेषं। अमित अतीत अभय अविनाशी मु-
कुंदेश्वर हरि रायं। अज अद्वैत अगाह अखिलेश
वर ब्रज तनया सुखदायं। अमम अगोचर
अगजगस्वामी चोर चोर सुरत्रातं। अलख
अनीह अमल अविकारी सुर पालक बलि

भ्रातं । अविचल अविगति कुंजविहारी पुरुषोत्तम जगदीशं । अगुण अमान सगुण वपु धारी केशव त्रिभुवनईशं । जगज्जनक भवदुःखहा हर्ता गोविंद चिज उदारं । कुंजलाल प्रभु स्वबश विहारी ब्रजपति नंद कुमारं ॥ १०६ ॥

जय अज अनघ अमान अकामी राधा कृष्ण गोपालं । अगाम अगाध अमोघ अनामय राधा कृष्ण मुरवालं । अलख अचिंत अगोचर अनुपम राधा कृष्ण मुरारं । अखिल भुवन पति कर्ता कामद राधा कृष्ण उदारं । अपर अपार अतर्क्य अवनिपति राधा कृष्ण अहीशं । अहिप शयन अहि गर्व विभंजन राधा कृष्ण अरूपं । कुंजलाल प्रभु जनभय हर्ता राधा कृष्ण अनूपं ॥ १०७ ॥

त्राहि त्राहि श्री कृष्ण मुरारी केशव करुणा अयनं । त्राहि त्राहि हरि राधा वल्लभ गोविंद राजिव नयनं । त्राहि त्राहि नंद लाल नंद सुत सौरी विप्लवकशयनं । त्राहि त्राहि मधु सूदन माधव यदुवंश सुत वयनं । त्राहि त्राहि मुरलीधर अच्युत गोपी जन सुख चयनं । त्राहि त्राहि जगदीश गोपि पति भंजन अहि हय शयनं । त्राहि त्राहि वसुदेव सुवनवर राधा पति जित मयनं । त्राहि त्राहि कुंज ।-

लाल सहायक मर्दन निश्चरणायनं ॥१०८॥
जय जय जय वसुदेव सुवन हरि विश्वंभर जगरूपं। शिव अज वंदित यदुवर माधव मधु सूदन शिव रूपं। कमल नयन बलभद्र सहोदर पीतांवर बलवीरं। चक्रपाणि वैकुंठ गदाधर राधापति यदुवीरं। वनमाली यदु नंदन श्रीधर जगनेश्वर जगरेतुं। मुष्टकारि चाणूर विमर्दन सौरी सुरमुनि हेतुं। कुंजेश्वर सुर शत्रु संहर्ता यदुपति यादव रायं। रजक शरणाहर वायक हित कर माली हितु सुरवदायं। अय गव भंजन करिवर नाशन दानव व्यूह प्रहारी। कंस शरणाहर जन सुख दायक सुर मुनि कष्ट निवारी। उग्रसेन भय हारि कृपाकर विप्रवेश्वर शुभ कामं। आनक दुंदुभि विपति विभंजन त्रै लोचन अभिरामं। यदु कुल भूषण मथुरा मोहन संदीपन सुत दायं। जरासिंध रिपु निश्चर भंजन यदु कुलेश निर्मायं। लीला अंबुद देवकि नंदन द्वारावति रचनीयं। हित कारी मुचकुंद दयालय काल यवन दमनीयं। दनुज विमोहन अगम अगोचर दलन यवन दल घोरं। कुंजलाल प्रभु हरि जगत्राता जगवंदन शरणा छोरं ॥१०९॥

नंदनंदन श्री राधा माधव जय जय जय श्री कृ-
ष्ण हरे। विश्वंभर घनश्याम विपति हर जय जय
जय श्री कृष्ण हरे।यशुमति सुवन गोपाल मुरलि
धर जय जय जय श्री कृष्ण हरे। वंशीधर विषधर
मद भंजन जय जय जय श्री कृष्ण हरे। जन हित
करणा अमरपति नायक जय जय जय श्री कृष्ण
हरे।गरुड़ध्वज गोविंद गदाधर जय जय जय
श्री कृष्ण हरे। बकी काल सकटारि बका रिपुज-
य जय जय श्री कृष्ण हरे। जन हित करणा अमर
पति नायक जय जय जय श्री कृष्ण हरे। गरुड़ध्व
जगोविंद गदाधर जय जय जय श्री कृष्ण हरे।
चिदा नंद जगदीश धरणीधर जय जय जय श्री
कृष्ण हरे। गिरधारी बल भद्र सहोदर जय जय
जय श्री कृष्ण हरे। पतित उबारणा करुणा मं-
दिर जय जय जय श्री कृष्ण हरे। ब्रज बल्लभ गो-
पीश गुणा लय जय जय जय श्री कृष्ण हरे। कृ-
ष्ण मुकुंद गोपि का बल्लभ जय जय जय श्री कृ-
ष्ण हरे। अलख अनंत अभय अविनाशी जय
जय जय श्री कृष्ण हरे। कमल नाभि भव सागर
बोहित जय जय जय श्री कृष्ण हरे। कुंज लाल प्र-
भु केशव श्रीधर जय जय जय श्री कृष्ण हरे॥११०॥

नँद नंदन वृषभान सुता पति गिरधर जग अभिरामं। हरिहर बल्लभ गोपी नायक गुण मंदिर सुखधामं। मुरली धर गोपाल कंस रिपु जन रंजन जगदीशं। भवरुज शमन सुरासुर अधिपति केशव शिव अजईशं। सुरपति गर्व विभंजन गोविंद गोवरधन धर वीरं। सुरमुनि रंजनपतित उबारण खलगंजन रणधीरं। सुरपतिपाल चराचर बंदित माधव करुणा केतुं। शिव अज मानस हंस मुरलि धर मधु सूदन जगहेतुं। बृज जन सुखद गतागत मोचन अच्युत अनघ कृपालं। बृज भूषण बन मालीश्री धर यदुबर विप्रव सुखालं। पुरुष पुराण परेशापरंपर पुरुषोत्तम नँद तातं। बंशीधर बृज बनिता मोहन निः कामी शुभ गातं। दिन मणि मंडल मंडन चक्री सौरी त्रै जग रेयं। गिरिजापति उपति विरजा स्वामी परमेप्वर जग ग्रेयं। विप्रव जनक राधा उर चंदन श्री बर यशुमति लालं। कुंज लाल प्रभु विप्रव बिभूषण गोप सुता उरमालं॥१११॥

सुःख सदन नँद नंदन माधव सुरपति प्रभु सर्वेशं। कुल कमल दल लोचन केशव करुणा

मय कमलेपूं। अच्युत अनुपम अलख निरं-
जन जगा कर्ता निः कामं। रवि नंदनि पति रति
पति बिग्रह रामानुज सुखधामं। विप्लवरेत वि-
पुलंभर विष्नू बास देपूा बलवीरं। मन सिज मो-
हन माधव मधु रिपु गोपी पति बर वीरं। गिरि
धर गोबिंद गुणा गणा मंदर मणाधेपूवर उर सा-
लं। पुरुषोत्तम पद्मेपूा परंपर परमेपूवर जन पा-
लं। भव भय हरणा भवेपूा भुवन पति भूधरध-
र क्षतु त्रातं। चिंत हरणा चित्त चोर चिदा नंद
सौरी जगा पितु मानं। दया मूर्ति दीना रतिहर्ता
दीना नाथ दयालं। त्रिपुरारीपूा त्रिलोकी नाय-
क अदपूा धीपूा गोपालं। अपूारणा पूारणा अ-
भय भयदायक जगा कर्ता जगा मूलं। कुंज लाल
प्रभु करुणा अंबुद सकल कला अनुकूलं ११२
जय बनमाली राधा बल्लभ ब्रज बनि तेपूा गोपा-
लं। गिरिधारी गोबिंद मुरारी चक्री जगत मु-
वालं। अज अद्वैत अनंत अनादी अनुपमरू-
पर मालं। मधु सूदन मेधाबी कामद गोपी पति
नँदलालं। बकी प्रान्त केपूी जित केपूाव गो-
पी जन उरमालं। जनत्राता द्विज पत्नी हित कर
हरणा दुसह भव जालं। विप्लव बिमोहन भव-

भय हारी राधा कृष्ण कृपालं । गुणा तीत शिव रू
पजगत पति राधा रमणा दयालं । वैनतेय पति
पतित उबारणा सुखदायक ब्रज बालं । चिदानं-
द निर्लंब निरामय नरहरि बपुष बिशालं । कुं-
ज लाल प्रभु अधम उधारणा जन रंजन खल
कालं । कुंज बिहारी त्रिभुवन त्राता कंसा सुर उर
शालं ॥११३॥

जय जय कृष्ण गोपाल दीन हित रंजन सुर मुनि
संतं । शिव बपु बिप्लवभुवाल जगत पति श्री बर क-
मला कंतं । शिव उर कमल दिनेशा नंद सुत रा-
धे हिय अवतंसं । जन उर कुमुद निशेशा मुरलि
धर भंजन भय यदुबंशं । हरि बैकुंठ गदा धर अ
च्युत केशाव करुणा कंदं । नँद नंदन गोबिंद
बकारी शिव अज हृदया नंदं । गिरिधर मौरीभ
व रुज भंजन बनमाली सुख अयनं । सुर पति
पति असुरारि अनघ अज गोपी पति जित मय-
नं । सच्चि दूप सुरेशा चिंतहर सुर गणा शात्रु सं-
हरणं । कुंज लाल प्रभु राधा मोहन भगवत प-
तित उबरणं ॥११४॥

जय गिरिधारी कुंज बिहारी केशाव त्रिभुवन
राधी कृष्ण मुरारी जन हित कारी सुर पति प्रभु

जलशायी। अशुरा असानी गोरस दानी शिव अजप्रभु जगपाली। करुणा सागर शोभा आकर गोपी जन उर माली। सुरवमा खानी शारँग पानी मन मोहन सुरवरापी। हरि वसुधा धरणो पसुता वर विश्वंभर अविनाशी। हरि हर रायी विश्ववशायी सुर नायक रिपु कालू। जगत उपायक दीन सहायक गोपेश्वर नंद लालू। जगअभिरामी खगपति स्वामी राधेश्वर असुरारी। अजित अबंधू करुणा सिंधू यदुवर विश्व विहारी। करुणा केतू त्रै जग हेतू अघ गंजन दनुजारी। श्रुति पथ सेतू त्रिभुवन हेतू कुंज लालरु जहारी॥११५॥

जय अनंत हरि केशा गदाधर सुरनर मुनि सुखकारी। यदुकुल कमल दिनेशा नंद सुत अमेशेश्वर हित कारी। कुंज विहारी सौरी अच्युत यशुदा सुत गिरि धारी। अशरणा शरणा अमरणा त्राता जग बंदन वन वारी। कंस शत्रुहरि मित्र जगत्पति शमनेश्वर असुरारी। सुर सुख दायक यशुदा नंदन विश्वंभर दनुजारी। जगज्जनक जय श्याम जृंभहर भुवनेश्वर संकटारी। अजित अमोघ अनंत चिदानंद मुरली

धर व्यौमारी। कमल नयन कमला पति कामद सुफलक सुत भ्रमहारी। बकी प्राण हर केशी घायक गोरक्षक गो चारी। ब्रज नंदनि सुरवंदा परमेश्वर अघा काल कंसारी। कुंज लाल प्रभु मंगल मूरति सुरपति रिपु संहारी ॥११६॥

यशुमति नंदन गोपीवल्लभ सुर मुनि हितु सुरवरणी। नंद सुवन ब्रज राज मुरलि धर गिरधारी अविनाशी। सुरपति शत्रु निकंदन माधव ब्रज नंदनि उरमालू। नंद महर सुत कुंज बिहारी ब्रज मोहन जगपालू। ब्रज वनितेश्वर त्रैजग कर्ता जन हितु अवतर मुरारी। असुर वृंद बधरत पुरुषोत्तम केशव विश्व अधारी। वंशी धर हरि कृष्ण कृपाकर ब्रज पति त्रिभुवन त्राता। निगम नीति निधि दीन सनेही सुर स्वामी बल भ्राता। सकट शत्रु व्योमारी बृकोदर कंसा सुर दमनीया। कुंज लाल प्रभु जन दुख भंजन राधा पति कमनीया ॥११७॥

जयभय हारी यशुदा नंदन यदुवर कुंज बिहारी। सुरहित कारी त्रैजग वंदन माधव विश्वम्भरी। कंस निकंदन राधा नायक मुरली धर असुरारी। निगम नीति निधि मोरी सुर जित

भुवनेश्वर अविकारी। अखिल अकाम अनघ अविनाशी राधेश्वर दनुजारी। अशरण शरण सुरा सुर नायक कान्हर अधम उधारी। अघा संहारी विश्व बिभूषण कलिमल हरण मुरारी। कृष्ण दया निधि करुणा अंबुधगोपी पति अघहारी। नंदमहर सुत यशुमति लालन सुर पालेण बकारी। कुंज लाल प्रभु हरि मधु मूदन शिव वपु दुःख निवारी ॥११८॥

जयभय हर नँद नंद सर्व हित जन रंजन कंस नीयं। अशरण शरण अनघ अज अच्युत ब्रज नंदनि रमनीयं। सुःख सदन भव बंध बिभंजन असुर वृंद दमनीयं। त्रैजग बंदन अनुपम अविरात त्रै विधि जग रचनीयं। अखिल भुवन पति यशुदा नंदन मुनि जन श्रुति कथ नीयं। जग दुख हरण दुसह अघ गंजन सुरपति मद मथ नीयं। त्रिभुवन भरण अमरपति दुख हर करतल गिरि धरणीयं। कृष्ण गुविंद यशोमति लालन जन भवरुज शमनीयं। ब्रज जन सुखद अचिंत अमर हित चरित विविधि करनीयं। कुंज लाल प्रभु शिव अज कर्ता भव रुज भय हरनीयं ॥११९॥

नंद कुँवर बृष भान कुमारी सुंदर अनुपम जोरी
।मरकत वपु घन श्याम सुभ गबर कनक ल-
ता सम गोरी। छजत श्याम तन तड़ित बिनिं-
दक पीतांबर सुख कारी। गौर बदन पर देत
महा छवि ललित बैजनी सारी। रत्न जटित कुं
डल ताटंक श्रवणान बिच छवि दाई। मल
यज तिलक सिंदूर अरु बेंदा भाल परम रुचि
राई। कुंचित केश अहिन छवि लाजन चिकु
र मनोहर चारु। मुकट रतन युत शीष फूल
शिर निरखत मोहत माऊर मोहत बैजंति की-
सुभ मणि गण दधि सुतहारा। कटक आदि
बल यादि अभूषण करमे करत बिहारा। क-
टि मेखल किंकिणि पद नूपर सुरनर मुनिसु
ख कारी। जय जय राधा कृष्ण कृपा कर कुं-
ज लाल कुंज हारी।।१२०।।

जय शिव स्वामी गिरधर माधव राधा कृष्ण उ-
दारं। अलख अनघ अविकारी केशव करु
णा बिपिन बिहारं। जय ब्रजनायक राधा माधव
नारायण जग सारं। निर्गुण अमानी मानीमा-
नद गोपेश्वर कर्तारं। जय जग वल्लभ गोपी
मोहन अखिलेश्वर अविकारं। त्रिभुवन प्रभु

भव सागर बोहित अधारी वपु चारं। जय नंद नंदन काली मद हर सौरी दया अगारं। कुंज लाल प्रभु जन हित कारी गोपी प्राण अधारं॥१२१॥

जय अज ईप्वर गोपी वल्लभ करुणा मय जगदीप्वं। जन सुख दायक राधा माधव जग त्राता सुर ईप्वं। ब्रज वनिता पति गोविंद केप्नव मधु सूदन प्रिव रूपं। यदु कुल मणि सुर प्राण निकंदन अलख अनघ जग भूपं। प्रिव अज सेव्य चिदानंद कामद करुणा लय सुख धामं। कुंजविहारी देवकि नंदन परमेप्वर शुभ कामं। यदु नंदन यवनेप्ण विनाप्णी यज्ञेप्वर बल भ्रातं। दया मूर्ति दीना रति भंजन विप्वंभर जगत्रातं। विबुधेप्वर बलराम सहोदर रमानुज हरि पालं। कुंज लाल प्रभु राधा मोहन मुरली धर नँद लालं॥१२२॥

पद

जयश्री राधे जय ब्रज बाला

जाको भेद वेद नहिं पावत नंद सुवन नँद लाला। सो तुम्हरे संग नाचत गावत प्रिव ब्रह्मादि भुआला। जो अज अलख असोध अकामी रहित शोक जंजाला। सो तुम्हरे संग कुंजविहारी

धारे वपुष तमाला । जो शिव अजके ध्यान न।-
आवत सेवत नित त्रै काला । सो तुम्हरे सँग पग-
ट बिलासी पहिरावत उरमाला । जाको बिनवत
विश्व चराचर बदन वेद जग पाला । सो तुमको
निय वपु धरि बिनवै छोरि मुकट बन माला । जो
अज ईशा विश्व उप जायक आरति हरता दया-
ला । सोतुमको नित पान खवावत करि करि च-
रित विशाला । तुम ब्रज नंदनि कृष्ण पियारी करु-
णा पुंज कृपाला । कुंज लाल को देहु दया करि
हरि पद भक्ति रसाला ॥ १२३ ॥

जय राधा पति यशु मति नंदन
विश्वंभर वसुदेव सुवन वर वसुधा धर ब्रज मंड-
न । चिदानंद चतुरानन कर्ता चतुर्व्यूह भय
खंडन । जगन्नाथ जगदीश जनेश्वर जगाज्ञान-
क जग वंदन । कमल नयन कर्तार कामदा के-
शव कंस निकंदन । हृषीकेशा हरि नाथ हरी
प्रभु हरी त्रिविधि ज्वर गंजन । अलख अनंत
अमोघ अकामी अरिवलेश्वर अघ भंजन ।
दनुज शत्रु दामोदर धाता दया मूर्ति सुर रंजन ।
कुंज प्रभू कमला पुरुषोत्तम कृष्ण गोपि हृद अं-
जन ॥ १२४ ॥

पनघट राजत छल मुरारी

प्रीया मुकट लकुटी कर लीन्हें सखा भीर संग भारी। जल हित निज निज घर से जाहीं सब सुंदर ब्रजनारी। औंचक कोउ के घट लुढ कावैं काहू भरैं अंक वारी। चंद्र बदन काहू को निरखैं परसि कूट अधिकारी। काहू चितै चोर चित लैहीं गहि लट घूंघुट टारी। काहू को घट फोरि बिभावैं चरित सिंधु अघ हारी। लै डुडुरी चढ़ि वट के ऊपर फेंकैं यमुन मझारी। प्रेम बिवस ब्रज ललना जित तित फिरैं लोक डर डारी। कुंजलाल प्रभु लीला देखहिं भामिनि युत नभ चारी॥१२५॥

कौनहु विधि जल भरन न पैये

यमुना तट तुम्हरो सुत रोंकत कहु कैसे निर्बहिये। सुरव उर परसि गागरी फोरत और कहा देखवैये। लैले नाम देत है गारी मनही मन सकुचैये। तुम्हरी कानि हृदय धरि माई सदा मौन गहि रहिये। रहीन अब कुल कानिह मारी कैसेहु बचन न पैये। कुंज प्रभू कँह अबहूं बरजो हम तुम्हरी बलि जैये॥१२६॥

हरि हिंडोर लीला बिस्तारी

कनक लता इव राधा गोरी मरकत रूप मुरारी। घन चपला छवि निंदक दरग्राहि नवला नवल बिहारी। अपर गाप तनया हरिप्यारी लखि अनुपम छबि भारी। हरषि झुलावहि गावत पावस गुरु कुल कान बिसारी। तान तरंग सरस उपजावत मटकहिं दै दै तारी। कुंजपुंज हरखत मन माहीं संतत जनहित कारी॥१२७॥

झूलत हरि संग राधा रानी

ललितादिक प्रिय सखी सहेली रूप प्रवीन गुणखानी। केकी कंठ गीत शुभ गावत सुखद सुताल सुबानी। यह सुधि पाय सबै ब्रज बनिता बहु आनंद उरआनी। नवसत साज साजि उठि दौरी त्यागि लोक कुल कानी। तिन्हैं राधिका ढिग बैठावै कर गहि बहु सनमानी। निरखि श्याम श्यामा छवि अनुपम ब्रज बनिता हर्षानी। महा अनंदित करत कुतूहल तन की सुधि बिसरानी। कबहूं कान्ह अकेले झूलत ब्रज नंदनि सुखदानी। कबहुंक झूलत गोप किशोरी निरखैं शृंगार पानी। ता अवसर की शोभा बरणन शारद मति सकुचानी।

कुंजेश्वर यश गावत सुर गण युत हय भेश भवानी ॥१२८॥

भजुमन कृष्ण सरो रुह लोचन
विकसित सरसिज वदन मनोहर सुर नर मुनि मन रोचन। शिव उर कुमुद निशेस मुरारी भव रुज हर दुख मोचन। जन हृदि सरित मराल मुरलि धर त्रासक खल मनि पोचन। कुंज लाल प्रभु आस हृदय धरि वृथा समहिं जनि सोचन॥१२९॥

जय ब्रज बल्लभ जय ब्रज राई
सुर मुनि पाल यशोदा नंदन केशव कृष्ण कन्हाई। वंशीधर गिरि धर सुरत्राता लोकेश्वर बलि भाई। स्वबश बिहारी राधा मोहन अतल अनघ जल शाई। सुरपति मित्र चरा चर ईश्वर दीन अनाथ सहाई। पतित उबारण गुण गण मंदर त्रै गुण विश्व उपाई। कुंज लाल प्रभु करुणा मूरति यशुदा सुत सुरवदाई १३०

मम विनती सुनिये गिरि धारी
शिशोदर हित भ्रमत अहर्निशि माँगत जौंन तौंह भयो भिखारी। काहू सो दुख मिट्यो न मेरो जो हृदय दुख चिंता भारी। निशि दिन।-

रहत पोचमें बूड़ो चित व्याकुल मनधीर नधारी। तुमको अधम उधारण दुख हर बरणात मुनि गण अरु श्रुति चारी। सो सुनिके विश्वास आनि उर अबमैं लीनी शरण तुम्हारी। दुख संताप दूरि करि स्वामी प्रणत पाल निज बिरद सँभारी। कुंज लाल प्रभु कृपा दृष्टि करि हरहु बिपति दारुण दुख भारी॥१३१॥

जय राधा वर केशव पावन

मंगल मूरि श्री कृष्ण दया निधि जन त्राता दुख दारुण दावन। विश्व विमोहन विष्णु गदाधर जगज्जनक भव व्याधि नसावन। पतित उधारण दीन बिपति हर मन निज रूप मनोज लोभावन। अधम उधारण शिव अज बंदित श्याम चतुर्भुज बदन सुहावन। अलख निरंजन करुणा मंदर अगुण सगुण अघ बोध जरावन। मधुर मनोहर मंगल मूरति महि सुर प्रिय महि भार बहावन। कुंज लाल दुख भंजन श्रीधर मरकत बपु रति नाथ लजावन॥१३२॥

भव रुज हरिये हरि नँद लाल

मधु सूदन नँद नंदन माधव केशव अनुपम मथुरा पाल। करुणा पुंज कृष्ण कमला वर कामी

कामद मदन गोपाल । भव रुज भेषज भक्त जने-
श्वर भव भय भंजन जगत भुवाल । रमा रमण र
ण छोर रमावर राधा ईश्वर बिष्नु कृपाल । परमे
श्वर पुरुषोत्तम पावन पर मातिम पर ज्ञान रसा-
ल । नंद सुवन नारायण नर हरि नित्यानँद ना-
थान रुज लाल । जलजनयन जल शाई जगपति
जलधि सुता प्रभु रूप तमाल । कुंजलाल प्रभु कुं-
जबिहारी कंज बदन कंजेश्वर पाल ॥१३३॥

सुंदर तन कंज बदन श्यामले कन्हाई
कमल नयन हरि मुकुंद मुरलिधर दीन बंधु के-
शवयदुराई । ब्रज ईश्वर बिश्व नाथ कमलाप-
ति रंग नाथ सुरपति सुख दाई । करुणा निध
श्री ब्रजिंद राधा पति मुकुंद माधव जलशा
ई । बिश्वपाल जगत भूप राधापति बिश्व यूप
कान्हर बलि भाई । कारुणीक जगत ईश दान
वारि शिव अजीश नाथान बिकलाई । कुंज लाल
ल प्रभु दयाल दीन बंधु पतित पाल मोहन शि-
व दाई ॥१३४॥

नंद लाल हरि चंद नंद के दुलारे
इंदु बदन ताप हरण लोचन अनियारे । मौलि
मुकुट हाथ लकुटि मुरली मुखधारे । बपु बि-

श्याल छवि रसाल जलधरद्युति कारे। चित्तहरण पीत बसन पावन उरधारे। कंज बरणा मृदुल च-रण पापहरणा हारे। मुक्त हार सुभग चार ला-जत नभ तारे। कामरूप छवि अनूप यशुमति के वारे। सरस रंग सकल अंग सुंदर सुकुमारे। कुंज लाल प्रभु दयाल मोर मुकट वारे॥१३५॥

जय जय गोपाल लाल गोकुलेंदु प्यारे
जगत ईश गोपि चंद करुणा मय दीन बंधु भा-ल तिलक सारे। नंदलाल रंग नाथ गोपी पति विश्व नाथ मोर मुकट वारे। कंज नयन बपु त-माल मुरली धर हरि गोपाल सुंदर सुकुमारे। वं-शी धर श्री अनंत कमला पति विश्व कंत जग के रख वारे। कृष्ण चंदु ज्ञान खान सुख स्वरूप धर्म भानु पाप हरणा हारे। सुर सहाय कंस काल विश्व रेत नंदलाल लोचन कज गारे। कुंज ला-ल प्रभु गोविंद करुणा मय ज्ञान सिंधु यशुदा के वारे॥१३६॥

जय जय जय नंद नंदन करुणा मय सुख स-दन नंद लाल गोप राज गोपि पति मुरारी। हरि मुकुंद जगत पाल मुरलीधर कंस काल राधा पति कृष्ण चंद गोपिका बिहारी हरी केशा।-

कान्ह राय राधा प्रभु जन सहाय गुण निकेत वि-
श्व नाथ कंस जित बकारी।विप्रव रंत श्री निवा-
स ज्ञान पुंज सुकव रास सुर पतीए दीन बंधु
लीला अवतारी। अज अनंत प्राक मित्र बासु
देव शुभ चरित्र गोपि नाथ पांसु भूप केशव अ-
सुरारी। तत्व तत्व शिव शरीर मेटन भव जाल
क्षीर चीर चोर जगन्नाथ माधव गिरि धारी।ध-
रणी धर सुकव कंद दान वारि श्री मुकुंद यज्ञ
पुरुष योग ईए कामद कंसारी। कुंज लाल प्र-
भु उदार राधिकेए जग अधार लोक नाथ र-
ण पतीए अबि गति दनुजारी ॥१३७॥

कस न भजसि मन यशुमति लालन
गिरिधर श्याम मुरलिधर कान्हर हरि केशव
जगपालन। पतित उबारण सुर मुनि त्राता दी-
न दुसह दुख घालन।हरि बल्लभ विप्रवंभर का-
मद राधे श्वर कलकालन। जन सुख दायक
दीन सनेही शमन विविधि भव जालन।बिनु
हरि भजन जानु सुख संपति बिना लवण जि-
मि सालन। कुंज लाल प्रभु कृष्ण चरण भजु
सहित गोपि अरु ग्वालन ॥१३८॥

जय राधा बर कुंज बिहारी

नँद नंदन गोविंद जगतपति गोपी नाथ मुरारी। यशुदा लालन विप्रव विमोहन केशव पतित उबारी। मुरली धर मधु सूदन मौरी केशी रिपु कंसारी। विप्रवंभर भेषावी माधव सुर रंजन असुरारी। शमनत्रास हर यमुना वल्लभ यदु नंदन अविकारी। पूतनारि व्योमारि सकट रिपुधनदपुत्र उद्धारी। कुंजलाल प्रभु राधा मोहन जनत्राता बनवारी॥१३८॥

जय अच्युत गोलोकनिवासी
कलिमल हर राधा वर केशव त्रिभुवन प्रभु शिव हृदय अवासी। पूरण सुखद गो गोप सहायक नंदसुवन त्रैलोक प्रकाशी। मुरली धर बलराम सहोदर जगाज्जनक अनुपम अविनाशी। चक्र पाणि सचराचर वंदित सर्वोपरि राधा उरबासी। परमा नंद परेपूर परंपर अगज गा वल्लभ जगत विलासी। कुंज लाल प्रभु राधापीतम नंदसुवन वंदित कैलासी॥१४०॥

जन्मे श्री हरि अलख अजात
शिव अज प्रेय गणेपूज्य पूरण रूप तेज गुणाकर हि न सिरात। असित पक्ष नभ मास अष्टमी बुद्ध दिवस वेरिया अधरात। रिक्ष रोहिणी

सुखी चराचर चंद उदित शोभा सरसात। दरसण यदुसुदेव देवकी हरषित निरखत मुख जलजात। सुमन वरषि देव स्तुति गावहिं कहि जय जय हरि दनुज अघात। संत सुखद दीनारतिभंजन कुंज लाल प्रभु जगपितु मात॥१४१॥

ब्रजमें प्रगटे हरि सुख दानी

जलज नयन घनश्याम मनोहर इंदु बदन मुख रवानी। अरुण कपोल अधर रतनारे चितवनि अमृत मानी। लखि अनुपम छवि लालन केरी थकित भई नँद रानी। ललकि बोलायो नंद महर को बहु आनंद उर आनी। नंदराय हरषित उठि धाये सुनत सुखद मृदु बानी। लखत बदन उमग्यो उर आनंद भरे नयन सुख पानी। तब रोये हरि लीला अंबुद बंदित प्रभु भवानी। कुंज लाल प्रभु जन्म लियो है गोपी ग्वालन जानी॥१४२॥

उपजे आनंद कंद कन्हाई

परमा नंद सकल ब्रज बासी घर घर करत बधाई। सफल वृक्ष कदली के रोपे बंदन वार बँधाई। कंचन कलश धरे जल पूरित मोतिन चौक पुराई। एक निरखैएक मंगल गावैं आ-

नँद उर अधिकाई। विविधि दान मँगतन को दे-
हीं हिय उत्साह बढ़ाई। कुंजलाल ता अवसर
को सुख विधि मन कहो न जाई।।१४३।।
होत बंद गृह आनँद मंगल मैं सरि अस सु-
नि पायोरी। यशुमति रानी ढोटा जायो अनु-
पम रूप सोहायोरी। शंकर आदि अमर द्विज
तनधरि सबको आय सुनायोरी। अलख अ-
जात अचिंतक केशव यशुदा सुत ह्वै आयोरी।
सुरधरनी बज नारि न मँग मिलि मंगल सोहर
गायोरी। विप्र वपुष चतुरानन धरिके गनि शुभ
लगन बतायोरी। नँद हारे अति होत कुतूहल ब
ड़ धन मँगतन पायोरी। चलहु वेगि सुख संप-
ति लूटहिँ कुंज लाल मन भायोरी।।१४४।।
नंद राय घर बजत दुंदुभी उपजे कुंवर कन्हाई
री। बंदी गण चारण यश बरणैं देव सुवन भू-
रि लाईरी। मंदिर बिच तिय मंगल करहीं मंग-
ल डब्य मँगाईरी। एक गावति एक धरति सा-
थिये एक निरतत सुख पाईरी। रहसि एक
निज भवने जाहीं हिय उत्साह बढ़ाईरी। ब्र-
जयुवती कर लिये आरती निज निज वृंद बना-
ईरी। पैठहि भवन करत कुतूहल यशुदहि देत

बधाईरी। युग युग जियें यशोमति नंदन कुंज लाल सुखदाईरी॥१४५॥

सुनहु सखी वह बजत बधाई
यमुदा रानी नंद महर की निशि शुभ बालक जाई। सुरनर मुनि नँद द्वार जुरेहैं बहु बधि भेयबनाई। करत कुतूहल नाचत गावत दधि की कीच मचाई। भवन मध्य ब्रज ललना मुदगावत गीत सुहाई। चलो सखी अवलोकन मंगल उर आनंद बढ़ाई। कुंज प्रभू जन्मोत्सव गावत संशय शोक नशाई॥१४६

जय हरि माधव कृष्ण मुरारी
विश्व विभूषण गोविंद गिरि धर सुर पालेशा बकारी। पद्मनाभ पद्मी परमेश्वर मोहन कुंज बिहारी। अशरण शरण दीन दुख भंजन नंद सुत अधम उधारी। गरुड़ ध्वज हृषि केशा मुरलिधर सुरपति शत्रु संहारी। विश्वंभर पदमेश्वर केशव अच्युत जगत अधारी। कुंजलालप्रभु राधा मोहन अनुपम पतित उबारी १४७।

जय विश्वंभर रुक्मिणि नायक
जगज्जनक भद्रेश्वर केशव गोविंद माधव दीन सहायक। सत भामा पति अघथर गंजन

विश्वा भूषण सृष्टि उपायक। असुर निकंदन सत्या बल्लभ बाण प्राचु भौमा सुर घायक। संगल रूपिणा पुरुषोत्तम सौरी जाँम्ब वती प्रभु जन सुखदायक। अलख अनंत चरा चरमे वित लक्ष्मणाग्रा धृत प्रणरंग प्रणायक। कलि मल हर कालिंदी स्वामी जन त्राता सुर वैरी हायक। मित्र विंदपिय सुखमा अंबुद कुंज प्रभू त्रैजन उपजायक॥१४८॥

जय नँद नंदन हरि बन वारी। अच्युत गोविंद जन भय हारी। श्री बर माधव पतित उवारी। जग ज्ञनक अघ तिमिर तमारी। जय कुंजेश्वर कुंज बिहारी। गिरि धारी सुर मुनि हित कारी॥१॥

रमा रमण यशुमति सुख दायक। बनमाली जन दीन सहायक। ब्रज नंदनि पति राधा नायक। कमला प्रभु केशव अविकारी॥२॥

कृष्ण कृपा कर करुणा सागर जग बंदन युदुबंशादिवाकर अधम उधारण अगुण गुणाकर हरी हर ईश्वर जन सुख कारी॥३॥

बिल्लु मुकुंद यशो मति नंदन। परमेश्वर ब्रजनिय उर चंदन। कलि मल हर सुर प्राचु।-

निकंदन। जन कामद राधेश्या मुरारी॥५।१४६

त्राहि त्राहि हरि त्र्रलख निरंजन
कुंज लाल दुख हर भय भंजन

पाहिमां केशव नँद नंदन। भुवने श्वर माध-
व जग बंदन। सुर नायक रिपु व्योम निकंदन।
कलि मलहरण प्रभु उर चंदन॥१
त्र्रधम उधारण त्रिभुवन त्राता। दीन सनेही ह-
लधर भ्राता। कलुष निकंदन करुणा गाता।
मधु सूदन काली मद गंजन॥२
हरण त्र्रमंगल मंगल कारी। गोपी बल्लभ क्रु-
ष्ण मुरारी। नंद लाल त्रै लोक त्र्रधारी। कुंज
बिहारी जन मन रंजन॥३
त्र्रज त्र्रमान त्र्रनघ त्र्रवि नासी। विश्वंभर
श्रीधर सुखरासी। पुरुषोत्तम त्रै लोक प्रकासी।
त्र्रलख त्र्रनीह त्र्रकाम त्र्रकिंचन।४१५॥

छन्द षट्पदी

जयति जयति बन माली नँद नंदन घन श्याम।
जगज्जनक त्र्रसुरारी कमल नयन सुखधाम।
शरण सुरद निःकामी केशव त्रिभुवन तात।
त्र्रलख त्र्रनघ गिरधारी कृष्ण विष्णु बल भ्रा-
त। यदुकुल तिलक बकारी सौरी करुणा केत।

वृंदा विपिन विहारी माधव त्रै जगदेत। मदन व-
पुष श्रुति नेता कमलेपुवा सुरराय। भय हरहरि
भगवानं सचराचर सुखदाय। विस्व स्वामि ज-
गवंदन बृजवर जगत अधार। कुंज लाल दुख
मेटद्ध राधा रमण सुखार।।१५१।।
जयति कृष्ण नंद सनू हरण दुसह दुख फंदा गि-
रिधर अनघ अबंध यदुवर यशुदा नंद। कि-
ल्विषहर जगा भर्ती बृजपति गोकुल चंद। दुःख
शामनघन विग्रह नँद नंदन सुख कंद। मधु
सूदन जग वंदन यशुदा सुवन गोबिंद। कुंज
प्रभू जन पाली भवरुज हरण मुकुंद।।१५२।।
जय जय राधा कृष्ण दयानिधि वर दीजे बृजरा-
ई। संत सभा विच आदर पावे यह पोथी सुख-
दाई। जोकोउ चितदे पढे सुनावे उर में प्रीति ब-
ढ़ाई। कुंज प्रभू हरषित तेहि देही निज पद
प्रीति सोहाई। राधा वरके नाम रतन युत रत्ना
वलि सुख कंद भई। छन्द विविधि सुखदाय
मनोहर तृतिय भाग आनंद मई। नेत्र बाण
शशि छन्द बखाने सुखदायक अघपुंज ह-
ई। जिनको चितदे बांचत गावत कुंज लाल
रुज ज्रंभ गई।।१५३।।

आरती

आरति नंद सुत राधा वर की
मोहन माधव अनुप मुघर का

शेष गणेश शंभु अज वंदित। विष्णु विमोहन त्रिभुवन मंडित। अगम अपार अचिंत अखंडित। कूल मुकुंद गोवर्धन धरकी निगुरा निरंजन देवकि नंदन। काली मद हर कंस निकंदन। यशुदा लालन त्रैजग बंदन। राधा वल्लभ के प्राव हरिकी॥ बन माली ब्रज बनिता मोहन मुरलीधर मुख सुंदर मोहन। अकल अनघ अद्वैत अगोहन। अमित अमोघ अनंत अजर की॥ भव निधि पोत चरा चर नायक। असुर विमर्दन जन सुख दायक। अघवन दहन बिबुध रिपु घायक। गोप सुनेपुवर प्रभु हरि हरकी॥ किल्विषभंजन अधम उधारण। भय हृत भय हृत भव रुज टारन। जगत आदि अज पतित उबारण। कुंज प्रभू रवि मोह तिमिर की॥

इति श्री हरि नाम रत्ना वली

तृतीय भाग

सम्पूर्ण शुभम्

अथ हरि नाम रत्ना वली

लिख्यते

चतुर्थ भाग

मंगला चरण

दोहा

वंदि महेशा गणेशा पद शारद पोष मनाय।
बरणौं श्री बर नाम शुभ अरु लीला सुख दाय।
करहु कृपा लक्ष्मी रमण श्री बल्लभ सुर राय।
बरणौं तुम्हरे नाम शुभ लीला युत हर्षाय।
अघ भंजन संशय समन दायक जन मन काम।
नाम रत्न युत सुख मई रत्ना वलि शुभ नाम।
यद्यपि छंद की रीति कछु जानत नहिं कुंज लाल।
तद्यपि कहे हरि पद सुमिरि पंडित पढ़ै सँभाल।

सोरठा

सुबुधि सुसासुभ्र याहि परम प्रीति युत बाँचिहै।
सरस सरुचि तेहि माँहि जा उर हरि पद भक्ति नहिं
यौहै चौथो भाग रत्ना वलि हरि नाम को।-

जौंहि सकल अघ भाग जाके बाँचत सुनतहीं।

दोहा

मास सोमवर हरि दिवस शुक्ल पक्ष शुभ जीन
दिवजा क्षिप अरु अंक शशि संवत विक्रमसान।

अथ अष्ट पदी

हरि कमला उर चंदन जग बंदनये॥ अमित अ
जित अविकार जय जय बिष्णु हरे। बासव पति
दुख गंजन भय भंजनये। अघ घन तिमिर तमा
रि जय जय बिष्णु हरे। सुरमुनि जन दृग अंज-
न जनरंजनये। अघकुल विपिन कृशानु ज-
य जय बिष्णु हरे। जगज्जनक जग भूषण नि-
र्दूषणाये। रज तम कमल तुषार जय जय बिष्णु
हरे। मधु रिपु जगत प्रकाशि सुख राशिं ये। अनु-
पम अकल अमान जय जय बिष्ण हरे। जलधि
सुता उरमालं जगपालं ये। शरण सुखद बैकुं-
ठ जय जय बिष्णु हरे। निष्कल सत्कल सुंद-
र गुण मंदिरये। अविगत अगाह अनंत जय जय बि-
ष्णु हरे। जगत भरण भुवनेश्वर सर्वेश्वर ये। अ
न अवि जित हृषि केश जय जय बिष्णु हरे श्री
बरवै जगरेतं श्रुति नेतुंये। मंगल वपु कुंजेशज
य जय बिष्णु हरे॥२॥

जयति अनंत गदा धर श्रीवर गोपति विमल मुरारे। सुर द्विज निकर सुखंवुद श्रीधर जन भय हरण अधारे॥ वंदित हरि हर अनघ अचिंते सुर पति विपति हरण पुरेण हितु वेद भनंते। अवि गत मदन मनोहर अवि जित लोचन ललित मुरारे। मधु रिपु सुर जित अकल अनामय जग नायक असुरारे। सुर कुल मंडन सुर गणाभय हर सुर मंडित जग पाले। जन गण हृदय सरोरुह दिन कर भंजन भव रुज जाले। शमन दीन भय अभय अखिल प्रभु अनुपम रमा निवासे। अघम अगोचर करुणा मंदिर तरणि किरण द्युति हासे। मनसिज रिपु पति त्रिभुवन मोहन जगज्जनक जग दीपे। कैटभ गंजन गुण गण आकर सर्वोपर अवनीपे। माधव कामद हरि हर कर्ता अच्युत विष्वक् पायने मुनिजन मानस हंस दयानिधि केशव राजिव नयने। अपार गुण शरण गता गत दुखहर जगवल्लभ श्रुति सेते। चिदानन्द चतुरानन सुर तरु विश्वंभर सुख केते। कुंज लाल प्रभु विष्णु दीन हित श्री निश जगत अधारे। अघ थर भंजन अजर परंपर पद्मी चित्त उदारे॥ २॥

रंजन सुर मुनि केशव कामद श्री वल्लभवनमा-
ली। करुणा अंबुद त्रिभुन वंदित सेवित ब्र-
ह्म कपाली। जय जय हरि जगदीपा हरे नाशन
जन दुख दोष थरे दीन विपति हर कारण कार-
ण शिव बपु विपद भुवालू। वारिध जा प्रभु गो-
विंद माधव मनुपम बदन विशालू। काम स्वरू
प अकाम अगोचर श्री कर वदन सरोजं। दया
सिंधु प्रणा तारति भंजन चक्री बपुष मनोजं।
राम रमेशा रमापति श्री प्रभु खल रिपु जन अनु
कूलं। सर्वा निम बैकुंठ गदाधर सुर जित अग-
म अतूलं। सिंधु सुतेश्वर अगा जगा नायक भुव
नेश्वर असुरारी। हरणा अमंगल मंगल वि-
ग्रह परमेश्वर अविकारी। शरणा शरणा रमा
वर सुर हित जग मंडन घनश्यामा। भय हृत भ
यकृत भगवत भूधर भ्रतु प्रिय जगा अभिरामा।
भव निधि पोत चरा चर हित कर विष्णु जगत।
पितु माता। धर्म धुरंधर धरणी स्वामी सुर पति
पति जगत्राता। कुंजलाल प्रभु जन मन रंजन
श्रीनिधि करुणा गणं विश्व विभूषण कम-
ला प्रीतम जगते श्वर हर नाथं॥३॥
हरि विश्वंभर श्यामा मंदिर अज हर उरसर हंसं।

हरण अमंगल मंगल विग्रह निग्रह भव रुज वंशं।
जय जय केशव जगत प्रकाशं। लक्ष्मी बल्लभ म-
ध घर वासी त्रै जगदीश अमोघ अनंत अचिंत
अनघ अरिवंलेशं। असुर निकंदन अनुप-
म अविगत श्री पति अपर परेशं। चिदानंद चित
रूप चतुर्भुज गरुड़ ध्वज सर्वेशं। कारण कर-
ण अमर गण भय हर श्रीधर शासन कलेशं।
जगज्जनक जन रंजन भय हृत भय कृत अनु-
प अजेशं। सिंधु सुतावर अघथर भंजन गंज-
न दुख अमरेशं। सचरा चर प्रभु भव भय मोच-
न शुभ लोचन हृषि केशं। सुख अंबुध भव बं-
ध निकंदन मंडन जग शासनेशं। जन त्राता म-
धु शत्रु मुरारी दनु जारी शाहरेशं। करुणा निधि
बैकुंठ रमा बर पीतांबर पद्मेशं। पतित उधार-
ण त्रिभुवन वंदित सेवित ब्रह्म महेशं। परमे-
श्वर पर ज्ञान परंपर वसुधा धर अदशेशं। कुंज
लाल प्रभु अरिदल भुवन पति सुरतरु अमरप-
तीशं। किल्विष हर जग मंडन कर्ता भर्ता सिं-
धु सुतेशं॥४॥

जन उर चंदन सिंधु सुते वर केशव विमल
शरीरं। रमा रमण अहि शायन अमर प्रभु जन

हित अभय सखीरं। जय जय राजिव नयने। मान
द माधव विभूव विभूषण दानव रिपु शुभ वयने।
अनुपम विभु अजर पुरुषोत्तम श्रीधर दीन द-
यालं। विश्वंभर भगवंत दयानिधि श्री वर जग
त प्रवालं। पुरुष परंपर सुर कुल मंडित नीर ध-
जारमणीयं। हरि हर प्रभु हरि अच्युत अविग
त कामद दुख दमनीयं। मन सिज रिपु पति मो-
हतिमिर रविपावन चित्त उदारं। भक्त कुमुद नि-
शिकर जगवंदन जन अघ कमल तुषारं। सुर भ-
य हरण कृपाल जगत पति तत्वं तत्व स्वरूपं। व्य-
क्ता व्यक्त सुरासुर अधिपति भवईश्वर जग यूपं
।राम रमेश अनघ अघ भंजन अज अद्वैत अ-
गानं। भयहत भय कृत भव रुज हर्ता सुर मुनिप्र
भु अगातं। श्रुति विद नय विद सुर जित मोहन मु
र रंजन श्री नाथं। कैटभ गंजन दीन विपति हर
मधु सूदन सुरत गाणं। श्री वल्लभ सर्वेप्रा सर्वम-
य सर्वोपर प्रामनेप्रां। परमेश्वर वैकुंठ धरणि
धर श्री निध कुंज लालेप्रां।।५।।
अलख अनंत अनघ अखिलेश्वर हरि हरई
श अजेप्रां। मदन मनोहर अजर अजा हरि श्री
वर प्रामन कलेप्रां। श्री पति केशव जगत अधारं।

अगम अगोचर कमला मोहन कामद विपुल मुखारं। अनुप सुरासुर वंदित माधव परमेश्वर जगमूलं। निष्कल सकल शुद्ध परापर पद्मी जन अनकूलं। विश्वक पूरण चिदा नंद पावन भव अंबुधि जल जानं। मधु मुर भंजन रंजन सुरमुनि विश्वंभर भगवानं। अघथर गंजन राजिव लोचन सर्वा लय जगरेतुं। कलि मल हा गिर्जेश्वर स्वामी सर्वोपर सुख केतुं। विश्वंनीर क्षेरेश्वर कर्ता हर्ता मेदिनि भारं। हृषिकेश्वर वैकुंठ गदाधर करुणा कर जग सारं। भक्त कमल उरभानुदया निधि शिव मूरति जय धामं। मंदर धर मुद मंगल दाता भवरुज हर निः कामं। सुरपति सुखद रमेश्वर जमन पति सुर मुनि शत्रु अरंतं। कलि कलुष ज्वर हर वनमाली कारण कारण अजानं। भूत भव्य भवेश्वर भूत हितु भगवंत करुणा कंदं। कुंजलाल प्रभु त्रैभ्रम खंडन शिव अजहृदि नभ चंदं॥ ६॥

जगज्जनक भवसागर पोत रमापति शासन कलेशं। कमल नयन श्री नाथ रमेश्वर अजित अनीह अजेशं। पाहि चतुर्भुज राम रमापति माधव। अगम अनादं। वारिस जा प्रभु विपुल विमूरण

केशव हरणा विषादं। अभिनव जलधर श्यामल चतुर्भुज चक्री अंबुज पाणिं। सर सिज दृग श्रुति वदन शारंगा हिनु लोकेश्वर सुख दानिं। गरुड़ ध्वज वैकुंठ धरणीधर विश्वंभर जगदीशामरकंत वपुष अजा अद्वैतं भुवनेश्वर युगपोशं। अनघ निरंजन पुरुष परंपर जग वल्लभ कर्तारं। सिंधुसुतेश भक्तउर चंदन भंजनभवरुज भारं। अखिल भुवनपति खल गणा मर्दन प्रसमन रुज हृषिकेशं। खगपति पति पद्माक्ष दयालय जग कारणा अखिलेशं। महि सुर प्रिय अघहरणा अकलङ्क हरि हरपति सुखकेतुं। मंगल मणिा भगवंत गदाधर निगम निपुणा नयरेतुं। अमित अपार रमावर ईश्वर सुर रिपु रमाकलत्रं। अशरणा शरणा मुणा सुर सेवित अगाह अमोघ चरित्रं। अीश शशिभु रमापति अच्युत मंदर धरणा कृपालं। वसुधा धर कुंजलाल सहायक भंजन असुर दयालं॥७॥

यशुमति नंदन श्याम उदारं। ब्रज नंदनि प्रभु दया अगारं। जय राधा वर माधव केशव यदु वर गिरिधर यदु कुल चंदं। अनघ निरंजन अजित मुकुंदं। सरसिज वदन अगाम अजनाहं।

सुरपति मदहर असित अगाहं। जनभय हरण सु-
मन भव जालं। मन सिज रिपु पति जगत भुवालं
।अखिल भुवन पति राजिव नयनं। अघथर गं-
जन विश्वक शयनं। निरुपा विषम सम जगा अ-
भिरामं। असुर प्रान्तु जगा हितु निःकामं। अन-
घ असोध अनीह अरूपं। त्रिभुवन वंदित शिव
अजभूपं। श्री बर गोविंद परम पुनीतं। कुंजेश्वर
नंद सुवन अजीतं॥ ८॥

हरि जगावंदन मंडनचै जगा कामद धारणा मंदे।
सुरमुनिप्रान्तु असित्र त्रिदश प्रभु कमला बरमु-
ख सुंदरे। पद्मालया हृदा अंजने। नाथ जन मनरं-
जने। भवरुज मंजन गंजन जन दुख सुख निध
अंबुज लोचने। हरणा असंगल मंगल विग्रह सु-
रपति रिपु मद मोचने। नयन सरोज मनोज विमो
हन हर ईश्वर जगापालने विश्व विभूषणा दूष-
णाहारी अघथर हर खल कालने। प्रारणा प्रा-
णा भरणा सचरा चर गरुड़ ध्वज जल शायने। अ-
ज अतुले विमले अघ हायक नायक भव सुख
दायने। सुख वर्धनमर्दन निश्चर कुल त्रिभुव-
न पति वसुधा धरे। व्यक्ता व्यक्त अनंतरमा बर
किल्विष हर सुख सागरे। हृषि केश्वर परमे-

प्रवर अच्युत भयहर्ता कल खंडने। अघ कदनेसु
ख सदने केशव प्रसमन जन भव फंदने। विधु
वदने दमने मधु कैटभ कारण कारण सुरतरे
। जन त्राता धाता भुवते प्रवर भानी मानद श्री हरे
। कुंज लालेश रमेश दयालय जनभर्ता भयघा-
यके। पुरयो येतु निकेत दया गुण सुरनर मुनि
सुख दायके ॥ टी॥

रघुपति राघव पक्षी साधव भगवन सुख आ-
करे। रघु कुल तिलकं अमित अजनकं रघु वरप
झावरे। जय जय खगारि रामं धाता वंदित चरा च-
रे। जग मय सुधरे कुंचित चिकुरे जग हितु शुभ
आनने। अतिगानि सचलं रिपु जित कुपलं मं-
जन अघ कानने। मरकत वरणं भव रुज हरणं
हरि श्री उर चंदने। खल गण बाधी अगम अना
दी नृप दशरथ नंदने। अनुपम अकले अद्भु-
त विमले सुख निधि दुखमोचने। सुर मुनि सु-
खदं निर्भर भयदं श्रुति विद शुभ लोचने। शु-
रण शरणो धरणी धरणो सुर मुनि रिपु शमः
ने। दशमुख दमनं मीना रमनं सिय वर खल
त्रासने। अरुज अबंधे गुण गण सिंधे सिय
पति जग बंदने। सुंदर वदनं करुणा सदनं।

कौपाल पुर मंडने। शुभगुणा अयने सर सिज नय
ने केशव जगपालने। विश्व विहरणा अधम
उधरणा भयहृत कल कालने। परम पुनीते रिपु
रणा जीते संतत जन पोषने। कुंज जनेशा जनक
सुतेशा भवरुज दुरव मोचने ॥१०॥
राधा वर जग मोहन गिरिधर अवि जित वपुष
अनंगं। यदुवर नंद सुत त्रै जग वंदन अमित
अनंत अभंगं। जय रामा नुज शिव अज हृदय
निवासिं। प्रयाग मुकुंद कृष्ण गरुड़ ध्वज विश्वं
विश्व प्रकासिं। मरकत तन बन माल मजत उर
अनुपम अगम्य अतूलांसिंधु सुतेशा गुविंद अ
चिंतक ब्रज ललना अनुकूलं। आनंद कंद र-
मेशूदर सुंदर यशुमति सूनु उदारं। गणसुत-
प्रवर वासव सहहर शिव वपु विप्र अधारं। हर
णा अमंगल मदन मनोहर अघबन कंज तुषा-
रं। अच्युत केशव हरि हरवल्लभ यदुवर अ-
पर अपारं। भव बोहित वैकुंठ मुरलिधर ब्रज
पति शिवा पतीशा। कलि कलुषः ज्वर हारि परं
पर प्रसमन भक्त कलेशा। अकल अमल ब्रज
बनिता ईश्वर असुर निकंदन प्रयामं। निगु-
णा निरंजन जलधि सुता पति जन हित कर निः

कामं। जगाज्जनक भरावंत भुवन पति जल शाई हृषि केशं। अशरणा शरणा गाना गत दुरव हर सौरी सिंधु सुतेशं। श्री बर कुंज सहायक नर हरि देवकि सुवन उदारं। कलिमल हर सुखस दन शरणा हितु माधव भवकर्तारं॥९१॥

जयति अनघ अनुपम भगवान। अरुज अजा निर्गुण गुणा वान। हे हरि मोहन हृस भानुजा अबि गति अच्युत अजित अमान। दिवसनि शानभ अवनि कृपान। विरुज बियम सम। मानद मान। जधि सुता प्रभु दयानिधान। अचल अकल जगा मय शिव दान। अमित गदाधर चतुर सुजान। यदु पति सुरजित त्रैजगपान। सुर रिपु हा सर्वत्र समान। नंद तनय नँद सुत बलवान। बपुष सुधा भव निधि जल जान। असित निसित प्रिय पंकज पान। अग म कृपा जल बपु शुभ रवान। श्रीधर श्रीवर पुरुस पुरान। कुंज सुखद गिरिधर पर ज्ञान॥९२

छन्दावली

त्रभंगा

जनक सुता पति राघव रघुपति शिव अजेशा गोबिंद रमा पति सुर पतीशा रघु नाथ सियापति

सिय रघुवर छवि पुंज रसाल रमा रमन रघु राय
सुरेशं। सिय वल्लभ सुख धाम रमेशं। हरणाम-
कल भव जाल कलेशं। इंदु बदन शुभ नय-
न विशाल विदुषे प्रवर सुर शत्रु विनाशन।
किल्विष हरण जगत पमकाशन। दशा सुख
वैरी खल गया शासन। रघुकुल भूषण राव-
ण काल। कलि मल हर सुख राशि रखारी।
करुणा वपु जग पाल मुरारी। अवध राय सुत
पतित उबारी कुंजलाल प्रभु राम दयाल॥१॥
जनक सुता पति करुणासागर रघवर रघु पति
रूप उजागर राम सिया पति सब गुण आगर।
रमा रमण सुख वपु कर्तार। रघु कुल तिलक कौ
शिलानंदन सब जगजनक सिया उर चंदन।
खल कुल सकल सुरा सुर बंदन। सिया ईश
त्रै जग रख वार। निश्चर घायक असुर विभंज-
न। सुर पति नायक दूषण गंजन। दीन सहाय
क सुर मुनि रंजन। सिया रमण रघुवर दनु-
जार। दशा मुख पाप अजर अविनाशी। पर-
म विचित्र अनित सुख राशी। सिया कलत्र अ-
वध पुर वासी। दया सिंधु गुण निध असुरा-
र। अयराव खंडन पूरण कामा। रवि कुल मं-

इन सिया सिरामा। दशरथ नंदन अजित अ-
कामा। अलख अलौकिक सुख दातार। विप्र धे-
नु सुर विप्रवा रति हर्ता। कलि मल हर जग पाल-
न कर्ता। धनुर्बाण धर असुर उधर्ता। कुंजला-
ल प्रभु जगत अधार॥२॥

जय हरि केसव वर दशरथ नंदन सीता वल्लभ
त्रै जग वंदन। अमर राय रिपु छंद निकंदन। रा-
वणारि त्रै लोक अधार। सिय मुख चंद चको-
रनि रामय। शिव वपु अगम असोध अनाम-
य। करुणा मूरति अलख दया मय नीर धरे-
श्वर पाल उदार। अना दि अंत अनवद्य अचिं-
तं। विश्व विमोहन सीता कंतं। करुणा अंबु-
धि रूप अनंतं। रघुकुल मंडन दया अगार। ज-
नक नंदनक जन कातिम स्वामी। शिव अज से-
वित अंतर्यामी। गुणाधीश गुण निधि निः-
कामी। पुरुषोत्तम परमेश अपार। दाशरथी ह-
रि अवतारा। धरणी हरिहर वल्लभ दिप्रवा भरणं।
जनक सुतेश्वर वसुधा धरणं। अज अदि ना-
थी जगत सुवार अकथ अकिंचित चारा चा-
रं। कपिपति सिव हरन महि भारं। सिया मनो हर
नाम उचारं। कुंज लालप्रभु त्रै जग सार॥३॥

जय सिय बल्लभ अमर पतीपं। हृषिकेपवर सुखदधाम रमेपं। हरि हर सेवित पामन कलेपं। सर्वोपर सुरवनिधि रघुवीर। मधु सूदन मेधावी माधव मदन बिमोहन रघुपति राघव भवभयभंजन हेति परा भव। त्रिबुध प्रभू बसुधायति धीर। रमा रमण रघु नाथ रमा पति। असुर निकंदन राम बिमल चित अनघ अकाम अचिंतक अबि गत रघुनंदन घन श्यामल शरीर। कलि कलुषा ज्वरहर रघु नायक कैट भारि त्रैलोक्य उपायक। अपरंपरा पारपा सुरेपा सहायक कुंजेपवर भंजन भवभीर॥४॥

जय अवधे पवर कलि मल गंजन। अवनि सुते पवर अलख निरंजन। अप्रमेय हरि अघ गव भंजन। केतु सुता रिपु रूप ललाम। हरण अमंगल मंगल दाता। पुरुपोत्तम जग दीपा विधाता। सिया मनोरम जग पितु माता। अनुपम माधव सिया सिराम चिदानंद चक्री अविनाशी। भयहृत भय कृत घट घट वासी। जगन्नाथ हर हृदय विलासी। रघु कुल भूषण अतुल अकाम। रत दूषण जित राजिव लोचन। अमित अदूषण भव भय मोचन। मनसिज

विग्रह शिव मन रोचन। कुंजपभू अनवद्य अ-
नाम॥५॥
जय भगवंतं कमला कंतं अमित अनंतं हृषि
केशं। पद्मा नाथं शोभा गाथं नाथ अनाथं।-
अखिलेशं। जय शिव रूपं शिव अज भूपं त्रै
जगपूपं कर्तारं। विष्नु कृपालं दीन दयालं श्री
उर मालं अविकारं। जय शुभ करणं भरणी भर-
णं कारण करणं जन पालं। जगत अधारं अप
र अपारं दया अगारं कल कालं। जय अघ दम-
नं लक्ष्मी रमणं भव रुज समनं जगरेनुं। सब घ-
ट वासिं आनद रासिं सृष्टि प्रकासिं सुख केतुं।
जय भय हरणं शरणा पारणं त्रिभुवन भरणं ज-
ग मूलं। राजिव नयनं सुखमा अयनं विश्वक सा
यनं हृत शूलं। जय मुख सदनं सुंदर वदनं जन अ
घ कदनं श्री रामं। भव जल यानं दया निधानं च-
तुर भुजानं जयधामं। जय जग पलनं मधु सुर घ-
लनं कलि मल कलनं श्री नाहं। करुणा भवनं
कैटभ दमनं कमला रमणं निर्गाहं। जय जगत
रणं अधम उधरणं भव भय हरणं हरि रायं। कुं-
ज भुवालं श्री उर मालं रूप विशालं जल शायं।६
जय नँद नंदन जन उर चंदन देवकि नंदन सुख।-

दाई। सुरकुल मंडन त्रै जग बंदन असुर निकंदन बजराई। जय ब्रज भूपं अजित अनूपं अकल स्वरूपं जलशाई। श्रुति गुणा यूपं निर्गुणा रूपं अगुणा अरूपं बल भाई। जय भगवानं यदुकुल मानं दयानिधानं जगपालं। अभय अमानं मानद मानं सब सुख खानं कल कालं। जय जग हेतुं त्रिभुवन केतुं श्रुति नय नेतुं सुर स्वामी। करुणा केतुं भव निधि सेतुं पुराणो षेतुं शिव धामी। जय शिव नाथं करुणा गाथं गोपी नाथं अजराया। राधा रमणं बाधा शमनं जन अघ दमनं निर्माया। जय सर्वेषां सिंधु सुतेषां रमा पतीषां हरि नाहं। त्रै जगरेयं सुंदर वेषं युग जग षोषं निर्गाहं। जय हरि कृष्णं गोविंद विष्णुं हरि प्रभु जिष्णुं गोपीषां। माधव गिर्धर करुणा मंदर दयापुरंदर सुरईषां। जय गोपालं बदन रसालं हरि नँद लालं बनवारी। जगत भुवानं परम कृपालं जन कुंज लालं सुख कारी॥७॥

जयजग सारं दया अगारं भव कर्तारं सिय रामं। विप्रव अधारं समन बिकारं अवध भुवारं सुरवधामं। जय जग भूषणा जित खरदूषणा अमित अदूषणा भगवानं। जय मन भावन शोक नसावन

केशव पावन घनश्यामं। भवरुज दावन रूप सोहावन काम लजावन शुभ कामं। जय शिव नाथं करुणा गाथं धनु शर हाथं हरि मित्रं। अ बाह अनूपं श्रुति नय यूपं सत् चित रूपं शुभ चित्रं। जय जग वंदन दशरथ नंदन असुर निकंदन भय हरणं। सियउर चंदन त्रिभुवन मंडन जन दुख खंडन महिभरणं। जय सुर रंजन निश्चरगंजन अघ गव भंजन अवधेशं। जन दृग अंजन अकल अकिंचन श्रुतिपर व्यंजन विबुधेशं। जय असुरारी अवध विहारी दूषण हारी जशकर्ता। विप्रवा धारी अभय रवरारी पतित उवारी सियभर्ता। जय जलशाई वासव राई जन सुख दाई निर्गाहं। जगत उपाई हरि हर राई कुंज सहाई सिय नाहं॥८॥

जय गिरि धारी कुंज बिहारी जन सुख कारी घनश्यामं। शरणा गरणं विप्रवा भरणं भव रुज हरणं शुभनामं। असुर प्रहारी निगम प्रचारी कृष्ण बकारी बल भ्राता। अनुपम अकलं गुगुण गणा कृपालं लोचन विमलं जन त्राता। जगत भुवालं दीन दयालं परम कृपालं वनमाली। कारणा करणं धरणी धरणं अधम उधरणं जग

पाली। करुणा गाना विश्व विधाता जगपितु मा
ता अखिलेशा। राजिव नयनं धृतसा अयनं वि-
श्वक शयनं कुंजेशा॥ ९॥

गीति का

भजुमन सिय वर दशरथ नंदन करुणा मूरति
राम उदार। अपारा पारा अनघ सिय वल्ल-
भ जनक सुता पति जगत अधार। किल्विष हर
रघु नंदन रघुपति केशव कामद दया अगार।
अच्युत अविगति त्रैजग वंदन चिदा नंद अ-
घ कंज तुषार। जगज्जनक जन आरति भंजन श्री
धर श्री वर विश्व भुवार। दशमुख शत्रु त्रिदश
भयदनी सीता वल्लभ रहित विकार। अखिल
भुवन पति सुर मुनि रंजन राघव रघुवर अपर
अपार। पुरुषोत्तम पर ज्ञान दया निधि रघुराई
रघुवंश कुमार। अज अद्वैत अचिंतक सियव
र उमा पतीपूजन विभु मुरारि। रमा रमण जग मू-
ल जगत हित कुंज प्रभू जगदीश खगारि॥१०॥
जय रघु नंदन रघुपति रघुवर करुणा अंबुद अ
घ वधा बाज। रघु कुल तिलक अवध पति नंद-
न लोभ मोह गज गंजा मृगा राज। अज अद्वैत
विषम सम विग्रह दया भवन मद विपिन कु-

ज्ञान। अकल अमल स्निमणि कुल मंडन काम क्रोध तम हायक भान। हरि हर मित्र अमर पति भय हर सिया मनोहर भव निधि पोत। अलख निरंजन निर्जर धाता कामारी प्रभु हतरुजगोत्पादक विष्णु कलि कलुष निकंदन मुनि जन मानस कंज तमार। पुरुष पुराण परंपर पावन पर मातिम हरि दया अगार। धनु धार धरवैकुंठ अवनि धर श्रीधर माधव जनक सुतेप्सा। भयहन भय कृत भौमी वल्लभ मृग पति मदहरदीन जनेप्सा। मंगल विग्रह हरण अमंगल रावण वैरी सीता कंत। अवध बिहारी पिाव अजबंदित विप्लव बिमोहन करुणा वंत। निजानंद निःकाम निरालय नीर धरेप्वर पाल मुकुंद। गिरागम्य गीतीत गिरापति परमेप्वर पर ज्ञान गुविंद। चतुर्व्यूह चतुरानन कर्ता चिदानंद रघु वंप्सा दिनेप्सा। महा मूर्ति मधु सूदन माधव महि तनया चित्त चोर रमेप्सा। गाधि तनय मख त्राता कामद गीधउधारण जित दप्सा कंध। सुग्री वेप्सा विभीषण श्रीदा कुंज लाल प्रभु आनंद सिंध॥११॥

उपगीति का

जय विप्लंभर विपत बिमोहन वासव पति वन

माली। बंपूरी धर ब्रज नंदनि वल्लभ बासुदेव जगपाली। जय अनंत अव्यक्त अवनिधर अखिलेश्वर अहिपाई। अजित अचिंतक अगजग ईश्वर अमरा धिप सुखदाई। जय मधुसूदन माधव मोहन मघवा स्वामि मुरारी। मानी मानद मदन मनोहर मदतम तिमरतमारी। जय गिरधारी गुन गन मंदिर गोपी नाथ गुपाला। गुणा तीत गो द्विज हित कारी गीरवान प्रतिपाला। जय जग दीपा जगत उपजायक जगत पोस जय दाता। जगन्नाथ जल धानिम सुखदा कुंजेश्वर जन त्राता।।१२।।

जय राधा पति रमा मनोहर रामा नुज रन छोरं। रवि तनया प्रभु राजिव लोचन रवि नंदनि चित चोरं। जय लक्ष्मी पति ललिता मोहन लेरवा धीरा भुवालं। लांगूल धर ललित कलेवर लोकेश्वर नंदलालं। जय सुरंजन अरणा अरणां पांसवेश्वर सुरंगायं। सविता लोचन सिंधुसुतेश्वर सत्या वर सुखदायं। जय हरि ईशा हरी हर वल्लभ हय ग्रीव हय कालं। हरन अभंग हलधर भ्राता हिम कर बंदन रसालं। जय यदुनंदन यमुना प्रीतम यवने श्वर बलि हारी। यशुदा सुवन यज्ञ पुरयो-

तम कुंजेश्वर सुख कारी ॥१३॥

जय रघु नंदन रघुवर राघव राम रमा पति जगभ रणं। रघुकुल कमल पतंग दयानिधि श्री वर श्री निध जन पारणं। कलि मल हर सुर मुनि दुःख भंजन सीता पति मरकत वरणं। अज अज वंश परंपर ईश्वर जन रंजन धरणी धरणं। दशरथ सुवन विबुध कुल मंडन करुणा लय कारण करणं। कमल नयन विश्वंभर अनुपम अनघ अनीह रुजा हरणं। तरणि वंश मणि तम चर गंजन तरुण कमल द्युति शुभ चरणं। काम रूप निः काम निरंजन कुंज प्रभू हरु दुख जरणं ॥१४॥

जय रघुनायक सीता वल्लभ जन अघ कमल तुषारं। मंगल करण अमंगल हर्ता केशव जगन अधारं। विश्व विभूषण शोभा सागर सिय वरण उदारं। सविता लोचन रवि कुल दीपक रघु वर दया अगारं। अलख निरंजन सुख मय मंदिर शिव वपु रहित विकारं। विश्व जनक दिश्वंभर वासव विबुधा धीश मुरारं। पाप नाश हर सुर मुनि त्राता नृप दशरथ्य कुमारं। कुंजलाल प्रभु दीन सनेही सीता रमण मुरारं। १५।

जय जय अधम उधारण अच्युत रघुवर सीता
रामं। अलख निरंजन अहिपति शाई अवधे-
शवर निःकामं। अवध विहारी अज शिववल्ल-
भ अपर अपार अजेशं। अजित अमोघ अन-
घ अघभंजन अजय अकाम अहेशं। अखिव-
ल भुवनपति अगुण अनामय अपारण पारण
अकालं। अनाद्यंत अद्वैत अजातक अजप्र-
भु अवध भुवालं। अकल अनंत अहीपवर शा-
ई अज कर्तार अमायं। असुर निकंदन जन अ-
घ घायक कुंजेशवर सुख दायं।१६॥ जय रघु वर
भव वारिध बोहित सियवर राम दयालं। अपार-
ण पारण सुरमुर सेवित रघु वर अवधभुवालं।
अखिल भुवन पति दशारथ नंदन सीता पति
शिव रूपं। रघुवर रघुपति असुर निकंदन जन
रंजन अजभूपं। अवध विहारी अयगव खंड-
न अच्युत अज जगमूलं। अधम उधारण दूष-
ण हारी निर्दूयण हत भूलं। अमित अनंत चि-
दा नँद चक्री चिंता मणि भनुधारिं। दाशरथी
सुरशत्रु निकंदन रघुराई असुरारिं। पारणसु-
खद रघु वंश दिवा कर शिव मूरति शुभ नामं।
कुंज लाल प्रभु सिया मनोहर माधवशोभाधामं२७

रघुबर रघुपति राम रमाबर कोपाव जनक सु-
तेपां। सिया मनोहर जन उर चंदन वंदित शि-
वा पतीपां। अगम अगोचर निगुरा निरा म-
यधनुधारी सिय नाहं। परमेपवर पुरुषोत्तम
परमित पामन भीम भव दाहं। गुणा तीत
गोविंद गदाधर गरुड़ध्वज रघु राजं। मंगल
मणि अद्वैत अचिंतक जन पातक खग बा-
जं। जित खर दूषणा राजिव लोचन करुणा
लय पुभनामं। वैदेही बर सेवित त्रै जग भय
हारी सिय रामं। विपव जनक कर्तार निजा-
नँद अगाह अगोह अधामं। कुंज लाल प्रभु ज
नक सुता पति जयजय सिया भिरामं॥१८॥
जय सिय बल्लभ सिया मनोरम दशारथ नंद
न रघुराई। रघुबर राघव रघु कुल दीपक सी-
ता पीमत सुखदाई। करुणा अंबुद अघ थ
मंजन रघुपति कामद जलपाई। अवधबि
हारी केतु सुता रिपु खंडन भव रुज प्रभु ताई।
अपर अमोघ अहिल्या तारण सियबर मा-
भव दुख हाई। कुंज लाल उर शोच निवारो
सेवो अपनी पारणाई॥१९॥
जगज्जनक कोपाल्या नंदन रघुबर अरुज

अजाना। सिया मनोरम राम रमेश्वर त्रिपुरारी
प्रावि धाता। धनुधारी अवधेप्रा अजातक सि-
यवर करुणा गाता। रघुनंदन वनमाली अ-
च्युत केशव त्रिभुवन धाता। सेव्य चराचर अं
बुज लोचन दया रूप श्री दाता। जनक सुता प-
ति अवधि विहारी रघुपति दशरथ ताता। अ
खिलेश्वर महि तनया प्रीतम त्रै जग रूप अ-
गाना॥२०॥

तोमर

गोविंद केशव विश्व। करुणा यतन श्री कृ-
ष्ण। जगदीश हरि भगवान। घनश्याम भव तम
भान। निः काम अजित अमान। मद मोह वि
पिन कृशान। श्री राय कमला कंत। लक्ष्मीरू-
रूप अनंत। हृषिकेशा करुणा केत। बैकुंठ
त्रिभुवन हेत। सुख पुंज त्रिभुवन राय। कुंजे
शा दीन सहाय॥२१॥

जय राम चंद्र उदार। अवधेशा विश्व अधार।
त्रैलोक पति रघुवीर। करुणा अयन रणधीर।
धनु बाणाधर हृषिकेशा। रघुवंश मणि
अखिलेशा। भव सिंधु पोत अनंत। त्रिदशेशा
पति भगवंत। घनश्याम राजिव नयन। शिव

रूप विष्णुक प्रायन। त्रिपुरारि उर प्रार हंस।
रघुनाथ सिय श्रवतंस। बलधाम हरि कर्ता
। जगदीप्रा श्रवध भुवार। सुख पुंज आनंद
कंद। कुंजेप्रा रघुकुल चंद॥ २२

जय विप्रु करुणा धाम। श्री नाथ हरि घन।-
श्याम। जगदीप्रा आनँद कंद। हृषिकेप्रा त्रि-
भुवन चंद। मधुप्रात्र दीन सहाय। जग मूलह-
रि हर राय। असुरारि त्रिभुवन ईप्रा। जग पा-
लक करुणा धीप्रा। शिवरूप त्रिभुवन रत। सु
संत हित श्रुति सेत। कुंज लाल प्रभु कर्तार। श्री
कांत दया श्रगार॥ २३॥

नगस्वपिणी

नमामि श्री रमा बरं। दयाल दीन भयहरं। श्र-
जेप्रा शंभु नायकं। मुरारि इंद घायकं। श्रनंत
संत पालनं। श्रघोर पाप घालनं। श्रप्रोक
प्रोक मोचनं। कृपाल कंज लोचनं। मुकंद स-
र्व विग्रहं। श्रनीह दुष्ट निग्रहं। रमेप्रा प्रोय प्रा-
यनं। दयाल वेद गायनं। सदैव कुंज सुख करं।
भवादि देव भय हरं॥ २४॥

मोती दाम

करुणा मंदर प्रोभा धाम। नीलेंदी बर सुंदर

श्याम। रमा रमण हरि वपुष विशाल। शिव अज वंदित रूप तमाल। अच्युत केशव राजिव नयन। अलख निरंजन करुणा अयन। श्री वर माधव अमृत वयन। विश्व विमोहन विष्वक् शयन। अरुज अजा अनुपम निःकाम। अकल अनघ त्रै जग अभिराम। मधुकैटभ जित शिव अज भूप। सुर वैरी चक्री शुभरूप। सर्व घट व्यापक अकथ अनाद। कुंजलाल भजु त्यागि विषाद।।२५।।

ब्रज वनिता प्रभु नंद कुमार। कलिमल हर श्री कृष्ण उदार। विश्व विमोहन जगत अधार। करुणा मंदिर अपर अपार। जगज्जनक पावन श्रुति सेत। अलख निरंजन त्रै जगहेत। चक्री माधव सुर मुनि हेत। मन मोहन हरि करुणा केत। विश्व जनक राधा वर श्याम। करुणा मंदर अनघ अकाम। अजित अनीह जगत अभिराम। राधा वल्लभ शोभा धाम। विश्वंभर त्रै ताप हरंत। हृषिकेश वर हरि राधा कंत। गुणातीत गुण धाम अनंत। कुंज प्रभू राधा भगवंत।२६। दोधक

जयति रमा वर माधव गिरधर। वन माली नँद

लाल रमा बर। यशुदा सुत गोबिंद बिपति हर। विश्व बिमोहन घालन निश्चर। करुणा पुंजय शोमति नंदन। भुवने श्वर राधे उर चंदन। यदु बर श्री बर त्रिभुवन मंडन। किल्बिष हर केशव जगबंदन। अपारणा पारणा दुसह दुख भंजन। पतित पाल सुरपति मद गंजन। असुर निकंदन सुरमुनि रंजन। श्याम बमुध गोपी दृग अंजन। यदुकुल तिलक चरा चर बंदित। कलि मल हर ब्रज मंडल मंडित। सुर सुख दायक खल मख खंडित। कुंज लाल प्रभु श्रुति पथ पंडित।२७।

त्रोटक

करुणा निधि केशव श्री रमनं। मधु सूदन श्री बर अघ शमनं। हृषिकेश मुकुंद रुजा दमनं। सर्वेश्वर पावकन भयवनं। अज अच्युत कामद भयहरणं। भव बंध निकंदन जग भरणं। सुरशत्रु रिपू पारणा पारणं। भगवंत अनंत अवनिधरणं। शिव रूप दयाल खगेश ध्वजा। जगशेष विभंजन घोर रुजा। सुर संत हितू अन बंध अजा। कुंजलाल प्रभू संतत सुखदा।२८।

भुजंग प्रयात

ब्रजाधीश श्री विष्णु माधव मुकुंदं। दया मूर्ति

हृषि केषा वैकुंठ चंदं। कृपावंत कर्तार आनंदकंदं। जगन्नाथ जगदीषा श्रीधर गोविंदं। रमानाथ घनश्याम सबघट बिहारी। अखिल लोक नायक रमेश्वर मुरारी। गरुड़ गामि चक्री त्रिविधि जग अधारी। गदाधर अदषा पाल जन दुख निवारी। अजित निर्विकारी निरामय कृपाला। श्री स्वामि लोकिषा अनुपम रसाला। गुणा तीत गुणावंत पिंव वषु बिषाला। कमल नाभ कुंजलाल स्वामी दयाला॥२९॥

अमृत ध्वनि

जयति श्री पति विप्रव मोहन विप्रव मय परमेश्वरं। जगत वल्लभ विप्रव नायक श्री धरं भुवनेश्वरं। श्री चतुर्भुज पतित पावन श्री करं अपरंपरं। शंखचक्र सुर शत्रु गंजन सर्व मय मंदर धरं। शीष शशिाका जग उधारण जन सुखदलक्ष्मी वरं। करुणा कारुणा कारुणीकं कंज मुख भव रुज हरं। गुण रहित गोतीत गोविंद वंदितं सचरा चरं। मधु दलन माधव मुरारी मयन वषु गुणा आकरं। भक्त वत्सल दुष्ट गंजन सर्व मय सुख सागरं। संत हितु सत्त रूप सुख निधि कुंजजन सुखमा तरं॥३०॥

चौपाई

नमो नमो श्री कुंज बिहारी। नंद सुवन जग दीपा मुरारि। बंशीधर गोड़िज हितकारी। कृष्ण बिष्णु सुर शत्रु संहारी। राधा पति माधव अविनाशी। ब्रज मोहन केशव सुख राशी। दधि दानी गोलोक निवासी। मंगल मणि श्रुति बेद प्रकासी। मुरली धर त्रै लोक सहायक। भुवनेश्वर सब सृष्टि उपायक। अघा बिभंजन कमला नायक। केशी नाशन धेनुक घायक। कंज बदन घनश्याम कृपाला। नँद नंदन भगवंत रसाला। जन रंजन त्रदशेशा भुवाला। कुंज लाल प्रभ यशुमति लाला॥३१॥

नमो नमो जग दीपा मुरारी। यशुदा नंदन हरि गिरधारी। राधा वल्लभ कुंज बिहारी। अच्युत अविगति अज अमुरारी। गोबिंद माधव देवेकि नंदन। गोपी नायक त्रै जग बंदन। राधा स्वामी असुर निकंदन। सुर मुनि त्राता जनउर चंदन। करुणा सिंधु दीन सुख दाता। जन अघहारी जन पितु माता। केशव कामद करुणा गाता। विश्वंभर त्रै मूर्ति बिधाता। मधु सूदन ब्रजराज मुकुंदू। अलख अगोचर।-

अजित अबंधू। अशरण शरण अमोघ अछंदू।
कुंजपक्षू ब्रज वर ब्रज चंदू ॥३२॥
जयजय कृष्ण चराचर ईशा। विप्लव विमोहन
जगताधीशा। गोप सुताबर हरि बागीशा। ह-
ल धर भ्राता सुर पालीशा। व्यक्ता व्यक्त जग-
त हितकारी। ब्रज मोहन खल शत्रु बकारी ॥म-
न मोहन केशव बनवारी। मोहादिक भ्रम ति-
मिर तमारी। ब्रज बनिते प्रवर खग पति गामी।
नँद नंदन सुरनायक स्वामी। सर्वघट व्यापक अं-
तर्यामी। शिव मूरति मौरी सुख धामी। अखिल
ल लोक प्रभु सुर मुनि रंजन। यशुदा सुवन गो-
पि दृग अंजन। निराकार निः काम निरंजन।
कुंज लाल अघ ओघ विभंजन ॥३॥
जयजय कृष्ण गुविंद गोपाला। राधा बल्लभ ज-
गत भवाला। केशव कामद दीन दयाला। जग
बंदन माधव नँद लाला। धरणी धर शिव रूप
सोहावन। मधु सूदन मेधावी पावन। कलि म-
ल हर वपु काम लजावन। गोपि मनोहर जन
मन भावन। कुंज विहारी शिव अज वंदित।
बंशीधर रवि मंडल मंडित। कंसस्वसा सुतज-
न गण जोहित। जगज्जनक भव सागर बोहित

पीतांबर बैकुंठ गदा धर। बनमाली खल भूत्रु रमाबर। गुरा तीत भगवंत गुराा कर। कुंज-लाल अपराध छमाकर॥३४॥

जय रघु नंदन सीता स्वामी। जगज्जनक हरि अंतर्यामी। दसरथ सुत त्रै जगा अभिरामी। राम रमा बर जन सुख धामी। रबि कुल कमल दिने स मुरारी। अवनि सुता पति जगत अधारी। दनुज बिमर्दन अवध बिहारी। सिव अज सेव्य रमेस खरारी। धनुर्बाण धर त्रिभुन त्राता। सुर रिपु गंजन अनघ अजाता। अपारगा पारगा जगत पितु माता। कवंधारि त्रै लोक बिधाता। गिरिजेस्वर बंदित रघुराई। रावरा रिपु रघुबर जल पाई। कपि पति मित्र अधम गति दाई। कौसल्येस कुंज लाल सहाई॥३५॥

षट पदी

जयति अभय यदुराई हल धर बीर। सर्बोपर सुख दानी हरि रणा धीर। अघ कुल कमल तुषारू बिमल पारीर। गुरा मंदिर बन माली मंजन भीर। अच्युत अज अबि नाशी सोभा धाम। श्री सिव बपु अघ हारी सुघर ललाम। भगवत दीनदयालू अजित अकाम। गुरा

तीत जलप्राई अकल अधाम। सत चित वपु-
ष मुरारी जगत भवाल। विप्रव जनक जन त्राता
परम दयाल। कमल नयन सुभ बाहु वदन रसा-
ल। अविजित अकण अनादी अजर अकाल।
विप्रवं विप्रव विधाता त्रै जग केत। पुरुषा सुख-
दजन त्राता भवनि धरेत। कृष्ण गोविंद कृपा
लू पुरायो पेत। कुंज मुखद जग धाता करुणा
केत॥३६॥

रमाभिरामं पूरण कामा जय कारी। सिंधु सु-
तापति हरि सुख धामं भयहारी। अज अवि
नाशी त्रै जग व्यापक जलप्राई। दया निकेतं
शिव अज वंदित सुखदाई। पुरुष गदा धर के-
शव अच्युत सुख दाता। अधम उधारण अ-
वि गति कामद जन त्राता। कैटभ रिपु मधु
सूदन चक्री श्रुति सेतू। अनघ अकामं रा-
जिव लोचन जग हेतू। अंड जेपा प्रभु पद्मा
रमणं वन माली। कुंज प्रभू हरि शोभा धामं
जग पाली॥३७॥

जय जय रामं रघुकुल नंदन सुख कारी। वपुष
विशाला राजिव नयनं भयहारी। रमा भिरामं
रावण वैरी रण धीरा। रघुवर राघव करुणा

कंदं रघुबीरा। करुणा अंबुद कौशल नाथं
कर्तारं। कलिमलहारी केशव कामद जगसारं।
शिव अज वंदित शर्वरी वरदं शिवरूपं। कुंज
लालप्रभु सिया मनोरम शिवभूपं॥३८
जयशिव मूरति कृष्ण गोपालं वनमाली। दीना
नाथं दया अगारं जगपाली। कुंज विहारी शि-
व अज ईशं सुरत्राता। अज अवि नाशी विष्णव
कशयनं नंदजाता। व्यक्ता व्यक्तं सेव्य चरा-
चर जगपूपं। अलख निरंजन अनुपम कामद
शुभ रूपं। यशुमति नंदन राधा मोहन सुख के-
तुं। नंदमहर सुत केशी घायक जगहेतुं। पतित
उधारण पूतन वैरी हरि राया। अच्युत अवि गति
करुणा गाथं जित माया। कंस निकंदन गोपी
वल्लभ अविकारी। कुंज जनेश्वर गोपी रंजन
गिरि धारी॥३९॥
जय गिरि धारी कृष्ण कृपा कर हरि केशं। रा-
धा माधव यशुदा नंदन सर्वेशं। अंतर्यामी अ-
नघ अगोचर जगपोषं। रमा मनोहर त्रै जगवं-
दित शुभ वेषं। कारण कारण करुणा सागर
बलभ्राता। असुर निकंदन काली मद हर सु-
ख दाता। गोपी वल्लभ केशी गंजन कंसारी।

सुरपति भयहर अनुपम विग्रह अघहारी। अगु
रा असानी मानी मानद अविनाशी। सुररिपु
वैरी राधा प्यारे सुखरासी। हरि हर त्राता गोप
सुता वर शिव रूपा। कुंज विहारी कुंज सहायक
अज भूपा॥४०॥

जय अखिलेश्वर केशव कामद हरि राया। गो
पीरंजन जन हित कारी निर्माया। गोविंद मा
धव बज जन ईश्वर निःकामी। रूप उजागर गो
पसहायक शिव स्वामी। केशी भंजन बका वि
नाशी सुर त्राता। करुणा अंबुद शिव अज से
वित नंद जाता। चिंता मोचन अमित अचिंत
क जगदीशा। अघा निकंदन विपुल भूधरा अ
वनीशा। अपारणा शरणा अमर रिपु नाशन
भयहारी। सुरपति मदहर कुंज सहायक गिरि
धारी॥४१॥

छप्पय

कौशल राज कुमार राम कौशल्या नंदन। सिय
वर दया अगार शरणा हितु त्रैजग वंदन। वि-
श्वंभर रघुनाथ मधु सूदन शिव वपु दिगंबर
र मुनि रंजन विश्व मय सिय वल्लभ अनुपम
अकल। असुर निकंदन भयहरणा दूषणा जि-

न दशरथ सुत । कुंज लाल भजु अहनिशि सि
य रघुपति बहु प्रेम युत ॥ ४२ ॥
शरण सुखद हरि मित्र नंद सुत यशुदा नंदन ।
गिरिधर आनँद कंद मुकुंद भक्त उर चंदन । कि
ल्विष हर कर्तार अमरेश्वर मद मानहर । अम
र अजर सुखपुंज यादो पति रणधीर बर । क-
रुणा मय भवरुज हरण गोपी पति हरि कंस
जित । सुर रंजन संपाय शमन राधा वर कुंज
लाल हित ॥ ४३ ॥
कुंचित चिकुर तमाल पीत पट सोहत चारु । रु
चिर बाहु शुभ नयन अधर लखि मोहत मारु ।
तिलक भाल छबि पुंज इंदु मुख शोभा सागर ।
शुभ आनन उर माल ललित पद त्रैजग आकर ।
श्रुति कुंडल अलक सोहावनी रबि द्युति निंद
क मुकुंद शिर । कुंज प्रभू श्रीनंद सुत जग बन्द
म हरि मुरलि धर ॥ ४४ ॥
कमल नयन घनश्याम कंज मुख नासा पाव
न । अधर सुधा रस खान करण कुंडल मन भा-
वन । बसन पीत कटि शुभग हृदय बन माला
सोहत । कुंचित चिकुर तमाल निरखि सचरा-
चर मोहत । भुज बिशाल शिर मुकुट बर राधा

वर हरि गिरि धरणा। कुंज लाल प्रभु विप्रव पति जय जय जय अपारणा पारणा ॥४५॥

विष्णु मुकुंद गोविंद रमावर केशव श्रीरमणा। परम पवित्र अनंत जन रंजन संशय भंजन। शिव अज वंदित जगत पति मधु सूदन श्रीराय। जनउर चंदन जग भरणा भंजन असुर निकाय। विष्णु रमा प्रभु विप्रव मय करुणा लय अपारणा पारणा कलिमल हर त्रै लोक प्रभु कुंज लाल संशय हरणा ॥४६॥

कवित्त

पारद रैन हरि बन विच जायके चंद सहित नभ निर्मल हेरी। मुरलि बजाय मोहि सचरा चर ब्रज बालन को निज डिग टेरी। आतुर धाय गई सब गोपी चहुं दिशि तेहरि कोलियो घेरी। कुंज प्रभू गोपी पति वपु धरि हरी ताप उन के उर केरी॥४७॥

गुंजा भूषण सुंदर सोहत मोर परवन के मुकुट बनाये। अवगत कुंडल राजे छवि निध चंद्र वदन प्रात काम लजाये। परिधन पीत छबीले तनु श्यामल कर मुरली उर हार सुहाये। कुंज लाल प्रभु कृष्ण रूप लखि जीव चराचर सबै

लोभाये ॥४८॥

व्यक्ता व्यक्त रूप अवि नाशी आदि पुरुष अ-
रु आदि विहीनी। अपारपा पारपा पांभु अज
कर्ता अजर अनंत अमोघ प्रवीना। सो प्रभु
कुंज लाल सुखदायक नरवपु धेर ब्रज माँझ अ
लीना। सुरनर मुनि भवभीर विभंजन करत च-
रित शुभ नित्य नवीना॥४९॥

घन द्युति रूप मनोज विनिंदक चंद्र वदन लो-
चन रतनारे। अरुपा कपोल अलौ किक पा-
वन मोर मुकुट शुभ मौलि सुधारे। श्रवपान
कुंडल उर वैजंती अंगदादि कर कमलन धारे।
कुंजलाल प्रभु कुंज बिहारी जय मुरलीधर जनर-
खवारे॥५०॥

जग बंदन हरि मित्र मुरलिधर नंद सुवन हरि
त्रैजग बंदन। यशुमति सुखद अमर पति म-
दहर अखिल भुवन पति यशुमति नंदन। कं-
सपात्र कलि कलुष विभंजन सुरमुनि रक्षक
जन उर चंदन। कुंज कष्ट हर अलख निरंजन
जय जय केशव असुर निकंदन॥५१॥

अमल कमल दल सुंदर लोचन हस्त लकुटि
शिर मुकुट सुहायो। विक सित सरसिज वदन

सुधा निधि मरकत वपु प्रात काम लजायो। कुं
चित चिकुर अलौकिक अनुपम वरणात छ-
वि कवि पारत पायो। कुंज प्रभू जग वंदन केशा
व निरखत छवि आनँद उर छायो॥५२॥
रघुवर रघुपति दशरथ नंदन सिय वर अलक
अमोघ परंपर। मुकुट मौलि प्रापि वदन अधर
मधु कमल नयन सुभ बाहु जगत भर। रतन
जटित कुंडल वर श्रवणान वसन पीत फहरा
त भुजन धर। कलि मल हर सुर पात्र निकंदन
जय जय सिरवर राम धनुर्धर॥५३॥
दशरथ सुवन अवध पति अनुपम रघुवर र-
घुपति दीन विपति हर। सुर कुल मंडन अ-
च्युत अविगति कपि पति मित्र सेपा धनु-
र्धर। कलि मल हर हरि अघ गव भंजन अज
अद्वैत अमोघ परंपर। अखिल भुवन पति शि-
व अज वंदित कुंज सुखद जन दीन विपति ह-
र॥५४॥
राधा रमणा राधिका वल्लभ राधा वर हरि रा-
धा प्यारे। राधा कांत राधिका मोहन राधा स्वा-
मि यशोमति बारे। राधा कृष्ण राधिका प्रीतमरा
धा गोविंद नंद दुलारे। राधा माधव राधा गिरि।-

धर कुंज लाल प्रभु जयति मुरारे ॥५५॥

अरिल्ल

हरि ईश्वर जगदीश रमाधर गाइये। सर्वोपर सुख दान जगत यश पाइये। करुणा रूप अनूप अजित अविकार है। कुंज लाल निश्चै हरि चरित्र नित गाइयही श्रुति सार है ॥५६॥

दया वरुण असुरारि रमेश्वर ध्यावहू। अज अकाम अखिलेश नाम शुभ गावहू। अविगति अखिल अवाल नरायरा जानिये। कुंजलाल निश्चय अभि मित सुख दातार रमा वर मानिये ॥५७॥ सुगम पंथ सुख दाय हरी को ध्यान है। नहिं सेवत जो ताहि अधम अज्ञान है। हरी ध्यान विनु पंथ सकंटक जानिये। कुंजलाल निश्चय केवल दुखकी खानि चित्त नहिं आनिये।५८

जन रंजन सुखराय हरी पद सेइये। निशिवासर करि ध्यान जन्म निज खेइये। जन्म जन्म के पाप सबै मिटि जाँयजू। कुंज लाल निश्चय त्रिविधि ताप वै थूल नहीं नियराँय जू॥५९॥

यह संसार असार दुःख की खान है। सेवत असत जानि करत विष पान है। करि भगवत की आस विषय तजि दीजिये। कुंज लाल निश्चय

करि हरि गुण गान सुधा रस पीजिये ॥ ६० ॥

कुंडलिया

सुत बनिता दिक नेहमें जीतू राखत प्राण। अंत तोहि ये त्यागिहै याको तोहि न ज्ञान। याको तोहि न ज्ञान तिनहीं में सुख लेखही। नहि समुझै निज हान अपनो भलो न देखही। अबहू ते तू तजु सब न भजु रामहि श्री अनुज युत। अंत काम नहिं आइहै दारा अरु परिवार सुत ॥ ६१ ॥

जन रंजन संपाय पूरन श्री पति जन सुख धाम। सुर मुनि पालक दीन हित हरि लक्ष्मी अभिराम। हरि लक्ष्मी अभिराम बिपति बिदारन भयहरण। विश्वंभर जगदीपा। अखिलेश्वर बिप्रवा मरण। कुंज लाल प्रभु श्री रमण सु जय जय जय करुणा यतन। अज ब्रह्मा दिक विप्रव हितु सुखद सहायक दीन जन ॥ ६२ ॥

निगम शास्त्र सुर मुनिनि कर बरणित है सब काल। अधम पतित के दोष दुख मेटत राम दयाल। मेटत राम दयाल सो सुनिहे अपहरण प्रण। निशि बासर मैं हौं करत अधिक पाप अधमा चरण। पाप करण को हेतु यह जानो चाहत भेद। पाप बड़ों के तब कृपा गावत जाको वेद ॥ ६३ ॥

सोरठा

वंदहुँ युगकर जोरि राधा माधव के चरण। मिटत ताप त्रै घोर लेत नाम गोपाल के॥ ६४॥
नहिं कोऊ जग दोष जो प्रभु मैं कीन्हे नहीं। छमा करहु तजि रोष हे दयाल लक्ष्मी रमण॥ ६५॥
तुम सम दया अगार मो सम पापी कोउ नहिं। अपने हृदय विचार श्री प्रभु तुम्हरी शरण हौं॥ ६६॥ बाधा सब कटि जाय है अक्षर हरि कहतही। प्रगटै सुखसमुदाय मोक्षपदारथ हू मिलै॥ ६७॥ सकल सुकव को मूल है समिरण श्री रमण पद। नसत पाप त्रै शूल राम राम सुख कहतही॥ ६८॥

दोहा

शरण गत वत्सल प्रभू लक्ष्मी रमण कृपाल
निज शरणो मोहि राखिये करुणा सिंधु दयाल १
भुक्ति मुक्ति शुभ गुणानयुत सद पुराण श्रुति सार
कुंज लाल निज हृदै धर केशव चरण उदार॥ २॥
कुंज लाल विनती यही करुणा मय श्री राय।
निज चरणन की भक्ति दृढ़ देहु प्रभू हरषाय ३
सिंधु सुता पति श्री रमण श्री नायक सुख कंद।
श्रीधर श्री कर श्री प्रभू मेटहु भव रुज फंद॥ ४॥

दुःख हरण सब सुख करण मेटन भवरुजजाल।
रमा रमण को नाम है सो भज तू कुंजलाल॥५॥
हरिके नाम अनंत हैं अगिनित अमित अपार।
भक्ति प्रेम युत भज सदा हरिके नाम उदार॥६॥
सबै नाम श्री रमणके अगिनित फल दातार।
अधिक न्यून को भेद नहिं भाषत बेद पुकार॥७॥
शिव सन कादिक ब्रह्महू सदा जपत हरि नाम।
नाम लेत अघ शरनसे होय सुकव विश्राम॥८॥
रमा रमण को नाम कहि गणिका तरी विशेष।
और अजामिल आदि बहु अगनित अधम कु-
बेष॥९॥ सकल कामना छाँड़िके धरि हरिप-
दको ध्यान। कुंज लाल तू अहर्निशि करु ह-
रिके गुण गान॥१०॥ तीन लोक चौदह भुव-
न हरि बिनु हित न आन। समुझि हृदय कुँज
लाल तू भरु श्री हरि पद ध्यान॥११॥ बंदौ श्री
राधा रमण गिरिधर गोपी नाथ। पुनि बंदौ की
रति सुता धारि चरण रज माथ॥१२॥ दीन स-
हायक दीन हित दीना नाथ दयाल। दीन बंधु
दीनार्ति हर दीन पाल नँद लाल॥१३॥ राधा
पति राधा रमण राधा बर बल बीर। राधा प्रिय
राधा रसिक हरण सकल भव भीर॥१४॥

अलख अगोचर अगम अज अगाह अनीह अ-
पार। नर स्वरूप धरि सो प्रभू ब्रजमें करत विहा-
र॥१५॥ कृष्ण विष्णु वैकुंठहरि गिरिधर गोकु
ल चंद। नंद सुवन ब्रज जन सुखद गोपी नाथ
मुकुंद॥१६॥ मधुसूदन माधव अजित सुर रं-
जन जनराय। मुरली धर सुरमुनि सुखद हृषि
केपूवर जयदाय॥१७॥ अधम उधारण शिव
वपुष केशव अमित अनंत। राधा प्रभु गोपीर-
सिक त्रै जगपाल करंत॥१८॥ यदुवर श्रीधर
वेद वर करुणा निधि सुख अयन। कुंज वि-
हारी मुरलि धर श्रीधर राजिव नयन॥१९॥ अ-
नुपम अविगति गोसुखद गोपी पति निः का-
म। कृष्ण मुरारी नंद सुत मोहन सुंदर श्याम॥२०॥
अहिप शायन अहि अरि प्रभू अहि मद हर
अहि रूप। अहि भव गामी अहि नृपति राधा
वर सुख यूप॥२१॥ जय जय सीता राम की ज-
य लक्ष्मण रणा धीर। जयति भरत जय शत्रुह-
न जय जय जय रघुवीर॥२२॥ तात मात त्रै लोक
के हरण दुसह भव भीर। सुख निकेत आरत
हरण जय जय जय रघुवीर॥२३॥ कृपा सिंधु क
रुणा यतन करन धरे धनु तीर। अधम उधा-

रघा जगत पति सीता पति रघु वीर ॥२४॥ राम
राम अस मंत्र नहिं करु मन दृढ़ बिस्वास।
सिया राम भजु अहर्निसि होय न यम कीत्रा
स॥२५॥ कुंज लाल सब सोच तजि धरु अप-
ने मन धीर। दुःख बिमोचन दीन हित हैं कृपाल
रघुबीर ॥२६॥ रघु पति रघुवर श्री रमणा राघ
व करुणा रूप। शिव मूरति कुंज लाल प्रभु के
शव शिव अज भूप ॥२७॥ जय नारायणा नर
हरी नारसिंह शिव रूप। कनक कसिप जि-
त भक्त हित बंदित शिव अज भूप॥२८॥ वि-
घ्नहरणा किल्विष शमन दायक जन मन का
म। कुंज लाल भजु अहर्निसि श्री नर हरि शु
भ नाम ॥२९॥ कनक कसिप जित भय हर-
णा सुर नर मुनि सुख दाय। श्री नृसिंह प्रल्हाद
प्रभु मेरी करो सहाय ॥३०॥ जगज्जनक आर-
ति हरणा वामन रूप ललाम। सुर पति त्रातादि
शव हित त्रैविक्रम सुख धाम॥३१॥ जयति
परशुधर क्षत्रि जित भृगु नंदन रणा धीर।
यास दग्ध्य जन हित करणा परशु राम वर वीर
॥३२॥ राम रमा वर अवनि धर धाता त्रै जगदे-
त। दामोदर दीनार्ति हर दया सिंधु सुख केत ३३

मधु सूदन त्रैलोक प्रभु पीतं बर नँद नंद। अ-
ना द्यंत दूषरा रहित सुरजित आनँद कंद॥
३४॥ अच्युत अविगति भय हररा जगदा भर-
रा गोविंद। विष्वंभर सुर रिपु दमन वैदर्भीप
मुकुंद॥३५॥ भुवने श्वर करुरा यतन केषाव
जगत अधार। चक्र पारिा लक्ष्मी रमरा श्री
वर विष्व भुवार॥३६॥ विश्व रूप वसुधा प्रभू
वासव पति शिव रूप। अलख निरंजन अघ
हररा अंबुध दुहिता भूप॥३७॥ सर्व रूप स-
र्वेश शिव शिव वंदित सर्वाद। चिदा नंद चिं-
ता हररा प्रसन विषय विषाद॥३८॥ वासु
देव वसु देव सुत जलशाई हृषि केषा। गरुड़
ध्वज श्री वत्स हरि कृष्न विष्नु सर्वेषा॥३९॥ना
र सिंह वाराह हरि नारायरा जगदीषा। मत्स्य
कूर्म वामन वली राघव करुरा धीषा॥४०॥
वंशीधर केषाव वली बौद्ध रूप निः काम।
कल्कि रूप राधा रमरा जय जय पूररा काम॥
४१॥ देव भजे सुर लोक है भूत भजे अध गत्ति।
मुक्त मिलै हरि के भजे निश्चय जानो मित्त ४२
हरि विनती नौलोक में जीव सुरवद कोउ नाहिं
। सब तजि हरि भजिये सदा धारि प्रेम उर माहिं ४३

हरि असस्वामी छाँड़िके जो सेवत हैं आन। सो अति मूरख अज्ञहै विना पूंछ पशु मान॥४४॥ देवन को ना पूजही गृह्र को बलि ना देय। रसना सों हरि नाम जपि चौथ पदारथ लेय॥४५॥ हरि भरोस राखै हिये हरिही को विश्वास। करै सदा हरि गुण कथन ताहि न यम की त्रास॥४६॥ हरी परायण हो रहै छाँड़ि कामना देय। ताहि कर्म बाँधै नहीं चौथ पदारथ लेय॥४७॥ इंदिनको मारै नहीं तिन के वश्य न होय। मन क्रम बच हरि हर भजै बड़ योगी है सोय॥४८॥ अधिक योग याते नहीं जोसुमिरै हरि नाम। हरि को अर्पय कर्म सब आपरहै निःकाम॥४९॥ बसत न हरि बैकुंठ में ना योगी के चित्त। भक्ति सहित जँह गावहीं तँह राजै श्री मित्त॥५०॥ जो बिभूति संसार में सो सब हरि की आय। हरी कृपा बिनु नहि मिलै कै सहु किये उपाय॥५१॥ जो बिभूति चाहै लियो करै सदा हरि ध्यान। भजै निरंतर श्री रमण करै सदा गुण गान॥५२॥ जँह लौ संख्या गणित की ताते अधिक अपार। कीन्हे हैं अपराध मैं छमो सो नाथ मुरार॥५३॥ संख्या निज अपराध की नहिं जानो जग

दीप्ता। दया छमायुत हेरहू होंहिं सकल अघ खीप्ता ॥५४॥ आलस युत अति दुष्ट हौं अल्प प्राक्ति अज्ञान। अपराधी बड़ कृपिणा हौं सब छमो भगवान ॥५५॥ चूक सहस्त्रन अहनिशि करत सदा मै नाथ। छमो सकल अपराध मम श्री बर करुणा गाथ॥५६॥ मोसे पर नहि पातकी तुमसे परम दयाल। यहै समुझि प्रभु शरणा हौं रक्षा करहु कृपाल॥५७॥ हौं पापी अरु पाप युत पाप मूर्ति अरु पाप। कमल नयन तुव शरणा हौं हरिये त्रैविधि ताप॥५८॥ मैं प्रभु दीन अनाथ हौं तुमहो दीन दयाल। करहु अनुग्रह दीनपर श्री पति अपारणपाल॥५९॥ हौं दुर्बुद्धी पातकी तुम कृपाल श्री कंत। नर कहु मोकहु त्यागही करहु कृपा भगवंत॥६०॥ जल सीकर बरु जाँहि गिनि हे श्री रमणा कृपाल। मम कृत पापन जाँहि गिनि छमो सो दीन दयाल॥६१॥ महा अधम अरु दुष्ट हौं पापी विस्वा बीस। पाप रहित मोहिं कीजिये हे कृपाल लक्ष्मीश॥६२॥ जिते पतित तारे प्रभू निज सम गनिय न मोहि। जब तारो मोहि श्री रमणा अतिमहि

मा तब होहि ॥ ६३ ॥ जाको सुख जानत जगत सो है दुख को मूल । पहिले नीको सुरुचिहै अंत काल है शूल ॥ ६४ ॥ दुख के पीछे सुक्ख है सुख के पाछे दुक्ख । कुंज लाल हरि पद सुमिरि जानो सम दुख सुक्ख ॥ ६५ ॥ सुख में हर्ष न मानही दुखमें ना बिलखाय । जथा तथा मन थिर रहै कष्ट नहीं नियराय ॥ ६६ ॥

बरणादि दोहा

श्री सुख चंद्र चकोर हरि श्री नायक श्रीपाल । श्रीधर श्रीवर सुक्ख निधि निशि दिन भज कुंज लाल ॥ १ ॥ कमला पति कमला प्रभू केशव हरि कृष्ण कृपाल । क्षमा सिंधु करुणा सदन निशि दिन भज कुंज लाल ॥ २ ॥ खग पति पति खं सुक्ख कर खर बाँसी खर काल । खंजे पूखर पति जगत पति निशि दिन भज कुंज लाल ॥ ३ ॥ गुणातीत गोतीत गो गो त्राता गोपाल । गरुड़ ध्वज गौरीश प्रभु निशि दिन भज कुंज लाल ॥ ४ ॥ घोरदेपूखर घनश्याम घन घायक भवरुज जाल । घनाधीश प्रभु अघ हरण निशि दिन भज कुंज लाल । ५ । चतुर्वेद चिंता हरण चतुर्वेदपथपाल । चिदानंद चित चोर चिर निशि दिन भज

कुँज लाल ॥६॥ छिति बल्लभ छिति जाप्रभू छिति न पुत्र ब्रज लाल। छिति त्राता छिति धर हरी निशि दिन भज कुँजलाल ॥७॥ जगन्नाथ जगता भरण जलशाई जग पाल। जग जनक जी मृत वपु निशि दिन भज कुंज लाल ८॥ कष्टस्वरूप लावण्य निधि दीना नाथ दयाल। हरण असंगल सुख करण निशि दिन भज कुँज लाल ॥९॥ ठाकुर श्रीधर अजर अज अज कर्ती जगपाल। किल्विषहर कमला रमण निशि दिन भज कुँज लाल ॥१०॥ ढूंढ़िराय वंदित हरी हरिहर सेव्य दयाल। कलिमलहर अच्युत अनघ निशि दिन भज कुँज लाल ॥११॥ तुलसी प्रिय त्रै लोकपति त्रै गुण रूप त्रिकाल। पुरातीण अदपोस प्रभु निशि दिन भज कुँज लाल ॥१२॥ यंमन त्रै जग पिव वपु यज्ञी वर रूप विशाल। जलधि सुतेपूजर श्री रमण निशि दिन भज कुँज लाल ॥१३॥ दीन बंधु दारिद दमन दामोदर दृग पाल। दया सिंधु देवकि सुवन निशि दिन भज कुँज लाल ॥१४॥ धरणी धर धाता धरम धनाधीश सुत पाल। धनु धारी धरणी पती निशि दिन भज कुँज

लाल ॥१५॥ निगुणा निरंजन निगम पति नीर
धजा उर माल । निगम नीति नेता निपुणा निशि
दिन भजु कुँज लाल ॥१६॥ परमेश्वर परमात्मा
पुरुषोत्तमपुर साल । पतित उधारणा पर अपर नि-
शि दिन भजु कुँज लाल ॥१७॥ फणिपति शाई
फणिप हरि विबुधेश्वर रिपु काल । बैन तेय ।-
गोपी अभू निशि दिन भजु कुँज लाल ॥१८॥
विभु विश्वमय विश्वपति व्यक्ता व्यक्त वि-
शाल । वेद तत्व वारिज नयन निशिदिन भजु
कुँज लाल ॥१९॥ भय हृत भय कृत भुवनपति
भग वन भूमि भुवाल । भवनायक भगवान ह-
रि निशि दिन भजु कुंजलाल ॥२०॥ मधु सू-
दन माधव हरी महि त्राता सुर काल । मेधावी
मधु रिपु मधुर निशि दिन भजु कुँज लाल २१
यज्ञेश्वर यम भय हरण यज्ञ पुरुष यम पाल ।
यदु नंदन यशुदा सुवन निशि दिन भजु कुँज
लाल ॥२२॥ रमा रमण रति पति वपुष रति
पतीश चक्रपाणि पाल । रघुवर राघव सिय रमण
निशि दिन भजु कुंज लाल ॥२३॥ ललित रूप
लावण्य निधि लोका लोक भुवाल । लक्ष्मी वर
लक्ष्मी रमण निशि दिन भजु कुँज लाल ।२४।

श्यामन त्रास हर श्रीलनिधि शंभु ईश श्री पाल।
अक प्रभु रिपु शंख धर निशि दिन भजु कुंज-
लाल ॥२५॥ सिंधु सुता पति सुख सदन सर
सिज नयन विशाल। सुर त्राता सीता रमण नि-
शि दिन भज कुंज लाल ॥२६॥ हरि ईश्वर ह-
र स्वामि हरिहयी केश हय काल। हय ग्रीव
लक्ष्मी रमण निशि दिन भज कुंज लाल॥२७॥
अलख अगोचर अगम अज अविकारी अज
पाल। अकल अनघ अद्वैत हरि निशि दिन भ-
ज कुंज लाल॥२८॥ इंदा प्रभ इंदारि रिपु ई-
श्वर अशरण पाल। इंदु मुखद इंदा रमण नि
शि दिन भज लाल॥२९॥ उमा रमण पति ज-
गत प्रभु श्री वल्लभ जगपाल। उमा महेश्वर से
व्य हरि निशि दिन भज कुंज लाल॥ ३०॥

अथ श्री हरि नामा वली

सोरठा

गण नायक गण राय रिद्धि सिद्धि दायक प्रभो।
करहु कृपा सुखदाय वरणौं हरि नामा वली २वं
दौ मंदिर श्रीपति श्रीलक्ष्मी पति के चरण। जे-
हि वन्दत अज ईश नारदादि ध्यावत सदा २
नमो नमो सुख कंद विष्णवे प्रभु विष्णवे।-

मिटै सबै भव फंद जाक सुमिरण मात्र तें।३॥

दोहा

श्री रमण श्री नाथ जू श्री वल्लभ श्री राय। श्रीईश श्री सुकव कर श्री निवास श्री दाय ॥१॥ श्री निकेत श्रीधर हरी श्री स्वामी श्री धाम। श्री कांत श्री बल्लजू श्रीकर श्री अभिराम ॥२॥ श्रीपीव श्री प्राण पति श्री नायक श्री अंग। श्री मुकंद श्री चित हरण श्री भर्ती श्री रंग॥३॥

छन्द

क

कमल नाभि कमला वर केशव कमला सनिउर हारू। कमल नयन कामद करुणालय कमला प्रभु कर्त्तारू १ कमला पति कमला सुख दायक कमला प्रभु कलि कालू। करुणा मय कलि कलुष विमोचन काल नेमि उर सालू २ कलि मल हारी कैटभ नाशन करुणा वपु कंसारी। करुणा पुंज कौशिला नंदन कैट भारि कागारी ३ कुंज विहारी कंस निकंदन केशी पूत्र कृपालं। कृपा मूर्ति कालिन्दी वल्लभ कीरति जाउर मालं ४ कनक नयन जित कूरम कंची कीरति तनया स्वामी। कंसान्तक कमले-

पा कृपाल वपु कमला लया मिरामी ५ कृपापा
त्र काली मद गंजन काल यवन संहारी। कु-
बलयारि कौशिक मख त्राता कालिन्दी हित
कारी ६ कवंधारि कुबिजा सुख दायक कान्ह-
र करुणा केतुं। कपालीपा कृपामायुध रूपं।
कृष्ण कंज पति हेतुं ७ कुंज बिलासी कद्रू सुतप-
ति कंदायक कंयूपं। केतु सुतारिपु केपी घाय
क कुंती आतिमभूपं ८ कौशिलेपा कौपाल्या
हित कारकीसे प्रवर भय हारी। कूटस्थी का कु-
स्थ कंब धर कौरवेपा त्रपा कारी ९ कौशालेय
कालिंदी मोहन काल काल क्रमहेतू। कृपा
अगार कलिंद सुता पति कर्मी कृपा निकेतू ॥
कुंभजेपा कल वोध निवारी कनक कशिप
दमनीया। कद्रू नंदन अरि पति कंजी कंबु कं
ठ कमनीया १० कप्पय सुवन कपिल कल मो
चन कौपाल राय कुमारं। कौपाल्या आनंद
बिवर्द्धन कोमल चित्त उदारं १२ कौशिक रिपु जि
त करुणा मूरति कैवर्तक बरदाई। कुंज लाल भ-
जु किल्विषहारी कमलेप्रवर चित लाई॥१३॥

रव

स्वर दूषणा जित खगा पति गामी खल गरा

शत्रु खवारी । खंग पतीपा खंजारि बिनाशी खं-
जा धिप हितकारी१४ खंअभिरामी खं सुख दाय-
क खंवासी हित कर्ता । खर बाँधी खंजेप्रवर भ्रा-
ता कुंजलाल भयहर्ता ॥१५॥

ग

गरुड़ ध्वज गोबिंद गदा धर गोबासी गोपाली।
गुण निधान गोतीत गुणालय गोद्विज रिपु उ-
र साली१६गुण निकेत गुण रहित गोपिपति गि-
रा गम्य गोपेशं । गिरिवरधारी गोपी नाथं गो
प सखा गलि केशं१७ गुह्य गूढ़ गोलोकनि वा-
सी गगन चेरप्रवर स्वामी । गुण सागर गिरि जे
प्रवर नायक गोपी जन उरधामी १८गर्ब घायक
गोसुख दाई गीबाँणा पति नाथं । गज उद्धारी
ग्राह उबारी गोपी जन सुख गाथं१९ गुण आकर
गो ज्ञान प्रकाशी गोरक्षक गो चारी । गरल कंठ
पति गीश उधारी गाधि तनय हित कारी२०गंगा
धर प्रभु गरिणा का तारणा गोसाँई गो कर्ता । गो-
कुल चंद ज्ञान रवि ज्ञानी गोप गोपिका भर्ता२१
गर्ब प्रहारी गोरसदानी गति आगति दुख भ्रा-
ता । गाङ्गेय प्रभु गोकुल ईप्रवर गीबाँणा पति
भ्राता२२ज्ञानगम्य गोवर्धन स्वामी गोपी कांत

गजेशं। कुंज लाल प्रभु गजभय हारी। सुरमुनि प्रानन कलेशं॥२३॥

घ

घन वपु घोरव मुतेश्वर घटज प्रभु घोषेश्वर घनश्यामं। कुंज लाल प्रभु घोष विलासी घोषपाल अभिरामं॥२४॥

च

चिदानंदचतुरानन ईश्वर चंद्रावलि सुखदायं चतुर्वेद विद चित्रा स्वामी चतुर चराचरगयं।२५ चक्र पांणिा चक्री चक्रा युध चतुर्बाहु चक्रेशं। चतुर्व्यूह चारणूरनिपाती चंद्रावलिहृदयेशं२६ चतुर्मूर्ति चातुरता आकर चिर थिर वपु चित्त वासी चरित सिंधु चंडीश्वर वल्लभ चिंतान्त कचित राशी २७चंद्र वदन चंडी पति वंदितचतुरानन कर्तारं। कुंज लाल प्रभु पतित उबारण चित्रा प्रभु अविकारं॥२८॥

छ

छमा निकेत छमाधर छबिनीधछत्र पाल छविचंद्रा छिति धारी छिति रिपु संहर्ता छितिज नाथ छवि कंदू २९ क्षत्री रिपु क्षत्री वपु धारी छिति नंदन छयकारी। कुंज लाल भजु सदा छबीले छि-

तिबल्लभ अविकारी ॥ ३० ॥

ज

जगन्नाथ जगदीश जगत् पति जगत्ते श्वर जग पाली । जग नायक जग स्वामि जगत् हित जनक सुता उरमाली ३१ जलशाई जन भव रुज हारी जनका तिस अभिरामी । जगता धार जगत् भय नाशी जन गरोपा जयधामी ३२ जरा रहित जन दोष विभंजन जगमिंधि उरमालू । जलज नयन जाम्ब वती बल्लभ जाम्ब वान रुचि पालू ३३ जग तपोष जल जातक धारी जीवेश्वर जन राई । जिष्णु पाल जगता नँद दायक जग व्यापक जय दाई ३४ जड़ चेतन वपु जनक सुता पति जगत् ऐन जग रूपा । जलज नाभि जल धातिस स्वामी जन पोषक जगक्षूपा ३५ जगाज्ञनक जन कातिस प्रीतम जग मग्गा दुरव नाशी । जित वादी जग यूप जीव हितु जन हिय आनँद राशी ३६ जलज नेत्र जग जाल नेवारी जलज हस्त जग कर्ता जलधि सुता पिय जल विश्रामी कुंज ग्रंभ रुजहर्ता ॥ ३७ ॥

झ ट ठ ड ढ

झष स्वरू झष केतु उपायक टीकमठाकुर प्रणा

मं। डमरूधर उरकमल दिवाकर दुंदि राय शु-
भनामं॥३८॥

त

तत्वातिम त्रै ताप नशावन तत्व ज्ञान उपचारी
तत्व स्वरूप ताडका भंजन तम अज्ञान निवारी३९
त्रगुणा रहित त्रैलोचन स्वामी त्रिपुरारी सुखदा-
ता त्रकालज्ञ त्रिपुरारा संहारी त्रै जरा जीवन पित
माता ४० त्रैविक्रमत्रदशेश्वर ईश्वर तम चर कुल
संहर्ता। त्रै विधि भ्रम भयहर त्रापुरारी त्रदश
पाल हितकर्ता ४१ त्रलोकात्म त्रदशारी घायक
त्रगुणा रूप त्रैकालं। तम चरारि त्रै व्याधि बिभं-
जन त्रिगुणा जाल प्रतिपालं ४२ त्रिभुवन ईश्वर
तीता तीतं तीरथ वपु तम हारी। तामस रहित ता-
मसी भय हर तंत्र मंत्र सिधकारी ४३ तुलसी प्रिय
तंत्री तत्वादी त्रदशाधीश भुवालं। कुंज लाल
प्रभु त्रिभुवन नायक तरुणा व्रत उर साल्ह॥
४४॥

थ

थिर चर ईश्वर थकित सहायक थिर चर हृद-
य स्वामी। थिर चर वंदित थकित विघतिहर
कुंज लाल रत्न नामी॥४५॥

द

दशारथ सुवन दिविज पति ईश्वर दिन मणि बंश दिनेशा। दाशारथी दशामौलि प्रहारी दीना नाथ दिगेशा ५६ दशारथ तनय दशानन वैरी दिति नंदन संहारी। दशा वद नारि दया लय दाता दिविजेश्वर हितकारी ५७ द्विविद निकंदन देवकि लालन देव पुत्र दमनीयं। दया श्रृंगार दिवाकर लोचन दिन मणि मुख कमनीयं ५८ दैत्यारि दावा नल मोचन दान वारि दनुजारी। दधि दानी दामोदर दुखहर द्रोपदि पति सुख कारी ५९ दीन बंधु देवेशा दीन हितु द्विज पत्नी मुख दाता। दुरामर्ष हारा वति वासी कुंज लाल पितु माता॥५०॥

ध

धर्म रूप धर्मेश्वर धृपनु धरा धार धनुधारी। धेनु कारि धन्वंतर धाता धीरज धर्म प्रचारी। ५१।

न

नंद सुवन नँद लाल नंद सुत नंद तनय नँदलालं। नित्या नंद नंद सुख दायक नंदांतिम नँद जालं ५२ नंद किशोर निरामय नर हरि नारायणा नविकारी। निराकार निः काम निरं-

जन नर बपु नवल बिहारी५३ नंद कुमारं नर्कनि
कंदन निगमे श्वर निधि रूपं। नक्त चरारी नं
द दुलारे निर्जर नायक भूपं५४ नभ जाधिप न
मु निर्जर भयहर नभ चर नायक नाथं। नि-
त्य बिहारी नीरज लोचन नाकेश्वर सुखगा-
थं५५ नमजेश्वर पति निगुणा निरीहं नीरधसु-
ता भिरामं। निराधार नर सिंह नरोत्तम नीरध
बपुष ललामं५६ नवनिधिदानव नीत चित्तबर नृ
जराधीश्वा भुवालं। निश्चरारि निश्चर कुल बैरी
नीरधजा उरमालं५७ निगम धर्म उपचारक नेता
नृजरारी लयकारी। नभ चेरेश्वा प्रभु नारा सहा-
यक नागारी भयहारी५८ निशि कर वदन नीति
निधि निर्जर निश्चर गणा भय दातं। नीरध नं-
दनि प्रभु नँद नंदन नव नीरधद्युवगातं५९ नलि
नजेश्वा नक्षगेश्वर नायक निमिष नीर जा नाहं।
नग्न जिती पति नगधर नागर निःकलंक नि-
र्गाहं६० नग्न जीतजा स्वामि निराश्रय नभ जरा
यभय हारी। कुंज लाल भज नीरध जापिय संत
तजन हितकारी॥६१॥

प

पद्म नाभ परमेश्वर पावन पद्मा प्रभु पौरणामी

पतित उधारण पालन कर्त्ता पद्मेश्वर निःकामी ६३
पुरुषोत्तम पूतातिम पारमित पूरण ब्रह्म पवित्रं। पुरुष पुराण परेश परंपर पद्मालया कलत्रं ६३ परशुराम परमानंद दायक पूतनारि पद्मेशं। पन्नगारि प्रभु पद्मा ईश्वर पीतंबर पित्रेशं ६४ पतित पालन प्रणतार तिहारी पारब्रह्म पर ज्ञानं। परम तत्व पद्मा अनुरागी पदुमन परम सुजानं ६५ पवन सुतेश परमगति दाता पर्वत जा पति नाथ। पुरायो येन पयोनिधि वासी पिना। कीश पयगाथं ६६ पिता महेशा पांडु सुत वल्लभ पशु दृष्टी उर हारं। प्रलंबारि पद्मीपय वपुषं कुंज प्रभू अविकारं॥ ६७॥

फ

फणी पतीशा फणी रिपु स्वामी फणिाप शायन फणिा गई। फणिा मणिा बल अभिमान प्रहारी कुंजलाल सुख दाई॥ ६८॥

ब

व्यक्ताव्यक्त सुखा मोहन विश्वंभर वनमाली। विश्वेश्वर विश्वागति हारी विदुधारी बलशाली ६९ विश्व विहारी वासव भय हर विश्व रूप विधि नाथं। विश्वकशायन विश्व हित कारी

विष्वो पर बुध गाथं७०विष्व रूप विबुधेशा सहायक वारिध तनया ईशं। वषट् कार विजयी विधि कर्ता वसुधा धर वागीशं७१ विष्वा धार विमल वर वीरं विष्वथाल बुधि वंतं। वैनतेय प्रभु वसुधा पाली विज्ञानी बल वंतं७२ वैरोचन प्रभु वावन विनयी विष्व कर्मा वर दायं। वलध्वंसि विबुधा धिप कामद वारिधराधि परायं७३ वरुणा लय तनया चित्तहारी ब्रह्मादिक सुख कर्ता। वरुणा स्वामि वैकुंठ ब्रकोदर वारिध नंदनि भर्ता७४ वृंदा प्रभु हृदा पति घायक ब्रषभकेतु हिय वासी। विपत्ति विभंजन वारिज लोचन वचन गम्य वलराशी७५ विष्व जनक वाराह वेद विद विष्वं विष्व भिरामं। वक्र दंत जित वारिद अंगं वुद्धि वाद जित वामं७६ वेद रूप वैदेही वल्लभ वैदर्भी चित्त चोरं। वसुदेव सुवन विदर्भी प्रीतम वासव जित रणा छोरं७७ वैदर्भीप्रा वलेप्रा वाँरणा जित वालिसहोदर मित्रं। वरुणालय जा स्वामि व्रजेश्वर वारिज वदन विचित्रं७८ हृषभ केतु धनु मंजन कर्ता वाँरणा वदन उर वासी। विबुध आदि वसुधा सुख दायक वेदानन व्रज वासी७९ वैदेही प्रभु विपिन विहारी वासव सुत

त्रसकारी । विप्रवेत्त बलधाम बकारिए विबुध शत्रु संहारी८० बंशीधर ब्रजतनया मोहन ब्रजना यक ब्रज चंदू । ब्रज वल्लभ बलभद्र सहोदर ब्र जवनितासुखकंदूं८१ ब्रज भूषणा बैकुंठ बिलासी बिष्णु बकीउर शाली । ब्रज मोहन हय भानसुता पति ब्रजललना हियमाली ८२ बिरजा प्रभु ब्रजराज बेणुधर ब्रजतनया सुखमूलं। ब्रज पालक हयभासुर नाशी बलभ्राता बक शूलं८३ब्राह्मणा प्रिय बलबीर बारणी बाणा सुर बल हानिं । बिरजेश्वर वसुदेवसूनु॥बर वासुदेव बलरवानिं ८४ वत्सासुर जित बाली घायक वासव गर्व विनाशी । बिरुज बकारी व्योमा नाशी दृंदा विपिननिवासी८५ ब्रज नायक सुत बिरजा सुखदा वैदर्भी हिय वासी।ब्रं ज लाल भज सदा अहर्निशि बिडौजेश सुख राशी॥ ८६॥

भ

भुवनेश्वर भवस्वामि भूमि पति भुवि रिपु हा भगवंतं । भव खंडन भवसागर बोहित भवई श्वर भयहंतं ८७ भयहृत भय क्रत भृगु कुलदी पक भर्तारुज भगवानं । भव नायक भूवेदन

इर्ति मद वारिधजलयानं ८८ भद्रा बल्लभ भालुभु
ता पति भूत भव्य भवतेपं । भ्रमु जन सुखद भा-
नु कुल दीपक भानु जेष्ठ भर्तेपं ८९ भृगु पति त-
नया भार्याव भूधर भौमासुर वधकारी । भवरुज
हरका भूमिजा प्रीतम भुजग प्रायन भयहारी ९०
भुजंगारि प्रभु भू अरि मर्दन भूतातिस भृगु बं-
धो । भूसुत गंजन भौमी हितकर भद्रा उर अव-
तंपो ९१ भंडानन भृगु हेत भास्कर भालुजेष्ठ भृ-
गु नंदू । भानु वंपा अवतंपा भीम प्रभु भद्राहि
यसुख कंदू ९२ भीषम प्रभु भंडीर विहारी भूनं-
दनि उर मालं । भीष्मकजा प्रभु कुंज जनेप्वर
भूमि सुखद उरशालं ॥ ९३ ॥

म

मंगल मणि मर्यादा मूरति सुर रिपु मुनि जन
त्रानं । मंगलीक मुनि पत्नी तारण महि तन-
या सुख दातं ९४ महिजा प्रभु महि भार उतारी
मंदोदरि पति कालू । महादेव महि वेदन हारी
मधु वारिपुउरशालू ९५ मांडवीपा प्रभु मथुरा
मोहन महा भूत महि राया । महि सुर प्रियम-
हि शत्रू घातक महा मूर्तिमधु काया ९६ मंदिर
धरमधु सूदन माधव महातेज सुर त्रातं । म-

मथ रिपुपति मदन मनोहर महावीर महि मित्रं ९७ मनसि नवषु मधु दलन मुरारी मर्कटेश हित कारी। मिहानीषा स्वामि मधु वैरी मेघणाल मद हारी ९८ मयवा स्वामी मंगल दायक मदनारी सुख दाता। मदन गोपाल मैथिली वल्लभ मथावी मनि गाता ९९ महिजा भ्रातृ मही जा धीतम मुरली धर मथुरेशं। मित्रविन्द चित चोर मुकुंदं मिथिलेशवरद्दयशं २०० मखेश्वर रिपु मानद मानी मारभ्रातृ उरबासी। मत्स्य रूप महि भ्रातृ निकंदन कुंज लाल सुख रासी॥१०१॥

य

यदु कुल नंदन यादव यदुवर यदु कुलेशा यदु राई। यदुकुल तिलक यमेशा यमुन पति यादव जन सुख दाई १०२ यशुदा नंद यशोमति लालन यशुदा सुत यशा रूप यम भय हारी यमुना बल्लभ यशा दायक गणा रूपं १०३ यज्ञ पुरुष यज्ञेश्वर यज्ञी यवनेश्वर उरशालं। कुंज लाल प्रभु यशुमति प्यारे यशुदा सुवन यशालं॥१०४॥

र

रघु कुल मणि रघुवीर रमाबर रघुनायक रणधीरं। रघुकुल भूषण रमा मनोरम रघुबर

राघव बीर१०५ रमा रमिक रघुनाथ रमेश्वर राम र-
मा उरमालं । रघुनंदन रघुराय रमा प्रिय रावणा
रि रघुलालं१०६ रघुकुल दीपक रावणा वैरी रजनी
चर कुल हानिं । रमा स्वामि प्रभु रघुकुल केतु
रिक्ष राय मुख दानिं ।१०७। रवि कुल भूषण रवि
मंडल मंडन रवि कुल कमल पतंगं । रमा प्रा-
णपति रवि कुल चंदू गति पति रूप अभंगं ॥१०८॥
राधा कांत राधिका वल्लभ राधा नाथ रमालं । रा-
धा मोहन राधा प्रीतम राधा रमण कृपालं ॥१०९
राधा कांत राधिका स्वामी राधा प्रिय रस खानिं
रास विलासी राम रमेश्वर रामानुज सुख दानिं
११०। रुक्म रुक्मणी कांत रमण प्रीतम रुक्मिणीश
रा अभंगं। रजनीश्वर रवि लोचन गतिपति रवि तनया उ-
द्धारं १११ गति नायक जित रिक्ष सुता प्रभु रवि नं-
दनि हितकारी । रमा रमण रवि रविजा मोहन
राज मौलि उर धारी११२ राजक प्राण हा शीतल ।-
लोचन रिपुसूदन रमा छोरं । कुंज लास भजु र-
मा विहारी असुर ताप त्रै घोरं ॥११३॥

ल

ललितानन लक्ष्मी नारायण लोकेश्वर लेखेशं।
लक्ष्मी रमण लोक हितकारी लवणारी ललि

तेशं ॥११५॥ लक्ष्मी वल्लभ लोक विभूषण लोक लोकनिवासिं । लक्ष्मी वर लेखवारि निकंता लक्ष्मी हृदय विलासिं ॥११५॥ लंकेश्वर रिपु लीला अंबुद लेखवा रिपु संहारी । लेखवा मोहन ललिता पीतम लोकपाल भय हारी ॥११६॥ लांगूल धर लेखवा स्वामी लवणारिपु लव तातं । लक्षा लक्ष लक्ष्मी नायक लेख गणा धिप त्रातं ॥११७॥

श्री

शिव सुरति शिव स्वामि शंकर धर शमन ईशशिव धामी । शान्त रूप शत्रारि विभंजन शत्रा जिती भिरामी ॥११८॥ शत्रु निकंदन शक्र गर्व हर शक्र जीत संहर्ता । शांत चूड़ रिपु शीला मोहन शक्र भ्रात शिव कर्ता ॥११९॥ शंभु ईश शंखवा सुर बाधी शैल सुता पति नाथे । शमन रूद्र सा धन शीलाधीनम शमन स्वामि शिव गाथं । ॥१२०॥ शिव उर कमल दिनेश शैल धर शैल जस्वामी ईशं । शत्राजित तनया सुख दायक शंभवेश शक्रीशं ॥१२१॥ शिवा शाणा पति नाह शोकहर शूल पाणि हिय वासी । कुंज लाल भज शोच विमोचन शंखवा युध शिव रासी ॥१२२॥

ष

षट विकार जितषट ऋतु कर्ता षट ऋतेप्रा षट रागी। षट प्रास्त्रेप्रा षटऊ र्मि रहिता षट सुख ता बड़ भागी॥१२३॥

स

सिंधु सुता पति सुरपति ईप्सतर सुररंजन सर्वत्रं। सविता नंदनि पति सुर हेतुं सुरपालेप्रा स्व तंत्रं॥१२४॥ सर्वोपरि सर्वादि सर्व हित सिंधु जेप्रा सुखदाई। सहस्र मौलि सह सानन सौरी सिद्धा सिद्ध उपाई॥१२५॥ सत्य निकेत सुरा सुर बंदित सारंङ्ग पाँणिा समीरं। सरसिज नयन सुदामा हेती शोभा धाम सधीरं॥१२६॥ सविता प्रभु सति भामा वल्लभ सत्या रमणा सुरेशं। संत्रगारिसनकादिक सेवित सीताप्रभुसेवेशं॥१२७॥ सिया रमणा सिय स्वामि सिया प्रभु सिय वल्लभ सिय रामं। सत्या प्रीतम सीता नायक सीता वर शुभ कामं॥१२८॥ सदमा पति श्री दाय सनातन सवितेप्रवर जास्वामी। सुग्रीवेप्रा सहस्र भुज मौलि सुना सीर सुखधामी॥१२९॥ सत्क्रतु बंधु सु बाहु निषाती सावित्री पति भूपं। कुंजलाल प्रभु सर्वस दानी सुत्राता सुखयूपं॥१३०॥

ह

हयी केशा हरि राय हरी बपु हरी मित्र हरि बालं।
हरी हंस हिमिजा पति वल्लभ हिरण्य कशिपउ-
रसालं ॥१३१॥ हिरन्याक्ष रिपु हलधर भ्राता ह-
नुमत हृदय विलासी। हुतं हुताशन हुतवः भो-
गी हय ग्रीवहिय वासी ॥१३२॥ हनुमतेशा हरि
राय दुःखहर हेमचक्षु संहारी। हिमि तनया
पशु हृदय विहारी कुंजलाल हित कारी।१३३॥

अ

अगुणा अगोचर अलख अनामय आदिपुरुष
अविनाशी। अमित अनंत अनादी अविगति
अनुपम आनंद राशी ॥१३४॥ अधम उधारणा
अवध विहारी अकल अनीह अकाया। अज
बंदित अमरा धिप नायक अनघ अकाम अमा-
या॥१३५॥ अशरणा शरणा अजात अबंधक
अध्यातम असुरारी। अखिलेश्वर अविकारी
अच्युत अजर अमल अघहारी ॥१३६॥ अरुज
अमोघ अवध पति नंदन अराम अचिंत कारूपा
कुंजलाल प्रभु अया निकंदन अंगदेशाअजभूपं३७

इ

इंद्र जीत जित ईश्वर इंदु इंदा प्रभु ईशानं। ईशो

पुवर वृंदा हितकारी कुंजलाल सुख दानं ॥१३८॥

उ

ऊर्मिलेश प्रभु उमा रमणा पति उत्तम उद्धव राणं।
कुंज लाल प्रभु उमा पतीश्वर सुरनर मुनि सुख
दायं ॥१३९॥

विष्णु नाम श्री दादुख भंजन दायक बहु सुख
छेमा। सुनँय सुनावैं जे नर चित्तदे सुरुचि सप्री
ति सनेमा॥१॥ नित नव सुख पावैं जग माँही
पातक ख्य मिटि जाई। कुंजलाल प्रभु रमा रमणा
पद हृदय प्रीति अधिकाई॥२॥ जय श्री पति श्री
रमणा मुरारी दुःख दमन सुख कंदं। कुंज लाल
प्रभु संकट मोचन शिव अज हृदया नंदं ॥३॥

दोहा

शक अंक युत रज निचर संवत सम शुभ जान। चैत
असित हरिदिन शुभग प्रगटी प्रति सुख खानि।१।

अथ कृष्ण नाम मुक्तावली

सोरठा

जय श्री नंद कुमार कृष्ण विष्णु राधा रमणा। ब्रह्म
शंभु कर्तार मुरलीधर माधव अनघ॥१॥

दोहा

कृष्ण कृपा कर कंवधर केशव करुणा केत। कंस

प्रभु कामण करण कारुणीक श्रुति सेवत कुंज
विहारी कंज दृग करुणा सिंधु कृपाल। कैट
भारि कुविजा मुखद कालिंदी उर माल॥२॥ कि
ल्विष हर कमला रसिक केशी रिपु कागारि। की
रति जा पति काम वपु कामद कलुष निवारि॥३
काल नेमि हा कुंज दमन कूरम कुज भरतार।
कुवलयारि कमला रमण कान्ह कपिल कर्तार
४॥ खंजा क्षिप पति खड्ग श्री खंदाता खंयूप।
खट्भुज खट ऊरमि रहित खट रागी खं यूप॥५॥गि
रि वासी गोपी रसिक गोपी नाथ गोविंद। गरुड़
ध्वज गोलोक पति गदा पाणि गोपाल किंद॥६॥
गोकुलपा गोपी रमण गोत्राता गोपाल। गोबा
क्षी ज्ञानी गुरू गिरा गम्य गुणा पाल॥७॥ घना
घीपा अभिमान हर घोष सुता अभिराम। घो
ष निवासी घोष प्रिय घोषपाल घनश्याम॥८॥
चिदानंद चिंता हरण चक्र पाणि चित चोर। च
तुर्व्यूह चतुरातिमा श्री मुख चंद चकोर॥९॥
जगज्जनक जीमूत वपु जगन्नाथ जगतेश। जगा
वंदन जनदुःख हर जन त्राता जगदेश॥१०॥ त-
त्व रूपचै लोका पति तुलसी प्रिय त्रिपुरारि। त्र
रुणा नयन तापहरण तरण तम अज्ञान तमारि॥११॥

दीनबंधु देवकि सुवन दया सिंधु दैत्यारि। दीधि
क्षानी दानव दमन दामोदर दुख हारि॥१७॥
दीन दयाल दयाल चित धेनु कारि धर्मेश। ध-
र्मोधाता धरणि धर धनपति ईश धनेश॥१८॥
पुराणोत्तम परमातमा पुरुषोत्तम परमेश। पुरुष
परंपर परशुधर पुराणो पेत परेश॥१९॥ धरणि
मणि पति भूभार हर सुवनेश्वर भगवान।
भगवत भय हृत भय करण भव अंबुधि जल-
यान॥२०॥ विप्रवेरत वसु देव सुत वासु देव ब-
ल बीर। वंशीधर वसुधा पती वनमाली वर
धीर॥२१॥ विप्रवंभर विप्रवा भरण विप्रवे श्वर
विबुधेश। वैदर्भी पति वाग्मी वासव वसू बले
श॥२२॥ बल भ्राता विरजा रमण वासव जित
ब्रजराय। ब्रज वनिता हितु वेणु धर बकहंता
वर दाय॥२३॥ बकी काल हंदा प्रभू विष्णू वि-
श्व अधारि। विश्व विमोहन बौंण जित वसु-
धा धीश बकारि॥२४॥ नंद सून नंदातिमज नं
द नंदन न्हविकारि। निजानंद नव नीति प्रि-
य निराकार निरधारि॥२५॥ नंद लाल निष्क
ल निपुण नारायण व्रजेश। निगुण निरंज
न वर हरी नारसिंह निगमेश॥२६॥ मुरली धर

माधव मधुर मधु सूदन सुर काल। मदन मनो हर महि प्रभु महा मूर्ति महिपाल॥२२॥ मित्र विंद पति मेघ वपु मघवा धीपा मुकुंद। मेधावी मंगल करणा मधु जित सकलम इंद॥२३॥ महा वीर्य महि भार हर मन मोहन मुनि त्रात। महि सुर प्रिय मगधेपा अरि मनुपम मरकत गात॥२४॥ यदु नंदन यदुकुल तिलक यशुदा सुत यपू यूप। यमुनेपवर यमभय हरणा यदु पति यादव भूप॥२५॥ राधा माधव रास पति राधा रमणा रमेपा। राजिव लोचन रुज प्रामन राधा कान्त रतेपा॥२६॥ रामानुज रणा छोर रवि रुक्मिणिा प्रभु रमणीय। रमा रसिक ऋतु राज वपु रवि जेपवर कमनीय॥२७॥ लोक नाथ लावण्य निधि लोका लोकभुवार। लक्ष्मी पति ललिता रमणा लेखा स्वामि उदार॥२८॥ सुर त्राता प्रामणा प्यारणा सौरी सिंधु सुतेपा। सति भामा पति सुरभि हित सत्या रमणा सुरेपा॥२९॥ सर्वरत सर्वातिमा सर्वेपवर सर्वदि। सर्व घट व्यापक सुख निधि संतत प्रामन विषाद॥३०॥ प्रभु सेव्य प्रात्कारि रिपु शिव उर मानस हंस। प्रांत वपुष शिव रूप शिव शीली उर अवतंस॥३१॥ शोच विमोचन शंखधर

शमन स्वामि शिव गाथ। सत्राजित नंदनि प्रभू शक्र त्रात शिव नाथ ॥३२॥ हय:ग्रीव हय प्राणा हर हिर रायास जित वीर। हरी हला युध हरि प्रभू हरणा दीन जन पीर ॥३३॥ अधम उधारणा अलख अज अपर अपार अनंत। अनाद्यंत अच्युत अनघ आरत हर श्री कंत ॥३४॥ अविनाशी अविचल अजित अकथ अकाम अवंध। आदि देव अधिदेवता अनुपम आनंद सिंध ॥३५॥ असुरारी अपारणा प्राणा अगाह अमोघ अनूप। असुर निकंदन अघदमन अगाम अचिंतक रूप ॥३६॥ ईश्वर इंदीरी दमन उत्तम उद्धव स्वामि। कुंज लाल कामद सदा यदुपति के शुभनामि ॥३७॥ हरिके नाम अनंत हैं वेदन पावत अंत। प्रारद शेष महेश विधि बरणात अमित अचिंत ॥३८॥ मुख पावन ता हेतु कछु कहे अनगल भारि। कोविद गणा अरु संत के चरणा कमल उर राखि ॥३९॥ बिन्ती मेरी हेयरी विनवत हौं कर जोरि। जानि नाम हरिके सुखद छमो चूक सब मोरि ॥४०॥

अथपद

दशरथ नंदन राजिव लोचन सिय वल्लभ सिय

रमणा हरे। रघुनायक रघु बीर रमाबर जगज्जन-कधनुबाँणा धरे। रघुनंदन रघुराई राघव भंजन भव रुज तापहरे। विश्वंभर रघुनाथ सिया पति अकल अमल छवि पुंजभरे। अखिल भुवन पति रघुकुल भूषणा रघुपति रघुबर अपर परे। कुंज लाल प्रभु सीता नायक अनुपम राम विशाल करे॥१॥ सरसिज लोचन अवध बिहारी धनु धारी हरिरूपा अगार। अज अद्वैत अमोघ अचिंतक अंतक निश्चर विप्लव अधार। बिबुध शत्रुगंजन भय हर्ता कर्ता कामद अपर अपार। दाशरथी अविकारी अविगति त्रिभुवन बल्लभ अवध कुमार। अवनि सुता बर अयगव भंजी अलख निरंजन विप्लव भुवार। कुंज लाल प्रभु दशरथ नंदन राम रमाबर चित्त उदार॥२॥

चतुरानन सन कादिक बासव नहिं पावत जेहि ध्यान किये। निशि बासर करि योग युक्ति हरि धरत जासु पद माँझ हिये। जेहि की महिमा निगम न पावत नेति नेति की टेक लिये। थकित होत सह सानन बरणत शारद हूँ सकु चात हिये। ब्रज में सो हरि अगम अगोचर ब्रज बनितन के बश्य भये। गोप ग्वालि युत खेलैं बीथिन करत

अनूपम खेल नये। निशि दिन गोप गोपि हित चि-
तधरि तिनहीं के रुचि रंगरये। करत चरित्र सुहा-
वन पावन चित वत सुख अति हर्ष लिये। सुख
सनेह ब्रज वासिन को लखि गीर्वाण पति मोहि
गये। कुंजलाल प्रभु गोपी बल्लभ धनि ब्रज जन
श्री कृष्ण भये॥ ३॥

जय सिय बल्लभ राघव रघुवर

जनक सुता पति करुणा मंदिर सुंदर लोचन राम
अवनि धरि। अयगव खंडन अवध विलासी त्रा-
सी खल गण अकथ परंपर। अकल अबोध अ-
वध पति नंदन वंदन त्रैजग सेव्य अचरज हि
मुकुंद खरारी कामद मानद सीता नाथ विपति
हर। जगज्जनक यज्ञादि रमेश्वर ईश्वर धाता हं-
री जगत्भर। पुरुष पुराण दीन सुख दायक हाय-
क भव रुज सुर मुनि सुरतर। कुंज लाल प्रभु अ-
लख निरंजन गंजन सुर रिपु अंत रजनि चर।४।

सुनो सखी हरि की ये बतियां

मुरलि बजाय हमहिं बन टेरी शारद रैन अधरति
यौं। बन विच हमहिं परम सुख दीन्हो करिकरि
रसकी घतियां। बहुत खेल खेले हमसे मिलिगा
हिगहि लाई छतियां। मथुरामें अब बने उदासी

लिखन योग की पतियाँ। हम सब हैं हरि के रसबो
री हरिस्वरूप रँग रतियाँ। कुंजलाल प्रभु मिलि
वो चाहे नहिं भावैं ये बतियाँ ॥५॥

ऊधव हरिहि जाय समझावहु

होत अँदेसन खेती नाहीं तुमहीं ब्रज में आवहु।
श्री मुख हमहिं योग उपदेशहु अमृत वचन सु-
नावहु। चरण छुवाय हरो विरहा दुख निजस्व-
रूप दरसावहु। करिकै सिद्ध मनोरथ हमरे अप-
नो विरद बोलावहु। कुंजलाल प्रभु सिद्ध रूपकी
हम सन सेव करावहु ॥६॥

सुनु सखि कोहि बिधि पियहि रिझाऊं

कौन उपाय करौं जेहि सेती मन उद्योग नसाऊं।
रूप हीन अज्ञान अयानी बसत कुठा हर डाँऊं।
अवगुण भवन अधम अघ मूरति किमि पिय
के मन भाऊं। सखी सहेली निज हितवानी तिन
हीं से पतियाँऊं। तिनके संग फिरत निशि बास
र गुण सीखन नहिं पाऊं। अपने रुचि सब खे
ल रिझावैं नेकहु नहीं सकाऊं। अति निसंक
खेलत तिन सँगो मन उत्साह बढ़ाऊं। आयो दि
वस गवन अति नेरे निज हिय निपट लजाऊं।
पीव सदन में जाय सुलोचनि केहि गुण पियहि

लोभाऊं। कुंज प्रभू प्यारी तू आली मैं तेरी वलि जाऊं। ऐसो यत्न बतावो मोहीं जो करि पियसु खपाऊं॥७॥

सुनहु सखी तुम मोर सिखावन
रूपवती नहिं पीवहि प्यारी ना गुणा वंती पीवहि भावन। प्रेम निरंतर रीझत प्रीतम सो तुम करो यतन यह पावन। सखी सहेलिन को संग। त्यागो छाँड़ो इति उत आवन जावन। मनवच क्रम उर धरो आपने निर्मल पति पद कमल सुहावन। पतिकी प्यारा होत तजि छल बल लहो सुकव संताप नसावन। कुंजलाल पति चरण हिये धरि पतित होत सबही विधि पावन। कपट छाँड़ि सेवहु निज पति को सुखमा सदन दुसह दुख दावन॥८॥

सब विधि सुख सरिस नैहर मोरे
जननी जनक सुहृद अरु भ्राता मम सुख चिंतवत हैं त्रिगा तोरे। सखी सहेली मम हित रानी ठाढ़ी रहत सदा कर जोरे। लुब्ध भई सँगही सँग डोलैं रोस करत नहिं कबहुक भोरे। जेहि बिधि सुखी होउ सो करही विनवत युत अनुराग निहोरे। विविध सुकव दुवि नैहर सजनी कुंजलाल

कहि वरणा थोरे॥ ६॥

जिन भूलो नैहर सुख प्यारी

दिवस चार को यह सुख जानो समुझि बूझि रहु सबते न्यारी। जननी जनक सहोदर भ्राता औगृह जन परिजन सब झारी। प्यार करैं तब लगि-ये तेरो जब लगि सब विधि है तूँ बारी। शिशुता जात तरुणाई आये पियहि समर्पै करि सुख भारी। वरबस तजैं पठाय सासुरे बिलखैं बिलखैं दिन दो चारी। फिरि ये तेरे ढिग ना आवैं निजहिय देखो समुझ बिचारी। सुख दुख को साथी जो निज पति सोई बहु विधि करै सुखारी। अस जिय जानि पीवको ध्यावहु हिय धरि सुंदरि सीख हमारी। मन क्रम बाँणी करो यतन सोइ सुख बरतो पिय सदन सझारी। पिय प्यारी जो होहु सयानी दोउ कुल माँहीं बनहु तुमारी नातर होय निरादर तेरो भाँयत तोसों कुंज एकारी ॥१०॥

प्रगटे हरि बैकुंठ मुरारी

गदा पद्म अरु चक्र शंख धर इंदु वदन भुजचारी। अमल कमल दल लोचन मनुपम भृकुटि बंक चित हारी। मुकुट मौलि उति कुंडल

शोभित आनन दुति अरुणारी। कुंचित चिकुर कुंडल निपि निंदक तिलक भाल सुख कारी। चंद्र ग्रीवा बय अन्नत कंधर दसना वलि छवि भारी। उर वैजंती कर कदकंगद अपर अभूषण भारी। उदर मृदुल परिधन पीतंबर कंज चरण भय हारी। जननी जनक निरखि हरि शोभा यक टक रहे निहारी। करि अस्तुति कर जोरि भक्ति युत विनवै बारं बारी। तब बोले प्रभु शोभा मंदिर सुर नर मुनि हित कारी। तुम माँगयो मोहि सम सुत तप करि आयों सो चित धारी। कंस यशोमति हू अस माँगसो अतिकिंनती अनुसारी। अबहि यशोमति कन्या जाई सोई सुरति विसारी। तासु निकट हमको धरि आवो लावहु वह सुकुमारी। ताहि कंस की दीजो निर्भय निज संशय भ्रम टारी। मैं गोकुल विच बाल चरित करि अरु बहु असुर सँहारी। पुनि हत आय कंस को मारौ तुमको। करौं सुखारी। इतना कहि श्रीविष्णु रूप भये हरि निज माया विस्तारी। कुंज लाल प्रभु लीला सागर जय जय विपुल विहारी॥२१॥

अथ लीला

श्रीकृष्ण चंद वृषभानजू के

प्रथम

मिलाप की लीला

जय जग मोहन केशव कामद जय राधा हरिप्यारी तुम्हरी लीला हौं में वरणत देहु भक्ति शुभकारी। एक दिन ब्रज में खेलत खेलत कृष्ण चंद्र बल भ्राता। गये यमुन तट सखा भीर तजि सकल विघ्न के त्राता। तँह पहुंची वृषभान किशोरी लेन यमुन को नीरा। चंद्र वदनि सरसीरुह लोचन सजे बैंजनी चीरा। रूप राशि गुण धाम अनूपम छवि निधि तन द्युति गोरी। रतन जटित आभूषण भूषित दिये भाल बिच रोरी। देखतही मोहे मन भावन अच्युत अज अविकारी। लुब्ध भये निरखत छवि शोभा चितवत निमिष निवारी। धरि मन धीर कह्यो ब्रज मोहन हौ तुम केहि की बेटी। कहां रहति हो या ब्रजमाँहीं कबहूं नाहीं भेंटी। कहत भई वृषभान लाड़िली हम ब्रज नाहीं आवैं। सदा रहत हैं सखियन के संग खेलत अपने गाँवैं। हौं वृषभानु बबा की बेटी राधा नाम हमारो। बरसाने में गेह हमारो शोभा सुक्ख

अगारो। अवगान सुनत रहत हैं हमहूं नँद नंदन ब्रज माहीं। ब्रजमे घर घर दधि अरु माखन चोरी करिके खाहीं। हँसि बोले तब श्याम सयाने तुम्हरो कहा चुरावे। खेलन काजे या ब्रज सुंदरि तू कत नाहीं आवे। कान्ह नाम है मेरो प्यारी हौं यशुदा को बारो। मुद्ध स्वभाव तुम्हारो लखिवकै मोह्यो चित्त हमारो। उपजी साध हमारे हिय में नित खेलैं तुम्ह साथा। सदा रहो तुम आवत जावत सुंदरि सुखमा गाथा। कबहूं दूर नहिं सदन तुम्हारो सुनियत अवगान टेरो। तुम्है बबा हम मान दुहाई करत रहो इत फेरो। नंद बबा जब विदरक मँझारी गाय सँभारन जाँहीं। तुमहूं गाय दुहावन आवहु पैहो मोहिं तहाँहीं। रसिक शिरोमणि यशुदा लालन अरु हम मान दुलारी। रूप परस्पर मोहित ह्वैके थकटक रहे निहारी। या विधि प्रथम मिलाप भयो ब्रजमें वदि संकेत सोहावन। निज ग्रह गवने प्रीतम प्यारी कुंजलाल मन भावन ॥१॥

अथ बाट मिलाप लीला

नादिन ते हरि रूप निहारी श्री हम मान दुलारी। रहत विरह दुख दुखित नवेली तनकी सुरत।

बिसारी। एक दिन घरसे गई अकेली लेन यमुन को नीरा। मनमें चाहत दरस श्याम को व्याकुल महा अधीरा। करत बिचार पंथके माँही जो हरि को लखिपाऊं। निशि दिन रहौं चरणी लपटानी तन संताप नसाऊं। भुज सो गहि निज स्वामी पिय को अपने हृदय लगाऊं। सरवौं बांधि हिये में अपने कर की दाम बनाऊं। ऐसे करत मनोरथ प्यारी मन उद्योग बढ़ाई। ताही समय यमुनते आवत परे दृष्टि हरि राई। जीवन मूरि लख तसुख पायो रहि गई बदन निहारी। कोटि मदन जाकी बलि हारी जन दुख तिमिर तमारी। हियहुलस्यो आनँद उर छायो कंज नयन भरि बारी। गद्गद बचन कहत सुख सेती धरि धीरज उर भारी। मेरो चित तुमलियो चोराई मैं ढूंढत विथकानी। तउ सूझे नहिं हरत मोतन गोबिंद प्रानरिगपानी। अबमन लीन्हें कहां जात हो गहि भुज ठाढ़े कीन्हे। कोटि यतन सो जान न देहौं अपनो मन बिन लीन्हे। ऐसे झगरत प्यारी हरि सों गृह की सुधि कछु नाँहीं। तुम बिनु अपनो दुःख छबीले कहौं जाय केहि पाहीं। बिन देखे मुख कमल तुम्हारो मोसन रह्यो न जाई। गृह गुरजन तुमको जब

निंदैं सुनत परम कठि नाई। बसत कुसंगति मन क्रम बाँणी मैं अति पाय दुख पाऊं। रैन नीद नहिं मूँघन बासर कहलौ बिपति सुनाऊं। कुल गुरु कानि कहां लगि करिये उर संताप बढाई। हरहु कुसंगति को दुख मेरो लेहु मोहि अपनाई। केहरि ग्रासा पाय के मोहन यंबुक भय किमि कीजै। निज चरणान ढिग राखि दया निधि सुकख निरंतर दीजै। प्यारी बचन सुनत नँद नंदन निरखि हरषि उरलाई। पंकज पाँणि पर्सि तन बोले हियकी तपन बुझाई। बसत सदा तुम मेरे मनमें और सुनौं मो पाहीं। तुम्हरे हेत सकल ब्रज लीला प्रगट करी जग माँहीं। कुंज पुंज के लस्थल तुम्हरो वृंदा बिपिन मझारी। मोह बिबस कत होत दुखारी अपनो रूप बिसारी। या संकेत बँधो हित जानों हे हृषभान कुमारी। करिकै सैन मोहि तुम सुंदरि लीजो तहां हँकारी। सैन समीप ढिग तुम्हरे आई सुकख निरंतर देहौं। करि लीला अरु चरित सुहावन राधा ढाल कहे हौं। यह सम सीख राखि उर अपने अपने भवनैं जाई। यह गुरु कानि तजो जिन रंचुक राखहु प्रेम छिपाई। देखि परस्पर बदन अनूपम निज निज कारज लागे। दूसर।-

मिलन भयो या विधि सो कुंज धर्म अनुरागो।२

श्री राधा कृष्ण विहार लीला

कमल नयन हरि राधा नागर शोभा धाम सुखारी। गिरिधर केशव माधव मोहन विश्वंभर विश्व विहारी। मौलि मुकुट मुरली कर लीन्हे नव वारिद सम कोरे। वसन पीत श्यामल तन सोहै श्री यशुदा के वारे। छवि त्रिभंग युत अनुपम राजत रवि नंदनि के तीरा। मधुर मनोहर मुरलि बजावैं संग सखा अति धीरा। गई तहां छवि मान लाड़िली सुख शोभा गुण खानी। सखी सहेली निज संगालीन्हे सेवन यशुदा को पानी। परस्पर दोऊ निरखत हिये धीर ना धरहीं। मुख निरंतर के अभिलाषी सैनन बातैं करहीं। कह्यो श्याम कब मिलिहो प्यारी हिय की बाधा हारी। वदन मूंदि दृग मूंदे श्यामा शिर बेणी निहारी। अवधि पाय ब्रज वनिता मोहन राधा पति श्री नाहू। गये भवन अपने को सुरतहि हियमें धारि उछाहू। यद्यपि लाड़िली अरु नँद नंदन सैनन बातैं कीन्ही। तदपि सयानी सखी सहेली गति इनकी लखि लीन्ही। कहत आपसें सब मिलि हरुये सत्य सुनो हम पाहीं। मिलिहै

आज रैन ये दोऊ और बात कछु नाहीं। लैयमुना जल पद्मवासद नहिप्यारी सन्तितसहेनाहीं आवन की आस हृदय धरि मोदेती मनहि नवेली। नव सत करि शृंगार दुलारी सुमनन सेज सँवारी। करत मनोरथ दिवस बितानो भई रैन अँधियारी। हरिको पंथ निहारन लागी उत्कंठा गति लीन्हे। द्रुत उत फिरत परम बितताती हरि चरणान चित दीन्हे। युत अभिलाख प्रीति मन धरिके लगी पाँवड़े डारन। तुरतहि प्रीति भक्तिमयलखिवके प्रगटे जन भय हारी। उमग्यो नेह दुहू दिसि देखतमिले दौरि हरषाई। तेहि अवसर की बरणात शोभा गई गिरा सकुचाई। बसे रैन तँह सुख सों श्रीपति श्री राधेउर माली। गवने भवन आपने भोरहि चरित सिंधु जग पाली। मुदितभई वृष भान दुलारी मन भावत सुख पाई। चरण कमल हरि के उरधरिके हिय उत्साह बढ़ाई। कुंजलाल प्रभु कुंज बिहारी करुणा मय सुखधामा। येहि प्रकार बहु लीला कारहीं जगतेश्वरघन श्यामा ॥३॥

अथ मारवन चोरी लीला

चरणांबुज हरि के उर धरिके बरणौं गुरण गरण

लीला। जेहि विधि कीन्ही कुंवर कन्हाई माखन चोरी लीला। सखा सहित ब्रजराय नंद सुत ब्रज बनितन गृह जाई। करत चरित्र सुर मुनि नरमो हन दुरि दुरि माखन खाई। ब्रज की सकल तिय न ने जानो मन भावन गिरि धारी दिन प्रति फिरत खात दधि माखन सूने भवन सँभारी। सब के हिय उपजी रुचि ऐसी लाल हमारे आवैंदही दूध अरु माखन चोरैं लखि शोभा सुख पावैं। सबकी मनसा जानन हारे श्री प्रभु अंतर्यामी। सबके भवनहिं जाँहि नित्य नित भक्त सुखद निः कामी। कहूं जाय दधि माखन खाई मही देहिं ढरकाई। कतहूँ बछरहु छोरि भगावैं बालक देंहिं रोवाई। कहूं सखन युत माखन खाकै गोरस भाजन फोरैं। कहूं गोपिका जोदिग वावैं विहँसि तासु चित चोरैं। तरुणी किशोर रूप धरि कतहूं ब्रज नंदनि सुख दाई। कहूं आपबस गोप सुता को आप भजे हरषाई। कहूं चतुर्भुज रूप देखावैं कहूं बिनय बहु भाँवैं। कहुं लीला करि लीला सागर तिय उरकी रुचि राखैं। सब बनिता हरि के रंग राती मुदित होंहिं मन माहीं। जेहि के घर गोरस नहिं होवै सोउ ल्यावति

हरि काँहीं। ब्रज ललना हरि रूप लोभानी बिन देखे बिकलाई। उठ हन मिस यशुदा पंह जाहीं देखन कुंवर कन्हाई। कहैं तुम्हारो सुवन लाड़िलो निपट करै लँगराई। सदा सखन युत गोरस चोरैं देंय नहीं पकराई। सरस चीकने गोरसभाजन सो लैकवह फारै। मही छिरकि लरिकनडर वावैं अरु बछरू खरक छोरैं। तुम्हरी कानि आज लौ कीन्ही सहि गोरस की हानी। अब तुम बरजो अपने सुतको नंद महर की रानी। गोपि बचन सुनि बोली यशुदा अहो नंद मतवारी। रंचुक लाजन आवत तुम को कहत बचन अविचारी। बर्ष पांचको मेरो बारो चोरी करि कह जानै। तुम्हरी बातैं सुनै जो सूरख सोऊ सत्य न मानै। हरि सखन घरमे बहु तेरो तुमहूं सिगरी जानो। कौन कमी लखि धाम विराने चोरी हित मैमानो। मायस है यह निश्चय मोको तुम हरि के रँगराती। मिथ्या बचन कहत इत आई योवन मद इठलाती। कँह तुम योवन मद मतवारी कँह मोहन मेरो बारो। यहि मँह लाभ तुम्हे कछु नाहीं अंत जाय चित डारो। बचन गूढ़ सुनि गोप कुमारी रहि गई सीस नवाई। हरि को बदन सरोज।-

निहारी गई भवन रिसियाई। यक दिन अपने घर एक गोपी पकरि प्रथम को पायो सुंदर सुघर सलोनी मूरति दधि मुख कर लपटायो। पकरि बाँह लै चली तुरतहीं नंद रानी के पासा। तेहि मन कह्यो यशोमति लालन सहित विनय मृदु हाँसा। करि अति छोह छोड़ कर मेरो सुलरिव सु लोचनि बाला। नहिं त्यागो जब हरि के विनये चरित्र कियो नँद लाला। बपुष तासुके पति को धरि कै भये तासु के साथा। हरिको चरित्र न जान्यो ताने धरे हाथ सों हाथा। गई नंदघर भीतर जबहीं हँसीं नारि दै तारी। गहे हाथ यनिको इत आई बड़ि नि लज्ज यह नारी। चकित होय फिरि चितई जबहीं देखवो मुख पति केरो। तजी बाँह घूंघट पट कीन्हो भागि भवन निज हेरो। अपने भवन एक ब्रज बनिता खात दही भरि पायो। हाथ पकरि लै चली मातु ढिग अनुपम रूप सोहायो। मग बिच चरित्र कियो नँद नंदन कन्या एक उपाई। करता को ताके कर दीन्हो भयो न भेद लखाई। आप जाय माता ढिग बैठे पीतांबर शुभ धारे। मुकुट मौलि मुरली कर लीन्हे नव बारिद सम कारे। सखा सहित तंह खेलन बैठे अनुपम

सुंदर गाना। कमल नयन घनि वदन सुखंबुदय सुमनि के सुख दाता। तेहि अवसर वह गोपी आई बोली अति अनखाई। यसुदा तुम्हरो सुत मैं एकारो करत दूध भँडि हाई। ओरहन देत बहुत खुनसाती अब निज बारो चीन्हो। सुनत यशो मति लखि तेहि घाँई सखिन सहित हँसि दीन्हो। हँसि बोलीं तू बकति वृथाँ कत रंचुक देखु निहारी। तुव करमें कन्या को करहै के कर श्याम मुरारी। विस्मित हेरी गोप कुमारी कन्या निज कर जानी। सकुच मानि निज भवन सिधारी बड़ अचरज उर आनी। सब ब्रज युवतिन असमत की न्हो हरि को पकरि जो पावैं। अपने भवन राखि वे तिनको यसुदहि तहीं बुलावैं। एक दिन कई सहस गोपिन मिल धरि पाये गिर्धारी। कहत विहँसि के अबहम लेहै आपन दांव विहारी। छल बल तुम्हरे यसुदा लालन येकौ काम न ऐहैं। अबहीं आय तुम्हारी मैयी तुमको खेल खेलैहैं। तब सकुचाय कह्यो निर्दूषण हमैं छाँडि तुम देहू। फिरिहम ऐसो काम न करिहैं मानि बचन मम लेहू। हँसि बोली एक गोप किशोरी कछु जानत हम नाहीं। अपनो बचन सत्य हम

करि हैं महरि यशोमति पाहीं। अस कहि बहु सत्व रतिय तुरतहि गई यशोमति पासा। यशुदहि आवत जानि तुरतही चरित कियो सुख रासा। धर्यो रूप सब के पति केरो सब के कर धरि बाँही। सबतिय निज मन जानैं याही कान्ह हमारेहि पाही। सँग गोपी के आय यशोदा तँह कान्हर नहि देखी। निज पति बाँह गहे लखि नारिन परम अचंभो लेखी। क्रोध वंत ह्वै बोली तिन सों हौ निर्लज्ज तुम गाढ़ी। निज करसों पति को कर पकरे सब देखति हौ ठाढ़ी। गुरजन लोक लाज तजि दीन्ही केहि कारण तुम आली। सब बातैं मर्याद सहित हैं सदा सुकव प्रतिपाली। सब गोपी जब निरखीं हरि तन निज निज पति वपु देखी। तजी बाँह तिनकेरी सबहिन बड़ अचरज अवरेखी। कहैं गोप सब धनि धनि यशुदा आय छोड़ायो हमको। भिन्सारे से पकरे हमहीं दियो जान नहि बनको। अस कहि गोपगये बन धाँई आये हरि सुख कारी। मुकुट शीश मुरली कर सुंदर कहत मीर कह भारी। अपनो घरतू तजि कै मैया इत काहे को आई। घरघर ढूढ़ि फिरो ब्रज सिगरो तोहि कतहुं ना पाई। छुधावंत कबसे

मैं मैया मोहि नेक सुधि नाहीं। बेगि मोंहिदे माखन रोटी चलु अपने घरमाँहीं। कंठ लगाय चूमि मुख सुंदर हँसि बोली नँदरानी। ये सुंदरि तुम्हरे रस पागी फिरितीहैं बौरानी। पकरि बाँह निज निजपति केरीश्वर सेबाहर लावैं। निधरक कहत तुम्हैं नँद नंदन दधि नव नीत चोरावैं। इनको प्रेमनिरंतर लखि तुम इनहीं के घर जाहू। तुम्हरो बदन देखिये हर्षहि होय तुम्हे बड़ लाहू। कनियाँ धरि धरि तुमैहिं खेलैंहैं लेन यमुन जल जैहैं। मेवा अरु मिठाई सुंदर विविधि खेलौना दैहैं। सचलि धरेहरि कनियाँ माँहीं मैं नाहिं लेंव मिठाई। हि न सों खैहौं माखन रोटी बेगि देय किन माई। सुन तहि एक गोपी सुख सुंदरि लिये श्याम को कनियाँ। घरसों लाई माखन रोटी लगी खवान सुखदनियाँ। नँदरानी निजभवने गवनी कनियाँधरि बन माली। हँसे चिते गोपिन तन मोहन त्रिवन पति जगपाली। बहुरि एक गोपी घर माँही आये रसिक नँद लाला। मुकुट मौलि पीतांबर धरे उर सोहत बनमाला। सखा भीर निज संगहि लीन्हे लखि सूनो घर ताको। बिहँसि तुरत भीतर घर पैठे आय गई घर जाको। लखि ग्वालन यु

नंद कुमारहि बिनय कीन्ह कर जोरी। बड़ी अनुग्रह मोपर कीन्ही आये मम ग्रह चोरी। मदन पवित्र भये पद रजसों मम पातक सब गयऊ। निज किंकरि मोहिं जानि दया निधि दर्शन सुख मोहिं दयऊ। सिंहासन धरि परम सयानी बोली बचन सप्रीती। बैठह प्रथम कलेऊ करहु मानहु मोरि बिनीती। लाख ताको मति भाव निरंत रभक्त सुखद गुण धामी। मानि बचन तेहि केरे हितसों कृपा सिंधु निःकामी। बैठे सखा मीर युत तेहि घर ग्वालिन चरण पखारे। दिव्य रत्न जन भोज्य चतुर्विधि सेवा गण निकारे। धरे आनि गिरि धर के आगे और सखन के पासा। हित सों आप जेवावन लागी मुदित भये सुख रासा॥ सकल सखा युत भोजन कीन्हो उठे आचमन हेतू। कर पग धोय पान सुख दीन्हो भये सुखी सुख केतू। विदा माँगि निज भवन सिधारे केशव पूरण कामा। हरि स्वरूप हृदि कंज धारि के मुदिती मन सो बामा। येहि विधि चरित संत सुख दायक करत सदा बल भ्राता। सुर रंजन जन विपति बिभंजन कुंज लाल पितु माता॥५॥

अथ गोवर्धन लीला

जय ब्रज मोहन नंद दुलारे कमल नयन सुखकारी। जय जग बंदन यशुदा प्यारे सुर नायक भय हारी। हिये धारि पद कमल श्याम के कहौं गोवर्धन लीला। सुखदाई सद ग्रंथन बरणी पावन रुचिर सुशीला। नंद आदि जब सुर पतितजि के गिरहि कीन्ह सन्माना। सब मिलि जाय गोवर्धन पाहीं पूजन करि बिधि नाना। जब सुरेश मा-ख्यो मन माहीं बोल्यो सभा मझारी। धन के मद में भये बावरे नंदादिक ब्रज चारी। सब को गर्व हरौं पल माहीं राखैंहुं निज मर्य्यादा। बचैन हीं अब ब्रज मे कोऊ जीव सहित नंदादा। अस-अस कहि बोलि नीरधर भिगरे तिनसों कह्योस-गर्बा। अबहीं जाके ब्रज पर बर्षो धरे क्रोध तुम सर्बा। सप्त रैन दिन महा दृष्टि करि करहु उपद्र-व नाना। ब्रज को धन जन बचन न पावै करो। बचन परिमाना। सुनि आयसु निज पति को जल धर ब्रज मंडल पर आये। उमड़ि घुमड़ि भय-दायक गर्जहिं बर्षहिं क्रोध बढ़ाये। निज अँगुरी सों गिरहि बतावैं बर्षहिं मूशल धारा। चपला चमकै परम भयावन तड़पै घन विकरारा। ब्रज

वासी अतिभये त्रसित जब सकल गये हरि पासा। सरणा होत अब सबको स्वामी काहु कृपा सुखदासा। तब बोले हँसि यशुमति लालन तुम चिंता ना करहू। गिरिवर नायक रक्षाकरिहैं धीरज निजउ धरहू। हरि आज्ञा सुनि गिरि को विनये भरिभूमी निज माथा। ताही समय यशोदा नंदन भये हारी श्री नाथा। बाँये करकी लघु अँगुरी परख्यो गोवर्धन भारी। लखवत चरित अद्भुत हरिके रो चकित भये नर नारी। जन धन ब्रज को गिरि तर लैके जलसे सबहि बचायो। भये सकल विधि जीव सुखारी कोऊ दुःख न पायो। जल जो सिगरे जलद पवारैं सो गिरिपरत बिलाई। सप्त रैनि अरु दिवस बराबर भई दृष्टि अधिकाई। ब्रज को येकहु बारन बाकोण्य के जलद करि घाता। रहो न जल तिन पाँहीं रंचुक थकित भये सब भाँता। तब सब मेघ भये भय आतुर आये निज पति पाहीं। विनवैं सबमिलि हाथ जोरि कै बोलत बचनडेराहीं। सप्त दिवस स्वामी हम ब्रज पर वर्षे करि अति जोरा। सिगरो नीर अकारण खोयो रह्यो सकल ब्रज कोरा। सुनि सुरपति मेघन की बानी निज मन में सकुचानों। तिनसों बोल्यो वैसो तुम

सब मैं हरिको अब जानों। शरण जाय बहु बिनती करिकै अपने प्रभुहि मनैहौं। चरण सरोज परसिहरि केरे निज अघराश छिनैहौं। इंद्र बचन सुनि मेघ बिलाने ब्रज में भयो उजेरो। घन बिहून नभसो है निर्मल दिन मणि तेज घनेरो। तब प्रभु गिरिको धरयो भूमि पर मुदित भये ब्रज बासी। सब मिलि पूजे गिरिको विधिवत हिय हर्ये सुख रासी। घर-घर ब्रज बिच भयो अनंद्र सकल गोप हर्षाहीं। हरिके चरित बिचारत मनमें बहु पुलकैं तन माहीं। पुनि पुनि हरिके करको गहिके कहत यशोदा माइ। सप्त दिवस निशि कोमल करपर धारी गिरि गरुआई। यह लीला सुख दाई हरिकी जो बांचै चित लाई। कुंज लाल प्रभु गिरि वर धारी ताकी कौं सहाँई॥५॥

अथ दान लीला

जलज चरण गण पति उर धरिकै निज गुरु पद शिर नाऊं। बंदि प्रीति युत राधा माधव तिन के शुभ गुण गाऊं। भक्त जनन सुख दायक नद सुत मोहन कुंज बिहारी। नित नव लीला करहिं सोहावनि भय भंजन सुखकारी। मुकुट मौलि पीतांबर काछे लिये लकुटि निज हाथा। बन मा-

ला बैजंती पहिरे सदा भीर बहु साथा। बनमें जा-
य सखन सों बोले बिहँसि अमी सम बानी। दधि
बेचन ब्रज बनिता जाँहीं येहि मारग हर्षानी। लीं
जे गोरस दान सबन सों बहुत भाँति रिझकाई।
सुनत सखा सब हर्षमान ह्वै रहसे तारि बजाई।
बनमें ठटुकि रहे सबजँह तँह गहि मारग हर्षाई। ज-
ब बनि आई ग्वालि नवेली घेरो सबहिन धाई।
लखत अचानक भीर ग्वालिनी त्रिसित भई म-
न माँहीं। चित्र लिखी सीं रहीं सब ठाढ़ी बोलि
सकत कछु नाँहीं। हँसि बोले हरि सखा बेगि तु-
म देहु दान हरि केरो। और कछू भय उरना आ-
नहु इत उत चित्त न फेरो। सुनत नाम नँद नंदन
केरो धीरज उरमें धारी। बिहँसि ग्वालिनी बो
लीं तिनसों कितहैं कृष्ण मुरारी। करि चोरी नहिं
पेट अघायो अब माँगत दधि दाना। तब हम
बालक जानि सही सब अबना करिहैं काना। न-
ट वर वपु आये मन भावन बोले मुख मुसका-
ई। बड़ी पोच तुम गोप किशोरी करती बहुत
ढिठाई। हमरो दान यहां जो लागत सो तुम स-
ब बिसराये। गोरस लै जाती येहि मारग नित
नित दृष्टि बचाये। आज घेरि पायो मैं तुमको

लेहौं सबै चुकाई। बिन दीन्हे तुमहीं ना छोड़ौं देहु जाहु हर्षाई। हिये माँझ हरि के रस माती मुख मंह धरे रुखवाई। बोली बनिता तुम डर मोहन अब हम तजी ढिठाई। दधि माखन घर घरहे चोरत देखत भागि लुकाते। बन बिच आय बने अब ढाकुर अपनेहीं रँग राते। जैसे हो तैसे हम जानहिं नहि डरपैं तुम काहीं। कंस राय जो यह सुनि पावैं समुझि परे छिन माहीं। लेहु माँगि कै हमसों गोरस हम देहीं तुम खाहू। नहिं पैहो यक बूंद दान मिस सुनत होत उर दाहू। हौं ठाकुर मैं तीन लोक को तुम मोको नहिं जानो। मुख सँभारि बोलत हो नाँहीं बादत संक न आनो। कंस राय सन जाय पुकारो निज सहाय लेहि आनो। नाहि हतौं तुम्हरेही देखत मम भाबरा फुरमानो। कोटि यत्न किन करो नवेली जान तुमहिंज्ञ ब देहौं। सकल दिनन को दान आपनो करि लेखो जब पैहौं। बिहँसि ग्वालि तब कह्यो प्रयाम सों लीजो दान गिनाई। बसन पीत फटि जैहै झीनो चैली लेहु सियाँई। बैसे चाल चलो नँद नंदन जैसी होती आई। बनमें हमको रोंकहु नाँहीं देहु छाँड़ि लंगराई। हम जानति है तुमको नीके

कनियाँ माँझ मिलायो। लै लकुटी कमरी तुमला
न्द बनबन गाय चरायो। दुहत धेनु तुम को हम
देखी घर घरकी सुखमाने। घर घर चोरि दूध द-
धि खायो नेकहु नहिं सकुचाने। यशुमति मैया तु-
म को बाँध्यो तब हम जाय छोड़ायो। तजि वे ढंग
भये जो दानी मोऊ अब लखिपायो। करिकै क्रोध उ-
ठे गिरि धारी पकरि बाँह झकझोरी। दही दूध म-
हि दियो लुटाई बोले बचन बहोरी। कहां कहांकी
बात जोरिकै मोंहि दबका वनि नारी। अपनी सुरति
करतिहौ नाहीं सन्मुख भई उचारी। सकुची गिरा गू-
ढ़ सुनि गोपी कहत सुनो बनवारी। करत लाज तुम
नाहीं रंचुक बोलत बात लवारी। तुमतो कहत
हँसी में जोसो सुनत सखा ब्रज बासी। सत्य मानि
अपने घर कहि हैं ह्वै है हमरी हाँसी। तिन प्रति क-
हत बिहारी मोहन हम झूँठी कहिं भाँखैं। जेहि रु-
चि सों मोंहि ध्यावत कोऊ तेहिकी तसरुचि राखैं।
यह सुनि प्रेम बिवस भई सुंदरि हरि चरणान अ-
नुरागीं। चंद्र वदन छवि पुंज हेरिकै कहन वच
न असलागीं। नहिं समुझी हम अबलौ लालन
कौन दान तुम चाहौ। हम अबला कछु जानति
नाहीं तुमहीं सब निर्बाहौ। दधिको दान लेहु।

मन मोहन हम तुम्हरी बलि जाहीं। सुनत बचन बो
ले नँद नंदन दधि हम चाहत नाहीं। योबन रूपम
हानिधि अपनो समुझि हिये बिच दरबो। अंग अं
ग को दान होय जो देहु हमहिं करिलेखो। यह
सुनि सैनन मटकी बनिता हिये प्रेम सरसानो।
रसिक पुरंदर तुमहो मोहन तुम्हरी गति तुम जा
नो। यद्यपि योबन रूप हमारो योग तुम्हारे नाँ
हीं। तद्यपिदेति सकल प्रभु तमको तुमहीं संच
हु याहीं। सद मावन दधि जो हम लाई सखा स
हित तुम पावो। हम छबि निरखि हरषि बलि
जाहीं दधि दानी कह पावो। सखन सहित हरि
गोरस खायो मन मुदिती ब्रज बाला। अब तुम
सिगरी भई हमारी बिहँसि कह्यो नँद लाला। म
वन आपने जाहु सुलोचनि अब कोउ रोकै ना
हीं। मगन प्रेम रस ह्वै ब्रज बनिता गावनी निज
ग्रह काहीं। कुंज लाल संछेप बखानी हरि लीला
सुखरासी। रुचिर सोहावनि सब सुख दायक सु
मिरि हरी अविनासी। हरि को दान चरित जो गा
वै सहित प्रेम मन लाई। मुक्ति मुक्ति तेहि देहिं द
या करि गोपी पति हरि राई ॥ ६ ॥

अथ गोपी प्रेमातुर लीला

जय जय गोबिंद मदन मनोहर केशव कुंज विहारी। जय राधा वृषभान दुलारी जय गोपीश मुरारी। दान चरित जब बनमें कीन्हो नंद नंदन गिरिधारी। गोप किशोरी मोहन छबि लखि प्रेमातुर भई भारी। शिर पर डारि मदुकिया रीती बन बन फिरत भुलानी। मुख भाखहि कोउ गोरस लेहू व्याकुलता सरसानी। बन विटपन सन कहत सलोनी गोरस लीजे बीरा। जो न लेहु मोहन फिरि जाहीं बोलहिं बचन अधीरा। उत्तर न पाये सब मिलि कहहीं ये सब हरि रस पागे। मगन भये हरि ध्यानउ दधि मँह हरि चरणान अनुरागे। बड़ी बेर में एक तरु छाँहीं बैठी सब मिलि जाई। निज निज करन मदुकिया ढाँकत काहू न देखैं माई। कहति एक मोहन बड़ लंगर हमहीं बहुत खिझायो। लियो छीन हमरो सब माखन दही मही ढरकायो। कहति एक ये हो मन मोहन हमसन नाहि झगरियें। हमको जान देहु निज सदनहि नई रीति ना करिये। कहति एक हरि आय न परहीं गोरस धरो छिपाई। निरखि झगरि है यशुदा नंदन देहैं सब ढर-

काई। कहति एक येहो नंद नंदन हमरी बाँह न गहहू। अंचल छाँड़िदूरि से लालन कहबे होय सो कहहू। कहति एक हो नंद दुलारे कैसी रीति चनाई। दधि माखन लै लीन्हो सिगरो मनहूं लियो चुराई। कहति पुकारि एक हो मोहन गये कहां बन माहीं। लेव आय तुम दान आपनो हम जाती ग्रह नाहीं। परि गई दृष्टि मदुकियन माहीं तब बोली पछिताई। धरे प्रीपा पर गोरस आली कहूं गयो हर काई। तिन में से कोउ गोपकुमारी कछुक चेत उर आनी। कह्यो सुनोरी सखी सहेली मोरि सत्य यह बानी। गोरस नाहीं मदुकिन माँहीं ना कहुं गयो लुढ़ाई। हम सब हिन मिलि हरिहि समर्प्यो सो सुधि गई भुलाई। लीन्हे मदुकी बन बन घूमी गोरस बेचन काजा। इतनो दिवस बितायो भरमत समुझि होत उर लाजा। यामें दोष हमारो नाँहीं हरि ही ने सब कीन्हो। रूप ठगौरी हम पर डारी चितब्या कुल करि दीन्हो। सुनि मन हरयौं गोपकुमारी के हति चल्यो घर आली। बड़ी अवार भई वन माँहीं फिरि न आवैं बन माली। चली धाम को पगना उद्धो चित लाग्यो हरि माँहीं। हरि के ध्यान।-

जलधि मग्नानी देह गेह सुधि नाहीं। जिमि तिमि करि पहुंची ग्रह अपने भक्ति प्रेम की रासी। मन नहिं लागत ग्रह कारज में लोक लाज भय नासी। रसना रटहिं निरंतर कृष्णहिं हरि छवि आँखिन हेरहिं। मन क्रम वच हरि पद अनुरागीं इत उत चित्त न फेरहिं। गुरु जन ग्रह के जो कछु कहहीं सुनत श्रवन सो नाँहीं। ग्रह कारज सो काज न तिनहीं बसे श्याम मन माँहीं। होत प्रभात गोपिका सुंदरि गोरस भाजन लीन्हो। श्यामदरश अभिलाषा करिकै नंद गाँव चित दीन्हो। घर घर ढूढ़ति फिरति नवेली नँद द्वार पर जाई। लेहु दूध दधि मुखसों बोलै ढूढ़ै कुंवर कन्हाई। जो टेरै गोरस हित तिनहीं तासु निकट ना जाँहीं। खोजत फिरत चहू दिशि इत उत मन लाग्यो हरि माँहीं। उमग्यो प्रेम गूढ़ उर भीतर गोरस गयो भुलाई। है विह्वल वीथिन बिच बोलहिं लेहु श्याम ब्रजराई। काहि कोउ लेहु विहारी मोहन कोउ कहि गिरि वर धारी। काहि कोउ लेहु यशोदा नंदन केशव नवल मुरारी। काहि कोउ लेहु गोपाल हमारे कोऊ कहि नँद लाला। काहि कोउ लेहु यशोमति लालन कोऊ कहि ब्रज लाला।

येहि विधि बोलहिं सकल गूजरी सिगरी वीथिन माँहीं। तिनको प्रेम निरंतर लखि हरि मके धीरध-रि नाहीं। तुरत प्रगट ह्वै दरशन दीन्हो सुखी करी सब नारी। अपने सदन गई तब सुंदरि कृष्नचरण उर धारी। चरित सोहावन गोपिन केरो जो गावै करि नेमा। कुंज लाल प्रभु कृष्न चरण को बाढ़ै उर बहु प्रेमा॥७॥

अथ कृष्न गोपिका बिवाह लीला

बंदि हरि पद कमल पावन संत गण सुख दायकं। सुमिरि राधा नाथ यदुपति गोपि हित श्री नायकं। कहहुं चरित बिचित्र अनुपम हरण रूज मन भावनी। सुनत जाके भ्रम मिटैं सब भक्ति उर उपजावनी। ब्रज किशोरी गोप तनया रूप निधि गुण आगरी। तिन सदन मिलिकै कृष्न पति हित गौरि शिव सेवा करी। लखि निरंतर प्रेम सब विधि योग फल दाताहरी। दैसो वर हरि जू कृपा करि मुदित कीन्ही सुंदरी। मन रुचित वर पाय सुंदरिरैन दिन हरि ध्यावहीं। बढ़त प्रीति नवीन उर बिच निरखि हरि सचुपावहीं। निज वाक्य पुरवन हेतु हरि जू ब्रह्महीं मोहित कियो। हरि निकट सो जाय बनमें वत्स बालक ले गयो। तब चरित

निधि हरि गुणाकर आपही सब वपु धरो। लखि न पायो हरि चरित को ब्रह्महूं भूल न परो। लगन शुभ लखि गोपतिन के ब्याह विधि विरचत भये। निज सुता संग हरि सखन के ब्याह बिरचे सुचि हिये। अतिबली माया हरी की तासु वश बुज जन भये। हरि सखन को हरि न जानहि गोप अर्भक गनि लिये। सकल कंन्यन भक्त वत्सल रूप निज दरसावहीं। प्रीति अवि चल जानि तिन की पोच भर्म मिटावहीं। भयो ब्याह उछाह पूरण हर्ष युत सब कोउ भये। विविधि प्रीति जनाय दुहुं दिशि ह्वै विदा ग्रह को गये। इमि सकल बुज गोप तनया कृष्ण की पत्नी भई। मन रुचित पति पाय सुंदरि कृष्णही मय होगई। गत भयो यक वर्ष इहि विधि नित्य प्रगटैं सुख नये। विविधि तन धरि विबुधसाईं गोपिकन के पति भये। वर्ष बीत्यो तब विधातहि ज्ञान उर आवत भयो। निज हरित सब बाल बछरू दै हरिहि चरणान नयो। कृष्ण लीला धाम अच्युत रूप बहुतजि यक भये। विधि गयो निज लोक माँहीं कृष्ण निज भव नहि गये। सयन हित जब गोप बालक पहुंचे अपने गेहमें। तुरत युवतिन जानि लीन्हो कृष्ण नहिं या देह में। हरि सखन सों कहत

भई इमि काहहीं को जानहू। केहि भाँति तिनप्र-
ति नेम राखहु सत्य तुम कह मानहू। सुनहु भा-
मिनि कृष्ण कँह हम ईश गुरु करि मानहीं। कृष्ण
तिय जननी हमारी सत्य हम यह गानहीं। तब क-
हत भई गोप कन्या कृष्ण पत्नी हम भई। तुम ज-
हाँ भावे रहो तँह कृष्ण के संग हम रई। तियसुरवन
सों ये बचन सुनि चकित बालक ह्वै रहे। हिय समु-
झि घनश्याम लीला सत्य है सब हिन कहे। शि-
रनाय अरु कर जोरि तिन सब भांति बहु अस्तु-
ति करी। जयति जय श्री कृष्ण गोविंद गोपि नाय-
क श्री हरी। गोपिपति गोलोक नायक गोप क-
न्या नायकं। गोपि रंजन गो निवासी गो सुरवद श्री
दायकं। हरि उपासक गोप सिगरे कृष्ण पत्नी गो-
पिका। कुंजलाल प्रभु धन कृष्ण कामद धन्य ब्र-
ज की भूमिका ॥८॥

अथ नाग लीला

मौलि धरि गणा राय पद रज रिद्ध अरु सिधि दाय-
कं। वंदि श्री गुरु चरण अंबुज ज्ञान बुधि उपजा-
यकं। हिय सुमिर श्री रमण सुख निधि दीन हित
भय नाशनं। विष्णु अच्युत अनघ श्रीधर भक्त उर
परकाशितं। संत पद सर सिज हृदय धरि शिव

उमा उर धारिवकै। कहौं हरि के चरित पावन प्रीति यु-
त अभिलाषि कै। पियत जब रवि नंदिनी जल गो-
प गो सुरक्षित गिरे। अमी दृष्टि विलोकि तिनको
ज्याय हरि चेतन करे। पुनि हृदय अस सोचि श्री
वर नाग विष जल वियमयं। ताहि जल से कादि
बाहिर करहुं बज जन निर्भयं। चित्त धरि अस हेत
एक दिन संग बहु बालक लिये। यमुन के तट क-
दम तरु तर गेंद खेलन हरि गये। सखा युत हरि
खेल रचिकै कदम ऊपर चढ़ि गये। सब सखन
प्रति हँसि मुरारी भाँति यहि बोलत भये। भूमि से
तुम गेंद फेंकहु तरु चढ़े हम तेहि गहैं। वृक्ष परसे
हम पवारे तुम गहो हम सुख लहैं। युत सखा खेल
न लगे तब गेंद यमुना दह परी। साथही जिमि ग-
रुड़ अहि लखि माँझ दह पहुंचे हरी। जाय कै जल
माँहि गिरधर दीख यक शुभ कंदरा। तेहि मध्य
अति सुंदर मनोहर वापिका अरु मंदिरा। सुसुखि
शोभा खानि तेहि बिच नाग कन्या राजहीं। निज
काज सब लागी मुदित मन अंग भूषण बाजहीं।
शयन कीन्हे मध्य गृह में नाग काली सोहही। वि-
षम ज्वाल कराल उगिलत लखि वपुष तम मोह-
ही। निरखि कौतुक हरि कृपानिधि बाँसुरी को

ध्वनि करी। नाद सुन तहि सकल नागिनि घेरि ली-
न्हे नरहरी। लखि रूप अनुपम काह्यो हरि सन ना-
ग भामिन सुंदरी। कित बसत काह नाम तुम्हरो प्री-
ति जिय क्यों परि हरी। सुनि बिहँसि बोले कृपा क-
र निज कथा तुम भाँयहू। तब सुनो वृत्तांत हमरो भे-
द कछु जिन रारवहू। सुनो हमरो भेद बर्णाहि सत्य
करि तुम मानहू। पति हमारो नाग काली नाग अ-
धिपति जानहू। गरुड़ भय निज लोक तजि इत
आय कीन्हो बासहै। हम सहित इत रहत निभर्य
अंत काहुं न सुपास है। सुनि कृपा निधि बिहँसि ति
न प्रति भेद निज भाँयत भये। यदु बंश मरिा व-
सु देव के ग्रह आय हम नर वपु लये। बाल लीला
हेत फिरि हम नंद के घर आयेहैं। ब्रज में अब हम
सुनु सुलोचनि नंदसुत कह वायेहैं। कंस नृपसुर
कुसुम कारगा नंदही आय सु दियो। तासु हित य-
हि ठांव सुंदरि आवनो हमरो भयो। कहहि नागि-
न सुनहु मोहन गात आपन देखवहू। सुर कुसुम
दिग नाग सोवत बहु कठिन सो लेखवहू। अस
समुझि निज चित्त माँहीं कुशल भवन सिधावहू।
सुख करो तुम धाम अपने फिरि इते नहिं आवहू।
अति कोलाहल सुनि जो कानहूं नाग नायक जा-

गही। क्रोधहै धावे जो तुमपर कोटि विधि नहिं न्यायही। बचन सुनि कहि हँसि मुरारी नारदहु कहु मानहूं। कालहू किन होय वैरी युद्ध तासन ठानहूं। और तुमसन सत्य भाँखहुं सांच करि तुम मानहूं। असुर गण क्षय हेत जगमें जन्म हमरो जानहूं। महा निर्भय जानि मोको जान अहि दिग दीजिये। मम चरित अब लोकि मनमें सुकख अनुपम कीजिये। जाय लखि अहि रूप शोभा लै पुरजन घर जायहै। जाहु जू चुप चाप देखहु परत तुम्हरे पायहै। जानही अहि के निकट हरि मुरलिका अधरा गा धरी। तिन सबन गहि बाँह बरजो जोरि करबिनती करी। सुनि कोलाहल नाग जाग्यो श्यामतें अति रिसिभरो। काल सम धायो हरी पर हरि विचार ऐसो करो। अहि फण न प्रति नृत्य ठानो ब्रज के जन सुख पावहीं। होय मम कौतुक सोहावन देव मुनि यश गावहीं। नृत्य सुख मम संग बन बिच गोप तनय न बहु लहा। नंदादिह लखि सोइ सुख शुभ निज हृदय मुदितें महा। अस बिचारत बारि ऊपर आय हरि दर्शित भये। दौरि लपटो अहि पगन सों बहुत मन में रिस किये। त्वा ल हरिको काल बपु लखि दुकख बड़ उर आवहीं।

से बिकल बिलखाय बिलपहिं कृष्ण कृष्ण पुकारहीं। बज भये अमंगला भयावन लोग बिस्मित सोचहीं। फिरहिं दूदन हरिहि घर बन नयन वारि बिमोचहीं। नंद यशुमति फिरत व्याकुल चकित चैहुं दिशि हेरहीं। तन सुरत रंचुक न तिनहीं हे हरी हरि टेरहीं। जब यमुन तट जाय पहुंचे देखे हरि दहमें परे। नंद उर अति दुकव व्याप्यो मुर्छि धरणी तल गिरे। मोह वश उठि नंद यशुदा दह गिरन धाये तबै। अपर बजके जन तिनहि गहि राखि समुझाये तबै। बलराम तबहीं नंदसों करि बीनती बोलत भये। हरिहि कछु भय तात नहिं तुम धीर धारो निजहिये। कृष्णहू लखि दुखित सब को आपनी माया हरी। ज्ञान उर उपज्यो जबहि तब सबन मन थिरता धरी। जल बिषे हरि विषम मोहन चरण अति मोटे कये। नाग हरि पद छाँड़ि दीन्हो फुंकरे अति रिसि भरे। तब कृपा निधि कूदि नाके फणा के ऊपर चढ़िगये। सुनि ध्वनि मोहे चरा चर सुचि अमंगी गति किये। ब्रह्मादि सुर निज शक्ति संयुत नभ बिमानन सोहहीं। तिन रिवहरि छवि सुमन बरषैं बार बार बिमोहहीं। हरष उर बिच आनि अपने सकल जंत्र बजावहीं।

करहिं अस्तुति सेव हरि की और गुण गण गाव-
हीं। मन मुदित नंदादि ढाढ़े रूप अनुपम देखहीं।
तजि निमिष पद कंज निरखहिं अंत चित्त न फे-
रहीं। कालिया अति कोप उर धरि वार बहु हरि पर
करै। निज फनान विषज्वाल उगिले घात हरि की
मन धरै। हरि चरित निधि तेहि फनान पर सहज-
ही निरतत फिरैं। भाव कारि बहु भाँति सुख निधि
तेज बलता को हरैं। करत कौतुक फनान ऊपर
सिथिल नागहि करि दियो। हरि मन मुह वाय
मुर्छित रक्त बहु उगिलन भयो। लखि दशा ताकी
भयातुर नागिनी आवत भई। दशा अंबुज पूजिबि
धिवत करि बिनय चरनान नई। जोरि युग कर
करहिं अस्तुति प्रीति युत सब सुंदरी। जयति ज-
य त्रैलोक्य कर्ता विश्व मोहन श्री हरी। जय अल-
ख अद्वैत अच्युत अज निरंजन निर्मलं। अग-
य अविगति शंभु स्वामी जगत वल्लभ निःकलं।
जय धरणिधर संत भय हर दीन जन सुख दायकं
पतित पावन दनुज मर्दन असुर अरि जग नायकं।
जय सुरासुर ईश श्रीवर ज्ञान करुणा मंदिरं। नं-
दसुत गिरिधर मुरारी दीन जन बाधा हरं। अप-
राध यद्यपि गर्व केशव नाथ चरणानन्हि नयो।

ओर सन्मुख ह्वै दया निधि बहुतही ढीढो दियो। तदपि तुमहौ अधम तारण यह बिनय सुनि लीजिये। करि छिमा अपराध याको दास आपन कीजिये। अहिवात हम कँह दीजिये करिये दया करुणा मयं। अहिप भाखत कृत्य स्वामी हमहुं कीजय निर्भयं। सुनत करुणा वचन कोप्रभाव नागही त्यागत भये। नाग उठि कीन्ही बिनय बहुतहि प्रभु आय सुदिये। जानि तुम मम केलि महि यह ठौर अबही छांड़हू। गरुड़ भय अब नाहिं तुम कँह लोक अहि घर मांडहू। हरि चरण शिर नाय काली दीप रमणक को गयो। नंद ढिग घनश्याम आये हर्ष सबके उर भयो। देव हर्षित सुमन बर्षहिं गगन महि जयजय भई। श्याम कँह ब्रजलोग भेंटे करि बधाई सुख भई। जय हरी घनश्याम माधव गोपि नायक गिरि धरं। नंद नंदन कृष्ण कामद कुंज जन चिंता हरं। चरित पावन भुजग हरि को जे सुनैं अरु गावहीं। कुंज प्रभु गिरि धर कृपा सो सुकवे सब विधि पावहीं॥८॥

अथ रास लीला

गणा नायक पद वंदन करिकै बंदहुं निज गुरु चरणा। तम अज्ञान नशावन हारे सब विधि मंगा-

ल करणा। चरणांबुज हरिके उर धरिके बरणौं शुभ हरि लीला। संतत भक्त सुखद भय हारी दायक गुण गण प्रीला। शारद रैन श्री कुंज बिहारी गये विपिन रखवाई। शाणि संपन्न सोहावन नभ लखि मन मुदित हरि गई। मन उपजाय रास रुचि आछी मोहन गिरि कर धारी। रुचिर मुरलि का अधर धारिके कियो नाद सुख कारी। सुनि सो नाद चराचर मोहे युत सनकादि मुनीशा। चकित भये सहस्रानन दिग पति थकित भयो रजनीशा। ब्रज वनितन उर बढ़ो प्रेम रस तनकी सुधि बिसरानी। गृह कारज सबहिन ने त्यागो भई सबै दिवतानी। कोऊ जैंवावत पति को त्यागयो कोउ पति संगति त्यागी। कोउ पयपीवत बालक छाँड़ो कोउ जैंवत ते भागी। कोउ करत सिंगार जो अपनो मनहीं मन अनुरागी। उलटे पलटे पहिरि अभूषण दौरी हरि रसपागी। कोउ श्रुति कुंडल नासाघाल्यो वेसर श्रुति मँह राखी। एक आँखिको कज्जल देके कोउ गवनी अभिलाखी। जो जैसे तैसहि उठि धाई भई मदन मद बौरीं। अपनो मर्म कहत ना कोऊ तजि मर्यादा दौरीं। सुरत लाय वंशी की ध्वनि सों पहुंची हरि के पासा। घेरि लई चहुंदिशि

ते तिनहीं मनहर्ष सुख रासा। गुरुजन बपु जो जा-
त न पाई प्रेम स्वरूपिणी नारी। धरि हिय श्याम कले
वर त्यागी गई जहां अघहारी। मन बिच नेह बद-
न अति रूखे बोले कुंवर कन्हाई। निशा समय
तुम बन क्यों आई कहो गेह कुशलाई। ऐसो
साहस नाँही चहिये गुरु जन को डर त्यागी। त-
जी सबै मर्याद लोक की इत आई अनुरागी। नि
जपति तजि पर पति जो भजई तिय कुल वंतिन
होई। मरे नर्क अपमान जियतहूं तासम बुरो न
कोई। क्रोधी आंधर बहिर रोग युत मूरख अरु
धन हीना। ऐसेहु पतिके दुखत नारी होय दुखित
अति दीना। लव सुख लागि भजै पर पति जो व-
ड़ी कुमति वह नारी। बहुत जन्म बिध बाँसो होई
बहुते रहै दुखारी। नारी को पति देव कह्यो है सो
सेवै जो नारी। अमित सुकृत पावै दोउ जग में
बरात मुनि श्रुति चारी। अस जिय जानि जाहु नि
ज भवने मानो कह्यो हमारो। मन क्रम बचसे-
वो निज पतिको यामें भलो तुम्हारो। सुनि बिप
रीत बचन हरि को सब गोपी मुरझानी। मँई
मिथिल मुख बचन न आवै तन की दशा भु-
लानी। बहुरि धीर धरि बोली सुंदरि सुनहु ला-

ल वनवारी। हमहैं दासी चरणान केरी इमि किमि कहत विहारी। जो उरतुम पद प्रेम न होई सो प्रभु लोकहि जानैं। पितु माता गुरु जन भय मानव श्रुति विद सकल बखानैं। हमरे तो मन क्रम अरु बाँणी तुम स्वामी बालभ्राता। तन मन तुम्हे समर्प्यो हित की को पति को पितु माता। जो प्रभु त्याग हमारो करिहैं पाणा निछावरि करिहैं। चरण कमल तुम्हरे उरधरिके तुम देखत इत मरि हैं। भक्ति निरंतर तिनकी लखिके मिलि तिनसों सुखपाई। कह्यो कि तुमहो अतिप्रिय मोहीं कौरास चित लाई। सुनतवचन गोपी सब हरषीं लखि स्वरूप सुख मानी। अरस परस सुख लूटन लागीं अहो भाग्य निजजानी। विसु कर्मा प्रभु आज्ञा पाई मंडल तुरत बनायो। परम विचित्र अनूपम सुंदर सो लखि हरि सुख पायो। वस्त्रा भूषण विविधि भाँति के विसुकर्मा तंह आने। सो लैलै बज ललना गोरी तन सिंगारि सुखमाने। मंडल जोरि भई सब ठाढ़ी सोभागिन सुकमारी। प्रति गोपी वपुधारेव पावन लीला वपुष मुरारी। युगुल गोपि बिच यक हरि सोहतमधि नायक हरि राधा। करसों कर जोरे छबि देहीं शोभा सिंधु अगाधा। विविधि रूप सोहैं विबुधेशानिय

जानैं यक रूपा। सब अपनेहि ढिग हरि को जानी
निरतैं सुख अनूपा। ऐसे सब निज मन हर्षानीह
रिसमीप सुख पाये। यक को भेद न जानहिं दूस
रहरि माया भरमाये। नभ मुरगा वा यंत्र बजावैंह
रि चरणान चित दीने। किंकिंणा नूपुर तिन मिलि
बाजहिं कला ताल स्वर लीने। शिव ब्रह्मादि कदे
व नियन युत चढ़ि बिमाननभ आये। निरखैं हरि
छवि महा अनूपम कुसुमा वलि झरि लाये। निर
तत बिबिधि भाव उपजाये करैं चरित सुख कारी।
तन मन वारैं गीमि परस्पर सुख सों कहि बलिहा
री। कोउ पिक सम हरि के गुण गावति कोउ निरते
सुभ कारी। कोउ संगीत काला को धारे कोउ मटकै
दे तारी। झटकि मुरलिका कोउ हरि केरी निज मु
खलाय बजावै। कोउ निज तान अलग लै जाई
कोउ हरि संगहि गावै। लुब्ध भये तिन सँग हरिफि
रहीं अति प्राय प्रीति जनाई। निज परसों तिनको
सुख योंही करै वाव सुख दाई। भई प्रेम गर्वितम
ब बाला निज वपु हरिको जानी। हिय विच धार्यो
भाव मानको हरि सो गति पहिं चानी। गर्व प्रहारी
यशुमति नंदन लै वृषभान किशोरी। अंतरध्यान
भये लखि अंतर भई विकल सब गोरी। विरहा

नल मुख द्युति कुम्हिलानी बदति कहां सुखदाता।
कोहि अपराध हमैं बन त्यागी नँद नंदन बालभ्राता।
सकल दिशा हेरत अरु टेरत कहिहै कुँवर कन्हाई। बिन पद त्रान फिरत कत बनमें कुश कंटक गड़ि जाई। नहिं प्रगटे तब गई बन खोजन तन की सुधि बिसराये। हरि विहरत राधायुत बनमें इन की दृष्टि न आये। उत राधाहू गर्व धारि कै कहत भई मन माँहीं। मम बश भये यशोदा नंदन मो सम कोऊ नाँहीं। लोहित हरिने मुरलि बजाई अरु रस रास उपायो। सबको त्यागि मोहि संग लीन्हे करत जो मों मन भायो। अंत कहूं अब जान न दैहौं करिहौ निज मन भाई। अबतौ मैं निजे बश्य करि पाये नागर नवल कन्हाई। यह गर्व उर आन्यो प्यारी बोली हरि सों बानी। बहुत थकी मैं लेहु कंधरि माधव शारंग पानी। हरि हँसि कह्यो चढ़ो इत आई मुदित भई मन प्यारी। चढ़न हेतु निज भुजा पसारी गुप्त भये गिरधारी। रहि गई राधा तहां अकेली भई मीन बिनु नीरा। बहु बिलपति अरु रोवत ठाढ़ी व्याकुल महा अधीरा। इत ब्रजबनिता खोजत बनमें चरण चिन्ह लखि पाये। ध्वज अंकुश युत ललित मनोहर ताहि सबन पिछा

नायो। बहुरि जाय देख्यो हरि पद डिग तिय पद चि-
न्ह सोहायो। ताहूं बंदन करि सब बाला हरि ढूढ़न
चित लायो। पुनि बन कुंज लखी यक सुंदर फूलन
सेज सँवारी। तापर पर्यो मुकर यक पेख्यो तेहि
पूजो सब नारी। कछुक दूरि बढ़ि जाय लखी तिन
राधे सुघर नवेली। बिलपति तनकी सुधि बिसरा-
ये बन बिच दुखित अकेली। बिकल भई प्यारीग-
ति देखत ब्रज तनया बड़ भागी। बहुत प्रकार बोध
करि ताको पुनि हरि खोजन लागी। जड़ चेतनस
न पूछत सुंदरि हरि चरणान चित लाये। कुंज पुंज
वन घन बहु ढूढ़े हरि कहं कतहु न पाये। तब आ-
ई सब रास भवन बिचलगी करण गुण गाना। भ-
क्ति प्रेमयुत भई निरंतर रह्यो नहीं अभिमाना। त-
न मन सुधि बिसराय आपनी भई कृष्ण मय बाला।
लखि अति प्रीति निरंतर तिनको आय मिले नंद
लाला। भई मुदित मन गोप किशोरी मनहु गई नि-
धि पाई। मन क्रम बच हरि पद अनुरागी उर आ-
नंद बढ़ाई। बहुरि रास रस निरतन लागी हिये
प्रेम अधिकाई। छः महिना की रात करी हरि स-
ग गोपी सुदि ताई। युत उड़ि गण उड़ि गण पति
ठाढ़ो अमृत करण बरसावै। चलत समीर मंद

अरु प्रीतल उर आनंद बढ़ावै। बिलसि रास रस गये यमुन तट गोपीपति बन वारी। जल क्रीडा करि गोपी नायक कियो दूरि श्रम भारी। करि सुरव भोग बिलास प्रयाम संग सुनि आयसु हरि केरो। अपने भवन गोपिका गवनी मन आनंद घनेरो। गई भवन जब सब ब्रज बनिता गृह जन भेद न पायो। मनहुं रहीं सब भवनहिं माँहीं हरि असरव्याल उपायो। ब्रह्मादिक सुर हरि यश बरणि चरणांबुज शिर नाई। अपने अपने लोक सिधारे हरषि चलो उड़ गाई। गये हरषि निज भवन बिहारी घर घर आनंद छायो। निगम शारदा शेष बखानत हरि यश पार न पायो। निज स्वारथ लगि हरी सुमिरि के वेद व्यास जो गायो। कुंज लाल संक्षेपतासु लै भाषा छंद बनायो। ब्रज बनिता प्रभु की यह लीला सुख अंबुध अघहारी। सुनै सुनावै जो नर रुचिसों संतत रहै सुखारी ॥१०॥

अथ मान लीला

जय मन मोहन कुंज बिहारी केशव नंद दुलारे। जय गोपी पति राधा नागर गोविंद यशुमति बारे। जय मधु सूदन माधव यदुवर राधा कृष्ण मुरारी। जय यदु नंदन राधा वल्लभ गोपी नाथ वकारी।

जय विश्वंभर कलिमल नाशन भुवनेश्वर हरि राई।
वरणौं भय हर चरित तुम्हारे करहु कृपा सुखदाई।
ब्रज नंदनि प्रभु यशुदा नंदन विचरत हैं बजखोरी।
नहीं आय निकसीं सखि ललिता छवि निधि गोप किशोरी। बैठ्यौ रोकी नँद नंदन लखि ललिता लाल चाली। कबहुं हमारे सदनन आवहु कत योकहु सुखदानी। हँसिके बोले गोपी वल्लभ आजु रैन मैं ऐहौं। मन मानो तोहीं सुख देहौं तुवसों अंतर न जैहौं। हरि सुख वचन सुनत ही ललिता गई भवन सुख पागी। पिय मिलाप उत्साह हृदय भरि अंग सँवारन लागी। ललिता सुधि बिसराय रमाकर पीला भवनहि जाई। रस बिलास तंह बिलसे हितसो बहु विधि सुख उपजाई। इतबैठी मग जोवति ललिता उत्कंठा गति भारे। कबहुंक ठाढ़ी होत दुवारे कबहुं गणति नभ तारे। रैन बिहानी तलफत ताको मन भावन नहिं आये। मन सिज दुख कूजत अरु बिलपति हिय उद्योग बढ़ाये। बिगत निशा उठि दुखित नवेली बहु सोचति मनमारे। बैठी अपने भवन मँझारी रोय मान उर धारे। जागि श्याम ललिता सुधि कीन्ही हर बराय उठि धाये। पहुंचि तासु सुख देखि छबीले मनहीं मन मुकु

चाये। मुख सों कछू बचन नहिं बोले रहिगे डीठ नवाई। निरखन लागी बाल सयानी रूपमनोहर नाई। रुचिर कपोलन बंदन सोहै अधरण अंजन राजै। नय नन पीक लीकहै शोभित भाल महाबर छाजै। बिथुरे केश रसमसी मौंहैं उर उदसी सुम माला। बारंबार जंभात जके से लोचन लाल बिशाला। लखि असि छबि ललिता सुकुमारी घरसों दर्पण आनी। कह्यो लालजी बदन बिलोकहु अपने उर सुख मानी। अपनी छबि अवलोकि मुरारी फिरि कितहूं नजाहू। सकुच मानि हृग किये निचौहैं श्रीपति त्रिभुवन नाहू। लखिव ललिता निज हृदय बिचार्यो मन भावन सकुचाने। निजउर शोक त्यागि सुकुमारी कर गहि हरि सन्माने। उठि प्रभात तन सुघर सयानी उष्णोदक न्हवायो। वस्त्राभूषण अनुप अमोलक हरिके अंग सजायो। मन क्रम बच पूजे हरि विधिवत मन बांछित सुख पायो। लीन्हो सुकव परस्पर हिलि मिलि बाढ़ो नेह सवायो। रमे ख्याल औरहू कीन्हे ब्रज नंदनि हित कारी। चंद्रावलि ग्रह आवन कहिके ताकी सुरति बिसारी। सुरवमा के ग्रह रमे रमाबर नंद नंदन बन माली। चद्रावलि रहि पंथ

निहारे। आये नहि जन पाली। बिगत रैन बहु दुखउ-
रधरिके गति खंडित उर भारी। मन मे कहत प्याम
बड़ कपटी निर्दय हिय अति भारी। जगमें प्याम
रंग है जेते अति कपटी हैं माई। अलि अहि वारि-
द बायस कोयल इनकी गति कुटि लाई। तिन-
से अधिक प्याम की करणी अवलन की दुख
दाई। इमि विचारि धरि उर रिस भारी बैठी मानह
ढ़ाई। होत प्रात सुख चिन्ह लियेहरि तासु गेह में
आये। कहि मत राय मान गहि बाला नीके दरश
दिखाये। जो आये निज छबि देखवावन तौ लखि
के सुख पायो। अंग अंग के चिन्ह निहारत उर सं-
ताप नसायो। बिन गुंजा शोभित उरमें माला अक्ष-
र दीप सुत रखवा। नागा बेलि रँग पलक रँगीली आ-
लस अंग बिपोया। उर नख रेख चंद सम दर्शति चं-
दन माल सुहायो। लट पटि पाग महा दर लाग्यो छ-
बि लखि कामल जायो। सुखी भई तुम्हरी छबि निर
खन दूतसे बेगि सिधारो। सुख सों रमे जासु के घ-
रमें तेहहीं को पग धारो। हँसि बोले तब रसिक
छबीले हे मम प्राण पियारी। तुम बिन मोहिं क-
हूं कल नाहीं मानो बात हमारी। तुम्हरे छंद बंदमें
जानति हद कठोर मृदु बानी। बचनन में जनु

फूल फरत हैं करणी जीवन हानी। ऐसेवक झकि गइ घर भीतर हरि आँगन रहे ठाढ़े। लखि तिय रोस कछू नहिं बोलत मनहुँ चित्र लिखि काढ़े। इहि बिधि मूंदि कपाट सयानी पौढ़ि रही अनखाई। हरि तन नेकु निहारी नाहीं उर अभिमान बढ़ाई। तब अस खेल रच्यो मन मोहन पौढ़े ता संग जाई। हरि को संग देखि चंद्रावलि तुरत उठी झहराई। खोलि किवार अजिर में आई तँह देखे हरि ठाढ़े। है अधीन बिन वत हैं सैनन धरे बास उर गाढ़े। चकित भई हरि की गति देखत फिरि भीतर गइ प्यारी। तँह पुनि प्रगटि यशोमति नंदन भरि लीन्ही अँकवारी। यहि बिधि हरि जू मान छोड़ायो ताहि बहुत सुख दीन्हो। हिय हुलास उपजाय बिबिधि बिधि गवन भवन को कीन्हो। ऐसे करत सदा सुख लीला आरत हरण कन्हाई। लखि सुर नर मुनि होंहि सुखारी हरि पद प्रीति बढ़ाई। सुखदायक हरि की यह लीला पढ़े सुने जो कोई। कुंजलाल प्रभु दास दासे भव बंधन नहिं होई॥११॥

दशवां वतारी लीला

वन्दौ हरि पद कमल अनूपं सकल विघ्न

हित कारी। करुणा अंबुधि अनय अनामय संत न भव रुज हारी। दुख भंजनि भव ताप विनासनि जन मन निर्मल करणी। दश अवतार कथा कछु बरणौं विश्व सुखद कल हरणी॥॥

मत्स्य

सत्य व्रत के हेत कृपा निधि धरो मत्स अवतारा। धर्म नीति उपदेश्यो नृपहि कह्यो धर्म ओहारा। सिंधु मध्य शंखवा सुर मार्यो बूड़त वेद बचायो कथा विचित्र प्रसिद्ध सोहावनि महा मुनीश्वर गायो॥

कच्छप

असुर दंद जब भये बली बर सकल लोक तिन जीते। अमर सहित अमराधिप हारे लोकप भये सभीते। कूरम वपु धरि प्रगटे हरिजू मारे असुर बरूथा। धरणी मंदिर पृष्ट धारिके सुखी किये सुर यूथा॥॥

वाराह

हिरंण्याक्ष जब पगट्यो दानव अमित तेज बल भारी। गयो रसातल लै सो धरणी भये दुखी सुरव चारी। धरि वराह वपु सुंदर कोप्राव धरणि डाढ़ धरि आनी। परम युद्ध करि दैत्य संहारो सुखी किये सब प्रानी॥॥

नृसिंह

हिरंन्याक्ष को भ्रात सहोदर हिरण्य कशिपु तेहि नामा। तासु तनयन प्रह्लाद भागवत हरि सेवक सुभ कामा। निशि बासर नारायण सुमिरै और हरी गुण गावै। उनके ढिग जो बालक रहहीं तिनको यही सिखवावै। असुर रिसाय पकरि प्रह्लादहि गिरिते भूमि गिरायो। बहुरि लगाय अग्निकी दावा तामें ताहि डरायो। सब दौंड़ हरि रक्षा कीन्ही तासु रोम नहिं बंको। असुर हिये बड़ रोष भयो तब सुर नर मुनि उर कंपो। लै कर खड्ग कह्यो सुतपाहीं बोल कहां हरि तेरो। नहिं मारव मै तो कहँ अबहीं है बैरी तू मेरो। हँसि बोले प्रह्लाद भक्त बर हरि व्यापक सब ठौंई। चर अरु अचर हरी मय आहीं अग्नि काठ की नाईं। प्रगटे तुरत रमा बर केशव धरि नरहरि शुभ रूपा। उदर बिदारि हन्यो असुरा धिप कीन्हो चरित अनूपा॥॥

बावन

जब बलिको परताप भयो बड़ दुरवी भये सब देवा। तब सब गये रमापति पासो कीन्ही बहु बिधि सेवा। सुरपति हेत बिचारि दया निधि धरि।-

बामन अवतारु। असुर बिमोहन सुर सुख कारी
बेष मनोहर चारु। छल बल करि पाताल पठै ब-
लि सुरपति कारज कीन्हो। त्रै बिक्रम बामन क-
ह वाये सुरपति को सुख दीन्हो॥॥

परशु राम

ऋषि यमदग्नि गेह प्रभु प्रगटे परशुराम कह
वाये। सुंदर बपुष बीर तन धारे घोर तपहि मन
लाये। सहस बाहु नृप काम धेनु हित ऋषिहि
महा दुख दीन्हो। पितु आज्ञा जननी को मारीपि
रि नृप को बध कीन्हो। करि निछत्र बार यकबी
सा भूमि द्विजन कँह दीन्ही। कुरुक्षेत्र में जाय
क्षण निधि शांत क्रिया फिरि कीन्ही॥॥

श्रीराम

सरयू तीर अवध पुर बासी नृप दशरथ शुभ ना-
मा। तासु गेह अवतरे अंशयुत चतु ब्यूह शुभ का-
मा। रामलक्ष्मण भरत शत्रुहन शोभा सिंधु सु-
खारी। क्षत्री रूप बाँण धनु धारी कमला पति असु
रारी। निश्चर पति रावण सुर द्रोही हरि भक्तन
सुख दाता। कुटुंब सहित संहारयो ताही रामज-
गत पितु माता॥॥

श्रीकृष्ण

द्वापर अंत असुर खल प्रगटे सुर नर मुनि दुख दा-
ई। यदुकुल जन्मे त्रिभुवन बल्लभ चतुर्मूर्ति हरि
राई। असुर अधम सब खोजि संहारे करि लीला
सुख कारी। निज भक्तन को बहु सुख दीन्हो सुर
नरमुनि भय हारी। जय बल भद्र कृष्ण जग बंदन
राधा कान्त मुरारी। जय प्रद्युम्न रुक्मिणी नंदन
जय अनिरुद्ध सुख कारी॥॥

बौद्ध

असुर समूह जुरे यक ठौरी रची यज्ञ विधि भारी।
सुरपति बिनय सुनत करुणा निधि धरो बौद्ध व-
पु चारी। निगम धर्म को खंडन कीन्हो बिरचि क-
पट युत बचना। अपने बोध प्रबोधे दानव मेंटी
मख की रचना॥॥

निः कलंक

त्रिभुवन ह्वै अंत कलुक में रमा रमण असुरारी॥
निः कलंक अवतार धारिहैं निगम धर्म उप चा-
री। दश विधि रूप रमापति केरे जोसुमिरे चित ला-
ई। कुंजलाल प्रभु हरि चरणन की हृदय प्रीति अ-
धि काई॥१२॥

अथ दुर्वासा ब्रजागवन लीला

जय जय मोहन राधा नायक गोपी नाथ गोपाला।

जय राधा वृषभान दुलारी जय गोपी ब्रज बाला। ब्रज बनिता प्रभु पद रज शिर धरि कहौं कथा सुख कारी। मोह तिमिर रवि अघ करि के हरि भ्रम विषय धर उरगारी। रवि नंदनि यक दिन अति बाढ़ी वर्षा ऋतु के माँही। वार पार के पथिक थकित भये उतरिस कत कोउ नाँही। ताही दिन हरि दर्शन के हित ब्रज आये दुर्वासा। देखि अथाह यमुन जल ऋषि वर कीन्ह यमुन तट बासा। ऋषि आगमन जानि नंद नंदन कह्यो गोपिकन पाँहीं। बड़े भाग दुर्वासा आये निकट गेह के माँहीं। पूजन भोज वस्तु सकल ले सब तुम उन ढिग जाबो। विधिवत पूजि कमल पद तिनके फिरि भोजन करावो। प्रभु आयसु सुनि गोप किशोरी निज निज मंदिर जाई। लैले पूजन भोज्य पदारथ गवन कियो हर्षाई। देखि प्रवाह यमुन को दुस्तर गई जहां नंद लाला। आगम यमुन जल कोहि विधि जाँहीं बोले हँसि गोपाला। जाय यमुन ढिग तुम अस भाखो हे दिन नाथ कुमारी। जो हरि रमे हमारे साथै तो जिन होहु उतारी। जो निश्चै जानो मन मोहन हम संग बिलसे नाँहीं। पद पर्यंत नीर निज कगहू उतरि पार हम जाहीं। गई

तुरत सब गोपि यमुन तट हरि आपसु शिर धारी। सिरवई श्याम सो कीनी बिनती यमुना भई उतारी। उतरि पार ह्वै गोप कुमारी ऋषि को दर्शन पायो। बिधि वत पूजे चरण सरोरुह फिरि नै बेद्य चढायो। जो भोजन लै गई गोपिका सकल महा ऋषि खवायो। ह्वै निश्चिंत बैठि निज आसन गोपिन कँह समुझायो। जाहु सबै तुम हरि के पाँही हम अब भये सुखारी। बोलीं गोपी सुनहु महा ऋषि यमुना बाढ़ी भारी। कैसे जाँय उतरि हम यह को बोले तब ऋषि राई। केहि बिधि आईं इते उतर तुम भाखौ सकुच बिहाई। जेहि बिधि आईं कह्यो सबन जब तब बोले ऋषि राया। अब तुम जाय कहो यमुना सो हे यमुना करु दाया। दियो हमारो भोज्य पदारथ जो खवायो दुर्बासा। तौ तुम ऐसे रहो भरी जल नहिं मानव कछु त्रासा। कछु नहिं खायो जो दुर्बासा तो मारग तुम देहू। हम सब उतरि सदन निज जाँहीं इतनो यश तुम लेहू। गईं यमुन तट गोप नंदनी ऋषिकी सीख बखानी। सुनत भयो जल पाँव बराबर लखि बनिता हर्षानी। उतरि गईं नँद नंदन पाँहीं बोलीं सब सुख पाई। ऋषि पूजन करि आईं हम सब।-

तुम्हरी कृपा कन्हाई। दुस्तर यमुना कैसे उतरी पूछ्यो नंद कुमारा। वचन भूँटि की नौका चढ़ि कै उतरि भई हम पारा। सब वृत्तान्त आपनो कहि कै मन आचर्य बढ़ाये। कह्यो सुनव हो यशुदा नंदन हमरे वचन सोहाये। हम संग विलसत सदा निरंतर तुम प्रभु कुंज बिहारी। ऋषि हम देखत भोजन कीन्हो हमहीं परस नहारी। इतने पर सुन बचन लावरे यमुना मारग दीन्हो। कछू हमारे मन नहिं आवत ना जानै का कीन्हो। हँसि बोले ब्रज चंद नंद सुत गोपीजन हित कारी। बचन हमारो मिथ्या नाहीं ना हम कहैं लवारी। सबको कती मैंहौं साँचो तीनो गुणा से न्यारो। निःकामी निर्मोही निःकल निरगुण रूप हमारो। सर्व देव द्वारा फल दातारजन रुचि राखन हारा। जो जेहि भाव भजै मो काहीं तैसे करहुं सँभारा। निज इच्छा तुम भोगत प्यारी मेरो वपु उरधारी। मैं अभोग्य निज जन सुख दोयक मोसो सुरत तुम्हारी। दुर्वासहु को बचन सत्य है अन्न त्याग उन कान्हो। तुम्हरी श्रद्धा मोहि उर धारो मैं सब भोजन लीन्हो। सुखी भई हरि बचन सुनतहीं हरि स्वरूप रस पागी। उमग्यो प्रेम निरंतर उर में-

बिन मन क्रम बच अनुरागी। कुंज लाल संक्षेप बखानी यह लीला सुखदाई। पढ़त सुनत हरि पद रति होई भ्रम संदेह नसाई॥१३॥

अथ श्री कृष्णावतार लीला

गिरिजा सुवन चरणावों नाऊं माथ। सहित प्रीति कछु गाँऊ हरि गुण गाथ। मथुरा नगर सोहावन यमुना तीर। उग्रसेन तँह राजा रहे मति धीर। जेठ सुवन तेहि केरो कंस कुचाल। पितहि बाँधि भा पापी देश भुवाल। उग्रसेन लघु भ्राता देवक नाम। देवकि ता सुकु मारी सुघर ललाम। कंस भूपतेहि कांही देखि सयान। बसु देवै सो ब्याहिस बेद विधान। बिदा समय नभ बाणी सुन्यो भुवाल। देवी को सुत अष्टम कंसहि काल। सुनतहि मारण कारण मनसा कीन्ह। बसु देव कीन्ही बिनती बाचा दीन्ह। तिय जिन मारो राजा पातक होंहि। याके सुत जो होई देहौ तोहि। बचन मानि ताकेरो दै जिवदान। गारिवस बंदी शाला अधम अजान। छै सुत भे सो मारेसि पापी नीच। सतयें राम जन्म भा ब्रज के बीच। बढ़ो पाप महि ऊपर जग बिलखवान। अठयें गर्भहि आये हरि भगवान। असित पाख

नम आदैं शुभ बुध वार। रोहिणी युत निशि आधी अभिजित चार। प्रगटे धरि वपु पावन करुणा कंद। चतुर्बाहु शुभ आनन नित्यानंद। रवि निंदक शिर शोभित मुकुट अनूप। कुंचित चिकुर सोहावन श्यामल रूप। मणियुत कुंडल अनुपम सोरे कान। गदा चक्र दर सर सिज कर जलजान। मृदुल हास्य शुभ चितवनि मन हरि लेत। तिल प्रसून सम नासा अति छवि देत। बिद्रुम अधर सोहावन राजिव नयन। कंज बदन सुख अंबुद शोभा अयन। उर वैजंती माला अरु बनमाला। रमा व द्विज पद अंकित हृदय विशाल। बसन पीत कटि काछे पद जल जात। निर्गुण सगुण वपु सुंदर निर्मल गात। दंपति लखि हरि मूरति अस्तुति कीन। तब ह्वै कै प्रभु बालक आज्ञा दीन। ब्रज में नंद महर घर हमहि पठावा कन्या उपजी ताके सो लै आवा खुलिगो द्वार कपाट कर पद बंधा बसु देव चले धरि माथे पर करुणा सिंधु। उतरि यमुन जल पहुंचे नंद के गाँव। सब सोवत तँह लखिव कै लैहरि नांव। प्रविसि भवन के भीतर मन हर्षाय। माया बपु जँह सोवति यशुमति माय। कन्या उपजी पाई लई उठाय। निज सुख धाम सुव-

नहीं तँह पौढाय। फिरि आये निजभवनै यदुकुल भूप। देखिहि दीन्ही कन्या सुरूपमा रूप। लगि गे हार किवारे पहरू लोय। जागे ताही अवसर कंन्या रोय। तजग भये सब रक्षक दिहिन जताय। प्रभुको बैरी उपज्यो धारिय पाय। सुनतहि आयन राखिप कन्या लीन। तेहि मारन को पापी जब चित दीन। सो गई तुरत गगन को यही सुनाय। अब जन्म्यो तुव बैरी रहु विश्वसियाय। उत जागीं नँदरानी हरि सुख हेरि। काहि उपजेहैं लालन नंदहि टेरि। नंदमहर आनंदे सुख सुरकाय। ग्रह जन जागे सिगरे बहु सुख पाय। बिधि दान बहुदीन्हे करि कुलरीत। हरषित ब्रज जन सिगरे गावैं गीत। ब्रज घर घर चहुं धाँई बजत बधाव। उपजे कुंवर कन्हाई शिव अज राव। सुख सोभा रहि घर घर तन धरि छाय। शिव अज पार नपायो सो सुख गाय। कुंज लाल निजउर धरि कृष्ण स्वरूप। सदा गाव मम वाणी चरित अनूप॥

अथ परस्पर अभिलाष लीला

जयजय राधा कृष्ण पियारी जय जय मदन गोपाला। जय जय गोपी जन मन भावन जय जयजय ब्रज बाला। एक दिवस हरि राधा माधव

बैठे भवन सँभारी। निरखत रूप परस्पर मोहे लो-
भे सुरत बिसारी। निरखि राधिका छबि मन मो
हन कहि इन सम कोउ नाँहीं। कबहुं पीत पट
कबहूं सुरली वारैं मन हर्षाहीं। कबहुँ वारि नि-
ज तन मन कहहीं कोउ राधा सम नाँहीं। इनको
पलक ओट ना करिये राखिय नयनन माँहीं। ल
खि छबि अनुपम राधा सुख की उर अभिला-
ष बढ़ाई। अपनी सुधि बिसराय रसिक बर रा-
धा छबि मन लाई। लै आभूषण राधा केरे अ-
पने मन अनुरागे। निज वपु राधा भेष बनायो
प्रेम निरंतर पागे। अपने शिर कच बेणी गूं-
थी सुंदर माँग बनाई। शीश फूल सजि परम म-
नोहर बेंदी भाल सजाई। प्यारी दृगसों काजर
लैके नयन करे कजरारे। नकबेसर सजि नासा
माँहीं अधरा तरौ न सुधारे। अंग अंग प्रति स-
जि आभूषण अपने वस्त्र उतारे। बसन प्यारी
प्यारी के लैके निज तन माँहिं सँवारे। नारि रू-
पहरि को निहारि कै मुदिती मन में राधा। त-
न मन वारि बिलोकन लागी शोभा सिंधु अ-
गाधा। वस्त्र भूषण हरि के लैके अपने अंग
सजाये। हरि के रूप बनी गुण मंदिर लखि हरि

अधिक लोभाये। हरि के रूप राधिका रानी राधा बपुष मुरारी। गोरी कान्ह साँवरी राधा दोउ जन भये सुखारी। कबहुं मुरलि धरि अधर आपने मधुरे सुरन बजावै। कबहूं छबि त्रिभंग धारि के अपने पियहि रिझावै। सुख बिलास बहुबिधि सों बिलसी उर आनद बढ़ाई। कहत भईहरि सों असहित करि हेहरि नवल कन्हाई। तुम तो बैठो मानिन ह्वैके मै पिय तुम्हहि मनाऊं। यह अभिलाष पूरिये मेरो मै तुम्हरी बलि जाऊं। सुनत प्रयाम हँसिके मुरि बैठे भाव मान को धारी। प्रगटि रुखाई बोलत नाँही तब बोली हरि प्यारी। कियो मान तुम प्यारी काहे कहा चूक मैं कीन्ही। हँसी करत रिसि निज उर धारी रस की रीति न चीन्ही। बृथा हठीली मान न करहू टुक हेरो मम ओरी। हँसि के बोलि हृदय दुख मेटहु बिनऊं तोहि निहोरी। जित जित करत प्रयाम मुख अपनो तित तित घूमति प्यारी। चरण कमल पर निज सिर धरिके आतुर बचन उचारी। कहत प्राण प्रिय छमहु दोष मम हौं आधीन तुम्हारो। कृपा कोर हँसि हेरो मो तन मेटहु दुक्ख हमारो। हरि जू मगन भये या रस में

धारि अधिक निठुराई। कछुक देत नहि उत्तर ताही करिके निपट रुखवाई। विरह दुकव भई व्याकुल प्यारी तन मन सुधि बिसरानी। कहत प्यारी यह खेल मिटावहु मैं अतिप्राय अकुलानी। तब मोहन प्यारी उर लाई बिरह दुकव हरि लीन्हो। कत कदरानी आरग पियारी कह्यो तोर मैं कीन्हो। पति अनकूल बिलोकति प्यारी सुरख निध लूटन लागी। बारंबार निरखि बदनंबुज हरि चरणान अनुरागी। हरि को रूप आपनो देखी आपुहि श्याम निहारी। यह बिपरीत चित्त में आनी तन मन सुरत बिसारी। सुरत स्वरूप आपनो धारो श्री वृष भान कुमारी। हरि मुख चंद बिमल चित धारी लुब्ध भई मन वाणी। सुकव निरंतर के अभि लाषी चले कुंज बनदेऊ। धरे परस्पर निज कर कांधे भेद न पावत कोऊ। उतते आवतही चंदावलि दूरहि सो सो देखी। कह्यो राधिका संग को दूसरि देखोइन्हे बिशेषी। आतुर जाप समीप सयानी बूझ्यो येको प्यारी। कह्यो रहति ये मथुरा माँही मन क्रम हित हमारी। मोरे हेत इते पग धारो आवत इत संग आई। सुनत बचन चंद्रावलिहरि

सन अस बोली मुसुकाई । कहा नाम है तुम्हरो आली कौन ग्राम तुम ब्याही । सत्य कहो निज बदन सुलोचनि तिलभरि सकुचो नाहीं । उत्तर न दीन्हो कछु नँद नंदन मनहीं मन सकुचाने । कहि चंद्रावलि सुनो छबीले हो तुम मोरे जाने । निज स्वारथ तुम दोऊ रातेसदा भेद उर राखो । जाहु चले अब कुंज भवन तुम निज मनमें नहिं माखो । तासु बचन सुनि नंद दुलारे करगहि ताको लीन्हो । मन मुसुकाय राधिका संयुत गावन कुंज बन कीन्हो । तहां जाय सब रैन बिताई सुखयुत पूरण कामा । तरणि उदय निज भवन सिधारे अविगति अनघ अकामा । सखी सहित मन मुदिती राधा हिय आनंद बढ़ाई । ऐसे चरित करत निशि बासर ब्रजमें कुंवर कन्हाई । कुंजलाल संक्षेप बखानो यह सुभ चरित अनूपा । जो कोउ हितसों पढ़ै सुनावै सो न परै भव कूपा ॥ १५ ॥

अथ गोपिका विषाद लीला

नंद महर अक्रूर युत हरि गिरि धर बलराम । गोकुल तें मथुरा पहुंचि हन्यो कंस बल धाम । उग्रसेन को करि नृपति घर पठये नँदराय । रहे

बंधु दोउ मधुपुरी देव कार्य चित लाय। नंद संग हरि आये नहीं सुन्यो गोपिकन कान। तन मन की सुधि ना रही भई मृतक बिनु प्राण। का-सि कासि गोपाल जू भाषत अरु बिलखात। हाय हाय सब मिलि करत कर मीजत पछितात। अति बिह्वल अरु दीन ह्वै बिलखैं सबै अधीर। ही ही मुख उच्चरै बाढ़ी तन मन पीर। जो का-हुहि लखि पावहीं जात मधु पुरी ओर। ताको बहु सन्मान करि बिनय करैं कर जोर। हमरो इतो संदेस तुम कहो प्रयाग सों जाय। नयन नीर सौं सकल ब्रज बूड़त राखै आय। जो वियधर ब्रज राय तुम यमुना बाहेर कीन्ह। बिरह रूप सो धा-रि अब मारत अबला दीन्ह। दावा नलतें नाथ तुम ब्रज जन लिये बचाय बिरहा नल दाहत म-बै कस ना करत सहाय। जबजब दुख ब्रज में प-रे तब तब कीन्ह उबार। काहे अब ब्रज के जन न मारत एकै बार। तुम्हे बिना नँद लाल जू घर बन नाँहि सोहात। अमृतहू बिष है भयो शीतल प्रापि है तात। नाथ हमैं अपनाएके त-जिबो नाहीं। नीति। बाँह गहे की लाज करि पा-लत हरि जू प्रीति। नाथ सदा तुम भजततेरखा

राधा नित्त । सो राधा बिलखति परी कहां गयो सो हित्त । तुम बिन राधा नाथ जू राधा रहत उदास । देंह गेह की सुधि नहीं रोवत लेति उसाँस । निशि दिन तुम्हरे मिलन हित तलफ़त हैंजि मि मीन । धरणी तल लोटति परी व्याकुल महा अधीन । सकल अवस्था हो चुकी व्यापी दशाईं आय । बेगि आय ब्रज राज जू राधहि लेव जियाय । कहत संदेसो पथिक सन जबै साँझ नियराय । सब गोपी घर आयकै भजैं पूर्णमा हरि राय । इहि प्रकार सब गोपिका ध्यावै हरि को नित्त । करैं निरंतर गुणा कथन राखैं हरि में चित्त । जय श्री राधे हरि प्रिया जय गोपी शुभ खान । कुंज लाल को दीजिये कृष्ण भक्ति वर दान ॥१६॥

आरती

आरति रमा रमणा श्री वरकी
विष्णु जगत पति कलि मल हरकी । मत्स्य वपु ध शुभ काम लजावन । सुकव भवन जनदुकव नसावन । चिदा नंद शिव रूप सोहावन शंखवा सुर जित अजर अमर की ॥ १॥
कूरम वपु खल व्यूह संहारन । चतुर्वेद विध

अवगम उधारणा रहित शोक जन शोक नेवासा।
सुर नर मुनि हितु मंदिर धरकी ॥२॥
सूकर रूप मनोज बिनिंदक। हिरंन्याक्ष जित अ-
जित अबंधक। धरणी धर बल धाम अचिंतका।
अकल अकाम अपार अपरकी ॥३॥
नामसिंह बपु अद्भुत गाता। अनघ अगाध च-
राचर धाता। हिरणा कशिपु जित त्रिभुवन त्रा-
ता। महा वीर्य सुख निधि नर हरिकी ॥४॥
बामन बपु बलि यज्ञ बिध्वंसी। रूप तेज नि-
धि वेद प्रशंसी। निगुणा निरामय गुणा अवतं-
सी। बिश्व बिमोहन जन सुर तरकी ॥५॥
परशु राम क्षत्री कुल घालक। यम दंभोय सुरा
सुरपालक। सहस्र बाहु जित रवल कुल साल-
क। ऋषि स्वरूप धनु परसा धरकी ॥६॥
राम चंद्र नृप दशरथ नंदन। स्वयं ब्रह्म सचरा
चर बंदन। रावणारि शिव अज उर चंदन। सि-
यारमणा सेवित हरि हरकी ॥७॥
कृष्ण मुकुंद गोपाल मुरारी। बिश्व बिभूषणा
जगत अधारी। कंस काल सुर शत्रु प्रहारी। मु
रली धर हरि राधा बरकी ॥८॥
बौद्ध बपुष सुर संत सहायक। असुर नाशा हित

बोध उपायक जन त्राता सुर बैरी हायक। सुर रंजन
गंजन अघ थरकी॥ ८॥
कल्कि रूप कलि कलुष पहारी। खल मग खंडि
त निगम प्रचारी। धर्म धुरंधर धर्मौ तारी। सर्वरू-
प सचरा चर भरकी॥ ९॥
सर्व प्रवर ब्रह्मादिक बंदित। सर्वोपरि प्रणिब-
दन अखंडित। सब घट व्यापक त्रैजग मंडित।
कुंजलाल प्रभु करुणा करकी॥॥ ११॥॥

इति श्री हरिनाम रत्नावली

चतुर्थ भाग

सम्पूर्णा शुभं

छन्दों के नाम

भाषा के नाम	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	संख्या
उपगीति का	५	५	५	५	१८८
गीति का	४	४	४	४	४१
त्रभंग	७	१०	८	८	३५
भुजंग प्रयात	४	३	४	४	१४
त्रोटक	४	४	१०	४	२१
त्रमृतध्वनि	५	५	५	५	३७
दोधक	३	४	४	४	६
मोती दाम	३	४	६	२	१३
सट पदी	३	३	३	८	१३
नगा स्वरूपी	८	४	४	४	७
तोमर	३	४	३	३	८
त्रष्ट पदी				२०	११
त्रारत्त				४	५
चतुर्पदी	६	४	४	४	१४
सोरठा				४	५
पद	२५	२५	२५	२०	८५
दोहा		४८	४८		१४४
हरि नाम माला				४८	१३८
कृष्ण नाम मुक्ता वली				५०	५०
लीला				४०	१६
छप्पय				४	५
कवित्त				४	६
कुंडलिया				३	३
ऐकत्र	१५३	१७२	१५२	३८३	८६०

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
सभाविलास	चहारदरवेश	दानलीलाव नाग-
तुलसी शब्दार्थ	क़िस्सा हातमताई	लीला
भजनावली	सौदागर लीला	दोहावली रत्ना-
प्रेमरत्न	अपूर्व कथा	वली
युगलविलास	क़िस्सागुलसनोवर	गोकर्णमाहात्म्य
चित्रचन्द्रिका	सहस्र रजनीचरित्र	श्रीगोपाल सहस्र-
बारहमासाबन्नसेवक	रविसनकादृतिहास	नाम
मनोहर लहरी	वैद्यक भाषा	कथासत्यनारायण
गंगालहरी	निघण्ट	हनुमान बाहुक
यमुनालहरी	अमरविनोद	जनकपचीसी
राग	वैद्यजीवन	हरिहरसगुणनिर्गु
रागप्रकाश	औषधिसङ्ग्रहक-	ण पदावली
लावनी	ल्पवल्ली	बनयात्रा
शृंगारबत्तीसी	अमृतसागरवड़ोल	कायस्थवर्ण नि-
क़िस्सा बेंगरह	वैद्यमनोत्सव	रूपण
इन्द्रसभा	मुतफ़र्क़ात	विहारविन्द्राबन
विक्रमविलास	शनिश्चर की कथा	समरविहारविन्द्रा
बैतालपचीसी	ज्ञानमाला	बन
सिंहासनबत्तीसी	गोपीचंदभरतरी	कल्पभाष्य
पद्मावतीखंड	कथाश्रीगंगाजी	दरसी
शुकबहत्तरी	अवधयात्रा	अक्षरावली
बकावली सुमन	भरतरीगीत	स्वयम्बोध

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ज्ञानबावनी	अपराधभंजनस्तोत्र	वृन्दजाल
दोहावली	कायस्थकुलभास्कर	संस्कृत उर्दूदीकास-
बालाबोध	कायस्थधर्मनिरूपण	मनुस्मृति
विद्यार्थीकीप्रथम-	तथा छोटा	विष्णुहारीत
पुस्तक	मथुरासभा	महिम्न स्तोत्र
किताबजंत्री	दुर्गापाठस्तोत्रमूल	संस्कृतभाषाटी-स-
गणितकामधेनु	ज्योतिष	अमरकोषतीनोंकांड
लीलावती	मुहूर्त्तगणपति	याज्ञवल्क्यस्मृति
पढवारियोंकीपुस्त	मुहूर्त्तचक्रदीपिका	संध्यापद्धति
कके चार भाग	मुहूर्त्तचिन्तामणि	व्रतार्क
संस्कृतकीपुस्तकें	मुहूर्त्तमार्त्तण्डस-	भगवद्गीतांटी-हरि-
लघुकौमुदी	मुहूर्त्तदीपक	भगवद्गीताटी-प्रागि-
सिद्धान्तचन्द्रिका	बृहज्जातक सटीक	गीतगोविन्द
अमरकोषतीनोंकांड	जातकालंकार स-	कथासत्यनारायण
सटीक	जातकाभरण	परमार्थसार
पंचमहायज्ञ	होरामकरन्द	शार्ङ्गधरसंहिता
निर्णयसिन्धु	भाषाज्योतिष	पाराशरीसटीक
संग्रहशिरोमणि	जातकचन्द्रिका	शीघ्रबोधसटीक
भगवद्गीतासटीक	जातकालंकार	लघुजातक
दुर्गापाठसटीक	देवज्ञाभरण	षट्पञ्चाशिका
विष्णुभागवत	ज्ञानरत्नोदय	सामुद्रिक
भविष्योत्तरपुराण	रमलसार	



